कश्मीर की धरती

क्षेम लता वखलू

अजय पब्लिशर्स, नई दिल्ली-५

कश्मीर
की
धरती

कश्मीर की धरती

क्षेम लता वखलू

अजय पब्लिशर्स — नई दिल्ली-५

समर्पण

यह पुष्प उसी देवता को अर्पण हैं
जो मेरा जीवन-धन ही नहीं, मेरा
साहस और मेरा गौरव भी है।

—क्षेम लता

दो शब्द

'कश्मीर की धरती' एक ऐसे देश की कहानी है जो देवताओं की धरती मानी जाती है और संसार भर में प्रसिद्ध है। दूर-दूर देशों से लोग इस धरती की यात्रा को आते हैं और इस स्वर्ग का आनन्द प्राप्त करते हैं। इस धरती के लिए एक कवि ने कहा है कि जिस प्रकार मोतियों की माला में एक हीरा शोभा देता है वही स्थान संसार भर में कश्मीर का है।

लेखिका ने कहानी को बहुत ही अच्छे ढंग से लिया है उसने इस में कश्मीरी सभ्यता, सयासत और कुदरती नज़ारों का इस प्रकार उचारण किया है कि पाठक घर में बैठे बिठाये इस पुस्तक को पढ़ने से कश्मीर की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

प्रकाशक

आज का दिन बहुत ही सुन्दर था। चारों ओर हरियाली प्रतीत हो रही थी। बादल छंट रहे थे। धीमी-धीमी हवा चल रही थी। घर के सब सदस्य आज अपने-अपने कमरों की सफ़ाई करवाने में जुटे हुए थे। कई महीनों की सर्दी तथा बर्फ़बारी के कारण सफ़ाई नहीं हो पाई थी। मौसम बदल रहा था। घर की सफ़ाई आवश्यक थी। बड़ी माँ घर में इधर-उधर चक्कर काट रही थी। उसके बिना इस घर में रौनक ही नहीं होती थी। पूरी रानी की तरह आदेश देना उसके जीवन का एक विशेष अंग था। उसकी धाक सारे घर पर जमी थी। दो बेटे, बहुएँ तथा उन के बच्चे घर की शोभा थे। नौकर-चाकरों की भी कमी न थी। ताँगा चलाने के लिए कोचवान और मोटरकार के लिये एक ड्राइवर भी रखा था। मानो कि घर स्वर्ग बना हुआ था।

बड़ी माँ न केवल अपने घर में महत्व रखती थी, बल्कि सारा मुहल्ला, सारा शहर उसे जानता था। वह बहुत बुद्धिमान औरत थी, इसलिये सब उसकी इज्जत करते और अपनी निजी बातों में उसका होना आवश्यक समझते। यह बहुत बड़ा घर था। सदियों से खानदान की बनी इज्जत हर व्यक्ति के मन में समाई हुई थी। काफ़ी ज़मीन, जागीर होने के कारण किसान लोग हर सप्ताह उनके पास आते और सलाम बड़ी माँ के सम्मुख प्रस्तुत करते। घर में दूध, मक्खन की कमी न थी। जो स्वयं खाकर बच जाता वह मुहल्ले वालों में बाँट दिया जाता। इसलिये सब उनकी सेवा में लगे रहते।

बड़ी माँ ने घर का अधिकार अपने हाथों में लिया हुआ था। वह बहुओं को इस कार्य के लिये निरर्थक समझती थी। पति को स्वर्गवास हुये कई वर्ष

हो चुके थे, परन्तु उनके गुज़रने के उपरान्त भी किसी वस्तु में परिवर्तन न आया था। बड़ी माँ सदा घर के धन्धों में स्वयं को व्यस्त रखती। इससे उसे कभी भी पति का अभाव न प्रतीत होता। वही धाक, वही शान-शौकत, वही रोब-दाब था। बड़ा बेटा काफ़ी अच्छे पद पर लगा हुआ था। नाम त्रिलोकी नाथ कौल था। उन्हें सब कौल साहब या रायसाहब के नाम से पुकारते थे, और दूसरा बेटा भी काफ़ी ऊँचे पद पर था।

जिस प्रकार एक देश किसी अच्छे राजा के होते हुये सुसंगठित रहता है, इसी प्रकार यह सुसंगठित परिवार एक तार से बंदा हुआ था। कोई इस रेखा के बाहर नहीं जा सकता था और न ही उल्लंघन करने की ताकत रखता था। माँ ने अपने प्रेम में सब को बाँध लिया था। इतने बड़े घर को संभालना केवल उसी का काम था। उसकी शक्ल, सूरत किसी रानी से कम न थी। लम्बा कद, सुडौल बदन, सुन्दर आंखें, गोल मटोल चेहरा। इस बुढ़ापे में भी सुन्दरता बाकी थी। इसका स्वभाव मधुर तथा शान्त था। दोनों बेटे बड़ी माँ की मान्यता करते, इसलिये उनकी स्त्रियां भी कभी माँ के विरुद्ध कुछ कह न सकती थीं। बड़ी माँ की इच्छा के बिना कोई कार्य सिद्ध न हो सकता था। एक दिन वह एक बड़े कमरे में बैठी थी। इस कमरे में सुन्दर कालीन बिछा था। दीवार के साथ दो मोटे मोटे सुन्दर पाव तकिये रखे थे। जहाँ वह सदा बैठती और लोगों की बातों में शरीक होती। आज रसूल मीर आया। बड़े अदब से बोला—

"सलाम बड़ी माँ, आपने मुझे याद किया था क्या?"

"रसूल जू, तुम को लकड़ी लाने के लिये कहा था। कुछ प्रवन्ध हुआ उसका?"

"जी हाँ, कल चार सौ मन लकड़ी पहुँच जायेगी। कोई और आज्ञा है?"

"नहीं, यही कहना था। अरे, तुम्हारे साथ यह लड़का कौन है?"

"यह मेरा सब से बड़ा लड़का रहमान है बड़ी माँ। आप को कोई काम करवाना हो तो यह हाजिर है।" रसूल मीर ने अपने बेटे की ओर संकेत किया और बोला,

"रहमान, बड़ी मां को सलाम नहीं किया?"

"सलाम बड़ी माँ।"

"सलाम बेटा, जीते रहो।" यह कहकर माँ ने थोड़ी सी चीनी कागज़ में लपेट ली और आठ आने मिला कर रहमान की ओर बढ़ाते हुये कहा, "यह लो बेटा, चाय पी लेना।"

रसूल मीर बहुत प्रसन्न हुआ। चीनी को देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। बोला—

"उमर बर्कत बड़ी मां, खुदा आप को सौ वर्ष जीता रखे। ले लो रहमान, देख क्या रहे हो, ले लो न इसे।"

इस प्रकार के व्यवहार ने बड़ी माँ को न केवल हिन्दुओं में बल्कि मुस्लमानों में भी विख्यात कर दिया था। उसकी बहुएं घर के छोटे-मोटे काम करतीं, कभी चावल चुनने हुये या सब्ज़ी साफ करनी हुई, इसके अतिरिक्त और किसी कार्य में दिलचस्पी नहीं लेती थीं। उनके पति क्या लाते हैं, क्या व्यय करते हैं, यह बातें उन्हें ज्ञात न थीं। उन्हें महीने के आरम्भ में अपने खर्च के लिये कुछ मिल जाता, जिसे पाकर वह प्रसन्न तथा शान्त रहतीं। वह अपने को बच्चों में लगाये रखतीं। खाना आदि बनाना नौकरों के जिम्मे था, इसलिए कभी उन्हें घर की बागडोर संभालने की आवश्यकता न हुई। घर मज़े में चलता रहा, उनके पास सब कुछ था। उन्हें और चाहिए क्या था। अलग छोटा सा घर बसा लेना उन्हें स्वप्न के सिवा और कुछ भी प्रतीत न होता था। बड़ी बहू का नाम सोमावती था और छोटी का नाम सौभाग्यवती। सोमावती की दो लड़कियाँ थीं। सुष्मा और शशि। सौभाग्यवती के दो लड़के थे। नारायण और विष्णु।

घर के इस वातावरण में रहकर यह सब बच्चे भाई, बहिनों की तरह रहते थे। अब यह बड़े हो गये थे। सुष्मा बहुत सुन्दर थी। उसने अपने ही घर में मैट्रिक पास किया था। समस्या यह थी कि वह कालेज जाये या नहीं। बड़ी माँ की इच्छा घर में ही पढ़ाने की थी। परन्तु सुष्मा कालेज जाना चाहती थी। नयी ज़िन्दगी का अनुभव करना चाहती थी। एक दिन उससे रहा न गया और कह ही बैठी।

"बड़ी माँ, मैं कालेज जाना चाहती हूँ।"

"क्यों, घर में पढ़ाई नहीं हो पाती है क्या? आज तक हमारे खानदान की कोई लड़की घर से बाहर पढ़ने नहीं गई।"

"आज तक तो मैं भी घर ही में पढ़ती रही, माँ जी, पर अब घर में पढ़ना बहुत कठिन होगा।" सुष्मा ने आग्रह करते हुए कहा।

"हम किसी लायक मास्टर की तलाश करेंगे। तुम मामूली घर की लड़की तो हो नहीं।"

"मास्टर जी क्या पढ़ायेंगे, ख़ाक। आज नहीं तो कल मुझे कालेज ही जाना पड़ेगा।" सुष्मा के मुँह पर गुस्से की रेखायें स्पष्ट थीं।

"तुम ने अपने पिता जी से पूछा है या नहीं। आजकल की लड़कियाँ तो स्वछन्द हो गई हैं। तुम ने जब तय किया ही है, तो मुझ से पूछने की क्या आवश्यकता थी ?" माँ ने डाँटते हुये कहा।

सुष्मा के नेत्रों से आँसू बहने लगे। वह दौड़ती हुई अपनी माँ के पास गई। सोमावती अपने कमरे में बैठी बच्चों के कपड़े संवार रही थी। सोमावती के हाथ में सुई और धागा था और वह किसी वस्तु को सी रही थी। सुष्मा रोते रोते आई और बोली—

"अम्मा मुझे किस लिये पढ़ाया है ? मैं अब पढ़ाई छोड़ नहीं सकती।"

"क्यों क्या हुआ ? तुम रोती क्यों हो ? किस ने कहा तुम्हें पढ़ाई बन्द करने को ?" सोमा ने प्रेम से पूछा।

"उसको तो तुम लोगों ने बिगाड़ दिया है। जो उसके मन में आये वही कुछ होना चाहिये।"

"बड़ी माँ ने कुछ कहा है, क्या ?"

"हाँ, उसी ने। और कौन कहता। जीवन भर तुम ने उसकी हाँ में हाँ मिलायी, परन्तु मैं उसकी एक भी न सुनूँगी।"

"चुप करो सुष्मा, कोई सुन लेगा तो क्या कहेगा।"

"मुझे कालेज जाना है और अवश्य जाना है। कोई मुझे रोक नहीं सकता है।"

"अच्छा समझी, कालेज जाने के लिये ही इतना झगड़ा हुआ है, क्यों ?" सोमा ने टालते हुए कहा।

"तुम्हारे लिये यह मामूली बात हो सकती है, पर मेरे लिये यह कम महत्व नहीं रखती।" सुष्मा ने दृढ़ता से कहा।

"आज शाम को पिता जी से पूछना, उन्होंने आज्ञा दी तो बात बन

गई ।" सोमावती ने सुष्मा को चुप कराने के लिये कहा ।

"सुनो अम्मा तुम मेरा पलड़ा भारी रखना, नहीं तो बात बनेगी नहीं ।"

रात को रायसाहब घर लौटे तो सुष्मा ने सब बात उन्हें बता दीं। वह सुष्मा को बहुत चाहते थे । उसकी माँग को रद्द करना उनके बस की बात नहीं थी । बोले—

"जब तुम जाना ही चाहती हो तो मेरी कोई बाधा नहीं है । मगर बेटी, तुम ने बड़ी माँ से पूछा भी है ?"

"नहीं पिताजी, मैं अब और नहीं पूछ सकती । उनसे पूछने पर तो डाँट सुननी पड़ी, अब न जाने क्या कह दें ।" सुष्मा ने प्यार भरे स्वर में कहा ।

"ज़माना बदल रहा है, वह इन बातों को क्या समझें । अच्छा तुम जाओ, मैं स्वयं ही उनसे इस बारे में बात कर लूँगा ।"

"पिताजी, आप कितने अच्छे हैं ।" कह कर सुष्मा उछलती हुई चली गई ।

रसूल मीर का घर कौल साहब के घर से कुछ दूर था । छोटा सा टूटा फूटा घर, यदि घर न कहकर झोंपड़ी कहें तो अतियुक्ति न होगी, जिसकी छत घास फूस की थी । रसूल मीर के चार बेटे थे । रहमान सबसे बड़ा लड़का था । रसूल मीर घाट से लकड़ियाँ लाकर लोगों के घरों तक पहुँचाता और उस की मज़दूरी से अपना पेट पालता था । वह लम्बे पतले कद का व्यक्ति था और उसकी स्त्री हृष्ट पुष्ट तथा देखने में बहुत सुन्दर थी । सारे बच्चे अपनी माँ को बहुत प्यार करते थे । माँ ने अपने प्रेम तथा सद्व्यवहार से इन बच्चों पर अच्छा प्रभाव डाला था । रहमान अब बड़ा हो गया था, इसलिये वह अपने बाप के साथ जाता और अपने घर की पूँजी को बढ़ाने में सहायता करता । रसूल जब बड़ी माँ के घर से आया तो खतजी से बोला—

"आज नमक वाली चाय नहीं बनेगी । रहमान, चीनी अपनी अम्मा को तो दिखा दो ।"

रहमान ने चीनी की पुड़िया माँ को दे दी।

"अरे, यह कहां से आ गई ?" खतजी का मुँह प्रसन्नता से चमक उठा।

"आती कहाँ से, भाग्यवान के घर से मिल गई। बड़ी माँ ने रहमान को दी है।"

"कितना अच्छा स्वभाव है उसका। खुदा ने दिया भी है तो देख कर ही।"

"मुफ्त में तो दी नहीं अब्बा; तुमने मज़दूरी नहीं की है क्या ?" रहमान ने चिढ़ते हुए कहा।

"की तो है, तो क्या समझते हो वह मज़दूरी के पैसे नहीं देंगे ? जो कुछ आज मिला है, वह अलग है।"

रसूल ने समझाते हुए यह कहा।

"थोड़ी सी चीनी दे दी तो क्या हो गया—इससे वह गरीब तो नहीं हो जायेंगे।"

"चुप रहो रहमान, चाँद पर थूकने से अपना ही मुँह गन्दा हो जाता है, समझे। तुमको उनके विरुद्ध ऐसी बातें करना शोभा नहीं देती हैं।" खतजी ने डाँटते हुए उसे कहा।

"बेटा, जब तुम ही ऐसी बातें करने लगोगे तो तुम्हारे भाई क्या सीखेंगे।" रसूल ने शान्ति से कहा।

"हम गरीब हैं तो क्या हम अपने मुँह सी लें। हम भी तो उन्हीं की तरह इन्सान हैं।"

"यदि उनकी तरह इन्सान होते तो वैसे ही घर में जन्म लिया होता। यह सब खुदा की बनाई हुई चीज़ है। खुदा के पास आज तक कोई लड़ने नहीं गया।" खतजी ने जोश में आकर कहा, फिर बोलीं—

"क्यों रसूल, रहमान को कल से काम पर जाना है या नहीं।"

"दुकानदार ने कहा है कि सुबह के दस बजे पहुँचना। इन बातों को छोड़ दो और कल से काम पर जाने के लिए तैयार हो जाओ।"

"काम दिल से करेगा तो सब का भला होगा।"

खतजी ने पति की बात को पक्का करते हुए कहा।

रहमान कुछ कहे बिना ही वहाँ से उठ खड़ा हुआ और खिड़की पर जा बैठा। उसका हृदय दुखित था। उसकी दृष्टि नीचे फर्श पर गई। फटी हुई चटाई जिसमें वर्षों का गंध लगा हुआ था, एक ओर मिट्टी का हुक्का पड़ा था। माँ इसी कमरे में समावार लाकर चाय बनाने लगी। वह सोचने लगा, "आखिर इतना भेद क्यों ? खुदा यदि तू है तो मुझे शक्ति दो कि मैं यह द्वयत भाव समाप्त करने में सफल रहूँ। हम में क्या कमी है प्रभु ! उनके भी दो हाथ हैं, दो पाँव हैं और हमारे भी उसी प्रकार हैं। एक अमीर है और एक गरीब, यह क्यों ? यह कहाँ का न्याय है।" उसे याद आया, बड़ी माँ का लिबास, कितना साफ सुथरा तथा कीमती था। वह सोचने लगा, "जहां हमारी यह झोंपड़ी है, वहां वह आलीशान बंगला है। वह कालीनों से सजाया गया है, और हमें यह फटी पुरानी चटाई भी नसीब नहीं। बड़ी मां के पीछे मोटे-मोटे तकिये हैं, मेरी मां के पास क्या है ? कुछ भी नहीं। मेरी अम्मा किस वस्तु में उन से कम है। बुद्धि तथा व्यवहार में काफी निपुण है। उसकी सब सुनते हैं, इज्जत करते हैं पर मेरी माँ की ओर कौन देखता है। आखिर उन के पास क्या है ? पैसा, यही सब से बड़ा शक्तिशाली है। काश, मैं भी खूब पैसा बना पाता, परन्तु कैसे ? हा, हा, हा, हा, ।" रहमान की विचित्र हँसी ने रसूल और खतजी को उस ओर आकर्षित किया। खतजी बोली —

"पागलों की तरह क्यों अपने आप यूं हँस रहे हो। उठो, अपना प्याला धो के ले आओ, चाय तैयार है।" खतजी रसूल मीर के पास गई जो कि हुक्का पी रहा था, बोली—

"बहुत पी चुके, मुझे भी पी लेने दोगे या नहीं ? उठो चाय प्यालों में डाल दो।" और हुक्का उस से छीन कर स्वयं पीने लगी।

दूसरे दिन से रहमान ने दुकान पर काम करना आरम्भ किया। दुकाम काफी बड़ी थी, जहां सब प्रकार के खाद्य पदार्थ मिलते थे। यही दाल, चावल, चीनी, चाय, मसाले इत्यादि। इस दुकान पर एक और नौकर था, जिस का नाम मोतीलाल था। दोनों अपना अपना कार्य ईमानदारी से करते थे। सारा दिन मापने तथा तौलने में बीत जाता था। दोनों हृष्ट पुष्ट युवक थे। प्रतिदिन की मुलाकात ने दोनों को एक दूसरे के निकट ला दिया। पहले मित्र तथा फिर घनिष्ट मित्र बन गये। एक दिन रहमान ने पूछा—

"क्यों भई मोती, तुम्हारे घर में कौन कौन है ?"

"मां है, बाप है और एक बहिन है।"

"यह तो कहो कि तुम ने पढ़ा कहाँ तक है ?"

"F. A. पास कर चुका हूँ परन्तु इस से आगे पढ़ना कठिन है। कहो तुम ने कितना पढ़ा है ?"

"मैंने तो इतना नहीं पढ़ा है। यही पांच, छः श्रेणी पढ़ ली कि बाप ने कुछ कमाने के लिए जोर लगाया।"

"वह बेचारे भी तो विवश हैं। क्या करे सकते हैं। नस नस में निर्धनता समा गई है।" मोती ने आह भरते हुए कहा।

"मगर यार, तुम ने इतना पढ़कर छोड़ दिया, यह बहुत बुरा किया। मुझे बहुत दुःख है।" रहमान ने दुःख प्रकट करते हुए कहा।

"पढ़ना आज कल के संसार में आसान नहीं है यार, जिस की गांठ में चार पैसे हैं वही सब कुछ है। वह संसार भर की विभूति खरीद सकता है, असंभव को सम्भव बना सकता है। मैं क्या हैसियत रखता हूँ। बाप मामूली चपरासी है। मां है, बहिन है, सिर पर बुढ़िया दादी है, चाचा चाचियाँ हैं। इतने बड़े घर को चलाने के लिए कमाऊ हाथ जितने हों उतने कम हैं। दिल का अरमान कुछ और था, चाहता था कि Politics में भाग लूं, परन्तु फिर वही पैसे के चक्कर में फंस गया। अरमान, अरमान बन कर ही रह गए। और मैं यही चाहता हूँ कि मेरी सब भावनायें दब जायें, और मुझे पूरी आशा है कि कभी न कभी अवश्य दब जायेंगी।" मोती ने अपने हाथों को दबा कर यह सब कह दिया।

"तुम ने तो मेरे दिल की बातें चुरा ली हैं। मगर मैं तुम से सहमत नहीं हूं कि हमें अपने दिल के अरमान दबाने चाहियें। तुम को दुखित नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि हमारे भी दिन निकट आ रहे हैं। तब हम संसार को यह दिखा देंगे कि हम कौन हैं।" रहमान ने मोती का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"प्रभु करे तुम्हारी बातें सच निकलें, परन्तु मुझे लगता है कि हम जहाँ हैं वहीं रहेंगे। इस जन्म में तो कोई आशा नहीं है अच्छे दिन देखने की।"

"एक बात पूछूं मोती लाल, तुम्हारी शादी हुई है क्या ?" रहमान ने बात बदलते हुए कहा ।

"इधर अपने को पालना कठिन हो गया है, बीवी को लेकर क्या करूंगा । तुम्हारा विवाह हुआ होगा, क्यों ?"

"सगाई हो गई है । शायद व्याह भी शीघ्र ही होगा ।" रहमान ने शर्माते हुए कहा ।

"तब तो खूब दावत होगी । मैं अभी से अपने दांत साफ कर के रखूंगा । देखो, हमें भूलना नहीं ।"

"तुम को मैं कभी भुला नहीं सकूंगा दोस्त ।"

मोती लाल का घर ज़ैना कदल की एक गंदी गली में था। जितने भी घर इस गली में थे, सब लोग घर की गंदगी को ऊपर से नीचे फेंक देते थे। इससे गली के दोनों ओर गंदगी के ढेर से लग गये थे। कितने ही घर ऐसे थे जिन में मल मूत्र का स्थान न था। इसलिए वह गली सब से बड़ा मल मूत्र का स्थान बन चुकी थी। इस मुहल्ले में रहने वालों का ध्यान कभी उसे साफ करने की ओर गया ही नहीं। अपरिचित व्यक्ति को ऐसी गलियां नर्क नजर आतीं। मोती लाल दुकान से सीधा अपने घर की ओर चला गया। संध्या का समय था, सब घरों में बत्तियाँ जल रही थीं। बत्तियाँ तो जल रही थीं, परन्तु रोशनी गायब थी। सब बत्तियाँ गए गुजरे दीयों की भांति टिमटिमा रही थीं। यह रोशनी मुश्किल से राही को रास्ता दिखा सकती थी। परिचित व्यक्ति ही सुगमता से गली में चल सकता था। मोती लाल इसी गली से जा रहा था कि किसी स्त्री ने ऊपर से गर्म पिच (उबले चावलों से निकला हुआ पानी) का मटका उंड़ेल दिया। मोती लाल के सारे कपड़े भीग गए और वह सिर से पाँव तक पिच से लतपत था। उसके मुंह से एक चीख निकल गई, वह चिल्लाया—

"आप की आँखें नहीं है क्या ?"

"आँखें तो तुम्हारी नहीं है। देख के क्यों नहीं चलते।"

"तुम इतनी तेज़ क्यों हो रही हो। एक तो पिच उंड़ेल दिया इस पर भी

ऐसे बोल रही हो जैसे तुमने कुछ किया ही नहीं। तुम जैसी स्त्री को तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये।" मोती का शरीर मारे गुस्से के कांप रहा था।

"चुल्लू भर पानी में मरो तुम और तुम्हारा परिवार। शर्म नहीं आती है इस प्रकार मुँह से बातें निकालते।" स्त्री तनक कर बोली।

दोनों की आवाज़ से गली के मकानों में से लोग खिड़कियां खोल खोलकर इस झगड़े को बड़ी तनमयता से देख रहे थे। स्त्री के पीछे उस का पति आया जो कह रहा था—

"क्या बात है ? तुम लड़ क्यों रहे हो ? क्यों मोतीलाल, आखिर बात क्या है ?"

"तुम इसे मोतीलाल कहते हो, यह तो पूरा गुँडा है गुँडा। खूब गालियां दे रहा था मुझे। शर्म नहीं आई इसे इतनी बड़ी स्त्री को अपशब्द कहते।" स्त्री पति से गरज कर बोली।

"कौन कहता है कि तुम मुझे मोतीलाल के नाम से पुकारो। तुम मुझे गुँडा कहती हो, कब मैंने तुम्हारी बहु, बेटियों की चोरी की है। एक तो ऊपर से पिच डाल दी, उस पर मुझे ही रोब जमाने बैठ गई।" मोती गुस्से के मारे अपने दाँत पीस रहा था।

उस स्त्री का पति ज़रा समझदार था, बात बढ़ने के डर से वह बड़ी नम्रता से बोला,

"माफ करना मोतीलाल, अनजान में यह सब कुछ हुआ होगा, इसने जानबूझ कर फेंका नहीं था।"

"मैं कब कहता हूँ इस ने जानबूझ कर फेंका था। परन्तु फेंका इसी ने था और उल्टे मुझे बहुत कुछ सुनना पड़ा।"

"छोड़ो इस बात को, ऊपर आ जाओ और नहा धो लो। क्यों ठीक है ना ?" आदमी ने आग्रह से कहा।

"धन्यवाद, मैं घर ही नहा लूँगा।" कह कर वह अपने घर की ओर लम्बे लम्बे डग भरने लगा। चलते चलते वह सोचने लगा—

"उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। क्या कहा इसे मैंने जो यह इस प्रकार

बोलने लग गई। गुंडा मैं ! न जाने क्या समझ कर वह ऐसा बोल बैठी थी। इसकी लड़की वाकई सुन्दर है। इस चुड़ेल के सामने ही उसे······। छोड़ो, यह भी बदला लेने की कोई बात है। मगर रामजू कितना भला मानस है। स्त्री ने गलती की, और माफी वह माँग बैठा। चलो दोनों में से एक ने तो मेरे सामने सिर झुका ही दिया। कितनी मुँह फट है यह स्त्री। पिच डाल दिया, जैसे कुछ किया ही नहीं। आखिर यह लोग इस प्रकार गन्द खिड़कियों से बाहर क्यों फेंक देते हैं ?" इन्हीं विचारों को दुहराते उसे स्मरण आया अपना घर।

"छोटे छोटे तीन कमरे, उसी में तीन पूरी गृहस्थियाँ रहती थीं। स्नान घर नहीं, पाखाना नहीं, रसोई में नल नहीं, नाली नहीं। स्त्रियाँ करें भी तो क्या। खिड़कियों से न फेंके तो कहाँ जायें। घर में छोटा सा तो आँगन है, और वह भी कीचड़, गन्द से भरा है। मैंने गली और आंगन को कभी सूखते देखा ही नहीं। यह सब हमें कितनी देर सहना है। इसे भी क्या जीवन कहते हैं ? यह तो नर्क है नर्क। कश्मीर स्वर्ग है धनी लोगों के लिए या जो बाहर से इसकी सुन्दरता को देखने आते हैं। उन्हें कश्मीर को चीर कर देखने का अवकाश कहां, जहाँ रेंगते हुए नर्क के कीड़े बसते हैं, कंकाल रहते हैं, भूख से तड़पते बच्चे बसते हैं, जिन्हें दूध नहीं मिलता है, भर पेट खाना नसीब नहीं। माँ दूध पिलाये तो कैसे ? जिस के स्तन काठ की भान्ति सूखें होते हैं।" उसे चारों ओर दरिद्रता दिखाई दी। उसे याद आया, जब वह और रहमान एक दिन झील डल की ओर सैर करने गये थे। वह अपने आप ही हँसने लगा "हा—हा—हा—हा। समुद्र में रह कर भी हम पानी से कोसों दूर हैं। डल झील, यह पर्वत, यह फिज़ा, यह चिनार, संगरमाल, और यह शगूफा, संज़रफुलय सब एक कहानी बन गई हैं। हमारे घरों की स्त्रियों, बच्चों तथा बूढ़ों के लिए यह एक स्वप्न है। दलदल, कीचड़ और गंद के अतिरिक्त और है ही क्या। कैसे वह मेम साहब झील डल में स्नान कर रहे थे, धूप सेक रहे थे। जब वह तैर रही थी तो बिल्कुल जलपरी के समान लग रही थी। कितनी गोरी कितनी लाल और हृष्ट पुष्ट थी वह ! काश, हम भी यह सब कुछ कर सकते। उस दिन क्या हो रहा था, जब मैं घर लौट रहा था। ज़ीने का द्वार बन्द था।"

"खट, खट, खट"

"कौन है ?" अन्दर से एक मधुर आवाज़ आई।

"मैं हूँ मोती, शीला। तुम द्वार क्यों नहीं खोलती हो।"

"ज़रा पाँच मिनट रुक जाना भैया, मैं नहा रही हूँ।"

शीला ने पानी का एक और लोटा अपने ऊपर डालते हुये कहा।

"नहाने की इतनी जल्दी क्या थी ? हम सब ऊपर जाते तब नहा लेती।" मोती ने चिड़ते हुये कहा।

"तुम्हारी अभी तक प्रतीक्षा की, जब नहीं आये तो माँ ने नहा लेने को कहा।"

तब उसे दुःख हुआ था, सारा पानी बेकाबू नीचे की ओर जा रहा था, सीढ़ियों और आँगन को धोते हुये। उसने आह भर ली। यह भी संसार का एक नमूना था। स्नान घर का काम घर की सीढ़ियाँ ही देती थीं। उसने सोचा, "शीला कितनी सुन्दर है। परन्तु मैंने उसे कभी अच्छे सुन्दर कपड़ों में देखा नहीं है। सदा वही नसवारी छींट की कमीज़ और सलवार पहने देखा है। काश मैं कभी इसके लिये एक नई कमीज़ ला सकता, परन्तु पैसे मिलने से पहले ही घर में अन्य कई प्रकार के खर्च निकल आते हैं।" इन्हीं विचारों को दुहराते वह अपने घर पहुँच गया। अन्दर जाकर अपनी माँ से बोला,

"माँ, मेरे लिए गर्म पानी रख दो, मैं भी नहाना चाहता हूँ।"

"नहाना है, इतनी जल्दी ?" माँ ने आश्चर्य से कहा, "अभी तो एक ही सप्ताह हुआ नहाये को।"

"नहीं माँ, मैं अपनी खुशी से नहाने नहीं जा रहा, सारे कपड़े भीग गये हैं।" मोती के तेवर बदले हुए थे, और उसके स्वर में चिढ़चिढ़ापन था।

"भीग गये तो कपड़े सुखा लो, आज गर्म पानी नहीं मिलेगा, लकड़ी बहुत कम हैं।" माँ ने दृढ़ता से यह कहा।

"यहाँ कभी लकड़ी नहीं होती है। कभी यह सुना नहीं कि सब वस्तुयें बराबर हैं।" मोती ने दुखी होकर कहा।

"अभी तो एक ही मास हुआ कमाते। तुम्हारे तो मिज़ाज ही बदल गये हैं, जैसे सदा तुम ही घर को चलाते थे।" माँ का क्रोध भड़क उठा था।

"मैंने कब कहा कि मैं घर चला रहा था। एक जग पानी क्या माँगा कि ज़मीन आसमान एक कर दिया। मेरे ऊपर रामजू की बीवी ने पिच फेंक

दिया है। मुझे पानी नहीं चाहिए। सब डूब मरो, तुम सब ने मेरी नाक में दम कर रखा है।" यह कह कर मोतीलाल आँगन के एक नल पर गया, जिसे सात आठ घर इस्तेमाल कर रहे थे। इसने ठंडे पानी से अपने को खूब साफ किया। उसे इस तरह नहाते देख अन्य घरों की युवतियाँ खूब हँस रही थीं।

मोती लाल का पिता एक दफ्तर में चपरासी था। उसका नाम प्रेम नाथ था और मां को सब शोभावती के नाम से जानते थे। एक बहिन थी जिस का नाम शीला था। मोती लाल अपनी बहिन को बहुत चाहता था, सदा अपने मस्तिष्क के भाव उस पर प्रगट करता था। उसके दिल की बातें पूछता और अपने राज उस पर जाहिर करता। शीला भी अपने भाई को बहुत मानती थी, और वह अपने भाई को प्रसन्न रखने का सदा प्रयत्न करती। उसे पता था कि उस का भाई और लड़कों से भिन्न है और यही कारण था कि शीला सदा भाई के हृदय के बोल सुनती। कभी कभी मोती पूछता—

"सच बताना शीला, तुम्हारा कभी अच्छे कपड़े पहनने का मन नहीं चाहता?"

"दिल क्यों नहीं करता भैया, परन्तु मुझे पता है कि हम लोगों को यह शौक, यह चाहत भाती नहीं।"

"मगर क्यों?"

"मां तो ऐसा ही कहती है।"

"किसी वस्तु को चाहना पाप नहीं। उसको पाने के लिए प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य है। अपने हक को पाना अनौचित्य कार्य तो नहीं है। न जाने मां के दिमाग में यह फितूर किस ने भरा है? वह हम को पूरा गधा समझती है गधा।" इस प्रकार का उत्तर सुन कर शीला दुखित होती और कहती—

"यदि मां ऐसा समझती भी है तो इस में उसका दोष तो नहीं। हम गरीब अवश्य हैं। पर गरीबी मां ने नहीं लायी। उसी को देखो, वर्षों पुरानों जूतों से जो कि एक दम गया गुजरा है काम चलाती है, और वह जूता पहले पिता जी भी पहन चुके हैं। जब वह स्वयं इस तरह अपना काम चलाये तो सीधी बात है कि वह चाहती है कि हम भी वही कुछ सहें और

करें जो हमारे पूर्वज करते आये हैं। इस में हम किसी को दोषी नहीं ठहरा सकते।" इस तरह के उत्तर से सदा वह मोती को चुप कराती और अपने मां बाप की ओर सहानुभूति प्रगट करती।

सुष्मा ने कालेज जाना शुरू कर दिया। बड़ी मां ने जब देखा कि कौल साहब अपनी लड़की को कालेज भेजने के हक में हैं तो हां कहने में ही अपनी खैर समझी, बोली—

"देखो बेटा, हमारे समय में और आज के जमाने में कितना अन्तर है। तब लड़कियों को इस तरह की आजादी न थी। और मुझे लगता है कि हमारा समय ही ठीक था।"

"सो तो है ही बड़ी मां परन्तु हमें समय के साथ बदलना भी चाहिए, उसी में हमारी भलाई है।" त्रिलोकी नाथ के इस उत्तर से बड़ी माँ खामोश हो गई।

सुष्मा को एक नए संसार का ज्ञान हुआ। उस की कई नई सखियां बन गईं जिनमें गरीब भी थीं और अमीर भी। इन्हीं दिनों श्रीनगर में एक कांग्रेस बनी थी। सब नवयुवक और युवतियाँ उस ओर आकर्षित हो रहे थे। सुष्मा भी इस से दूर न रह सकी। धीरे धीरे उसका ध्यान भी पोलिटिक्स की ओर खिंच गया और वह इस में काफी दिलचस्पी लेने लगी और इस कांग्रेस में एक नई उमंग एक नई तरंग थी। हिन्दू मुसलमान सिक्ख ईसाई का नारा सब अपनाने लगे। हिन्दू मुसलमान सब इस ओर झुकने लगे। घर घर में यही चर्चा थी। गली गली में एक ही नारा था। लोग अपने हाथों में सरकारी बागडोर लेना चाहते थे। सब अपने हक को जान गए थे। सहस्र वर्षों की गुलामी से वह तंग आ गए थे। किस तरह सामन्त वर्ग ने गरीबों का गला घोंटा था, यह उन से छिपा न था। परन्तु अब समय परिवर्तित हो रहा था होंसला बढ़ चुका था। उनकी सहन शक्ति का अंत हो गया था। उन के सिर एक बार ऊपर उठ रहे थे। सदियों की कड़ियां टूट रही

थीं। बच्चों, बूढ़ों की नींद टूट रही थी। हर एक व्यक्ति को एक ही धुन सवार थी, एक ही प्रश्न होठों पर था। एक ही चाह एक ही अरमान दिल में था। सब कह रहे थे, "अब हमें राजा की आवश्यकता नहीं। हम अपने भाग्य के स्वयं मालिक हैं। हमें अपनी निर्धनता को दूर करना है। जब हमारा राज्य होगा तो कोई खाने के लिए नहीं तरसेगा कोई किसी के सामने हाथ नहीं फैलायेगा, कोई नंगा न रहेगा। सब को अपना हक मिलेगा, सब भाई भाई की तरह रहेंगे।"

यह खबर घर घर में फैल गई। निर्धन वर्ग तृष्क चातक की भांति आशा लगाए उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे। अमीर लोग घबराहट से अन्दर ही अन्दर सिमटने लगे। "न जाने कल क्या होगा।" यही एक प्रश्न उनके दिलों में तूफान मचा रहे थे। उनके घरों की दीवारें हिलने लगीं। उन के दिलों में भय, आशंका तथा घोर निराशा ने वास किया। यह भवन, यह अट्टालिकायें, यह शान और शौकत सब एक स्वप्न सा दिखने लगा। कब यह सारा आडंबर तथा सदियों की बनाई हुई इज्जत जिसे बड़े सबर से सींचा था गिर जाये? एक भय हर समय, हर घड़ी सताने लगा। वह सोचते, "यदि अमीर गरीब एक समान हो गए तो क्या होगा? प्रलय आ जाएगी। राजा के न रहने से भय, इज्जत तथा डर सब समाप्त हो जाएगा। मजदूर लोग न जाने क्या-क्या मनमानी कर बैठेंगे। पूरा कलयुग होगा कलयुग। लेल्लीश्वरी का कहना ठीक ही था, "जब नदियाँ सूख जायेंगी तो नाले गरजने लगेंगे, तब क्या होगा? तब तो बन्दरों का राज्य होगा।" यह कहावत, अब कहावत न रही बल्कि सचाई में बदल गई।

जगह जगह पर लोगों की मंडलियां बननी शुरू हो गईं। मुहल्ले मुहल्ले में कांग्रेस का एक एक ब्रांच खुलने लगा। षडयन्त्र चलने शुरू हुए और इस आन्दोलन में हर तरह के लोग यानि पढ़े लिखे अनाड़ी अनपढ़ जवान बूढ़े सब भाग लेने लगे। चारों ओर लीडरों की भरमार शुरू हुई। जिस की वाणी में ओजरस था, जोश था, वही लीडर बन बैठा। सब अपना अपना कार्य छोड़ कर कांग्रेस में भरती हुये। इस में कई युवतियों ने भी भाग लिया। सुष्मा के ऊपर भी इसका प्रभाव पड़ा, परन्तु उसके घर वालों को इस बात का कोई पता न चला।

इधर सरकार को इस गड़बड़ का पता चला, उस ने जनता को दबाने का आदेश दिया। कई स्थानों पर छापे मारे गए। लोगों पर लाठी चार्ज किया गया। टोलियों की टोलियों को तितर बितर किया गया। कई लीडरों को जेल भिजवा दिया गया। मगर इस के बावजूद जनता दब न सकी बल्कि लोगों के जज़बात भड़क उठे। चारों तरफ भयानक वातावरण था। लोगों ने राजा से बदला लेने की कसम खाई, नतीजा यह हुआ कि कई और नौजवान कांग्रेस में शामिल हो गए। रहमान तथा मोती इन्कलाबी कौंसिल में भाग लेने लगे। वह दोनों घर घर जा कर प्रचार करते। उन्हें आने वाले सुनहरे दिनों के गीत सुनाते और उन को साथ देने के लिए तैयार करते। बच्चा बच्चा उन दोनों को अपना लीडर समझने लगा। गली गली में उनके नाम जपने लगे।

एक दिन जब दोनों दुकान पर गये तो उनका मालिक बोला—

"देखो भाई, तुम दोनों आजकल बहुत मनमानी करते हो। समय पर नहीं आओगे तो मैं पूरा वेतन नहीं दूँगा।"

"आप को पता ही होगा कि जनता में आजकल कितनी खुलबुली मची है। इस हालत में हमारा यहां समय पर पहुँचना बहुत कठिन है।" रहमान ने नम्रता से कहा।

"जनता चूल्हे में जाये या जहन्नुम में। मुझे उससे कोई वास्ता नहीं है। मुझे अपने काम से गरज़ है, इसमें चाहे तुमको तकलीफ ही क्यों न हो।" दुकान-दार ने गरज कर कहा।

"मगर आप भी तो उनमें से एक हैं। आपके न मानने से कोई फर्क नहीं पड़ता।" मोती ने चिढ़ते हुए कहा।

"चुप करो मोती, आजकल तुम दोनों को बहुत मस्ती चढ़ गई है। मुझे सब मालूम है, तुम दोनों लोगों को विद्रोह के लिये उकसा रहे हो, उन्हें भड़का रहे हो। तुम तो देश द्रोही हो, समझे।" दुकानदार ने कड़क कर कहा।

"देश द्रोही हम नहीं सेठ जी, आप हैं आप, जिन्होंने गरीबों का खून चूस चूस कर यह धन इकट्ठा किया है। अब तक लोग चुप थे, मगर अब हम चुप नहीं रह सकते। गधों की तरह हम से काम लेते रहे, बदले में देते क्या थे?

महीने के सात रुपये। यह सब कुछ अब नहीं चलेगा। और हाँ एक दिन आप को यह सब छोड़ना पड़ेगा।"

रहमान का गुस्सा आपे से बाहर हो चुका था।

"चुप रहो हरामज़ादे, आज मुझे सबक देने आया है। शर्म नहीं आती ऐसी बातें करते। तुम राज्य को उलटोगे। हां—हां। छोकरे, अपना मुँह कभी शीशे में देखा भी है या नहीं। कम्बख्त मुझ से तकरार करने आया है। मैं अभी दोनों को पुलिस के हवाले कर दूँगा। तब छटी का दूध याद आ जायेगा।"

"आप हमको पुलिस की धमकियों से खरीद नहीं सकते। जो कुछ हम कहते हैं वह होकर रहेगा। हम स्वयं ही पुलिस के पास जायेंगे, वह हमारा बाल भी बाँका नहीं कर सकती।"

"चले जाओ यहाँ से। कल से तुमको इस दुकान से छुट्टी है। अगर तुम को भूखे मरते न देखूँ तो मेरा नाम मोहम्मद वानी नहीं, समझे।"

"पिछले मास का वेतन हमें दे दीजिये।" दोनों ने एक साथ कहा।

"तुम पिछले मास बहुत देर से आते रहे हो, इसलिए केवल साढ़े तीन-तीन रुपये मिलेंगे।"

"देर से आने पर आप सारे महीने का वेतन तो नहीं काट सकते? पूरे पैसे लिये बिना हम यहाँ से जायेंगे नहीं।"

दुकानदार उठा, दोनों को बराबर पैसे देकर रवाना कर दिया। उसने इसी में अपनी खैर समझी। सोचा, "कहीं ताना, तूनी हो गई तो बात बहुत बढ़ जायेगी। सब लोग इन गुंडों की सहायता के लिये आयेंगे।"

वहाँ से निकल कर दोनों दोस्त सीधे कांग्रेस की ओर लपके। आज दोनों ने पहली बार सुख की साँस ली। इस दुकान से छुटकारा मिल गया, सिर से बला टली। घर की निर्धनता के कारण दुकान से छुटकारा पाना आसान न था। क्या कहेंगे घर वाले? परन्तु अब समस्या उलटी थी। नौकरी छोड़ी नहीं गई थी, छुड़वाई गई थी। दोनों इसी सोच में डूबे थे कि मोती बोला—

"आज शायद घर में खाना ही न मिले, मुझे समझ में नहीं आता है कि माँ को क्या कहूँ?"

"वाह शेर, बस डर गये? नौकरी ही चली गई, शुक्र है जान नहीं गई। मैं तो इस नौकरी से तंग आ गया था। परन्तु घर के डर के कारण मैं

स्वयं कुछ भी न कर पाया। तुम्हें खाना नहीं मिलेगा, तो क्या समझते हो मुझे मिलेगा ? परन्तु यार हमें अपना दिल छोटा नहीं करना चाहिए। अभी तो हमारी क्रान्ति आरम्भ ही हुई है।" रहमान ने मोती को कहा।

"बाहर की क्रान्ति के लिये मैं सदा तैयार हूँ, परन्तु घर की क्रान्ति के लिए मैं बिल्कुल तैयार नहीं। न जाने आज वहाँ कितना कोहराम मच जाये। मुझे बहुत डर लग रहा है।" मोती ने दुखित हो कर कहा।

"सो तो है ही, परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि हम अपने कार्य में सफल होंगे। तब देखना कौन हमारे तलवे नहीं चाटेगा।" रहमान ने दृढ़ता से कहा।

"मुझे डर है कि कहीं हम इस आन्दोलन में कुचले न जायें।" मोती ने निराशा से कहा।

"देखो मोती, तब तक मेरा नाम रहमान नहीं जब तक मैं इन रईसों, मोटर, ताँगों में चढ़ने वाले लोगों, जो शानदार महलों में रहते हैं अपने और तुम्हारे तलवे चाटते न देखूँ। याद रखना मुझे लगता है कि अब गरीबों की दुनियां बसेगी। हमारे तुम्हारे स्वप्नों की नींव डलेगी। इन अमीरों ने काफी कुछ देखा है। अब हमारी बारी है।" रहमान ने अपना हाथ मोती के हाथ पर मारते हुए कहा।

इतने में दोनों एक गली में पहुँचे। वहाँ एक टूटा फूटा मकान था, जिस के ऊपर जाने के लिए तंग और टेढ़ी सीढ़ी थी। दोनों ऊपर चले गये। वहाँ कई लोग आपस में बातें कर रहे थे। दोनों को देख कर सब ने एक दूसरे को नमस्कार किया। इस महफिल में कई नामवर गुंडे भी थे, जिन को वर्षों से गुंडों का उपनाम मिला था। रास्ते में जहां भी झगड़ा होता वह लोग एक पार्टी को मार पीट कर दूसरी पार्टी से पैसा वसूल करते और उन्हें वहाँ से भगा देते। रास्ते में चलने वाली युवतियों को तंग करना इनका सब से अधिक मनोरंजन था। इन लोगों ने कई बार जेल की सैर की थी, इसलिए जेल इन के लिए खाला जी के घर के अतिरिक्त और कुछ भी न था। जब सारे नगर में आँदोलन हुआ तो यह लोग सब से आगे अपना सीना ताने निकल पड़े। इन में एक का नाम था करीम, दूसरे का नाम शाबान और तीसरे का नाम नूरुद्दीन था। आँदोलन के लिए ऐसे लोगों की बहुत आवश्यकता रहती है। यह तीनों लोगों को बहका भड़का कर अपनी ओर करने

लगे। मोती और रहमान को प्रतिदिन आते देख उन के घनिष्ठ मित्र बन बैठा। आज इन दोस्तों ने फैसला किया कि दूसरे दिन लोगों को बुलाकर शहर में एक भारी जलूस निकाला जाये, और लाल चौक में पहुँच कर खूब जोश से सब लीडर अपने विचार लोगों पर प्रगट करें। इस प्रकार उस दिन की मीटिंग समाप्त हो गई।

जब रहमान ने अपने पिता रसूल मीर को बताया कि उसे नौकरी से निकाला गया है तो बाप का गुस्सा आपे से बाहर हो गया—

"अब क्या खाओगे, अपना सिर। मुझे सब मालूम है। बहाना बना कर दुकान से घंटों लापता हो जाते थे। तुम गुंडों में बैठ कर पूरे गुंडे बन गए। क्या इसी दिन के लिए पैदा किया था तुझे ?"

"अब्बा, मैं गुंडागर्दी नहीं करता हूँ, अपना हक माँग रहा हूँ, जो हमारा जन्मजात अधिकार है।"

"जन्मजात अधिकार है, बड़ा आया है लाट साहब। दो समय रोटी नहीं मिलती है कि अपना हक माँगने चला।" रसूल मीर ने दाँत पीस कर कहा।

"मैं पीछे कभी नहीं हट सकता। कल से मैं घर नहीं आऊंगा। इतना ही झगड़ा है न। रोटी कमाता नहीं हूँ, इसलिये खाने का भी हकदार नहीं रहा।" रहमान को काफी गुस्सा आ रहा था।

"कल से घर नहीं आयेगा, मुझे धमकी दे रहा है। गुंडा लफंगा कहीं का। तुम जन्म लेते ही मर क्यों नहीं गए। मुझे तुम जैसे बेटे की कोई आवश्यकता नहीं है। तुझे डूब मरना चाहिए कहीं जा कर। आवारों की भाँति फिरने से ही क्या तुम्हें स्वतन्त्रता मिलेगी ? तुमने शर्म का पर्दा उतार फेंका है।" यह कह कर रसूल ने गुस्से में आ कर उसे अपने हुक्के की नै से मारना शुरू किया।

मार की आवाज़ सुनकर खतजी एक दम वहां आ पहुंचीं। अपने पति के हाथ से नै छीन ली और बोली—

"इतने बड़े लड़के पर हाथ उठाते शर्म नहीं आती है। तुम तो सचमुच इसे जान से मार डालने पर उतारू हो गए हो। खबरदार, मेरे घर में कभी ऐसा हल्ला उठाया।"

"तुमने ही इसको लाड़ प्यार से बर्बाद किया है। आज गुंडों के संग घूमता फिरता है, कल डाका डालने से भी हिचकिचायेगा नहीं। तब मेरे पास आकर रोना नहीं। जब भी मैं इसे कुछ कहता हूँ, तुम झट से हमारे बीच में टपक पड़ती हो। जैसे मैं इस का शत्रु हूँ। बैठो, अपने लाडले को लेकर।" रसूल का मुंह क्रोध से लाल हो रहा था।

"तुम ठीक कहते हो, मैंने ही इसे बिगाड़ा है। चोरी चोरी मैं इसे पैसे देती हूँ, खूब दूध, दही, मक्खन खिलाती हूँ, अच्छे कपड़े पहनाती हूँ। यही बातें तुम्हें खटकती हैं न।" यह कहते कहते खतजी जोर जोर से रोने लगी और फिर बोली—

"मेरा भी दिल है, मैं भी माँ हूँ। कभी मैंने अपने बच्चों को भरपेट खिलाया नहीं। ईद के अतिरिक्त कभी नये कपड़े सिले नहीं। कभी अच्छा खाना मिला नहीं, उस पर भी तुम कहते हो कि मैंने इसे बिगाड़ दिया है। सूखा लाड़ प्यार क्या होता है। कभी तुमने मेरे हाथ में एक पैसा अधिक नहीं रखा। मुझे अपना ग़म नहीं, मगर इन मासूम बच्चों को पालना हमारा कर्तव्य नहीं है क्या ? उलटा तुम इनको मारने को सदा तैयार रहते हो। नौकरी ही तो छूटी है, और फिर स्वयं भी नहीं छोड़ी इसने।"

"चुप भी करो खतजी, तुमने तो हल्ला उठा लिया। तुम सब ठीक कहते हो, मैं ही पागल बन गया हूँ। जो दिल चाहे करो, मैं अब दोबारा कुछ भी न कहूँगा। वेशक यह आवारों की तरह फिरता रहे मुझे कोई इतराज न होगा।" रसूल ने अपने को शान्त करते हुए कहा।

उस दिन रहमान रात भर सो न सका। दूसरे दिन के मनसूबे, घर में अनबन, मोतीलाल, शाबान और नूरुद्दीन सब एक एक करके सामने आने लगे। उसे दुःख था अपनी अवस्था पर, अपनी बेबसी, लाचारी और गरीबी पर। वह करवटें बदलता रहा, उसकी आँखें अंधेरे में एक आशा की किरण को टटोल रही थीं। उसका दिमाग संसार भर का चक्कर काट रहा था।

"माँ कितनी अच्छी है। कैसे अब्बा से लड़ाई मोल ले बैठी। काश, मैं उसके लिये कुछ कर पाता। उसके तन बदन पर मैंने एक फिरन (ढीला कुर्ता, जिसे कशमीरी लोग पहनते हैं) के अतिरिक्त कभी और कुछ नहीं देखा है। उसके भी अरमान हैं। कैसे स्वयं भूखी रहकर हमारा पेट भरती है। आखिर

माँ जो ठहरी। माँ का वास्तव में बहुत बड़ा सहारा होता है। बाप के पत्थर दिल के लिए केवल माँ का प्यार काफी है। अब्बा क्यों इतना गुस्सा होता है। दस आदमी दस बातें बताते होंगे। उसका भी कोई दोष नहीं। केवल यह पैसा ही सब फसादों की जड़ है। यदि हम अमीर होते, लाख मैं नारे लगाता, गुँडों के संग घूमता फिरता कोई हमारी ओर उँगली नहीं उठा सकता था। बल्कि सब आदर सत्कार करते। नूरुद्दीन और शाबान को लोग गुँडा क्यों कहते हैं? वह कितने नरम दिल हैं, कितनी अच्छी अच्छी बातें बताते हैं। लोगों के दिमाग़ो में जो धारणायें बैठ जाती हैं, उन्हें निकालना कितना कठिन है। अब्बा भी इसी तरह बहकी बहकी बातें करता है। वह सबको गधा समझता है, यहाँ तक कि स्वयं को भी उसी वर्ग में शामिल करता है। आखिर उसने बचपन से यही कहानी सुनी है, इसे बदलना उसके लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। सदियों की गुलामी हमारी रग रग में समा गई है। कभी पठान आये, कभी मुगल, कभी तुरक, कभी सिक्ख, कभी राजपूत और अब अंग्रेज़। क्या हम में स्वयं राज्य चलाने की शक्ति नहीं? हम भी मिट्टी के मादो की तरह उनके आदेश को मानते आ रहे हैं। कठपुतलियों की तरह हम भी कम नाच नाचे नहीं हैं। हम अपने अस्तित्व को कभी जान नहीं पाये। वर्षों से हम रूखा सूखा खाने में मस्त रहे। कभी हमें किसी वस्तु को पाने की लालसा न रही। कितने ही राज्य उलटे पलटे, परन्तु हम वैसे के वैसे ही हैं। वही फटे कपड़े, वही झोंपड़ियां, वही पुलहोर (कृष के जूते), इसके अतिरिक्त हम जानते भी क्या हैं? परन्तु अब हमें लोगों को उठाना है, उन्हें घोर निन्द्रा से जगाना है गुलामी की जंजीरें सदा के लिये तोड़नी हैं। लोगों को उनका अस्तित्व जताना है। हम भी कितने मूर्ख हैं, स्वयं ही अपने वच्चों का नाम गुलाम से आरंभ करते हैं। यह नाम लेते समय हमें गर्व होता है। पर अफसोस हम वास्तविकता से कोसों दूर हैं। हमें नस नस में समायी हुई गुलामी को निकाल बाहर फेंकना है काश, हम स्वतन्त्र हो जाते? क्या कभी ऐसा भी दिन आयेगा? इन्शाअल्लाह।"
यह सोचते सोचते रहमान की आँखें बन्द हो गईं।

दूसरे दिन लाल चौक में लाखों लोग एकत्रित हो गये। रहमान पंडाल पर चला गया, लोगों ने उसे देखकर तालियां बजानी शुरू कीं। उसने अपना गला साफ किया और बोला—

"भाइयो, बहिनों,

आपको मालूम ही होगा कि हम किस लियें लड़ रहे हैं ? हमारी माँगें क्या हैं ? क्या आप में से कोई यह बता सकेगा ?"

"हम स्वतन्त्रता चाहते हैं, इसीलिये हम यहाँ इकट्ठे हुये हैं।" कइयों ने बड़े जोर से कहा।

"शाबाश, आप का कहना बिल्कुल ठीक है। हम केवल स्वतन्त्रता चाहते हैं। हम गरीबी से छुटकारा चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे भी पढ़ लिख कर बड़े आदमी बनें। हमें स्कूलों की आवश्यकता है, हमें हस्पतालों की जरूरत है, जहाँ हमारी मातायें, बहिनें तथा बच्चे बिना किसी रोक टोक के चिकित्सा करवा सकें।"

कई लोग रहमान जिन्दाबाद के नारे लगाने लगे। इन्कलाब जिन्दाबाद, आज़ादी जिन्दाबाद के नारों से वातावरण गूँज उठा। कुछ देर रुक कर रहमान ने अपना भाषण फिर से जारी किया—

"हमें रहने के लिये मकानों की आवश्यकता है। हमें अच्छा खाना चाहिए। हमें तन को ढकने के लिए साफ सुथरे कपड़ों की जरूरत है। वह कैसे आ सकते हैं ? जब तक हम गरीब रहेंगे, तब तक यह सब वस्तुयें हमारे पास नहीं आ सकतीं। हमारे पैरों में ग़ुलामी और निर्धनता की बेड़ियां पड़ी हैं। उन्हें तोड़ना है, उन्हें कुचलना है। हमें अपना फैसला स्वयं करना है। शत्रुओं को देश से निकालना है। बादशाहियत का खात्मा करना है। नये भारत में नये कश्मीर की नींव डालनी है। जहाँ कोई भूखा न रहे, नंगा न रहे। सब व्यक्ति बराबर हों। जहाँ निर्धन और धनवान में भेद न रहे। जहाँ मनुष्य, मनुष्य की तरह जी सकें। सब लोगों के बच्चे एक साथ उठें, बैठें और पढ़ें, यही हम चाहते हैं और यही हमारा उद्देश्य है।" सब लोग खड़े हो गये, ज़ोर ज़ोर से नारे लगाने लगे। चारों ओर ज़िन्दाबाद के नारों से आकाश गूँज उठा। रहमान जिन्दाबाद, काँग्रेस जिन्दाबाद, हमारे लीडर जिन्दाबाद, चिरागे कश्मीर जिन्दाबाद के नारों से पृथ्वी और आकाश एक हो गया। लोगों का शोरगुल और नारे आकाश को छूने लगे। पुलिस जो वहीं खड़ी मौके की ताक में थी, भीड़ को लाठियों से तितर बितर करने लगी। लाठियों की बौछार से चारों ओर नारे चीत्कार में बदल गये। लोग अपने अपने घरों की ओर भागने लगे। बनाये हुए पंडाल के टुकड़े टुकड़े हो गये।

रहमान और मोती पास की गली में चले गये। दोनों की सांसें फूल रही थीं। दोनों तंग गली में दम संभालने की कोशिश कर रहे थे। रहमान बोला—

"यार, कहीं लाठी की चोट तो नहीं आई? तुम को खुदा ने दुबला पतला बनाया है, एक लाठी की चोट तुम्हारे लिए काफ़ी है।"

"भगवान का शुक्र है, लाठी नहीं लगी, मगर दौड़ने से दम फूल गया है। मुझे लगता है कि मैं आगे चल नहीं सकूँगा।"

"बुज़दिल हो, इतने से ही डर गये। अभी देखा ही क्या तुमने। लगता है घर में खूब पड़ी होगी, क्यों?" रहमान ने अपना हाथ दोस्त के कंधे पर रखते हुए कहा।

मोती की दृष्टि रहमान पर जम गई। उसने ऊपर से नीचे तक उस पर नज़र दौड़ाई।

सोचा, "कितना हृष्ट पुष्ट है यह। मस्तिष्क चमक रहा है। मुँह गोरा और लाल है। नेत्रों में आशा की झलक सदा प्रतीत होती है। क़द भी मुझ से लम्बा है। यह वाकई लीडर है। कैसे आज लाखों लोगों के सम्मुख बोल रहा था। जैसे किसी ने इसे यह सब सिखा दिया था। एक एक वाक्य में मतलब था। ओज तथा जोश था। जनता इस पर लट्टू हो गई है। कितना दृढ़ स्वभाव है इसका। जो मुँह से कहता है करके दिखाता है। डर इसे छू तक नहीं गया है। बात करने का भी अनोखा ढंग है। शाबान, करीम, मक्खनलाल को एक हाथ का खिलौना बना रखा है इसने। जिनके नाम से सारा शहर घबरा उठता है उनको मित्र बना बैठा। क्या कोई इसे अनपढ़ कहेगा? कभी नहीं, कदापि नहीं। एक और बात इस में अवश्य है, दिल का बहुत साफ़ है। हृदय में दया का समुद्र भरा पड़ा है।"

"क्या सोच रहे हो यार, तुम्हें तो केवल घर की चिन्ता सताती है। क्या कहेंगे, क्या होगा। तो क्या संसार में घर के बिना और कोई समस्या नहीं है?"

"नहीं रहमान, सोच रहा था कि दिनों दिन तुम कितने लोकप्रिय बन रहे हो। आखिर तुम में इतना क्या है, जो मुझ में नहीं है।" मोती ने हँसते हुये कहा।

"तो सुनो, मुझ में वह शक्ति है जो तुम में नहीं है। मैं किसी से डरता नहीं हूँ, जो कार्य हाथों में लिया उसे अधूरा छोड़ना मेरा असूल नहीं है। तुम सोचते होगे कि मेरे घर में अनबन नहीं होती होगी। कल अब्बा मुझे पीटने पर उतर आया। मुशकिल से अपनी जान छुड़वाई। खाने को जो कुछ मिलता है, वही गनीमत समझता हूँ। बाप तो मुझे आवारा, लफंगा, गुंडा समझता है। मैं सोचता हूँ, जब नाम पड़ गया तो बाकी रह ही क्या गया। डरना भी किस काम का।"

बातों बातों में मोती के घर की गली आ गई। दोनों वहाँ रुक गये। मोती बोला—

"चलो रहमान, आज मेरे घर चलो। तुम्हें अपनी माँ और बहिन से मिला दूँ। क्यों क्या विचार है?"

"नहीं यार, मुझे इस समय घर ही लौटना चाहिए। न जाने क्या समाचार मिला होगा वहाँ। आज खैर नहीं है।" रहमान ने मजबूरी जताते हुये कहा।

"अच्छा तो फिर मैं चलता हूँ, कल क्या इसी स्थान पर मिलोगे?"

"दिन के पूरे दो बजे तुम मुझे ज़ैना कदल (पुल) पर मिलना, फिर वहाँ से इकट्ठे चलेंगे।"

"तो फिर तुम सीधे मेरे ही घर क्यों नहीं आ जाते? वहाँ से साथ साथ चलेंगे।"

"ठीक है, मैं अवश्य आ जाऊँगा। अच्छा सलाम।"

"नमस्कार।" इस पर दोनों हँस दिये और रहमान लम्बे लम्बे डग भरता हुआ आगे बढ़ गया।

बड़ी माँ के घर में आज खूब रौनक थी। आज त्रिलोकीनाथ का जन्मोत्सव था। काफी लोग वहाँ आये हुए थे। जो कोई भी आता कौल साहब के हाथ में तोहफा थमा देता। सब मेहमान आकर उन्हें बधाई दे रहे थे। कौल साहब बड़े अदब से सब का धन्यवाद कर रहे थे। बड़ी माँ का आज प्रसन्नता से मुँह चमक रहा था। इधर उधर दौड़ धूप करना, नौकरों को आदेश देना जिस की वह वर्षों से आदी थीं। वह रसोई घर में गईं, देखा वहाँ सब पदार्थ तैयार थे। सब नौकर अपने अपने कार्य में लगे थे। कोई खीर बना रहा था तो कोई रोगनजोश, कोई यखनी बनाने में जुटा था। बड़ी माँ को आते देख एक नौकर बोला, "बड़ी माँ, देखिये तो सालन कैसा बन पाया है ?"

"हाँ, हाँ अवश्य दिखा दो। यदि उम्दा बन पाया होगा तो तुम्हें इनाम मिलेगा।" नौकर ने एक कटोरे में थोड़ा सा सालन डालकर बड़ी माँ की ओर बढ़ा दिया। फिर बोला—

"कैसा है बड़ी माँ ?" उसने प्रतीक्षा करते हुए पूछा।

"बहुत अच्छा, बहुत स्वादिष्ट बना है। भावी वर्ष शुभ कामनायें लेकर आयेगा।" यह कहकर उसने अपने फिरन की जेब में से पाँच रुपये का नोट निकाला और कहा—

"यह लो तुम्हारा इनाम।"

"प्रभु आपको और अधिक दे। आपकी लम्बी आयु हो।" नौकर शिवराम ने प्रसन्न होकर कहा।

बड़ी माँ वटू (दिन में बैठने का कमरा) की ओर चली गईं। वहाँ पुरोहितों को देखकर बोलीं—

"आप लोग ठीक समय पर आ गये, पूजा की हर एक सामग्री पहले ही तैयार रखी है।"

"बधाई हो इस दिन की। प्रभु आपको हज़ार बार इस दिन की प्रसन्नता प्रधान करे। कौल साहब कहाँ हैं?" पुरोहित ने पूछा—

"वह नहा रहे हैं। अभी आते ही होंगे।" यह कहकर बड़ी माँ ने नौकर को खीर और फूल लाने के लिये कहा।

रायसाहब नहा चुकने के उपरान्त वटू में आ गये, जहाँ सब उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कौल साहब देखने में काफी तन्दुरुस्त प्रतीत हो रहे थे। लम्बी लम्बी मूँछें, गोरा बदन, बाल कोई कोई सफेद था। उन्होंने सुन्दर रेशमी कुर्ता और पाजामा पहन रखा था। सिर पर सफेद बर्फ जैसी गाँधी टोपी थी। उनका मुँह सदा खिला रहता था। उनके मुँह परक भी किसी ने ग़म की एक रेखा भी नहीं देखी थी। बड़ी माँ उनको बहुत चाहती थी। उन्हें देख वह हर्षित होतीं, उल्लसित होती थीं। आज उन्हें देख माँ का हृदय मातृत्व प्रेम से भर गया। वह उनकी ओर गर्व पूर्ण दृष्टि से देख रही थी। कितना सुन्दर तथा बुद्धिमान है इसका पुत्र। कितने ऊँचे पद पर है वह। हाईकोर्ट का जज होना कोई मामूली बात न थी। जितने भी केसिज़ होते उनके निर्णय के बारे में कौल साहब सदा अपनी माँ से परामर्श लेते। वह कौन सी बात थी जो बड़ी माँ नहीं जानती थी। अपने बेटे को आते देख उठकर उनका माथा चूमा और बोलीं—

"मुबारिक, मुबारिक हो यह दिन। जुग जुग जियो बेटा। प्रभु तुम्हें हज़ारों वर्ष जीवित रखे।" यह कहकर उन्होंने अपने बेटे के हाथ में एक लिफाफा थमा दिया।

"सलामत रहो माँ, यह क्या है?" कौल साहब ने लिफाफे की ओर संकेत करते हुये पूछा—

"स्वयं ही देख लेना। अधिक कुछ नहीं, माँ का प्रेम भरा तोहफा।"

त्रिलोकी नाथ नीचे कालीन पर बैठ गये। पूजा की सब सामग्री उनके सामने रखी गई। पूजा आरम्भ हुई। मन्त्र पढ़े गये, देवताओं का आवाहन हुआ। देवता आशीर्वाद देकर लौट पड़े। पूजा समाप्त हुई। महाभोज की तैयारियाँ होने लगीं। आज नगर के बड़े बड़े अफसरों को न्योता दिया गया था। उनके घर के बाग़ में कई मोटरें, ताँगे और बग्गियों का ताँता लगा था। मोहल्ले के निम्न वर्ग के लोग बाहर आँगन में जमा हो गये थे। प्रतिवर्ष मालिक के जन्मोत्सव में उन्हें कुछ न कुछ मिलता ही रहता था। इसी आशा से वह लोग इस दिन को गिनते चले आ रहे थे। कब रायसाहब का जन्म दिन हो और कब उनका मुँह मीठा हो जाये। कौल साहब को महाराजा ने राय साहब का ख़ताब दे रखा था। सब उन्हें इसी नाम से जानते थे। उस दिन कई प्रकार के व्यंजन बनाये गये, कई प्रकार की मिठाइयाँ बनाई गई। चारों ओर चकाचौंध थी। आज घर के सब लोग सुन्दर सुन्दर कपड़ों में सजधज रहे थे। सुष्मा और शशि अपसरायें बनी हुई थीं। दोनों अपनी सखियों के बीच में बैठीं गप्पों का स्वाद ले रही थीं।

"आजकल ज़ोरों पर आन्दोलन चल रहा है। न जाने वह सफल भी होंगे या नहीं।" सुष्मा ने कहा।

"कौन जाने वह सफल होंगे या नहीं परन्तु वह लोग सच्ची बातें बताते हैं।" नजमा ने उत्तर दिया।

"हम कब कहते हैं कि ग़रीबी समाप्त न हो। मैं भी इस मत से सहमत हूँ परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि निर्धनता समाप्त होगी कैसे ?"

"स्वतन्त्रता मिलने पर। हम स्वतन्त्र हो जायेंगे और अपने देश को संभाल लेंगे।"

"परन्तु नजमा, क्रान्तिकारी दल केवल अंग्रेज़ों से स्वतन्त्रता ही नहीं चाहते, बल्कि तुम और हम जैसे लोगों से भी तो छुटकारा चाहते हैं।" सुष्मा ने जोश से कहा।

"ठीक है, परन्तु यहाँ मेरी राय कुछ अलग है। तुम्हीं सोचो क्या यह संभव है कि अमीरों और गरीबों में कोई भेदभाव न रहे। रूस और चीन देश पूरे कम्यूनिस्ट देश कहलाते हैं। वहाँ अमीर और गरीब बराबर हैं। मैं मानती हूँ कि वहाँ कोई भूखा और नंगा नहीं होगा, परन्तु क्या तुम यह मानने को तैयार

हो कि वहाँ के नेता, वहाँ के बड़े अफसर एक मज़दूर या मामूली व्यक्ति के संग खाते हैं, पीते हैं, उठते हैं या बैठते हैं। क्या उन दो वर्गों की विचारधारा एक हो सकती है। नहीं, कभी नहीं। वहां के नेताओं के पास आलीशान बंगले क्यों हैं, वहां के अफसरों के पास बड़ी-बड़ी मोटरकारें क्यों हैं, जबकि मामूली व्यक्ति के पास एक साइकिल भी नहीं है। फिर यह ढोंग नहीं तो और क्या है। यह कहना कितना भद्दा लगता है कि सब बराबर हैं। राजा के समाप्त होने पर देश का नेता उसका स्थान पा लेगा।" नजमा ने बड़े वेग से यह कहा।

"न जाने फिर वह चाहते क्या हैं ? हम लोगों को समाप्त करने पर तुले हैं वह। सुनती नहीं कैसी-कैसी तकरीरें करते हैं। सच पूछो तो मुझे बहुत डर लगता है।"

"डर लगने की बात ही क्या है। एक राजा जायेगा दूसरा खड़ा हो जाएगा। एक वर्ग दब जायेगा दूसरा दलित वर्ग उभर आएगा। यह लोग पैसा चाहते हैं और किसी हद तक ठीक भी है। यदि हमने इतने वर्ष जीवन का आनन्द लूटा तो अब इन बेचारों के भी दिन शीघ्र आयेंगे। जो कुछ मिस्टर रहमान कहता है, उससे लगता है कि गरीबों की हालत अवश्य सुधर जायेगी। कब तक, यह मैं कह नहीं सकती।"

"क्या तुम मिस्टर रहमान को जानती हो ?"

"जानती कहाँ से हूँ, उसे परसों भाषण देते देखा था।"

"कहते हैं मामूली घर का लड़का है। पढ़ा-लिखा तो न के बराबर है। हमारे यहाँ उसका बाप लकड़ियां लाता है। बड़ी माँ कह रही थीं कि यहाँ कई बार आ चुका है, परन्तु मैंने उसे कभी देखा नहीं।"

"काफी सुन्दर, लाल, गोरा और हृष्ट-पुष्ट है।"

"तो क्या कहीं—" कह कर सुष्मा ने नजमा के कान में कुछ कहा।

"चल हट, चँट कहीं की।" इस पर दोनों हँस दीं।

इधर दूसरे कमरे में रायसाहब और उनके मित्रों की भी यही चर्चा हो रही थी।

"हम चाहते हैं कि गवर्नमेंट इन गुंडों को जेल भेज दे। न रहेगी बाँस, न बजेगी बांसुरी।" बदरीनाथ बोले।

"अरे साहब, यह लोग हैं ही किस खेत की मूली। इनको दबाने की बात से तो मेरी हँसी छूटती है। कर भी क्या सकते हैं यह। आन्दोलन करना इतना आसान नहीं है। और हाँ, इनका ध्येय तो साम्राज्यवाद को समाप्त करना है। हाँ—हाँ—हाँ।" मुशताक अली साहब ने फरमाया।

"परन्तु यह हमें अवश्य मानना चाहिए कि जनता को उकसाने या भड़काने में वह काफी सफल रहे हैं। आप कहते हैं कि वह सफल नहीं होंगे परन्तु मेरी धारणा कुछ भिन्न है। जब जनता भड़क उठती है, तो अवश्य कई प्रकार के परिवर्तन होते हैं। वह परिवर्तन क्या होगा, अभी इस मसले पर कोई कह नहीं सकता।" कौल साहब ने जरा गम्भीर होकर कहा।

"मैं यद्यपि आपकी बात से सहमत हूँ परन्तु मैं अपनी नवाबियत को त्यागने के लिए कभी तैयार नहीं हूँ। मैं ऐसी स्वतंत्रता को दूर ही से सलाम करता हूँ, जिसको पा लेने के बाद आप और हम जैसे लोगों की सलामती नहीं। हम तो कहीं के न रहेंगे। जो शान-औ-शौकत, जो इज्जत अब हमारी है, वह कल नहीं रहेगी। सच मानिये कौल साहब, मैं चाहता हूँ कि अँग्रेजों का राज्य कभी समाप्त न हो।" ख्वाजा साहब ने कहा।

"मैं जानता हूँ कि हमारी सलामती नहीं रहेगी, परन्तु देश का कल्याण इसी में है कि हम स्वतंत्र हो जायें।"

"नहीं रायसाहब, आपको यह नहीं कहना चाहिए। मुझे डर लगता है कि यह लोग कहीं आवेश में हमारा ही गला न काट लें। हैं भी क्या लीडर, पूरे बदमाश हैं। पहले डाके मारते थे और अब अपने दिमाग को इस ओर लगा दिया। अल्लाह ही रहम करे जमाना बड़ी तेज़ी से बदल रहा है। न जाने क्या होगा। ज़मीन में दबे कीड़ों में भी जान आ गई। जिन्हें कोई पूछता न था, उन्हें लोगों ने सिर पर उठा लिया। इससे उनके सिर ही फटने लगे। सच ही है यह कहावत, 'अधजल गगरी छल-छल जाये।' यही हालत इन गुँडों की है। कैसी बहकी-बहकी बातें करते हैं। जिनके घरों में होंठों पर मलने के लिए पिच (उबले हुये चावलों से निकला हुआ पानी) नहीं, वही लोग मैदान में उतर आये। खैर, उनको तो इसमें कोई हानि न होगी।" ख्वाजा साहब ने आह भरते हुये कहा।

"आज नहीं तो कल यह सब होना ही था। सुना है यह लीडर काफी

होशियार हैं। रहमान का बाप हमारे घर काम करता है। वह बहुत ही शरीफ है। मैंने उसके लड़के को कभी भी देखा नहीं है।"

"देखना क्या है साहब, गुंडा ही तो है। और भी कई लीडर हैं। मोती भी एक छोकरा है। कहते हैं, दुबला-पतला होते हुये भी उसका दिमाग़ बहुत तेज़ है। रहमान का घनिष्ट मित्र है। वह भी मामूली घर का लड़का है। जिनके पास समय व्यर्थ में गंवाने के लिये है, वही लोग इस ओर झुकते हैं। अच्छा छोड़िये इन बातों को, यह बताइये बड़ी माँ कैसी हैं? हमारी भाभी जान तो नज़र ही नहीं आईं।" ख्वाजा साहब ने बात को बदल कर कहा।

"नीचे और मेहमान बैठे हैं। इनकी देख-भाल कर रही होंगी। आप उनसे मिलना चाहते हैं क्या?"

"नहीं, नहीं, इस समय वह खूब अपने काम में व्यस्त होंगी। मैं जाने से पहले स्वयं ही जाकर उनसे मिल लूंगा।"

"ख्वाजा साहब, नजमा अकेली घर में क्या करती है? उसके विवाह के बारे में भी आपने कुछ सोचा है?"

"शादी की बात तो मैं अभी नहीं सोचता हूँ। चूंकि वह अकेली है। इसलिए उसे कालेज भेज दिया है। दिन भर वहाँ उसका दिल लगा रहता है और अपनी माँ का अभाव भी नहीं खिलता है।"

"बचपन से ही वह माँ के प्यार से वंचित रही, परन्तु आप ने उसे दोनों का प्यार दिया है।" कौल साहब ने उनकी प्रशंसा करते हुये कहा।

"यकीन मानिये, उसकी शादी न करने का एक बहाना यह भी है। वह अपने शौहर के संग चली जायेगी, तो मेरा क्या होगा। यह एक बच्ची भी जायेगी, जिसके लिए मैं जी रहा हूँ। उसे देख कर मेरे लिए दिन बिताना आसान हो जाता है। उसकी माँ के अचानक फ़ौत हो जाने से मेरे सिर पर काफ़ी बड़ा बोझ आ गिरा। पहले-पहल मुझे लगा कि में अपना कर्त्तव्य निभाने में सफल नहीं रहूँगा, परन्तु खुदा की मेहरबानी से घर की नाव अच्छी तरह चलती रही।"

"यह तो आप ही का कमाल है। और कोई होता तो कभी यह सब इतनी आसानी से निभाह न सकता।"

"अच्छा रायसाहब, अब चला जाये। दावत के लिए शुक्रिया। जरा नजमा को भी लेता चलूं।" ख्वाजा साहब ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा। वह उठे, और नीचे बड़ी माँ से मिलने चले गये।

"मुबारिक है बड़ी माँ, भाभी जान आप भी मेरा मुबारिक कबूल कीजिये।" ख्वाजा ने बड़े अदब से यह कहा।

"सलामत रहिए।"

"कई दिनों से आपसे मिलना चाहता था लेकिन मुझे अपने काम के सिलसिले में इच्छावल जाना पड़ा, इसलिए यहां न आ सका। कहिए, मिज़ाजे शरीफ कैसे हैं ?"

"मैं तो ठीक हूँ, परन्तु आप कुछ कमजोर दिखाई दे रहे हैं। क्यों ?" बड़ी माँ ने अपनेपन से कहा।

"आप ही बताइये, घरबार भी अपने सिर पर, ज़मीन-जागीर का भी ध्यान स्वयं रखना पड़ता है। नौकर-चाकरों के बावजूद भी अपने आप सब कुछ देखना पड़ता है।" उनके स्वर में मजबूरी थी।

"आप ही की तरह बड़ी माँ को भी कभी घरेलू धंधों से छुटकारा नहीं मिलता है।" सोमावती ने हँसते हुये कहा।

"शौकत साहब, अभी बातें करने दीजिए, जब अपने सिर पर आन पड़ेगी तो स्वयं पता चलेगा कि दूसरों के ऊपर बातें लागू करना कितना आसान है।" बड़ी माँ ने प्यार भरी दृष्टि अपनी बहू पर डाली।

"वाह बड़ी माँ, आपने भाभी जान की बात का सही जवाब दिया। मेरे ऊपर भी यही आरोप लगाया गया है, नजमा इस बारे में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ती है।"

"यह आरोप बुरा नहीं है, बल्कि इससे आपकी बढ़ाई होती है।" सोमा ने कहा।

"भाभी जान, आप इस बढ़ाई के लिए स्वयं तो नहीं तरसती हैं, क्यों ? यह कहते-कहते वह ज़ोर से हँसने लगे।

"नहीं ख्वाजा साहब, यह कोई तरसने वाली बात नहीं है। आप ही को यह सब मुबारिक हो।"

"यकीनन भाभी जान, यह भी क्या जिन्दगी है, जहाँ दो पल परेशानियों से छुटकारा नहीं।" फिर कुछ रुक कर बोले—

"नजमा कहाँ है ? हमें अब जाना चाहिए।"

"नजमा बेटी को थोड़ी देर बैठने दीजिए, अपनी सहेलियों के साथ बातें करने में व्यस्त होगी।"

"नहीं बड़ी माँ, आज उसे जाने दीजिए, फिर कभी आ जायेगी। वैसे तो सहेलियाँ कालेज में अक्सर मिलती ही रहती हैं। हमें अब इजाज़त दीजिए। सलाम।"

"वालेकुम सलाम।" बड़ी माँ ने कहा।

ख्वाजा शौकत अली एक बड़े जागीरदार थे। सदियों से बनी आ रही नवाबियत को दोनों हाथों से थाम रहे थे। लोग उन्हें खूजा कह कर पुकारते थे। और इसी नाम से सब उन्हें जानते भी थे। वह काफी मोटे और लम्बे कद के व्यक्ति थे। रंग साँवला होते हुये भी वह काफी सुन्दर लगते थे। सदा छोटी दाढ़ी रखना उन्हें पसन्द थी। वह सदा हँसते रहते थे, कभी किसी ने उन्हें चिन्तामग्न देखा नहीं था। उनकी धर्म पत्नी को गुज़रे काफी समय बीत चुका था, परन्तु घर की नौकरानियाँ समय-समय पर बीवी का स्थान पा लेती थीं। सब नौकरानियों में प्रिय जैना थी। खूजा की पत्नी जब जीवित थी, तब से जैना इस घर में आ गई थी। जैना के ब्याह को हुए काफ़ी समय हो चुका था, परन्तु किसी कारण उसका तलाक हो गया था। जैना खूजा के घर में आ गई तो लौटने का नाम नहीं लिया। उसका इस घर में मालकिन से कम दर्जा न था। यद्यपि खूजा ने जैना को ऊंचा दर्जा दिया था, परन्तु उसे घर की पूंजी से कोसों दूर रखा था। उसे पता न था कि खूजा की आय क्या है, और न उन्होंने मुनासिब समझा कि वह इस बात को जान जाये। घर को चलाने के लिए वह प्रतिदिन जैना के हाथ में पैसे थमा देते और रात को उससे पाई-पाई का हिसाब ले लेते। हाँ, जैना की इच्छानुसार बाज़ार से सब वस्तुएं मंगवाई जातीं। खूजा जैना को बहुत चाहते थे। यदि पहला दर्जा बेटी का था तो दूसरा दर्जा जैना ने पा लिया था। जैना बहुत सुन्दर थी। सुन्दर, गोरी,

लाल, लम्बे-लम्बे काले बाल । बाईं ओर छोटा सा काला तिल था जो उसके मुँह पर बेहद सजता था । उसकी सूरत से लगता था कि वह बड़े घर की बहु या बेटी है । कोई उसे देखकर यह न कहता कि वह नौकरानी है । वह अपने को खूजा की बीवी से कम न समझती थी । नजमा से उसे काफी प्यार था । उसका लालन-पालन इसी ने किया था । नजमा ने अपनी माँ को देखा भी न था । इसलिए वह जैना को अपनी माँ से कम न समझती थी । अन्य नौकरानियों से असली बात को जानते हुए भी नजमा के दिल में जैना के प्यार में कोई कमी न हुई । खूजा का घर राजबाग़ में था । उनका बंगला बहुत बड़ा था, जिसके सामने रंग-बिरंगे फूलों से लहलहाता सुन्दर बागीचा था । ख्वाजा साहब जब कौल साहब के घर से लौटे तो जैना से बोले—

"जैना, मेरी गुरगुरी ऊपर ले आना, और हाँ, मेरे लिए आज शाम का खाना हल्का बनेगा ।"

"आप ऊपर जाइए मैं अभी भिजवा दूंगी ।" जैना ने चंचल आँखों से जता दिया ।

ख्वाजा साहब बड़े ज़ीने से ऊपर चढ़ने लगे । सीढ़ी के शुरू में दो बड़े-बड़े सुन्दर गमले पड़े हुए थे, जिनमें ताजे लाल गुलाब सजाए गए थे । सीढ़ी पर बढ़िया कालीन बिछा हुआ था । खूजा एक बड़े कमरे में गए । कमरा खूब सजा हुआ था । वहाँ कालीन बिछा हुआ था, जिस पर रंगदार सुन्दर फूल खिले थे । एक ओर बड़ा पलंग था, जिस पर कश्मीरी कढ़ाई वाला पलंगपोश बिछा हुआ था । दूसरी ओर अखरोट की लकड़ी की बनाई हुई अलमारी थी, जिस पर चिनार के पत्तों का डिज़ाइन बना हुआ था । इस अलमारी में खूजा के पहनने के कपड़े रखे गए थे । कालीन पर बड़े-बड़े कई गाव तकिए रखे गए थे, जहाँ कभी-कभी खूजा बैठ कर हुक्का पिया करते थे । कमरे की खिड़कियों पर फूलदार रेशम के पर्दे लटक रहे थे जो कभी-कभी हवा के बहने से हिल रहे थे । खूजा नीचे से आकर सीधे अपने पलंग पर कपड़ों समेत ही लेट गए । इतने में जैना स्वयं अपने हाथ में हुक्का लेकर आ गई । हुक्का चमक रहा था । हुक्के की नै चार गज़ लम्बी थी । नै के ऊपर का भाग चाँदी का बना हुआ था । जैना ने हुक्के को फर्श पर रख दिया और स्वयं खूजा के पास चली गई ।

"आपने तम्बाकू पीने के लिए कहा था ना, फिर सो क्यों गए।" जैना ने धीरे से कहा।

"ओ, तुम स्वयं ही हुक्का ले आई। ज़रा करीब तो आ जाओ, मेरा अचकन खोल दो।" उसने अपनी आँखें खोलते हुए कहा।

"इतना थक गये, जो ऐसे ही सो गए?"

"बहुत थक गया हूँ। वहाँ काफी लोग आ गये थे, इसलिये खूब बातें हुईं। दावत बहुत ही बढ़िया थी। इतना खाया कि उसी समय नींद आने लगी।" खूजा ने जैना को अपने समीप बैठने का संकेत करते हुए कहा।

"सो जाइए आप, मैं आपके कपड़े उतार दूँगी।" यह कह कर वह उनके कपड़े धीरे-धीरे उतारने लगी।

"यह बताओ जैना, जब मैं तुम्हारे संग होता हूँ तो सारे जहाँ का गम दूर हो जाता है। आखिर तुम में क्या जादू है?" खूजा ने अपनी उंगलियां जैना के बालों में उलझा दीं।

"आप सो जाइए खूजा, आपको इस समय आराम की जरूरत है।" जैना ने बात बदल कर कहा।

"तुम्हारे हुस्न ने मेरी नींद हराम कर दी है। न जाने तुम दिन-ब-दिन इतनी हसीन क्यों हो रही हो, जैसे सोलह साल की लड़की हो।" खूजा ने जैना को अपने सीने से लगा लिया।

"अरे अभी तो पूरा दिन है, यह क्या करने लग गये, कोई आ जायेगा तो क्या कहेगा।" जैना ने अपने को छुड़ाते हुए कहा।

"तो यह आदत अभी गई नहीं तुम्हारी। जब नजमा की माँ जिन्दा थी बड़ी मुश्किल से मना पाया था तुम्हें।" खूजा ने पलंग पर बैठते हुये कहा।

"मुझे डर किसी का भी नहीं है, परन्तु यदि नजमा ने देख लिया तो कितना बुरा होगा। जवान लड़की के सामने मनमानी करना अच्छा नहीं लगता। और फिर मैं भी अब वह नहीं रही, जो पन्द्रह वर्ष पहले थी।"

"मेरे लिये तुम सदा नई दुल्हन की तरह हो। सच जैना, यकीन मानो, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। मुझे तुम्हारे बिना सब सूना लगता है, सब कुछ फीका लगता है। इसमें तुम जान हो, मेरी दुनिया तुम ही हो।" खूजा ने जैना को ज़बरदस्ती अपनी बाँहों में कस लिया।

"यह कहानी सुनते तो मुझे कई वर्ष बीत गये। केवल मैंने ही नहीं बल्कि और कइयों ने मेरी तरह इस तरह की गाथायें सुनी होंगी। नजमा की माँ को भी आप प्रेम के गीत सुनाते रहे, परन्तु वह मेरे और आपके सम्बन्ध को अच्छी तरह जानती थी।" जैना ने दृढ़ता से कहा।

"जानती क्या थी कि मैं तुम से प्यार करता हूँ, यही ना ?"

"हाँ, एक स्त्री के होते हुये दूसरी से प्यार करना पाप नहीं है क्या ?" जैना ने जोश में आकर कहा।

"नहीं पाप नहीं है। यदि मैं पाँच स्त्रियां भी रख लूं तो भी पाप नहीं है। मैं अपनी मर्जी का मालिक हूँ। मैं जानता था कि वह हमारे राज़ को जानती थी। उस दिन जब हम दोनों को उसने एक ही पलंग पर पाया था तो उसी दिन हमारा रहस्य उस पर व्यक्त हो चुका था। और मैंने उसे बता दिया था कि मैं तुम्हें चाहता हूँ और सदा चाहूँगा। हाँ, उसे उस दिन काफी सदमा पहूँचा था, पर मैं भी तो लाचार था।"

"उसकी मौत का यही कारण था। वह अपने आप को पैसे की तरह गलाने लगी और अंत में सफल भी हुई। उसने मुझे कभी डाँटा तक नहीं। वह तो वास्तव में महान स्त्री थी।" जैना ने दुखी होकर यह कहा।

"परन्तु उसकी मृत्यु से तुम्हें दुःख क्यों होता है। अब तो तुम मेरे संग बिना किसी रोक टोक के मिलती हो, जोकि उसके सामने असम्भव था। अब और तुम्हें चाहिए ही क्या ?"

"आपकी धारणा ग़लत है। ठीक है कि मैं सोती हूँ, उठती हूँ, खुले-आम आप से मिलती हूँ, परन्तु मैं आपकी पत्नी नहीं कहलाई जाती। बेशक आप मुझे सुन्दर-सुन्दर कपड़े देते रहे, प्रत्येक वस्तु मुझे मिलती रही, परन्तु जो मैं चाहती थी वह मुझे मिला नहीं और न कभी मिलने की ही आशा है।" जैना ने करुणा भरे स्वर में यह कहा।

"तुम क्या चाहती हो ? यह सही है कि मैंने तुमसे शादी नहीं की। परन्तु यह कहो, कि कब मैंने तुन्हें ब्याहता स्त्री से कम प्यार किया है ? उसे मैंने कभी इतना नहीं चाहा जितना तुम्हें चाहता हूँ। कब मैंने तुम्हें किसी वस्तु के लिए मोहताज रखा। परन्तु ब्याह न होने से यह साबित तो नहीं होता

है कि मैं और तुम वह नहीं हैं, जो हम हैं। आखिर तुम्हें दुःख किस बात का है ?"

"मैं नहीं चाहती थी कि मुझ से शादी करके आप अपने नाम को मिटा देते। परन्तु मैं भी एक स्त्री हूँ, मेरे भी कुछ अरमान हैं। मैं अपनी कोख से एक ही बच्चा चाहती थी, परन्तु आपने जान-बूझ कर पेट के पेट में ही उसे दवाइयों के द्वारा समाप्त किया। आखिर क्यों ? कोई यह न कहता कि वह आपका बच्चा था। मैं साबित कर देती कि इसका बाप और कोई है।" जैना रो रही थी।

"तो क्या नजमा को तुम अपनी बच्ची नहीं समझती ?" खूजा ने जैना के अन्दर की तारों को छेड़ते हुए कहा।

"मैंने कब कहा कि मैं उसको प्यार नहीं करती हूँ। परन्तु कभी न कभी उस पर सच्ची बात ज़ाहिर होगी ही तो मेरे मुँह पर कालख पोती जायेगी। मैं कहीं की न रहूँगी।" जैना का मुँह आँसुओं से भीग रहा था।

"कैसी बेहूदा बातें करती हो। यह कभी नहीं होगा। बात जाहिर हो या न हो, उस पर उसका कोई प्रभाव न पड़ेगा। तुमने पाल पोस कर उसे बड़ा किया, इतना प्यार दिया, फिर भला वह तुमसे नफ़रत क्यों करेगी ?" खूजा ने जैना के आँसू पोंछ दिये और उसे अपने गले से लगाया। फिर बोला -

"आखिर तुम उसकी माँ हो, शायद उससे भी बढ़ कर। वह जानती है कि तुम मेरी बीवी के बराबर हो, उसे मालूम है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ, मैं तुम्हारा कितना मान करता हूँ फिर वह तुम्हें बुरा कैसे समझेगी।" इस बात से जैना को शान्ति हुई, किसी कोने में छुपा माँ का प्यार उभर आया। बोली—

"मैं अब जाती हूँ। नजमा अकेली होगी नीचे।"

"यह बताओ जैना, इस ईद पर किस रंग का फिरन चाहिए तुम्हें ? मैं चाहता हूँ कि सोने की एक चेन भी मँगवा लूँ तुम्हारे लिये। क्या ख्याल है ?" खूजा ने जैना को प्रसन्न करने के लिए यह कहा।

"मुझे गले की चेन लेकर क्या करना है। और फिर नजमा से भी पूछ लिया है या नहीं ?" जैना का मुँह प्रसन्नता से खिल रहा था।

"पहले तुम, फिर नजमा।" वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुये बोले। जैना बिना उत्तर के नीचे चली गई।

नजमा बगीचे में एक वृक्ष के नीचे कुर्सी पर बैठ कर कुछ पढ़ रही थी। बगीचा काफी बड़ा था। चारों ओर फूल खिले थे। मन्द मन्द वायु के बहने से नजमा के बाल बिखर रहे थे। उसके हाथ की पुस्तक जिसे वह पढ़ने में लीन थी, कभी कभी हवा के झोंकों से उसके पन्ने उल्ट जाते, जिन को वह संभालने का प्रयत्न कर रही थी। कभी वह पुस्तक के पन्नों को ठीक करती तो कभी अपने बिखरे हुए बालों को संवार लेती। जैना ने दूर ही से उसे देखा, और उसे बुलाने लगी—

"नजमा, नजमा बेटी, क्या कर रही हो ?"

"कुछ नहीं अम्मा, यूँ ही पढ़ रही थी।"

"चाय ठंडी हो रही है, अन्दर चली आओ।"

"आई अम्मा।"

नजमा अपने बाप की इकलौती लड़की थी। बाप प्रसिद्ध रईस थे, इसलिए उसका लालन पालन एक शहजादी से कम न था। वह जैना को अपनी माँ समझती थी, क्योंकि उसी ने नजमा को पाल पोस कर बड़ा किया था। नजमा ने अपनी असली माँ को देखा न था। उसी के उत्पन्न होने के समय वह जन्नत सिधारी थी। खूजा को पता था कि अब उन की और कोई संतान न होगी, इसलिए नजमा उनके नेत्रों में एक अनमोल रत्न के समान थी, जिसे वह किसी भी हालत में खोना नहीं चाहते थे। यही कारण था कि वह सब की लाडली बन बैठी थी। ऐसी कोई वस्तु न थी, जो चाहने पर उसे न मिलती। वह सुन्दर तथा सुडोल थी। गोरा बदन, लम्बा कद। उसकी आँखें काली तथा बड़ी थीं। जब वह हँसती तो लगता कि फूल बिखर रहे हैं। उसके स्फेद मोती जैसे दांत हँसते समय दिखाई देते। उसका स्वभाव कुछ अनोखा सा था। कभी कभी वह छोटी छोटी बातों पर हठ करती, तो कभी किसी पर दया का समुद्र ही उंढेल देती। बचपन से किसी ने उसे डाँटा न था। लाड प्यार और दुलार के कारण वह अपने मन की मालिक बन बैठी थी। ख्वाजा साहब सदा उसे प्रसन्न देखना चाहते थे। वह उसकी खुशी के लिए कोई कसर बाकी न छोड़ते।

नजमा गरीबों को देख कर बहुत दुखी हो जाती थी और जहाँ तक हो सकता था, वह उन्हें कपड़े, पैसे दे कर सहायता करने का बड़ा प्रयास करती। वह बी० ए० के प्रथम वर्ष में पढ़ रही थी। सुष्मा उसकी सबसे प्रिय सखी थी। दोनों की मित्रता बचपन से चली आ रही थी, और अब एक ही कालेज में पढ़ने के कारण मित्रता घनिष्टता में बदल रही थी। जैना के बुलाने पर वह अन्दर चली गई।

मोतीलाल ज़ैना कदल (पुल) पर रहमान की प्रतीक्षा में खड़ा था। उसकी दृष्टि दूर तक चली गई। जेहलम नदी के दोनों तटों पर मकान बिल्कुल सटे हुए थे। एक के छत की साथ दूसरे की दीवार। कई मकान पुराने टूटे-फूटे थे, जिनको देख कर लगता था कि अभी गिर जायेंगे। परन्तु हैरानी की बात है कि आधे समाप्त होने पर भी वह कई तरह के सैलाबों, भूँचालों और अग्नि का डट कर मुकाबला करते रहे। इन्हीं टूटी-फूटी झोंपड़ियों के बीच में कहीं-कहीं बड़े-बड़े सुन्दर भवन भी प्रतीत हो रहे थे, जो धनी लोगों के थे। इधर पुल पर ताँगों की कतारें लगी हुई थीं। कोई उस पार जा रहा था और कोई इस ओर आ रहा था। कोई बचो, बचो भाई बचो कहता, तो कोई हिलमत दसगीर कह कर गाड़ियों को हाँकता। कई छोटे-छोटे लड़के अपनी छोटी-छोटी छाबड़ियों को सामने रख कर ग्राहकों को अपनी आवाज से अपनी ओर अर्कषित करते। "दो आने पाव, बढ़िया सेव, कश्मीरी सेब, सेबों का राजा सेब, लाल सेब। वगूगोशा, बढ़िया चार आने पाव। पीला-पीला मीठा-मीठा।" ग्राहक भी ऐसे थे, जो पाव भर फल लेने में घंटा डेढ़ घंटा बिता देते और फल वाले को आधे दाम पर फल बेचने के लिये मजबूर करते। मोती ने देखा, छाबड़ियों में एक दम रद्दी माल है। नाम सेब होते हुये भी वास्तविकता से कोसों दूर

है। पैसों की खातिर कच्चे ही उतार लिये गये थे। मोती आगे बढ़ा, एक लड़के के सामने खड़ा हो गया, बोला—

"अरे, क्यों चिल्ला रहे हो, यह तो किसी काम के नहीं हैं।"

"पहले एक चख कर तो देखो, कितना रस है इनमें। और फिर दाम भी कौन से अधिक हैं। इससे सस्ता कहाँ मिलेगा आपको?"

"परन्तु कच्चे फल खाने से तो पेट में बल पड़ जायेंगे। अभी कुछ देर पकने देते इन्हें?"

"आप भी कैसी बातें करते हैं। फल के पास समय है पकने के लिये, पर हमारे पास समय कहाँ है, जो हम इनके पक जाने की प्रतीक्षा करते। यदि हम कुछ देर रुक भी जायें तो खायें क्या, खाक। और फिर अपना बगीचा तो है नहीं, हम भी यह खरीद कर ही लाये हैं।"

मोती ने आह भर ली, सोचा, "क्या हम पेट भर खाना कभी नहीं पायेंगे? इतने छोटे लड़के की आय पर न जाने कितने व्यक्तियों का निर्भर होगा। कच्चे सेब और नाशपाती को बेचने में इसे कितना Profit (फायदा) मिलता होगा? यही एक रुपये में दो आने, और क्या। पर इस थोड़ी सी आय पर यह कैसे गुज़ारा करते होंगे?" उसने अपने कंधों पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस किया। वह चौंका, मुड़ कर देखा तो रहमान खड़ा था, जो कह रहा था—

"न जाने हर समय तुम खोये-खोये से क्यों रहते हो? संसार भर की चिंता तुम्हें है। अरे यार, अभी से इस संसार में खो जाओगे तो क्या करोगे आगे चल कर। कहो, मैं ठीक समय पर यहाँ पहुंच गया या तुम्हें कुछ देर मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ी?"

"नहीं तो, मैं भी अभी ही आया हूँ। अच्छा यह बताओ कि अब क्या प्रोग्राम है?"

"प्रोग्राम आज तुम्हारे घर जाने का है। फिर देखा जायेगा कि इन्कलाबी कौंसिल में जाया जाये या नहीं।"

"चलो चलते हैं, तुम्हें शीला से मिला दूँ। वह भी हमारी इन्कलाबी सोसायटी में दिलचस्पी रखती है।"

दोनों तंग गलियों से होते हुये एक पुराने मकान के आँगन में चले गये।

ग्रांगन के इर्द-गिर्द कई टूटे-फूटे पुराने मकान थे, जोकि एक दूसरे के साथ सटे हुए थे। कई गृहस्थियां इन घरों में रहती थीं। ग्राँगन में एक नल था, जिसे सब घर इस्तेमाल करते थे। दोनों एक तंग सीढ़ी पर से होते हुए एक कमरे में चले गये। कमरा बहुत छोटा था। इसमें घास की चटाई बिछी हुई थी। एक ग्रोर एक टूटा सा ट्रंक रखा था, जिस पर घर में धुला हुग्रा कपड़ा फैलाया गया था। यह कपड़ा सदा घर में धोने से एक दम पीला पड़ गया था, ग्रौर इसे देख कर यह ग्रंदाज़ लगाना कठिन था कि कभी यह सफेद था भी या नहीं। मोती इस ट्रंक से टेबल का काम लेता ग्रौर ग्रक्सर ग्रपनी पुस्तकें इसी पर रखता था। रात को घर के सब लोग इसी कोठरी में सोते थे। रहमान ने देखा, कमरा साफ सुथरा था। इसमें केवल एक ही खिड़की थी जो कि बहुत छोटी थी। इसी खिड़की में सब बिस्तर ठोंसे हुए थे इसलिए यह कमरा काल कोठरी बन गया था, ग्रौर रोशनी के लिये सदा द्वार खुला रखना पड़ता था। इसी रोशनी से पता चलता कि दिन है या रात। रहमान ने महसूस किया कि उसके घर से यह घर भिन्न नहीं है। यहाँ कोई ऐसी वस्तु न थी जो उसके घर में न हो। वही चट्टाई, वही बिस्तर, वही ग्रन्धेरी कोठरी, वही कीचड़ ग्रौर वही दलदल। परन्तु निर्धनता होते हुए भी यह कमरा साफ रखा गया था। कमरे की चट्टाई को साफ रखने का प्रयत्न किया गया था। करीने से ट्रंक ग्रौर बिस्तर को रखा गया था। उसने सोचा, "गरीबी में भी लोग साफ रह सकते हैं। न जाने हमारा घर इतना साफ क्यों नहीं होता ?" उसे याद ग्राया, "ग्रम्मा सदा उसी कमरे में समावार (चाय बनाने का बर्तन) लाकर चाय बनाती है। चट्टाई साफ रहे तो कैसे ? कोयले की कालख, ग्रौर बर्तनों की सिहाई से सब चौपट हो जाता है। परन्तु मोती की माँ खाना कहाँ बनाती होगी ? क्या इनके पास ग्रौर भी कोई कमरा होगा ? ज़रा मोती से पूछ ही लूं।"

"क्यों मोती तुम्हारे पास ग्रौर भी कोई कमरा है ?"

"कमरा ? हूँ, गनीमत है यह एक भी है। छोटा सा चौका है, उसी में एक ग्रोर चटाई बिछाई है, जहाँ हम लोग बैठ कर खाना खाते हैं ग्रौर दिन में भी ग्रकसर वहीं बैठते हैं।"

"इसलिए यह कमरा साफ है, वरना साफ रखना कितना कठिन है।

हमारे घर का कमरा इतना साफ नहीं रह सकता। दिल करता है कि इतने पैसे कमा लूँ कि दिल के सारे अरमान निकल जायें।"

"तुम थोड़ी देर ठहर जाओ, मैं अम्मा और शीला को बुला कर लाऊँगा।" मोती ने उठते हुए कहा।

मोती के बुलाने पर दोनों माँ-बेटी वहाँ आ गयीं। मोती की मां हड्डियों का कँकाल थी, जिस पर लेश मात्र भी मांस न था। उसकी आँखें अन्दर धस गई थीं, जिनके इर्द-गिर्द सिहाई के बड़े बड़े काले दाग़ साफ जाहिर थे। रहमान के हृदय में दर्द उठा, एक हूक सी उठी। उसने देखा, मुँह का डाँचा सुन्दर होते हुए भी रक्त, माँस के बिना असुन्दर हो गया था। रँग एकदम पीला पड़ गया था। होंठ इतने नीले थे, जैसे अभी बहुत बड़ी बीमारी से उठी थी।

"नमस्कार अम्मा जी।"

"जीते रहो बेटा। तुमने बहुत अच्छा किया जो तुम यहाँ आ गये। मोती हर समय तुम्हारे बारे में कहता रहता है।"

"मैं भी अपनी मां से मोतीलाल का ज़िक्र करता हूँ।"

"कहाँ रहते हो बेटा ?"

"आलीक़दल में।"

"घर में और कौन है ?"

"माँ है, बाप है, और दो भाई हैं।"

"यहाँ कभी कभी आ जाया करो !"

"अवश्य अम्मा जी, अभी तक समय न मिलने के कारण न आ पाया।"

"एक बात पूछूँ, बुरा तो न मानोगे ?" माँ ने अपनेपन से कहा।

"पूछिए, में आपको अपनी माँ के बराबर समझता हूँ।" रहमान ने उत्सुकता से कहा।

"यह बताओ, तुम दोनों क्या नौकरी नहीं करोगे अब ? मैं तो इसे समझाते समझाते हार गई।" माँ ने यह कहते कहते मोती की ओर संकेत किया।

"नहीं मां जी, हम नौकरी नहीं कर सकते, फिर हम आन्दोलन में भाग नहीं ले सकते।"

"परन्तु तुम्हें आन्दोलन करने से मिलेगा क्या ? तुम्हें झगड़ा मोल लेने की आवश्यकता ही क्या है ?"

"यह अभी आप समझ नहीं पायेंगी।"

"परन्तु हमारे घर चलेंगे कैसे ? मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारी अम्मां भी यही कुछ कहती होगी। तुम लोग भूल रहे हो।" मोती की माँ ने आह भर ली।

"समय आपको स्वयं ही बतायेगा।" रहमान ने छोटा सा उत्तर दिया।

"शीला, अपने भाइयों के लिए चाय तो बना लो।" मां ने बड़े प्रेम से शीला को कहा।

शीला जो टुकर टुकर उनकी ओर देख रही थी, उनकी बातों को सुनने में मस्त थी, माँ के कहने पर उठ खड़ी हुई और रसोई में चली गई। रहमान ने देखा इसका यौवन अंग अंग से फूट रहा है। गोरे गोरे गालों पर हल्की हल्की गुलाबी छा रही थी। इसके कपड़े बहुत पुराने और बिल्कुल मामूली थे। एक जमाने में उसकी कमीज़ पर कोई प्रिंट रहा होगा, पर अब वह प्रिंट समाप्त हो चुका था। इन कपड़ों में भी उसका मुँह ऐसा लग रहा था, जैसे बादलों में से चाँद निकल आया हो। रहमान के मन में तरह तरह के विचार आ रहे थे। वह सोचने लगा—"यदि इस लड़की को ज़रा सजाया जाये या सुन्दर कपड़े पहनाये जायें तो एक अप्सरा से कम न लगेगी। इस समय यह एक कली है जो खिल रही है। परन्तु यही कली अधखिली रह कर समाप्त हो जायेगी, मिट्टी में मिल जायेगी।" उसने देखा शीला की शक्ल सूरत उसकी माँ की शक्ल से बहुत मिलती जुलती है। परन्तु अन्तर इतना ही है कि एक बिना खिले नष्ट हो गई और दूसरी खिलने के लिए तड़प उठी—"क्या यह सब निर्धनता के ही कारण है ? यदि शीला का जन्म एक अमीर घर में हुआ होता तो शायद सब उसकी सूरत को देखते ही रह जाते। पर उसका जन्म ग़रीब घर में होने के कारण ही यह सब कुछ था। ऐसी सुकोमल नारी का स्थान कहाँ है ? इन टूटी फूटी झोंपड़ियों में, जहाँ उन्हें दो बार खाना नहीं मिलता, शरीर को ढकने के लिए कपड़ा नहीं मिलता, जहाँ वह तड़प तड़प कर मर जाती हैं, जहाँ उनके अरमान दबे के दबे रह जाते हैं, और जहाँ उनकी उमँगें कुचल दी जाती हैं। पर क्यों ? काश कभी हमारी माँ, बहिनें भी मन के अरमान पूरे कर पातीं। बेफिक्री से दो समय खाना खा पातीं।" इतने में शीला दो खासू (काँसी का प्याला) लेकर आ गई। एक रहमान को पकड़ा दिया और दूसरा मोती को। रहमान ने अपने नेत्र उसकी

ओर घुमा लिए और सोचा—"अजीब दुनिया है। यदि कीचड़ में या दलदल में गुलाब के फूल को फेंक दिया जाये तो उसका आधा सौंदर्य नष्ट हो जाता है। और जब इसी फूल को हरे भरे बाग में सजाया जाये तो उसका सौंदर्य निखर आता है, और वह मन को मोह लेती है। इस फूल को देखने के लिये लोगों के पाँव रुक जाते हैं, यह प्रेम का सँदेश देता है, जीवन सफल हो जाता है। और वह फूल जो कीचड़ में फँसा होता है, उसकी ओर कोई देखने का कष्ट भी नहीं करता, कोई देखे भी तो क्यों ?"

"चाय में चीनी कम तो नहीं ?" शीला ने शर्माते हुए धीमें स्वर में पूछा।

"हूँ, कहवा है। मुझे यह बहुत ही पसन्द है। चीनी बिल्कुल माफ़िक है।" रहमान ने उस संसार में लौटते हुए कहा।

"शीला, कुलचा (रोटी) है ?"

"कतलम (जो रोटी घी में बनाई जाती है) मँगवाया है।"

"कतलम की क्या जरूरत थी, मैं कोई पराया तो हूँ नहीं। कुल्चा ही ठीक रहता।" रहमान ने अपनेपन से यह कहा।

"माँ कहाँ गई शीला ?"

"वह शायद कपड़े धोने चली गई।"

"शीला, कौन सी जमात में पढ़ती हो ?"

"मैट्रिक पास किया है। दिल करता है और पढ़ लूं, परन्तु अम्मा और पिता जी मेरा आगे पढ़ना नहीं चाहते हैं।" शीला ने चाय के समावार को उठाते हुए कहा।

"थोड़ा और कहवा लीजिए।"

"अरे पहले ही भरा खासू दिया था, अब और पिया नहीं जायेगा।"

शीला समावार लेकर चौके की ओर चली गई। उसे जाते देख रहमान मोती से बोला—

"यार शीला वाकई बहुत सुन्दर है।" इस बात से न जाने क्यों मोती का चेहरा लाल हो गया। रहमान ने देखा शायद मोती को अपनी बहन के बारे में यह बात खल गई, बोला—

"खुदा की कसम मुझे शीला को देख कर ऐसा लगा, जैसे मैं अपनी ही वहन से बोल रहा था। और फिर मैंने तो उसे आज से अपनी बहन ही मान लिया। तुम्हारी बहन हो या मेरी बात एक ही है।" यह सुनते ही मोती के मुँह पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और वह बोला—

"इसमें शक ही क्या है। मैं तुम्हें भाई से कम नहीं समझता हूँ।"

"अच्छा मोती, काफी देर हो गई, अब चला जाये। क्या विचार है तुम्हारा ?"

"हाँ—हाँ—चलना ही चाहिए।" इतने में शीला और उसकी माँ वहाँ आ गई। रहमान ने उठते हुए कहा—

"अच्छा अम्मा जी हमें इजाजत दीजिए। मैं फिर कभी हाजिर हो जाऊँगा। शीला, मेरी हिदायत है कि तुम कालेज जाना आरम्भ कर दो। पढ़ाई रोकना ठीक नहीं है।"

"परन्तु मेरे······पास।" शीला अधूरा वाक्य कह कर चुप हो गई। रहमान ने समझ लिया कि वह आगे बोलने से हिचकिचा रही है, तो बोला—

"मैं परन्तु वरन्तु कुछ भी नहीं जानता। तुमको कालेज जाना ही होगा। मोती, तुम इसकी सहायता क्यों नहीं करते ?"

"अच्छा चलो, बहुत देर हो गई। फिर कभी आकर भाषण देना।" मोती ने उसकी बाँह खींचते हुए कहा।

"नमस्कार।"

दोनों दोस्त तँग गली से होते हुये खुली सड़क पर आ गये। रहमान का दिमाग शीला की पढ़ाई की ही बात को दुहरा रहा था। बाहर आते ही वह मोती से बोला—

"मुझे खेद है कि मैं स्वयं नहीं पढ़ सका। परन्तु जिन्होंने मैट्रिक तक पढ़ा है, उन के लिए पढ़ाई रोकना बहुत बुरा है। तुम्हें शीला को कालेज भेजने में क्या दिक्कत है ?"

"तुम्हीं कहो, वह कालेज कैसे जा पायेगी। हमारे पास धन दौलत कहाँ जो हम उसे आगे पढ़ा लें। कहाँ से फीस दें। जिनके पास दो समय खाने को रोटी नहीं, वह भला पढ़ेंगे क्या खाक। पढ़ना हम जैसे लोगों के नसीब में नहीं है। पढ़ाई मुफ्त में नहीं आ सकती, इस के लिए भी पैसे खर्च

करने पड़ते हैं। यदि मेरे पास पैसे होते तो क्या में बी० ए० की परीक्षा न देता। मुझे पूरा भरोसा है कि मैं अच्छे दर्जे में परीक्षा पास कर सकूँगा। परन्तु मेरा दिमाग पैसों के बिना बेकार हो गया है। मेरी बात छोड़ो, शीला को ही लो, वह बहुत चतुर है पढ़ने में। जो कोई एक वर्ष में सफलता नहीं पा सकता है, उसे वह कई महीनों में कर के दिखायेगी।" मोती ने दुःखी हो कर यह कहा।

"क्यों मोती, क्या ही अच्छा होता, यदि तुम भी आगे पढ़ लेते ?"

"तुम्हारी बात सही है दोस्त, परन्तु मजबूरी के होते हुए हम भी लाचार हैं। चाहते हुए भी हम कुछ कर नहीं सकते हैं।"

"फर्ज किया, तुम बी० ए० पास कर लो तो क्या मुझे पढ़ा सकोगे ? मुझे लगता है कि मेरे जीवन में यह भारी कमी है, जो लेकर कभी मुझे डुबो देगी।" रहमान के नेत्रों में पानी था।

"ऐसा क्यों कहते हो, यदि तुम आज ही से पढ़ना शुरू कर दो तो मैं बिल्कुल तैयार हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम कुछ ही महीनों में बहुत कुछ सीख लोगे। प्रत्येक कार्य में लग्न चाहिये। तुम्हारा दिमाग तो बहुत तेज है।"

"तुम्हारे दिमाग से क्या अधिक तीक्ष्ण है ?"

"हाँ मुझसे तीक्ष्ण है। पढ़ने से मुझे एक बात का लाभ है। वह यह है कि मैं तरह तरह के समाचार पत्र पढ़ सकता हूँ। इस से मुझे पता चलता है कि संसार की गति क्या है। जहाँ तुम सुनी सुनाई बातों को दुहराते हो। इतना अन्तर है केवल मुझ में और तुम में।"

"यह अन्तर कम तो नहीं होता है। मुझे पढ़ने की इच्छा शुरू से ही थी, परन्तु घर में किसी ने पढ़ने न दिया। दो चार जमात पढ़ना भी क्या पढ़ना हुआ। अब मुझे पढ़ने में बहुत लज्जा आती है। शीला क्या सोचेगी ? यही ना कि उसे खूब नसीहत की जब कि मेरे लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।"

"इस में लज्जा की क्या बात है। संसार में कभी किसी कार्य के लिए देर नहीं होती है। जब तक मनुष्य के शरीर में दम है तब तक किसी भी काम को सीखना पाप नहीं है। और फिर यह कोई बुरा काम तो है

नहीं। क्यों तुम्हें नाहक परेशानी है कि माँ और शीला तुम पर हँसी उड़ायेंगी। तुम मुझ पर भरोसा रखो कि वह कभी बुरा नहीं मानेंगी।"

"छोड़ो यार, मैं अब पढ़ने लायक रहा नहीं। मुझे अपने पढ़ने पर स्वयं हँसी आती है। जब पढ़ना था, तब नहीं पढ़ा, अब बूढ़ा तोता क्या पढ़ूंगा।" रहमान ने निराशा से कहा।

"यदि तुम इतना हठ करोगे तो मुझे जबरदस्ती पढ़ाना पड़ेगा।" इस बात पर दोनों हँस दिये।

"यदि तुम्हें अपने पर इतना विश्वास है कि तुम वास्तव में मुझे किसी लायक बना सकोगे, तो सुनो एक शर्त पर मैं पढ़ लूंगा कि तुम इस बात को कभी किसी पर व्यक्त न करोगे। न अपने घर में और न किसी मित्र के सामने ही।"

"मैं तुम्हारी शर्त को स्वीकार करता हूँ, परन्तु मैं चाहता हूँ कि शीला भी इस बात को जान जाये ताकि वह भी मेरे काम में तुम्हारी सहायता कर सके, यानि तुम्हें कुछ पढ़ा सके। और वह तो इस बात को बड़ी सावधानी से निभा सकेगी। यह कहो, पढ़ोगे कहाँ? मेरे घर पर, ठीक है ना?"

"बिल्कुल ठीक है। यदि तुम्हारी इच्छा है कि शीला भी इस बात को जान जाये तो यह भी सही। कल से पढ़ाई आरम्भ। मेरी भी तुम्हारी भी और शीला बहिन की भी। समझे।"

दोनों जैना कदज पुल के पार हो गये। एक तंग गली में से होते हुए वह एक पुराने मकान के जीने से ऊपर चले गये। यह मकान एक तरखाँ का था; जिस का लड़का इन्कलाबी कौंसिल का मेम्बर बन चुका था। दोनों एक छोटे से कमरे के सामने रुक गये। अपना जूता उतारते हुए मोती बोला—

"तुम्हारे जूते ने तो जवाब दे दिया है। इसे बदलते क्यों नहीं?"

"अवश्य बदलूंगा, जब हमारा राज्य होगा।" इस पर दोनों हँस दिए।

यह कह कर दोनों कमरे के अन्दर चले गये। कमरे में एक बड़ी चट्टाई बिछी थी, जिस पर कौंसिल (Council) के सब मेम्बर (Members) बैठे थे। दोनों को आते देख कर नरुद्दीन ने कहा,—"यार बहुत देर लगाई तुम

लोगों ने। अभी तक हम आप ही की प्रतीक्षा करते रहे। हमारा विचार था कि अब आप नहीं आ पायेंगे।"

"रास्ते में जरा देर लग गई, इसी लिए हम यहाँ समय पर नहीं आ सके। हाँ, यह कहो हड़त.ल के लिए कौन सी तारीख तय हो गई?" मोती ने बैठते हुए कहा।

"हड़ताल होना कठिन ही है। जो लोग दिन में केवल कुछ ही आने कमाते हैं, भला वह लोग इस झमेले में क्यों फंसेंगे। कहीं ऐसा न हो कि हम हड़ताल का एलान भी कर दें, और लोग अपनी दुकानें या अपने काम जारी रखें, तब बहुत बुरा होगा। हमारा अब तक का परिश्रम सब समाप्त हो जायेगा।" नूरुद्दीन ने तत्परता से कहा।

"नहीं कोई तरीका ढूंढना होगा। हड़ताल होगी और अवश्य होगी यदि हम क्रान्ति चाहते हैं तो घर बैठे सब कुछ मिल नहीं सकता है। लोग कैसे जान पायेंगे कि हम चाहते क्या हैं। यदि उन का कारोबार ठीक से जारी रहा तो हम अपने उद्देश्य में सफल नहीं होंगे।" रहमान ने अपने हाथ को हाथ पर मारते हुए कहा।

"मैं यही चाहता हूँ किसी भी सूरत में हड़ताल हो कर ही रहे। परन्तु मुझे डर इस बात का है कि क्यों लोग हमारी बातों को सच मान बैठें। आखिर वह किस लालच से यह सब करने पर तैयार होंगे।" मोती ने सोचते हुये कहा।

"मेरे दिमाग में एक बात आ रही है, कि चन्दा ज़मा करके चोरी छुपे लोगों में पैसे बांट दिए जायें। पहले उन को लालच देना पड़ेगा फिर अपने आप क्रान्ति में दिलचस्पी दिखा देंगे उन का काम भी बन जायेगा और हमारी भी जीत होगी।" शाबान ने कहा।

"वाह यार, बात बन गई। यह युक्ति बुरी नहीं है, मगर मुझे डर है कि यदि चन्दे का पैसा लोगों में बाँट दिया जाये तो वह और भी लालची हो जायेंगे। ऐसा क्यों न किया जाये कि उन पैसों से आवश्यकता की वस्तुयें मोल ली जायें। यानि आटा, चावल, आलु आदि खरीद कर रख लें। समय आने पर आवश्यकता के अनुसार लोगों में यह चीजें बाँट दी जायें।

इससे वह समझ पायेंगे कि यह भी हड़ताल का ही तरीका है। लोग भूखे भी न मरेंगे और सरकार को हानि भी होगी।" मोती ने कहा।

"मोती का कहना सही है। अब तुम लोगों को चन्दा जमा करना चाहिए। और हाँ कहीं ऐसा न हो कि चंदा जमा करते करते लेने के देने न पड़ जायें। यह काम बड़ी सावधानी से हो जाना चाहिए।"

"लेने के देने क्यों पड़ेंगे। हमें पता है कि जनता हमारे संग है। वह हमारी सहायता अवश्य करेंगे। ध्यान यह रहे कि कोई हमें पहचान न पाये, तब मामला गोल हो जाने का खतरा है। किया ऐसा जाये कि अमीर घरों को छोड़ निर्धन घरों में जाया जाये, क्योंकि अमीर लोग क्रान्ति नहीं चाहते।"

"शाबान, नूरा और करीम के ऊपर चंदा जमा करने की जिम्मेदारी होगी। आप लोग इस कार्य के लिए जितने व्यक्ति चाहते हैं ले जा सकते हैं। और वह आय मोती के पास रहेगी। आज से हमारी कौंसिल का कैशियर (Cashier) भी यही होगा।" रहमान ने अपना फैसला बता दिया और फिर बोला—"और हाँ दोस्तो, यह कहो कि जो खबर हम लोगों के कानों तक पहुँचाना चाहते हैं, वह उन तक कैसे पहुँच पाये ?"

"हमें चन्दे के पैसो में कुछ रुपए व्यय करने पड़ेंगे। छोटे-छोटे इश्तेहार छपवा कर हर एक मुहल्ले में बाँट दिये जायें। इससे सरकार को कानों-कान पता नहीं चलेगा और हड़ताल भी होकर रहेगी। क्यों क्या विचार है आपका ?" मोती कुछ रुक कर फिर बोला।

"मेरा एक मित्र प्रेस में काम कर रहा है, वह इन विज्ञापनों को सुगमता से छपवा सकेगा।"

"तुम लोगों की चतुराई के कारण उस दिन का कार्यक्रम बहुत सुन्दर रहा। कितने लोगों को एकत्रित किया था आपने मुझे उसकी कोई आशा न थी।" रहमान ने मित्रों की प्रशंसा करते हुए कहा।

"वाह, यदि नाम गुंडा पड़ गया तो क्या इतना मामूली काम भी नहीं कर सकते थे। तुम मुझ पर भरोसा रखो और देखो हड़ताल भी कैसी रहेगी कि सरकार को छट्टी का दूध याद आ जायेगा। पर रहमान, तुम्हें अपने भाषण के लिए तैयार रहना चाहिए, जिस से लोगों को जोश भी आ जाये

ग्रौर उन्हें लगे कि वह किसी लक्ष्य की ग्रोर जा रहे हैं ।" फिर मोती की ग्रोर मुड़ कर बोला,—"देखो मोती, तुम्हें ग्रपनी प्रतिभा दिखाने का इस से ग्रच्छा ग्रवसर ग्रौर कभी न मिलेगा। यानि कलम उठाने का। ग्राज तुम विज्ञापन में जान भर दो ग्रौर जोर लगा कर यह बताने का प्रयत्न करो कि हमारा ग्रभिप्राय क्या है, किस ग्रोर हम मुड़ रहे हैं।" शाबान ने दोनों को ग्रपनी ग्रोर ग्राकृष्ट किया।

"लोगों को यह भी बताना होगा कि उनको कहाँ सम्मिलित होना है। लाल चौक की ग्रपेक्षा हजूरी बाग ठीक रहेगा। यदि दो चार लाठियाँ खानी भी पड़ीं तो क्या हुग्रा। परन्तु मैं लाठियों की नौबत ग्राने ही नहीं दूंगा। इस से पहले ही ग्राप लोगों को कंधो पर उठा कर भाग खड़ा हो जाऊँगा।" करीम ने ग्रपना सीना बाहर निकालते हुए कहा।

"तुम ग्रपने कन्धों पर किस किस को लाद कर भाग जाग्रोगे ग्रौर फिर क्या विचार है तुम्हारा कि हम डरते हैं? यह गलत बात है। जब ग्रान्दोलन करना है तो डरना किस बात का। ग्रभी जेल का चक्कर भी तो काटना होगा।" रहमान ने कहा।

"हमारे लिए जेल जाना नई बात नहीं है। बल्कि ग्रब बाहर रह कर दिल उकता गया है।" नूरुद्दीन की इस बात से कमरे में ठहराके की हँसी छूट गई ग्रौर वहाँ ग्रट्टहास हुग्रा।

"ग्रच्छा भाई ग्रब चला जाये, कल फिर इसी स्थान पर मिलेंगे।"

"ग्रादाब ग्रर्ज !"

"सलाम !"

जब सब मित्र जीने से नीचे उतरे तो बाहर सड़क पर छोटे छोटे बच्चे खेल रहे थे। इन को देखकर एक बोला—

"गुंडे हैं गुंडे।"

"चल हट गधे कहीं के।" नरा बच्चों को वहाँ से भगाने लगा। सब बच्चे भाग खड़े हुए।

रहमान वहाँ से निकल कर सीधा अपने घर चला गया। उसकी माँ बाहर आँगन में लाल मिर्च, बेंगन और कद्दू काट काट कर धागे में सुखाने के लिए पिरो रही थी। यही सूखी सब्जियां जाड़ों में प्रयोग की जाती हैं। जब सारा कश्मीर बर्फ से ढक जाता है मनुष्य को बाहर जाना कठिन होता है, और जब कक्शु (Frost) या शिशुर के कारण जमीन में से सब्जियाँ निकालना असंभव हो जाता है तो उस समय यही सूखी सब्जी प्रयोग में लायी जाती है। इसलिए सदा शरद ऋतु में सर्दियों की तैयारियाँ की जाती हैं। रहमान अपनी माँ के पास आ कर बैठ गया। खतजी उसको देख कर बोली—

"अभी तक कहाँ थे?"

"वहीं इन्कलाबी कौंसिल में, और कहाँ।"

"न जाने क्यों तुम इन झमेलों में उलझ गये। यहाँ घर में खाने को कछ भी नहीं है, उधर तुम हंगामा कर बैठे। यह कहाँ का न्याय है, यह कहाँ की इन्सानियत है। अब तुम्हारा बाप बूढ़ा हो गया है, कब तक वह कमाता तुम्हें खिलाता रहेगा। तुम जवान हो, चुस्त हो, उससे दुगुनी मजदूरी कर सकते हो। पर जब तुम्हीं ने हाथ बटाना छोड़ दिया है तो तुम्हारे अन्य भाई क्या सीखेंगे, बल्कि वह तो टका सा उत्तर देने लगे हैं।" खतजी के नेत्रों में पानी भरा हुआ था।

"अम्मा, तुम मुझ पर यकीन रखो कि मैं गलत राह पर नहीं हूँ। जो कुछ मैं कर रहा हूँ, वह हम जैसे लोगों को ऊपर उठाने के लिये ही तो है। क्या तुम चाहती नहीं कि हम भी दो समय रोटी खा लें, ठीक कपड़े पहनें, हमारे पास भी रहने को अच्छे मकान हों। कहो तुम यह सब नहीं चाहतीं? हाँ, तुम यही सोचती होगी कि मैं सब बातें झूठ कह रहा हूँ। मगर माँ, इनमें एक बात भी झूठी नहीं है। मुझे दुःख है कि मैं अब्बाजान के काम में सहायता नहीं दे सकता। यदि मैं उनका हाथ बंटाता रहूँ तो न जाने कब तक हमारे हाथों में गुलामी की हथकड़ी पड़ी रहेगी। माँ, यह न सोचो कि केवल हम दुःखी हैं, बल्कि हम जैसे सैंकड़ों लोग हैं, जिन का हाल हम से भी गया गुज़रा है। तुम हिम्मत से काम लो। मैं तुम्हारी सौगन्ध खा कर कहता हूँ कि मैं अनुचित कार्य नहीं कर रहा हूँ।"

"परन्तु यह बताओ कि तुम्हारे आन्दोलन करने से हम अमीर कैसे हो

जायेंगे। हम भरपेट खाना कैसे पा लेंगे, हमें पहनने को अच्छे कपड़े कहाँ से मिलेंगे ? तुम वहाँ से कुछ कमा के तो नहीं लाते हो, या तुम्हें वहाँ कुछ मिलता तो है नहीं, फिर भला तुम्हारी ऐसी बातें करने का क्या प्रयोजन हो सकता है। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता है। हो सकता है कि तुम्हारी बातें सच हों, परन्तु मैं न केवल माँ हूँ बल्कि किसी की पत्नी भी हूँ। जब देखती हूँ कि मेरा पति भूखा रह कर सुबह से शाम तक कमाने की खातिर मजदूरी करता है। तुम्हीं सोचो मेरे ऊपर क्या बीतती है जब मैं उसको थक कर चूर पाती हूँ। रसूल कहता है कि तुम गुंडों की संगति में रह कर बर्बाद हो रहे हो, तो कहो मैं इसका क्या उत्तर दूं। मैं तुम पर विश्वास करूँ या उसके कहने पर यकीन करूँ।" माँ के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह चली।

"अम्मा, यदि तुम यही चाहती हो तो मैं अवश्य मज़दूरी कर लूंगा, अब्बा का हाथ बटा लूंगा। अब तुम प्रसन्न हो गई कि नहीं ?"

"क्या तुम वाकई इन्कलाबी पार्टी से मुक्त हो जाओगे ?"

"तुम्हें अपने पैसों से वास्ता है न, मैं कमा लूँगा और तुम्हारे सामने रख दूँगा।" रहमान ने माँ के आँसू पूंछते हुये कहा।

उसने अपनी माँ के हाथ में से सूई अपने हाथ में ले ली, और एक एक मिर्च धागे में पिरोने लगा। माँ उसकी चतुराई पर हँस दी और रहमान को वह गर्व से झाँकने लगी। वह सोचने लगी।

"वाकई यह बहुत बड़ा लीडर है। हज़ारों लोग इसकी बातों पर विश्वास करते हैं और अपनी जान तक को निछावर करने पर तैयार हैं।" उसे एक दिन की बात याद आई जिसे वह कभी भुला न सकी। जब वह बाज़ार साग खरीदने गई थी, तो वहाँ एक साग बेचने वाली से उस की बातचीत हुई थी।

"दो आने का साग दे दो।"

"आज चार आने का ले के रख लो।"

"क्यों क्या बात है ?"

"कल रहमान मीर का भाषण है। मैं कल साग बेचने नहीं आऊँगी।"

"रहमान को तुम इतना मानती हो ?"

"वह हम जैसे गरीबों का रीडल (लीडर) है। सच्ची बातें बताता है।

वह हमें स्वतन्त्र करेगा। मैं उसे अपना बेटा ही समझती हूँ।" उसकी इस बात से खतजी का हृदय प्रसन्नता के समुद्र में हिलोरें लेने लगा। आज उसे प्रतीत हुआ कि उसका बेटा कितना महान है। वह झट से बोली—

"वह मेरा ही बेटा है।" उसकी इस बात से साग़ वाली ने खतजी पर सिर से पाँव तक दृष्टि दौड़ाई। खतजी का मुँह चमक रहा था और वह प्रसन्नता के मारे लाल हो रही थी। वह हँस रही थी, उसके मस्तिष्क में गर्व का नशा सा छा गया। वह अपनी निर्धनता को एक दम भूल गई और झट से अपने जेब में से चार आने निकाल कर बोली--

"यह लो चार आने।"

"पैसे रख लो, तुम्हारा बेटा मेरे अपने बेटे के ही समान है। उसे यह साग पेट भर खिलाना।" यह कह कर साग वाली आगे बढ़ी और ग्राहकों को अपनी ध्वनि से अपनी ओर खेंचने लगी, "साग ले लो, ताज़ा साग, घी जैसा साग।"

इस बात के स्मरण होते ही खतजी मन ही मन कहने लगी--

"क्यों मैंने इसे नौकरी के लिए कहा। यदि मैं चाहूँ तो केवल इसके नाम मात्र से सारे शहर की जियाफतें खरीद लूँ, परन्तु नहीं, मुझे यह बात इससे नहीं कहनी चाहिए तब तो शायद कभी मज़दूरी करने पर तैयार नहीं होगा।" उसकी विचार शृंखला तब टूट गई जब रहमान का स्वर उसके कानों में पड़ा, वह चौंकी और उसे लगा कि वह किसी स्वप्न से जाग उठी हो।

"अम्मा, देखो कितनी जल्दी सब मिर्चें पिरो दीं। बेंगन भी पिरो दूंगा। सुखाने के लिए कहाँ पर टाँगने हैं?"

"उस खिड़की के बाहर वह लम्बी कील है न उसी पर टाँग दो। सूई मुझे पकड़ा दो मैं स्वयं ही बेंगन पिरो दूँगी। यह काम लड़कों का नहीं है।"

"समझ लो मैं एक लड़की हूँ। यदि मैं कमा नहीं सकता, तुम्हारा हाथ तो बटा सकता हूँ।"

"अच्छा अब चुप भी करो, बहुत बातें बनानी आती हैं तुम्हें।"

"यदि मेरे यहाँ बैठने से तुम्हारे काम में रुकावट होती है तो मैं अन्दर चला जाऊँगा।" कह कर वह घर के भीतर चला गया। कुछ देर के उपरान्त रसूलमीर अपने काम से लौट कर आया और खतजी की ओर बोला—

"रहमान ग्रा गया ?"

"हाँ, थोड़ी देर पहले ग्रा गया।"

"इस समय कहाँ है। तुम से बातचीत हुई उसकी ?"

"मैंने उसे काफी समझाया, परन्तु मुझे लगता है कि वह यह सब छोड़ने को तैयार नहीं होगा।"

"सोचता था बुढ़ापे में मेरी कुछ सहायता करेगा। न जाने उल्टा वह मेरी रही सही ग्राबरु को समाप्त करने पर क्यों तुला है। ग्रल्लाह की कसम ग्रब मुझ से बोझ ढोया नहीं जाता है।" खतजी ने देखा रसूल का शरीर सूख कर काँटा हो गया है। जहाँ वह युवावस्था में काफी गोरा था, ग्रब मज़दूरी के कारण उसका शरीर काला पड़ गया था। बुढ़ापे से पहले ही बूढ़ा होने के लक्षण ज़ाहिर थे। उसके बाल पक गये थे। उसके नेत्र बुझ से गये थे ग्रौर उनमें निराशा का नीर सदा भरा रहता था।

"तुम उसे स्वयं समझाते क्यों नहीं, शायद तुम्हारी बात मान जाए।"

"मुझे पता है कि पुलिस उसके पीछे पड़ी है। जब हाथ ग्राया जेल की सैर करेगा, तब खुदा ही जानता है कि कभी वहाँ से छूटेगा भी कि नहीं। हाकिमों से लड़ना खाला जी का घर नहीं है। ग्रब भी ग्रवसर है, यदि वह मान जाए तो। मैं स्वयं उसके संग जाकर सरकार से माफी दिलवा दूंगा। उसे छोटा ग्रौर नासमझ समझ कर शायद उन्हें दया ग्रा जाए।"

खतजी जेल का नाम सुन कर सिहर उठी। उसके नेत्रों के सामने रहमान की दयनीय दशा चित्रित हुई। ममता से उसका हृदय विह्वल हो उठा, वह शीघ्रता से बोली—

"कैसी बातें कर रहे हो रसूला कौन ग्रपने जिगर के टुकड़े को मुसीबत में डालना चाहेगा। मैं उसे ग्रभी बुलाकर लाती हूं, तुम उसे सब कुछ समझा देना।" रहमान दोनों की बातें सुन कर स्वयं ही वहाँ चला ग्राया। उसे देख कर रसूल ने कहना शुरू किया।

"तुमसे माँ ने भी कहा होगा कि मैं तुम्हारी ये सब हरकतें पसन्द नहीं करता हूँ।"

"वह तो मुझे पता है।" रहमान ने छोटा सा उत्तर दिया।

"कब तक मैं कमाता तुम्हें खिलाता रहूँ। क्या तुम मेरी हालत को देख

नहीं सकते ? हजार बार कह चुका हूँ, अब भी क्या कहने की आवश्यकता है ?"

"मैं मजबूर हूँ, अब मैं अपनी इच्छा का मालिक नहीं रहा। यदि मैं यह सब छोड़ना भी चाहूँ तो भी नहीं छोड़ सकता। यह सब मैं देश के कल्याण के लिए ही करता हूँ।"

"बड़ा आया है देश का कल्याण करने वाला। अपना घर बर्बाद करके देश का कल्याण करने चला है। तब भी क्या अपने बस की बात न थी, जब जानबूझ कर आग में पैर घसीटा था।" रसूल ने गुस्से से कहा।

"अब्बा, तुम इन बातों को नहीं जान सकते, क्यों नाहक बिगड़ रहे हो। मैं कोई बुरा कार्य नहीं करता हूँ।" रहमान ने बाप को शान्त करने के लिए कहा।

"मैं बिगड़ रहा हूँ, या तुमने पागल बना दिया है मुझे। तुम्हारे नेत्र बन्द क्यों हैं। तुम अपने घर की दशा को देखने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ?" इस बात पर रहमान चुप हो गया। वह वहाँ से खिसक जाना चाहता था, परन्तु पाँव आगे बढ़ने से साफ इन्कार कर रहे थे। उसका ध्यान रसूल की ओर गया, जो गुस्से में कह रहा था—

"और पता है सरकार तुम्हें कहाँ भेज देगी ? जेल, सदा के लिए। तब कहो, तुम्हारी देशभक्ति किस काम आएगी। चक्की पीसते-पीसते मेरी बातें याद आ जायेंगी। समझे, तब तुम्हारा बाप क्या खुदा भी तुम्हें वहाँ से छुड़ा नहीं सकेगा।"

"मैं इन सब बातों को अच्छी तरह जानता हूँ।" रहमान की आँखें नीचे थीं।

"अरे तुम भी किससे बहस करने लगे। यह ठहरा नादान लड़का। इसे क्या पता जेल जाना होता क्या है। आज तक हमारे घर में से कभी कोई जेल नहीं गया। कभी किसी ने चोरी नहीं की, तब फिर यह इन बातों को क्या समझे।" खतजी ने बेटे को बचाना चाहा।

"यदि यह मान जाए तो हम कल ही कचहरी में जाकर जज साहब के सामने माफी माँग लेंगे, और इसे आगे कभी इस तरह की हरकत न करने का भी प्रण करना होगा।" रसूल की आवाज में आशा की झलक थी।

"मुझे कितनी बार कहना होगा कि मैं अब पीछे मुड़ नहीं सकता। तुम लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हो। मैं सदा के लिए यह घर छोड़ दूँगा, यही है न तुम्हारी इच्छा ?" रहमान का लहु गुस्से से उबल रहा था।

"चला जा, कम्बख्त कहीं का। एक बला सिर से टलेगी।" रसूल ने दाँतों को पीस कर कहा।

रहमान शीघ्रता से द्वार की ओर मुड़ गया। खतजी ने देखा कि वह वास्तव में घर से बाहर जा रहा है। उसे रहमान की हठधर्मी की पूरी जानकारी थी। वह जो कुछ कहता था, करके दिखाता था। खतजी घबरा उठी, उसे डर लगा कि कहीं रहमान सदा के लिए वहाँ से कूच न कर बैठे। वह रोते हुए बोली—

"बेटा, तुम मुझे छोड़ कर कहाँ जाओगे। यदि तुम यहाँ से चले गए तो समझो तुम कभी मुझे जीवित नहीं पाओगे। अपने घर को ठुकरा कर न जाओ। हम केवल तुम्हारी भलाई ही के लिए यह सब कर रहे हैं। हम तुम्हारा बुरा नहीं चाहते हैं बेटे।" माँ के करुणार्द्र स्वर से रहमान का हृदय रो पड़ा। उसके पैर ठिठक गए, उसका दिल माँ के प्यार भरे शब्दों से बेचैन हो उठा, उसका मन भर आया और उसके पाँव अपने आप लौट आए। उसने देखा खतजी का मुँह प्रसन्नता से खिल गया, और रसूल का मुँह पराजय, ग्लानि और दुःख से झुक गया था। रसूल बिना कुछ कहे हुक्के को उठा लाया और जोर-जोर से उसके कश लेने लगा। इस तरह वह अपने दिल के दर्द को छुपाने में सफल रहा।

आज रायसाहब के घर में खूब रौनक थी। उनके भाई सोमनाथ के लड़के नारायण ने ऊँचे दर्जे में बी. एस. सी. (B. Sc.) की परीक्षा पास की थी। बधाई देने के लिए कई व्यक्ति वहां आ रहे थे। बड़ी माँ प्रसन्नता से फूल रही थीं और सोमावती मेहमानों की देखभाल में व्यस्त थीं। सौभाग्यवती खुशी के मारे फूली न समा रही थी। बड़े घर के बेटे का ऊँचे दर्जे में पास होना मामूली बात न थी। इस समाचार के मिलते ही रायसाहब अपनी लायब्रेरी (पुस्तकालय) से बाहर चले आये और नारायण के गले मिले, उसका माथा चूमा और बोले—

"कहो बेटा, अब आगे पढ़ने का क्या विचार है ?"

"अभी तो पिता जी, मैंने इस बारे में कुछ भी नहीं सोचा है। जैसा आप कहेंगे, मैं वही करूँगा।"

"मैं चाहता हूँ कि अब तुम शीघ्र इंगलैंड चले जाओ। यहाँ समय व्यर्थ करना ठीक नहीं। वहाँ से डाक्टर बनकर आ जाओ ताकि तुम निर्धनों की सेवा कर सको। क्यों बड़ी माँ, ठीक है न ?" त्रिलोकीनाथ ने माँ की ओर देखते हुए कहा।

"बिल्कुल मैं भी यही चाहती हूँ। आखिर हमारे खानदान की यही तो प्रथा है, और इस प्रथा को आगे भी चलाना है।"

"मैं विदेश जाना अवश्य चाहता हूँ, परन्तु सुष्मा और मैंने तय किया

है कि हम दोनों साथ ही चलेंगे। केवल उसकी परीक्षा तक रुक जाता तो ठीक था।"

"तुम उसके कारण अपना वर्ष न गँवाओ! यह मैं नहीं चाहता।" रायसाहब ने बड़े प्रेम से कहा।

"मैं कँवारी लड़कियों के विदेश जाने के हक में नहीं हूँ। मैं चाहती हूँ कि उसका ब्याह शीघ्र हो जाये। विवाह के उपरान्त पति के साथ जाने में हमें कोई बाधा नहीं हो सकती है।" बड़ी माँ ने अपना पक्का फैसला सुना दिया।

"बड़ी माँ की बात बिल्कुल ठीक है। सुष्मा की आयु अब ब्याहने योग्य है। ज़माना बदल रहा है, क्या पता कल क्या होगा। सो उसकी शादी शीघ्र ही हो जानी चाहिए।" सोमावती ने सास की हाँ में हाँ मिला दी।

उनकी बातें हो ही रहीं थीं कि ख्वाजा शौकत अली अन्दर चले आये। आते ही बोले—

"मुबारिक, मुबारिक हो आप सब को। मुझे यह खुशखबरी नजमा ने सुनाई। बहुत ही लायक लड़का है। हाँ, क्यों न हो ऐसे, वैसे घर का तो है नहीं।" ख्वाजा साहब नारायण से हाथ मिलाने लगे और बोले—

"कौल साहब, साहबज़ादे को फौरन इंगलैंड भेज दीजिए। वहां यह कुछ बन कर आयेंगे।" फिर बड़ी माँ की ओर मुड़ कर बोले—"आपकी सँगत में रह कर इनके प्रथम (First) आने में कोई शक ही न था। यह सब आपकी बरकत है।"

"आप आराम से बैठ जाइए, कितनी देर यूँ ही खड़े रहेंगे।" सौभाग्यवती ने हँसते हुए कहा।

"धन्यवाद भाभी।" यह कह कर ख्वाजा साहब बैठ गये और बोले—

"यदि आपका और हमारा एक मज़हब होता, या समाज इजाजत देता तो मैं बिना सोचे नजमा की शादी आपके साहबज़ादे से कर देता।"

"जी हाँ, बात बिल्कुल सही है। हम भी ऐसी बहू पाकर बहुत प्रसन्न हो जाते, परन्तु बीच की दीवार होने के कारण हम इस समस्या पर सोच भी नहीं सकते।"

"मैं चाहता हूँ कि उसका विवाह शीघ्र कर दूँ। क्योंकि ज़माना बहुत

बदल रहा है। कल क्या होगा कौन जानता है, लड़कियाँ कुछ आजाद हो गयी हैं, कल वह हम ही को सिखाने लगेंगी, इसलिए ज़बान आने से पहले ही इस बीमारी का इलाज हो जाना चाहिए और फसादात भी हो रहे हैं। गुंडे लीडर हैं, जो सब करा रहे हैं।"

"बड़ी माँ भी सुष्मा के बारे में यही कह रही थीं। कोई अच्छा सा लड़का मिल जाता तो हम उसके हाथ पीले कर दें।"

इतने में नौकर कहवे की ट्रे हाथ में लेकर आया और एक प्लेट में कुछ खाने के लिये भी।

"बरखुरदार, क्या लाये हो ?" ख़ूजा ने मज़ाक से पूछा।

"जनाब, कहवा लाया हूँ।"

"हमें कहवा बहुत पसन्द है। न जाने लोग दूध वाली चाय क्यों पसन्द करते हैं। और फिर यह तो बहुत अच्छा बना है। कभी ऐसा कीजिए भाभी जान, अपने नौकर को हमारे घर भेज दीजिएगा और वह हमारे नौकरों को कहवा बनाना सिखा देगा।"

"अवश्य भेज दूँगी। फिर आपको उनसे कोई शिकायत नहीं रहेगी।"

"बहुत, बहुत शुक्रिया। अच्छा अब इजाज़त दीजिए बड़ी माँ, फिर कभी हाज़िर हो जाऊँगा।" यह कर कर वह वहाँ से चल पड़े। उनके चले जाने के बाद बड़ी माँ बोलीं—

"कितना दुखी है शौकत साहब ! जब भी अपनी पत्नी की बात छेड़ता है तो आँखों में आँसू भर आते हैं। सब कुछ होते हुये भी वह सुखी नहीं है। बुढ़ापे में एकदम अकेला है। बच्ची है, वह भी केवल एक। उसके चले जाने के बाद इसका जीवन काटने को दौड़ेगा।"

"मगर माँ, यह इतना दुखी नहीं जितना तुम समझती हो। मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ। आपके सामने तो इसे यह सब कहना ही था।" कौल साहब ने हँसते हुए यह कहा।

"हो सकता है कि तुम्हारी बात सच्ची हो, परन्तु मुझे वह बहुत दुखी प्रतीत होता है। जब तक मनुष्य दुखी न हो तब तक वह नाटक नहीं रच सकता। अब यदि वह अपने दुखों को भुलाने का प्रयत्न न करे तो उस जैसा

बदनसीब कौन होगा।" माँ से सब बातें कहना ठीक न समझ कर कौल साहब बोले—

"हाँ बड़ी माँ, आपका कहना ही ठीक है। यदि स्वयं को भूल न जायेगा तो उसके लिए एक-एक दिन काटना भी कठिन हो जायेगा।"

नारायण वहां से सीधा शशि और सुष्मा के कमरे में चला गया। सुष्मा अपने लहँगे पर गोटा किनारी लगा रही थी।

"क्या कर रही हो सुष्मा ? आज कालेज नहीं गई ?"

"आज छुट्टी थी भैया, कल नाटक हो रहा है न, उसी की तैयारी कर रही हूँ। हाँ यह बताओ कि आपके पास होने की पार्टी कब होगी ?"

"पार्टी अब इंगलैंड जाने के समय ही होगी।"

"इंगलैंड ? कब जा रहे हो ?" सुष्मा ने किनारी को एक तरफ रखते हुए पूछा।

"बहुत शीघ्र ! मैंने तो तुम्हारी भी सिफ़ारिश की थी, परन्तु अब तुम्हारा ब्याह शीघ्र ही होगा, इसलिए वहाँ जाना तुम्हारे लिए कठिन है।" नारायण ने मुस्कराते हुए कहा।

"ब्याह मेरा हो रहा है और मुझे पता भी नहीं। तुम्हें किसने कहा ?"

"नीचे बातें हो रही थीं, सब सुन लिया मैंने।"

"गज़ब हो गया। यह तो बताओ कि किससे हो रहा है ? कहाँ का है, कौन है वह ?" सुष्मा ने उत्सुकता से पूछा।

"अभी हमारे जीजी जी का जन्म नहीं हुआ। जब होगा तब बता दूंगा।" नारायण ने सुष्मा को चिढ़ाते हुये कहा।

"छोड़ो भैया, जीजा जी की बातें। न जाने दीदी को सदा अपनी ही चिन्ता क्यों सताती है। यह बताइये आपके पास होने की पिक्चर (Picture) कब हो रही है ? बाकी रही पार्टी, वह तो आप के यूरोप जाने के ही समय ठीक रहेगी।" शशि ने नारायण के गले में हाथ डालते हुए कहा।

"पिक्चर देखना चाहती हो तो कल हम चारों चले जायेंगे। ठीक है न ?" नारायण ने शशि को प्रसन्न करने के लिए कहा। शशि सबसे छोटी थी, इसलिए सब उसे प्यार करते थे। नारायण उसे बहुत चाहता था, इसलिए वह और भी लाडली बन बैठी थी। उसका स्वभाव बहुत चँचल था और वह सुन्दर

भी थी। उसके सुनहरे बाल, बायीं ओर गाल पर काला तिल तो सुन्दरता को और भी निखार रहे थे। जब वह हँसती तो दोनों गालों पर छोटे-छोटे गढ्ढे पड़ जाते। वह सुष्मा से छोटी थी। दोनों बहनों की शक्ल बहुत मिलती-जुलती थी। सुष्मा का कद लम्बा और शशि का कद साधारण था। शशि अपने बालों का बहुत ध्यान रखती थी। उन्हें धोना, सँवारना, ब्रुश लगाना उसका रोज का प्रोग्राम था। उसने अपने बाल खोल दिये और ब्रुश से उन्हें साफ करने लगी। बोली—

"नहीं भैया, हम तो आज ही चलेंगे, बहुत अच्छी पिक्चर है।"

"हम क्या तुम्हारे गुलाम हैं जो तुम्हारी बात आज ही मान लें। यदि हमारी इच्छा आज पिक्चर देखने की न होगी तो तुम क्या कर लोगी।" विष्णु जो उनकी बातें सुन कर वहीं आ पहुँचा था, बोला—

"ठीक कहा विष्णु तुमने। हमें सदा इसकी बात माननी पड़ती है। आज हमारा फैसला होगा, और वह यह है कि हम कल पिक्चर देखने चलेंगे। जैसा कि भैया ने कहा है।" सुष्मा ने विष्णु का पक्ष लेते हुए कहा।

"हाँ, हाँ तुम कल चली जाना, मैं और भैया आज ही चलेंगे। क्यों भैया ठीक है न ?" शशि ने आग्रह करते हुए कहा।

"जिस जिस को पिक्चर देखनी है, वह आज ही चलेगा। कल मुझे पिता जी के साथ एक मीटिंग में जाना है।"

"झूठ, हमको सब मालूम है। शशि की बात रखने के लिए आप ऐसा कह रहे हैं।" विष्णु ने झट से कहा। नारायण खड़ा हो गया और बोला—

"जिसको जाना है वह पूरे चार बजे तैयार रहेगा। अच्छा अब मैं चलता हूँ।"

नारायण बहुत ही स्मार्ट लड़का था। उसका अंग-अंग भरा हुआ था। खूब गोरा, छोटी-छोटी मूँछें, बाल अंग्रेजी ढंग से बनाए हुये। वह पैंट और गर्म जरसी पहने था। पाँव में काला पम्प शू (Pump Shoe) था। वह सुशील, गुणवान, मधुर भाषी भी था। कभी भी किसी के साथ झगड़ना वह पाप समझता था। जब कभी भाई, बहनों में झगड़ा होता तो वह उनका फैसला करवाता। सदा उनको अच्छी बातों से परिचित कराता। उसकी चाल ढाल से सभ्यता टपकती थी। उसका लालन पालन अँग्रेजी ढंग से हुआ था। वह समय

का बहुत पाबन्ध था। इसके विपरीत विष्णु नटखट था। छोटी सी बात पर झगड़ा मोल ले बैठता। कालेज में सब छात्रों के आगे निकलता था। खेल कूद उसके जीवन के विशेष अँग थे। वह सदा अपनी मनमानी करता। उसे तराकी, शिकार और घुड़सवारी का बहुत शौक था। यह सब कुछ होने पर भी वह पढ़ने में बहुत होशियार था। उसका लिबास भी अपनी ही तरह का होता। कभी पैन्ट, कभी चूड़ीदार पाजामा, कुर्ता और अचकन पहनता। इसलिए घर में चिढ़ाने के लिए सब उसे छैला कहते थे। नाटकों में भाग लेना उसे बहुत प्रिय था। सब बहन भाइयों का आपस में बहुत प्यार था। विष्णु और सुष्मा की खूब बनती थी तो नारायण और शशि की आपस में खूब पटती थी। विष्णु ने नटखटपन से कहा।

"भैया, कहीं इंगलैंड जा कर वहीं से एक मेम तो नहीं ले आओगे ?"

"अवश्य ले आऊँगा, परन्तु अपने लिए नहीं, तुम्हारे लिए।" इस पर सब हँस पड़े। विष्णु हार मानने वाला तो था नहीं, झट बोला—

"मेरे लिए आप क्यों परेशानी उठायेंगे, मैं स्वयं भी तो जाकर ला सकता हूँ।"

"यह बताओ भैया, जा कब रहे हो ?" सुष्मा ने पूछा।

"पासपोर्ट बनवाने में कुछ समय तो लग ही जायेगा। यह समझो महीना दो महीने।"

"मैं यदि न भी जा पाऊँगी, परन्तु मुझे खुशी है कि मेरे भैया जी जा रहे हैं।" सुष्मा ने भाई को प्यार से निहारा।

"अच्छा तो सिनेमा देखने के लिए तैयार रहना ?"

"भैया मैं तो यह कहना भूल ही गई, कि हमारे कालेज में शुक्रवार को एक नाटक खेला जा रहा है। मैं आप सब के लिए पास ले आई हूँ, आपको यह नाटक देखना होगा। समझे। कहीं भूल न जाना।"

"क्या तुम भी नाटक में भाग ले रही हो ?"

"और नहीं तो क्या।"

"तब तो अवश्य देखने आऊँगा। मैं अभी अपनी डायरी पर नोट कर लेता हूँ।" यह कह कर उसने अपनी जेब से छोटी सी डायरी निकाली और उस पर कुछ लिख लिया।

चारों बहिन भाई सिनेमा चल पड़े। कार अमरीश टाकीज के सामने रुक गई। सब हाल की ओर जाने लगे कि शशि ने दूर से नजमा को देख लिया, झट से बोली—

"दीदी, नजमा ! बुला लूं उसे ?"

"कहां है वह ?"

"वह देखिए, वह खड़ी है।" उसने हाथ से इशारा किया। यह कह कर वह दौड़ती हुई नजमा के पास पहुँची और उसे बुला लाई।

"नमस्कार।"

"नमस्कार, तुम्हारे साथ कौन है नजमा ?"

"मैं अकेली ही हूँ।"

"चलो ठीक हुआ, मैं सच बहुत खुश हुई तुम्हें देख कर।" फिर नारायण से बोली—

"भैया एक और मेहमान है।"

"बिन बुलाये है मगर।" नारायण ने हँसते हुए कहा।

नारायण ने टिकटें खरीद लीं, और सब हाल में चले गये। नारायण नजमा के बिल्कुल पास वाली कुर्सी पर बैठ गया, और सुष्मा नजमा के दूसरी ओर बैठ गई। अभी पिक्चर शुरू होने में कुछ समय बाकी था। सब बातें करने में व्यस्त हो गये। नजमा नारायण से बोली—

"आपको बधाई हो फर्स्ट आने की, और हाँ, दूसरी बधाई इंगलैंड जाने की।"

"धन्यवाद, यदि हमारी मुलाकात यहाँ न हुई होती तो आज आपकी बधाई शायद नहीं मिलती। क्यों ठीक है न ?" नारायण ने मुस्कराते हुये कहा।

"नहीं, दरअसल बात यह है कि मैं आपको अपने घर दावत पर बुलाना चाहती थी इसलिए अभी तक बधाई देने का मौका नहीं मिला। और हाँ एक और मजे की बात यह हुई कि कल सारा दिन अब्बाजान आप ही के गुण गा रहे थे और कह रहे थे कि "यह मजहब की दीवार न होती तो बिना देखे-सुने मैं नजमा का ब्याह नारायण से कर देता। इतने होनहार लड़के को हाथ से न जाने देता।" मुझे इस बात पर हंसी आ गई। मैंने उन से यूं ही कह दिया

कि "अब्बाजान, आपको यह कैसे पता है कि मुझे उनसे विवाह करने में कोई ऐतराज नहीं है।" यह कहते नजमा का मुँह लज्जा से लाल हो गया। उसे अपनी ही बात खल गई, परन्तु बात मुँह से निकल ही गई थी। उसकी पलकें झुक गईं। शशि को नजमा की बात से आनन्द आ रहा था, झट से बोली—

"तो क्या नजमा दीदी, आपको सचमुच ऐतराज नहीं है?"

नजमा ने अपनी पलकें नारायण की ओर धीरे से उठा लीं। नारायण की दृष्टि नजमा के नेत्रों के ऊपर गिर गई, और उसे लगा कि नजमा के नेत्रों में बहुत कशिश है। वह जितना दूर भागना चाहता था, उतना ही वह उसे अपनी ओर खींच रही थी। दोनों के दिलों की धड़कन तेज़ हो गई। दोनों भूल गये कि उनके सिवा वहाँ और भी कोई है। उनकी यह हालत देख सुष्मा मन ही मन में हँस रही थी। उसे दुःख यही था कि नजमा और नारायण के बीच मजहब की एक दीवार खड़ी है। वह चाहती थी कि नजमा उसकी भाभी बन जाये, परन्तु कैसे। उसने नजमा की जोर से चुटकी ली। नजमा एक स्वप्न से जाग गई। घबराई सी सुष्मा से पूछने लगी—

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं, अधिक देर स्वप्न लोक में खोना ठीक नहीं। इस दुनिया में लौट आओ।" सुष्मा ने चन्चल नेत्रों से देखते हुए कहा।

नारायण ने अपनी नज़र सुष्मा की ओर फेर ली। सुष्मा ने भी उस पर अर्थ भरी दृष्टि डाली, आँखों ही आँखों में कह दिया।

"बधाई है प्रेम की भैया।"

चित्र आरम्भ हुआ। हाल में सन्नाटा छा गया, सब पर्दे की ओर देखने लगे। परन्तु नारायण और नजमा के हृदय की गति और ही तरह से चल रही थी। दोनों खामोश मन ही मन में एक दूसरे को कुछ कहना चाहते थे, परन्तु मन की बात होठों तक न ला सकते थे। नजमा आज किसी और ही संसार में खोई हुई थी। उसने अपने हृदय में दर्द सा महसूस किया। यह किस तरह का दर्द था, वह स्वयं भी समझ न पाई। नारायण की भी यही हालत थी। उसने धीरे से अपना हाथ नजमा की ओर बढ़ाया और उसका हाथ अपने हाथों में भर लिया। दोनों के शरीर में जैसे बिजली सी दौड़ गई। नारायण

नजमा को सीने से लगा लेना चाहता था, और नज़मा की भी यही दशा थी।

"नजमा, आखिर तुम्हारी जीत हुई।"

"मैं तो हार गई। जिस बात को वर्षों से दिल में दबाये बैठी थी, वही आज प्रगट हो गई।" नजमा ने फुसफुसाहट में कह दिया।

"यह सोचो कि मुझ पर क्या गुज़र रही थी। तुमने कोई कम तो नहीं तड़पाया।" वह नजमा के हाथ को ज़ोर से दबाते हुये बोला।

"आप कब जा रहे हैं ?"

"न जाता तो और भी अच्छा होता।"

"पासपोर्ट मिल गया क्या ?"

"नहीं अभी पासपोर्ट कहाँ मिला।"

"मैं चाहती हूँ कि आप शीघ्र ही चले जायें।" नजमा ने बड़े प्यार से कहा।

"कहो नजमा, मुझे पत्र लिखोगी ?"

"भला यह भी पूछने की बात है क्या।"

"तुम्हारे अब्बाजान नाराज़ तो नहीं होंगे ?"

"नहीं, वह जान भी नहीं पायेंगे।"

पिक्चर समाप्त हो रही थी। सुष्मा ने धीरे से नजमा के कान में कहा—

"आज बहुत हो गया, बाकी कल के लिये भी छोड़ दो।" सुष्मा की बात सुन कर दोनों के हाथ ढीले पड़ गये।

पिक्चर समाप्त हुई। सब बाहर आकर कार में बैठ गये। कार हवा से बातें करने लगी। थोड़ी ही देर में नजमा का घर आ गया। नारायण नीचे उतरा, कार का द्वार खोलते हुये बोला—

"आइये।" नजमा कार से नीचे उतर गई तो नारायण बोला—

"अच्छा, हमें आज्ञा दीजिये, हम चलते हैं।"

"आज्ञा इतनी जल्दी नहीं मिल सकती," फिर ज़रा झुक कर सुष्मा की ओर जो, कार में बैठी थी, बोली—

"अरी, कार से बाहर तो आओ। आज तुम सबको अन्दर आना पड़ेगा।"

"बहुत देर हो गई दीदी, घर में सब परेशान होंगे ।" विष्णु ने कहा ।

"घर पर टेलीफोन कर देंगे । चलो, जल्दी करो, काफी ठंड है ।" नजमा ने अपनेपन से कहा । उसके आग्रह को कोई टाल न सका । और वह सब अन्दर चल कर एक सुसज्जित कमरे में गये । इस कमरे में नजमा के हाथ के काढ़े हुये मेज़पोश टेबलों पर बिछे हुये थे । कमरे के बीच में एक लोहे की बुखारी (अंगीठी) रखी हुई थी, जिस में धीमी-धीमी आग जल रही थी । उसी के कारण कमरा खूब गर्म था । नारायण और विष्णु ने अपने-अपने ओवर-कोट उतार दिये और बड़े आराम से सोफे में घुस गये । सुष्मा नजमा के साथ बाहर चली गई, और शशि नजमा के हाथ के काढ़े हुये मेजपोशों का निरीक्षण करने लगी । नारायण ने वहाँ पड़ा हुआ एक समाचार पत्र उठाया और उसी को देखने में मग्न हो गया ।

खूजा के कानों में नजमा और उसके मित्रों की जब आवाज पड़ी तो वह सीधे उस कमरे में पहुँच गये जहाँ वह सब बैठे थे । सबको यहाँ देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ, बोले—

"यह आज हमारे घर में रौनक कैसी ? कहीं रास्ता तो नहीं भूल गये ?"

"आना तो कई बार चाहते थे । परन्तु पढ़ाई के कारण समय ही नहीं मिलता था । आज नजमा के बहाने ही आ गये, सोचा आप से भी मुलाकात करते चलें । अब तो मैं फारिग हो गया हूँ, कभी भी आ सकता हूँ ।" विष्णु ने नारायण की बात सुनते ही भाई पर भेद भरी दृष्टि दौड़ाई । उसके इस तरह देखने से नारायण मन ही मन में मुस्कराया ।

"बेशक यह तो आपका अपना ही घर है । आप लोग सिनेमा देखने गये थे क्या ? नजमा ने हमसे यह नहीं कहा कि वह आपके साथ जा रही है । शायद मुझे डराना चाह रही थी कि मैं अकेली जा रही हूँ । चलो ठीक ही हुआ ।" यह कह कर खूजा ने अपने नौकर को आवाज दी ।

"ओ मकबूला, मेरा हुक्का यहीं ले आओ ।

ख्वाजा साहब एक शाहतोसा (पशमीने की शाल) ओढ़ कर नीचे कालीन पर बैठ गये । नौकर ने एक बड़ा गाव तकिया उनके पीछे रखा और

हुक्के की टूँटी खूजा को पकड़ा दी। खूजा आज बहुत प्रसन्न नज़र आते थे। नौकर से बोले—

"आज साहबज़ादों के लिये खाना यहीं बनेगा।"

"घर में किसी को पता नहीं है चाचाजी, खाना फिर कभी खा लेंगे।" नारायण ने कहा।

नारायण की बात को अनसुनी करते हुये ख्वाजा साहब ने नजमा को बुलाया।

"नजमा, नजमा बेटी।"

"आई अब्बाजान।" उनकी आवाज़ सुनकर दोनों सखियाँ वहाँ चली आईं।

"तुम जरा रायसाहब को फोन कर दो बेटी, कि बच्चे यहीं हैं, और यह भी कह देना कि वह खाने पर इनकी प्रतीक्षा न करें। आज इनको खाना खा कर ही जाना होगा।"

"देखिये चाचाजी, आज हमें जाने दीजिये। हम फिर कभी खुद ही आकर खाना खा लेंगे।" नारायण ने अपनी इच्छा प्रगट की। नजमा ने नारायण की ओर ऐसे देखा जैसे बताना चाहती थी, "केवल मेरी खातिर कुछ देर और बैठ जाइये।"

"किसी और दिन तो आना ही होगा लेकिन आज मैं यूं ही जाने नहीं दूंगा।" ख्वाजा साहब ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया। सब बुखारी के इर्द-गिर्द बैठ गये और इधर-उधर की बातें होने लगीं। खूजा बोले—

"कितना ही अच्छा होता यदि आप लोग भी मेरी तरह एक एक शाहतोसा ओढ़ लेते। मैं तो पाँच मिनट के लिये भी सूट-बूट पहन करके नहीं बैठ सकता। गज़ा तो नीचे बैठने में ही है। जिसने काँगड़ी फिरण बनाया है। खुदा की कसम, कोई जन्नती होगा वह। क्या आराम है इस लिबास में।"

"परन्तु चाचा जी, काँगड़ी और फिरण के ही कारण कश्मीरी लोग आलसी हैं। यह तो बुरी आदत है। एक बार काँगड़ी को हाथ में लिया तो छोड़ने को दिल नहीं करता।" विष्णु ने कहा।

यहाँ का मौसम ही ऐसा है कि बिना काँगड़ी के निर्वाह नहीं हो सकता।

अमीर लोगों के लिये बुखारी है तो गरीबों के लिये यही एक काँगड़ी है ।" सुष्मा बोली ।

"हमारा देश इतना धनी तो है नहीं कि घर-घर में सेंट्रेली हीटिंग सिसटम (Heating system) हो । मुश्किल से लोगों को दो समय का खाना मिलता है । उन्हें अपने को गर्म रखने का दूसरा क्या उपाय है । फिरण और काँगड़ी एक ऐसा साधन हैं जिससे वह सर्दी से बच पाते हैं । और फिर यह तो सब से सस्ता साधन है । जहाँ काँगड़ी में मुट्ठी भर कोयला चाहिये वहाँ बुखारी में मनो लकड़ी जलती है ।" नजमा ने सुष्मा की बात का समर्थन किया । नजमा की बातों से नारायण मन ही मन बहुत प्रभावित हो रहा था और उसकी तीक्षण बुद्धि की दाद दे रहा था ।

ख्वाजा साहब बच्चों की बातें सुनने में मग्न थे । अपनी बेटी को प्रसन्न देख कर मन ही मन में खुश हो रहे थे । उनकी बातों के प्रसंग को बदल कर बोले—

"छोड़ो बेटी, इस फिलासफी को । क्या गरीबों का रोना ही हमारी बात का प्रसंग है । वह फिरण पहने या नंगे रहें, हमें इससे क्या मतलब ।" फिर नारायण की ओर मुड़ कर बोले—

"मैं नजमा बेटी के व्याह के बारे में सोच रहा हूँ । अपने बराबर का घर हो, आपके जैसा होनहार लड़का हो । न जाने यह मज़हब की दीवार है क्यों ? यदि यह दीवार न होती तो हम आप दोनों की शादी कर देते । खैर यह सब सपना है, यह बात सोचना भी ठीक नहीं । तुम कहो, कोई लड़का है तुम्हारी नज़र में ?"

"जी लड़के तो कई मिल सकते हैं । मैंने इस समस्या पर अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया । पर अब खोज करूँगा ।" नारायण की दृष्टि नजमा पर पड़ी, वह अपने पैर फर्श से कुरेद रही थी । उसने, अपनी आँखें नारायण की ओर घुमा लीं, और मन ही मन में बोली—

"आप बहुत शैतान हैं ।" उसके इस मूक प्रश्न का उत्तर नारायण ने आँखों ही आँखों में दिया ।

इतने में खाना आ गया । टेबल पर तरह तरह के व्यंजनों से भरे हुये बड़े-बड़े सुन्दर बोऊल रखे गये । टेबल के बीच में पड़ी बिरियानी को देख सब

मेज़ के इर्दगिर्द कुर्सियों पर बैठ गये। पकवान की खुशबू से सारा कमरा महक उठा सब खाने के लिये तैयार हो गये। सब ने अपने अपने नेपकिन उठा लिए। और चम्चों से अपने अपने पलेट में सालन डालने लगे। गोश्ताब का एक पीस उठाते हुये सुष्मा बोली—

"यह मेरी पेट (Pet) चीज़ है। न मिर्च है इसमें, न ज्यादा मसाला है। सेहत के लिये बिल्कुल ठीक है।"

"रिस्ता तुम्हें पसन्द नहीं है ? मेरे विचार में, यह सब से मज़ेदार चीज़ है।" विष्णु ने बहिन की बात को काट कर कहा।

"रिस्ता गोश्ताब, यखनी यह सब रोगनजोश के बग़ैर फीके हैं। रोगन-जोश के लाल रँग से मुर्दा भी जिन्दा हो जाये।" नजमा ने कहा।

"रोगनजोश तो वाकई सलोनो का राजा है। पर आजकल के नौकर उसमें बहुत मिर्चें डालते हैं। खाते समय आँसू टपकते हैं, इसलिये अच्छा यही है कि रोगनजोश कम ही खाया जाये।"

"आजकल रोगनजोश कोई बना नहीं पाता है। जैसा बनना चाहिए, वह चीज़ बनती नहीं। रोगनजोश का मतलब है घी का जोश ताव देना। मज़ा तब है इसका जब पानी की एक बूँद न पड़े और पूरा दिन गोश्त घी में पकता रहे तब कहीं जा कर रोगनजोश बन पाता है। तुम लोगों ने कभी इस तरह का रोगनजोश चखा भी नहीं होगा। मेरे बचपन में मेरी मां अक्सर यह चीज बना लेती थी। सारा दिन उसी में बीत जाता था। खाने वालों का इन्तजार में और बनाने वालों का बनाने में। आजकल के बावर्ची लोग रसोई घर से जितनी जल्दी हो छुट्टी पाना चाहते हैं। तब भला इस तरह की ज़ियाफ़तें कैसे बन पायेंगी।" खूजा ने अपने अनुभव की बातें बताईं।

"आज कल यदि कोई नौकर ऐसा भी मिले जो सारा दिन एक ही चीज़ बनाने में बिता दे तो शायद हम सदा के लिए इस प्रकार के व्यंजन खाना ही छोड़ दें।" सुष्मा ने हँसते हुये कहा।

"हाँ बेटी, आज कल तुम लोगों के पास वक्त ही कहाँ है। तब लोग बिल्कुल सीधी साधी जिन्दगी गुजारते थे, पर अब के लोग बहुत होशयार हैं। दो ज़मानों में आसमान और जमीन का फ़र्क है। तब लोग थोड़े में ही तसल्ली कर

लेते थे, पर अब जितना खुदा देता है, उतना ही और माँगते हैं। लालच बढ़ता जाता है। वह जमाना बहुत अच्छा था।"

सब खाना खा चुके। सब ने भरपेट खाना खा लिया। काश्मीर मेहमाँ नवाजी के लिए बहुत प्रसिद्ध है। तब तक घर वाले को तसल्ली नहीं होती है जब तक वह मेहमान को खूब खिलाये या पिलाये नहीं। सारे बर्तन खाली देख वह प्रसन्न होता है। खाली बर्तन उसकी मेहमान नवाजी का पूरा सबूत है। यही हाल ख्वाजा साहब का भी था। वह प्रसन्न थे कि मेहमानों ने अच्छी तरह खाना खा लिया। खाना खा लेने के उपरान्त नारायण और विष्णु ने अपना अपना कोट पहन लिया और जाने के लिए तैयार हो गए। सुष्मा ने अपना शाल ओढ़ लिया। शशि ने अपने साथ शाल नहीं लिया था इस लिए नजमा ने उसे अपना कोट दे दिया। जाते हुए नारायण बोला —

"शुक्रिया ! चाचा जी आज की दावत बढ़िया रही।"

"दावत ! इसे मैं दावत नहीं कहता। आपके इंगलैंड जाने से पहले बढ़िया दावत होगी, हां। क्यों नजमा ठीक है ना ?"

"बिल्कुल ठीक, अब्बाजान, इस से बड़ कर और खुशी की क्या बात हो सकती है।"

"अच्छा हमें आज्ञा दीजिए !"

"सलाम ! सुनो बेटा, हमारा सलाम घर में सब को दे देना।"

"सलाम !" कह कर वह चारों कार में बैठ कर अपने घर की ओर रवाना हो गये।

आज रहमान मोती के घर चला गया। शीला घर की सीढ़ियाँ मिट्टी से पोत रही थी। सर्दी के कारण उस के हाथ धीरे-धीरे चल रहे थे। कभी वह पोछाई छोड़ देती और अपने मुंह के भाप से हाथ गर्म कर लेती, और कभी अपने दोनों हाथ एक दूसरे से रगड़ लेती। उसका मुंह सर्दी के कारण लाल हो गया था। हाथ एकदम सुन पड़ गए थे, और ऐसा लगता था कि यह हाथ उसके अपने नहीं हैं। उसके कपड़ों में मिट्टी के छींटे पड़े थे और कपड़े बिल्कुल मैले हो गए थे। रहमान को देख कर वह रुक गई और बोली—

"नमस्कार भैया।"

"नमस्कार ! मोती कहाँ है ?"

"वह सब्जी लेने बाजार गया है। अभी लौट कर आयेगा। चलिए आप ऊपर बैठ जाइए।"

शीला ने मिट्टी से भरा हुआ कपड़ा वहीं छोड़ दिया और रहमान के साथ ऊपर चली गई।

"आप बैठ जाइए मैं आप के लिए काँगड़ी ले कर आती हूँ।"

"आजकल ठंड वहुत बड़ गई है। यदि बर्फ गिरनी शुरू हो जाए तो मौसम भी ठीक हो जायेगा। खुश्क मौसम बीमारियों का घर है। बीस दिसम्बर तक तो हर वर्ष बर्फ गिर जाती है पर न जाने इस साल अभी तक बर्फ

क्यों नहीं पड़ी।" रहमान ने ठंड के मारे अपने दोनों हाथों को रगड़ते हुए कहा।

"परन्तु मुझे खुश्क मौसम ही अच्छा लगता है। बर्फ गिर गई तो चारों ओर कीचड़, दलदल प्रतीत होती है। फिर तो घर की सफाई करना भी एक समस्या बन जाती है। मैं चाहती हूँ कि कभी वर्षा या वर्फ न गिरे, चाहे इसमें लोगों की हानि ही क्यों न हो।" शीला यह कह कर रसोई से एक काँगड़ी" उठा लाई और बोली—

"यह लीजिए काँगड़ी अपने हाथ गर्म कर लीजिए। आजकल पल भर भी काँगड़ी के बिना निर्वाह नहीं होता है।"

"शीला, जाकर अपना काम समाप्त कर लो। मेरे आने से तुम ने अपना कार्य अधूरा ही छोड़ दिया।" रहमान ने दावे से कह दिया।

"नहीं भैया, आप के आने से मेरा काम नहीं रुका, दरअसल मैं अपने हाथ गर्म करना चाहती ही थी। आपके आने का एक अच्छा बहाना मिल गया।" इस बात पर दोनों हँस दिये।

शीला यह कह कर नीचे चली गई। रहमान सोचने लगा, "कितने सरल स्वभाव की लड़की है। जैसे मैं इसे सदियों से जानता हूँ। कितनी सुन्दर और बुद्धिमान है। शायद बुद्धि पढ़ने से आती होगी? इसने पढ़ाई छोड़ दी है, यह बहुत बुरा हुआ है। केवल गरीबी के कारण यह आगे पढ़ नहीं सकती है, यह बहुत ज्यादती है। इस का मतलब यह है कि पैसा ही संसार में सब कुछ है। पैसे के बिना इस दुनिया में कोई कुछ अस्तित्व ही नहीं रखता।" इतने में मोती आ गया, आते ही बोला –

"माफ करना रहमान, मुझे बाजार में थोड़ी देर लग गई। आदमी कमाये भी नहीं और फिर घर का काम भी न करे तो समझो घर से बाहर निकलने तक नौबत आ जाये।" मोती ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"नहीं यार, कोई बात नहीं है। यह घर मेरा अपना ही है और फिर शीला भी थोड़ी देर यहाँ बैठी रही। बेचारी अपना कार्य अधूरा छोड़ कर आयी थी।"

"न जाने इन की सीड़ियाँ पोतने (लेपने) की यह आदत कैसे छूटेगी सब जगह मिट्टी ही मिट्टी नजर आ रही है। आदमी चले भी तो

कैसे "सारी गीली मिट्टी चप्पल में चिपक जाती है। सीड़ियों का काम शीघ्रता से समाप्त भी तो नहीं होता। यही हाल शीला का भी हुआ; जहाँ जहाँ से मैंने अपना कदम रखा अपनी चप्पल के संग लेपाई भी लेता आया। अब उसे दोबारा लेपना होगा। इस सर्दी में यह बहुत बुरा काम है। जमीन जल्दी से सूखती भी तो नही है।" मोती के स्वर में बहन के प्रति सहानुभूति की झलक थी।

"हाँ दोस्त, तुम्हारा यह कहना दुरुस्त है, पर यह न भूलो कि हमारे घरों में सदा मिट्टी ही का लेपन होता आया है। यदि यह सीढ़ियाँ पोतना छोड़ दें तो एक समय ऐसा भी होगा, जब ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ ही न रहेगी। धूल उड़ जायेगी, केवल लकड़ियों का फ्रेम रह जायेगा। हमारे घरों में पक्का फर्श यानि सीमेंट का फर्श तो है नहीं, फिर भला यह सीढ़ियाँ करें भी तो क्या ?"

"इसका मतलब यह है कि हम गरीब हैं ? पैसों के बिना संसार में रहना हराम है। यह जीना भी क्या जीना है जहाँ मनुष्य को क्षण भर के लिए भी सुख नहीं है।" मोती ने आह भर ली।

"अच्छा तो यह आप को अब पता चला कि हम गरीब हैं ?" रहमान ने ठहाका मारा।

"जी चाहता है कि सारे घर में पक्का फर्श बनवा दूं। मगर हमारे पास कम्बख्त पैसा है ही नहीं। इसलिए यह ध्यान भी दिल में लाना मुनासिब नहीं। मुझे शीला पर बहुत तर्स आता है, दिन भर गधे की तरह काम करती है, परन्तु दोस्त, ताज्जुब इस बात का है कि माँ को कभी उस पर दया नहीं आती। यदि एक काम समाप्त कर लेने के उपरान्त शीला हाथ गर्म करने के लिए काँगड़ी माँग ले तो माँ दूसरा काम तैयार रखती है। शीला ने कभी मुझ से इस तरह की शिकायत नहीं की परन्तु मैं स्वयं इस बात को महसूस करता हूँ।"

"तुम्हारी माँ भी इसी तरह काम करती रही होगी, और अब भी करती है। इसका मतलब यह नहीं कि वह अपनी बेटी को प्यार नहीं करती या चाहती नहीं है। ऐसी बात नहीं हो सकती है। उसे यह पता है कि घर की

गाड़ी को चलाने के लिए जितने पहिये हों, उतने ही ठीक हैं। उसे घर के काम काज से वास्ता है। कभी उसे यह सोचने का अवसर ही नहीं मिला कि मनुष्य को किसी वस्तु की आवश्यकता भी हो सकती है। हमारी माताओं ने सुख कहाँ देखा है। बचपन से गधों की तरह काम करना ही वह जानती हैं। जीवन भर की इस आदत को छोड़ना कितना कठिन है। और इसी अभ्यास के कारण वह अच्छे और बुरे की जाँच नही कर सकते। वह शीला को बहुत चाहती है, यह मैं समझ सकता हूं। आखिर वह उसकी सौतेली लड़की तो है नहीं। और यदि वह शीला से काम न ले तो क्या करे। स्वयं सारा काम करना पड़ेगा उसे। मुझे दुःख है कि हमारी माताओं की दयनीय दशा है। तुम अपनी माँ को देखो, बेचारी की सेहत एक दम गिर गई है। काश वह दिन भी आ जाता जब हमारी मातायें, बिल्कुल उसी तरह सुन्दर फर्श पर दो पल के लिये बैठ पातीं, और उनके पीछे दो-दो, तीन-तीन तकिये होते। कितने खुशकिस्मत हैं वह लोग, जो किसी वस्तु को पाने के लिये तरसते नहीं हैं, किसी वस्तु के लिये मोहताज नहीं हैं। आय है, वह भी चौगुनी। क्या नहीं है उनके पास। नौकरों-चाकरों की कमी नहीं। कोई रायसाहब है तो कोई ख्वाजा साहब। उनकी लड़कियाँ देखो तो अप्सराएं लगती हैं। शीला उनकी तुलना में कम सुन्दर नहीं परन्तु शीला के पास एक नया सूट लेने के लिये एक पैसा नहीं, और वह हजारों, लाखों रुपयों में खेल रही हैं। फिर उसी बात पर मुझे रुकना पड़ेगा कि पैसा--पैसा और पैसा। यह एक ऐसा साधन है जिससे स्वर्ग का सुख खरीदा जा सकता है। हम दो समय का खाना कठिनता से पाते हैं, फिर भला यह सुख और सुविधा की वस्तुयें आयेंगी कहाँ से ? उन लोगों को देख कर मेरे तन बदन में आग लग जाती है। आखिर उनमें क्या है, जो हम में नहीं है। यदि यह खुदा की बनाई हुई खुदाई है तो मैं भी उस खुदा को दिखा सकता हूँ कि हम भी इस भेद-भाव को मिटा सकते हैं। तब तक मेरा नाम रहमान नहीं, जब तक इन अमीर लोगों को जड़ से उखाड़ न दूँ। यह भी जान जायेंगे कि आखिर गरीबी होती क्या है। वास्तव में यही अमीर लोग स्वतंत्रता नहीं चाहते। वह सदा गुलाम रहना चाहते हैं। वह यह नहीं चाहते कि उनके होते हुये गरीब लोग भी भर पेट खा लें, तन बदन को ढंक लें। परन्तु यह बहुत ज्यादती है। इने-गिने लोगों के कारण हजारों लोग

भूख से तड़पते रहें। यह तो अंधेर है अंधेर। जनता पूरी तरह अभी जागी नहीं है, परन्तु मुझे पूरा भरोसा है कि जब उनकी नींद खुल जायेगी तो वह क्या नहीं कर पायेंगे।" रहमान ने आवेश में आकर यह कह दिया।

"तुम तो यूं ही जोश में आ गये। मेरा असूल है, कहना कम और करना बहुत। यानि मैं थयोरी में बिलीव (Beleave) नहीं करता हूँ। अरे हाँ, यह तो तुमने पूछा ही नहीं कि इन्कलाबी कौंसिल का चन्दा कितना जमा हो गया है। कुछ तो यार, मतलब की बात भी किया करो?" मोती ने रहमान को शान्त करने के लिये कहा।

"तो क्या समझते हो मैं यूं ही बोलता रहता हूँ? तुम्हारे सामने दिल की बात न कहूँ, तो बताओ किसके पास जाकर कहा करूं। अच्छा छोड़ो इन बातों को, शायद तुम ठीक ही कहते हो। चलो मतलब की ही कहो। हाँ कितना चन्दा जमा हो गया है?" रहमान ने ज़रा रूखेपन से कहा।

"यही समझो अढ़ाई हज़ार रुपये के करीब होंगे। मगर यार, नूरुद्दीन और शाबान ने बहुत काम करके दिखा दिया। यह सब केवल उनके ही कारण हो पाया है।"

"सच मोती, यह तो बहुत सारी रकम है। अब लगता है कि हम किसी मंजिल की ओर जा रहे हैं। यार, आज हमें अवश्य खुशी मनानी चाहिये।" रहमान ने मोती को गले से लगा कर कहा।

"मेरे विचार में हड़ताल के लिये कल ही इश्तहार छपवाये जायें, ताकि अपने कार्य में कोई बाधा न हो।"

"वह तो है ही, पर देखो दो सौ रुपये अलग रख छोड़ो। तुम्हें B. A. (बी. ए.) पास करना होगा और वह भी इसी वर्ष। शीला कालेज जायेगी और हाँ एक बा···त।"

"कहो, रुक क्यों गये?"

"मुझे भी पढ़ना चाहिये।" इस पर दोनों हँस दिये।

"परन्तु रहमान यह तो जनता की आय है, हम इसे प्रयोग कैसे कर सकेंगे?"

"हमारी पढ़ाई कौम की सेवा है और यह सेवा निष्फल नहीं जायेगी।"

"अच्छी बात है, तो तुम्हारी पढ़ाई आज ही क्यों न शुरू की जाये ?"

"बिल्कुल ठीक है।"

मोतीलाल और शीला ने मिल कर रहमान को पढ़ाना आरम्भ किया। शीला ने हिन्दी और मोती ने अंग्रेजी पढ़ने की जिम्मेदारी ली। रहमान अपने पढ़ने पर कुछ हिचकिचाया परन्तु शीला और मोती के समझाने पर वह मान गया। शीला और मोती ने भी तय किया कि उनकी पढ़ाई भी आरम्भ हो। इस प्रकार तीनों ने पढ़ने का समय तय किया। शीला के कालेज के ऐडमीशन (Admission) के लिये कुछ रुपये अलग रख लिये गये। शीला बहुत प्रसन्न हुई। आज उसे पता चला कि रहमान के हृदय में क्या है। उसे लगा महमान उसका भाई है, इसलिये वह उसे सच्चे दिल से पढ़ाने लगी। उस दिन की पढ़ाई समाप्त होने पर शीला ने दोनों के लिये कहवा बना दिया, और बोली—

"भाईजान, यदि कल पहला सबक याद किया होगा तो फिर बढ़िया कहवा यानि इलायची बादामों वाला कहवा पिला दूंगी। हाँ।" शीला के इस प्यार भरे उलाहने पर दोनों हँस दिये। कहवा पी लेने के उपरान्त दोनों वहाँ से ज़ैना कदल की ओर रवाना हो गये।

दोनों ने ज़ैना कदल का पुल पार कर लिया। चलते-चलते एक जगह रहमान रुक गया और बोला—

"मोती, ज़रा चन्दे के रुपयों में से एक रुपया तो दे दो। मैं सिगरेट की एक डिब्बिया खरीद लूं।"

"वाह यार, यह पैसे क्या इसी तरह व्यय करने हैं। अभी तक जो कुछ करते रहे, वही अब भी करो।" मोती ने मुस्कराते हुये कहा।

"अच्छा तो यह बात है। खुदा की कसम तुम बहुत अच्छे कैशियर हो। एक पाई के लिये तरसाओगे लोगों को। मगर मोती, याद रखो, आज रुपया दोगे तो कल फायदे में तुम ही रहोगे।" रहमान ने कृत्रिम गुस्से से यह कहा।

"यह लो दो रुपये, दो-चार डिब्बियाँ खरीद लो, ताकि सब यार, दोस्त बराबर फायदा उठा लें।"

"बात बिल्कुल सही है।"

दोनों इन्कलाबी कौंसिल में पहुँच गये। नूरा और शाबान वहाँ पहले ही पहुँच गये थे। सब मेम्बरों के आ जाने पर करीम ने कमरे की खिड़कियाँ और द्वार बन्द कर दिये और उस दिन की मीटिंग शुरू हो गई।

"कहाँ रहे अभी तक? खूब लापता हो जाते हो। हमें दूर से आना था, तब भी हम तुम से पहले आ पहुँचे।" शाबान ने सिगरेट का लम्बा कश लेते हुये कहा।

"हाँ दोस्त, यही बात तुम मेरे बाप से जा कर कह देना तो वाकई सबको इस घर से झाड़ू लगा कर निकाल देगा। दुनिया जिसे बुरा समझे, भला उसकी घर में इज्जत ही क्या है।" करीम ने धीरे से कहा, ताकि उसकी बात उसका बाप न सुन ले, जो दूसरे कमरे में बैठा था।

"छोड़ यार उस बूढ़े को, चार दिन का मेहमान है।" नूरा ने हँसते हुये कहा।

"तुम मेरे बाप को नहीं जानते, सौ में से एक है। सौ वर्ष का होते हुये भी इस दुनियाँ से कूच करने का नाम नहीं लेता। मेरी माँ की मृत्यु के समय से लगातार यही कहता आया है कि मैं चार दिन का मेहमान हूँ।" माँ की मौत के उपरान्त मेरा बड़ा भाई फौत हो गया। उसके बाद एक बहिन भी मर गई, परन्तु इसकी बारी अभी भी नहीं आती है। मुझे डर है कि कहीं यह मुझे भी न दफना दे। यदि वह जान जाये कि हमारी कौंसिल उसी के घर में है तो खूब हल्ला करेगा, और हमें जेल भी भिजवाने से नहीं चूकेगा। परन्तु खुदा का शुक्र है, कि एक तो बहरा है और दूसरे उसे साफ नज़र भी नहीं आता।" करीम ने दोस्तों को अपने बाप का परिचय देते हुये कहा।

"शुक्र है कि वह बहरा है। तुमने तो हमें एक दम डरा दिया। अब मेरी जान में जान आई।"

"मुझे हैरानी इस बात की है कि सदा अपने बारे में कही हुई बात सुन लेता है, चाहे वह बात बहुत धीरे से भी क्यों न कही गई हो।"

"तुम्हारे घर में खाना कौन बनाता है?" मोती ने पूछा।

"मेरी बीवी। मेरा ब्याह हुये एक वर्ष हो गया। मेरी बीवी निकाह से पहले मेरी चचेरी बहन थी।"

"चलो यह भी अच्छा हुआ। चलो बचपन की जान पहचान है, इस

लिए झगड़े भी कम ही होते होंगे।" शाबान ने करीम के कंधे को थपथपाते हुये कहा ।

"कोई बच्चा है ?" नूरा ने पूछा।

"कमल हो गया, इतनी जल्दी बच्चा कहाँ से आ जाता। शादी को हुये केवल साल भर ही तो हुआ है। "रहमान ने भोलेपन से कहा ।

"क्यों, क्या एक वर्ष बच्चे के आने के लिये कम है। मेरी बीवी का पहला बच्चा पूरे दस माह के उपरान्त ही हुआ था। मेरी शादी को हुये केवल पाँच वर्ष हो गये और माशाअल्लाह छः बच्चों का बाप भी बन बैठा।" शाबान ने अपना सीना तान कर कहा।

"परन्तु दोस्त, यह कहो कि तुम्हारा इतना बड़ा घर कैसे चलता है ? मेरे घर में मेरे सिवा केवल एक बहिन है, और हमारे माँ-बाप आये दिन पैसों के लिये रोना रोते हैं। थोड़ी सी आय में हमारे घर का गुज़ारा नहीं होता है।" मोती ने आह भरते हुये उन्हें अपना परिचय दिया।

"मैं इस झमेले में पड़ने वाला नहीं हूँ। मेरे दस भाई-बहिनें हैं। अपने छः बच्चे हैं, माँ है बाप है। काफ़ी बड़ी गृहस्थी है। मेरे छोटे भाई बाप के साथ जाकर लकड़ियाँ काटते हैं, दिन भर मजदूरी करते हैं, तब कहीं जाकर घर में खाना बनता है। हमारे घर में चाय के साथ सदा सतु (चावलों का भूना हुआ आटा) चलता है। चाय के साथ कुलचा खाना हमारे लिये तो बड़ी ज़ियाफ़त है। खैर, किसी न किसी तरह तो घर की नाव चलती ही है। इसके बगैर मैं और कुछ भी नहीं जानता हूँ। यदि कोई इन बातों में उलझ गया तो समझो सदा के लिये बरबाद हो गया। घर में रोने के अतिरिक्त और है ही क्या।" शाबान यह कहते गम्भीर हो गया।

"कौन यह चाहेगा कि उसके बच्चे भूखे मर जायें, कौन अपने माँ-बाप को उनके अन्तिम दिनों में सुखी देखना न चाहेगा, कौन अपनी पत्नी को सुन्दर लिबास में देखना न चाहेगा। परन्तु हम जैसे लोगों को दिल की बातें दिल ही में रखनी पड़ती हैं। काश, हम भी कभी इंसानों की तरह जी सकते। पर यह सब हमारे बस में है नहीं।"

"परन्तु हमारे बस की एक बात है, वह यह है कि हम यदि चाहें तो देश की बढ़ती हुई आबादी को रोक सकते हैं।" नूरा ने यह बात ऐसे कही

कि सब उसकी इस बात पर हँस दिये, और कमरे में शोर सा मच गया ।

"इसका अभी एक ही बच्चा हुआ है न, इसलिये ऐसे बोल रहा है । तुम्हारी बात सही हो सकती है, पर मेरी माँ कहती है कि अधिक दियों से अधिक रोशनी होती है । और फिर यह तो खुदा की देन हैं । सब बच्चे अपनी किस्मत अपने साथ लेकर आते हैं ।"

शाबान की इस बात से मोती को बहुत दुःख हुआ । वह सोचने लगा—

"हमारे देश में कितनी अज्ञानता है । अधिक दियों से अधिक रोशनी कितनी बेहूदा बात है । सुनी सुनाई बातों पर इस तरह विश्वास करना अज्ञानता नहीं तो और क्या हो सकता है । एक बड़ा बल्ब हज़ार दियों की रोशनी पर हावी हो सकता है । मनुष्य जब बेबस होता है तो दिल को प्रसन्न रखने के लिये कहता है कि सब खुदा की देन है । बढ़ती हुई आबादी भी क्या खुदा की देन है ? क्या यह मनुष्य के बस की बात नहीं है ? इस तरह की रही हुई बातें पुरुषों के मुंह से सुनना कितनी बुरी लगती हैं । मुझे ऐसी बातें सुन कर आश्चर्य सा होता है । खैर, यह लोग ठहरे निरे अनपढ़, इनको क्या मालूम कि दुनिया इस समय कहाँ जा रही है । रहमान इन से एक दम भिन्न है । अनपढ़ होते हुये भी उसका दिमाग़ काफी तेज़ है । वह बुद्धिमान है । इस तरह की अज्ञानता उसे छू तक नहीं सकी । वह कई बातों में हम सब से बहुत आगे है ।" रहमान कुछ बोल रहा था, मोती चौंका । "यह तो बड़ी खुशी की बात है नूरुद्दीन ।"

"क्या खुशी की बात है ?" मोती ने पूछा ।

"यही कि इसने पाँच सौ रुपये और जमा किये हैं ।" रहमान बोल रहा था ।

"मैंने फैसला किया है कि मोती को फीस भरने के लिये दो सौ रुपये दे दिये जायें और उसे बी. ए. की परीक्षा के लिये तैयार किया जाये । हम सब दोस्तों में और कोई पढ़ा-लिखा नहीं है । इतनी बड़ी कौंसिल को चलाना खालाजी का घर नहीं है । इश्तेहार छपवाना आसान बात नहीं है, और हाँ एक अख़बार भी निकालना पड़ेगा हमें । इन सब कार्यों के लिये पढ़े-लिखे आदमी की हमें बहुत ज़रूरत है । मोती ने कुछ पढ़ा है, यह हमारे लिये सौभाग्य की

बात है। अब जितनी जल्दी हो इसे परीक्षा पास करा लेनी चाहिये।" इस बात से सबका मुँह बन्द हो गया, परन्तु ज्यों ही यह बात उनकी समझ में आई बोले—

"इसमें हमें कोई ऐतराज नहीं। देखो मोती, परीक्षा पास करना तुम्हारा काम है और पैसा जमा करना हमारा काम है।" इस पर सब हँस दिये।

बुद्धवार का दिन हड़ताल के लिये तय हुआ। चन्दे के पैसों से आवश्यक वस्तुयें मोल लेने का फैसला हुआ और उन वस्तुओं को कौंसिल के अड्डे पर जमा करने का आदेश हुआ। मोती ने इश्तहार छपवाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और शाबान तथा नूरा की लीडरी में इश्तहारों को शहर में बांटने का काम सौंपा गया। करीम के ऊपर अनाज बाँटने का काम रखा गया और रहमान ने सब के ऊपर नज़र रखने का काम अपने आप लिया। यह भी तय हुआ कि एक जलूस निकाला जाये और रहमान लोगों के बीच एक भाषण दे। उस दिन की सभा समाप्त हो गई। लोग जाने लगे तो करीम बोला—

"दोस्तो, थोड़ी देर रुक जाओ, आज सब चाय पी कर जाना।"

"उसकी क्या जरूरत है?" रहमान ने कहा।

"बाहर बहुत ठँड है, सोचा एक-एक प्याला गर्म चाय ही का हो जाये। मैंने राहती से कह दिया है।"

उनकी बातें चल ही रही थीं कि द्वार पर किसी के कदमों की आहट हुई। करीम उठ खड़ा हुआ, द्वार खोला और अपनी बीवी को कहने लगा—

"अन्दर आ जाओ न, यहाँ कोई पराया नहीं है।"

"नहीं मुझे शर्म लगती है।" राहती ने फुसफुसाहट में कहा।

"कहा जी, कोई पराया नहीं हैं। कहाँ तक दुल्हन बनी रहोगी।" करीम ने ऊँचे स्वर में कहा।

"यह लो प्याले उठा लो, मैं समावार ले आती हूँ।"

करीम हाथ में चीनी के प्याले लेकर अन्दर चला आया और उसके पीछे-पीछे उसकी पत्नी हाथ में समावार लिये आ रही थी। राहती ने घर का धुला हुआ साफ़ फिरण पहना था, टाँगों में सलवार थी, और सिर पर एक बड़ा रूमाल बंधा हुआ था। शर्म के मारे उसके गोरे गाल लाल हो रहे थे।

वह काफ़ी तन्दुरुस्त प्रतीत हो रही थी। उसके हाथों में चाँदी के बड़े-बड़े कंगन थे, और कानों में चाँदी की वालियाँ पहनी थीं। उसके हाथों में समावार था। समावार में चाय उबल रही थी, इसलिये ऊपर तक भाप उठ रही थी। उसने काजल से भरी हुई आँखें झुका लीं। समावार के हिलाने से उसकी बाँहों में पड़ी हुई चूड़ियाँ खनक उठीं। समावार को फर्श पर रख कर वह एक दम भाग गई।

"बहुत शरमाती है। बहुत समझाने पर मुश्किल से समावार ले कर आ गई। कह रही थी कि समावार भी मैं ही लेता आऊँ। आज कल की स्त्रियों के भी खूब नाज़ और नखरें हैं। यदि उनकी बात न मानो तो फट नाराज होती हैं। कई बार तो खाना भी बनने से रह जाता है।" करीम ने प्यालों में चाय डालते हुये कहा—

"मेरे प्याले में चाय न डालो। मैं घर से पी कर चला था।" मोती ने कहा।

"क्यों हमारी चाय नहीं पीते। या यह नमक वाली चाय पसन्द नहीं है। तुम्हारे लिये कहवा बनवा लूं, कल ही मैंने चीनी मोल ली है।" करीम ने कहा।

"ऐसी बात नहीं है। मैं ज्यादा चाय पीता नहीं। मुझे शीर चाय (नमक वाली चाय जिस में दूध पड़ता है) बहुत पसन्द है।"

"तो फिर थोड़ी सी पी लो।"

"अच्छा आधा प्याला देना, आपको नाराज़ नहीं करता।" मोती ने कहा। गर्म चाय के साथ गर्म-गर्म तेलवोस (रोटी) भी थे। चाय पीने के उपरान्त सभा विसर्जित हुई और सबने अपने-अपने घर की राह ली।

इश्तेहार छप गये, कालेज के छात्रों में एक लहर सी दौड़ गई। लोगों में जोश भर गया, दफ्तरों में सनसनी फैल गई। युवकों की रगों में लहू उबल रहा था। जहाँ देखो यही चर्चा थी। बूढ़ों के दिल आशंकित थे। अमीरों की

सदियों से बनाई हुई पोज़ीशन की नींव हिल रही थी । स्त्रियों के स्वप्न साकार हो रहे थे । युवकों के दिलों में बहार आने का अंदेशा था । न जाने कौन अज्ञात शक्ति लोगों के दिलों को मज़बूत बना रही थी । बुद्धवार का दिन आ गया । नूरा, शाबान और अन्य कई मेम्बर देख रहे थे कि कोई दुकान खोल न दे । सारे शहर की दूकानें बन्द थीं । हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों के होंठों पर एक ही शब्द था, दिल में एक ही उमंग थीं, वह थी स्वतन्त्रता की । भावी सुनहरे दृश्यों से सबों के हौसले बढ़ रहे थे । सब लोग अपने-अपने घरों में ताला लगा कर लाल चौक की ओर बढ़ रहे थे । "हमें भारत स्वतन्त्र कराना है । नये कश्मीर की नींव डालनी है । भूख, प्यास, दरिद्रता और अज्ञानता को समाप्त करना है ।" छोटे-छोटे बच्चे टोलियाँ बना कर खूब नारे लगा रहे थे । नया कश्मीर जिन्दाबाद, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद ।

लाल चौक में एक बड़ा पंडाल (स्टेज) बनाया गया था । लोगों ने रातों रात उस स्टेज को खड़ा कर लिया था । इसके चारों ओर झंडे लगे थे । लोग सुबह से ही एकत्रित होने लगे । जवान, बड़े, बूढ़े, बच्चे और स्त्रियाँ सुनने के लिये बेताब हो रहे थे । आज भारी हड़ताल थी, लोगों को पूरा विश्वास था कि उनके लीडर उन्हें लक्ष्य की ओर ले जा रहे हैं । लोग खचाखच चौक में भरने शुरू हुये । रहमान और उसके साथी ठीक समय पर वहाँ पहुँच गये । उनको देख कर लोगों ने नारे लगाने शुरू किये । चारों ओर लोगों की ध्वनि से आकाश गूंज उठा । रहमान स्टेज पर चढ़ गया । लोगों ने फूल मालाओं और तालियों से उसका स्वागत किया । उसका मुंह लाल था । खद्दर का कुर्ता और पाजामा पहने वह लोगों के सामने खड़ा था । उसका माथा चमक रहा था । वह माइक्रोफोन के सामने खड़ा हो गया, उसने अपना गला साफ किया और बोला—

"भाइयो और बहनों "हमें खुशी है कि आज आप यहाँ इकट्ठे हुये हैं । इसका मतलब यह है कि आपका हमें पूरा साथ है ।" नेता की इस बात पर लोगों ने तालियाँ बजाईं । रहमान कुछ देर रुक गया और फिर बोला—

"हम आप को पहले भी बता चुके हैं कि हमारा मकसद क्या है, हम किस तरफ जा रहे हैं ? हमें आजादी चाहिये, गुलामी से छुटकारा चाहिये । लेकिन आजादी घर बैठे नहीं मिलती । हमें उसका पाने के लिये कुरबानी देनी

होगी। मुझे और मेरे दूसरे दोस्तों को इस बात की बहुत खुशी है कि आप सब लोग हमारा इस नेक काम में हाथ बंटा रहे हैं। यह हमेशा याद रखें कि हमारा रास्ता गलत नहीं है, हम सही रास्ते पर चल रहे हैं। हमें पूरा यकीन है कि हम कामयाब होंगे और जरूर होंगे।" इस बात पर लोगों को जोश आ गया। उन्होंने जोर जोर से "आज़ादी जिन्दाबाद", "इन्कलाब जिन्दाबाद" के नारे लगाने शुरू कर दिये। रहमान ने होश सम्भालने के बाद फिर से बोलना शुरू किया—

"हम सब को मिल कर काम करना है। हमें आगे बढ़ना है। रास्ते में कई मुश्किलें होते हुये भी हमें आगे बढ़ना है। हमें उन मुश्किलों को हटाना है। अगर रास्ते में कोई तूफ़ान भी आ जाये, तो भी हमें पीछे नहीं हटना है। हर चीज़ को पाने के लिए कुरबानी देनी पड़ती है, और जब वह चीज़ मिलती है तो उसको पाने का सुख भी कम नहीं होता है। आप यह न सोचिये कि अंग्रेज खुद हमारे देश को छोड़ देंगे, यह कभी नहीं होगा। उन्होंने हमारे देश को खूब लूटा है, और जो आज हमारी हालत है वह उन जालिमों ही की वजह से है। हमें लूट-लूट कर उन्होंने अपना देश बना लिया। यहाँ के मंदिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों तक को नहीं छोड़ा उन जालिमों ने। वह हमारे देश पर सदियों से राज्य करते आये हैं। वह हमें कमजोर, कायर, बुजदिल और आलसी समझते हैं। लेकिन हमें उनके दिमाग़ से यह गलत बात हमेशा के लिये निकालनी है। उनका यह वहम दूर करना है। हम उनके गुलाम नहीं रहेंगे। उनके इशारों पर नाचने वाले चन्द अफ़सर हमें अब कठपुतलियों की तरह नचा नहीं सकते। उनके दिन अब खतम होने को आये हैं। हम गहरी नींद से जाग उठे हैं। इस देश का बच्चा-बच्चा जाग उठा है। समारे देश में शहीदों की कमी नहीं है। हज़ारों वीर जवानों ने अपनी जान की बाज़ी लगा कर दुश्मन का मुकाबला किया है, उनकी गोलियाँ खाई हैं। उन वीरों ने हमें रास्ता दिखाया है, हमें उनके बताये हुए रास्ते पर चलना है। हमने देश को आजाद करने की कसम खा रखी है, हम अब पीछे नहीं हट सकते। चाहे हमें इस काम में कितनी ही मुश्किलों का मुकाबला ही क्यों न करना पड़े, चाहे हमारी जान ही जाए, लेकिन हम कभी पीछे मुड़ नहीं सकते।" रहमान जोश

में था। उसने अपने हाथ को ऊपर उठाया और जोर-जोर से लोगों से मुखातिब हुआ—

"इस देश में कई लोग ऐसे भी हैं जो इन्कलाब नहीं चाहते। चाहें भी क्यों कर? इससे उनके ख्वाबों की कुटिया टूट जाती है। उसे वह तुड़वाना क्योंकर चाहेंगे। इन लोगों का फरमाना है कि अंग्रेजों का राज्य सबसे अच्छा है क्योंकि अंग्रेज दाता हैं। इन साहबों का यह कहना किसी हद तक ठीक भी है, क्योंकि अंग्रेजों की हुकूमत से उनके जेब भरते हैं, उन्हें खताब मिलते हैं, उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं है। इन लोगों को अपने आस-पास देखने की कोई जरूरत नहीं, और वह इन्कलाब के झगड़ों से अपने को बचाए रखने की काफी कोशिश करते हैं। वह नहीं चाहते कि उनके होते हुए और किसी का भी पेट भर जाए, उनकी तरह और भी कोई रह सके। लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि अब सरमयादारी नहीं चल सकती। वह दिन समाप्त हो गए। अब बच्चे, बूढ़े, जवान, मर्द और औरतें अपने हक को पाने के लिए आगे बढ़े हैं। सदियों से दबे इन्सान एक बार जाग गए हैं। वह अपना हक ले कर ही रहेंगे। यह ज्यादती नहीं है, यह कोई बुरा काम नहीं है। जिस खुदा ने हमें पैदा किया है, उसी ने हमें जिन्दा रहने का हक भी दिया है। यह ज़मीन और आसमान किसी की निजी जागीर नहीं है। हम सबों को इस पर रहने और जीने का उतना ही हक है, जितना उन महलों में रहने वाले लोगों को है।" यह कहते उसने अपनी उंगली से एक मकान की ओर इशारा करते हुए कहा। लोग ज़ोर से चिल्लाने लगे—

"हमें अपना हक चाहिए, हम अब किसी के सामने दब नहीं सकते। इन्कलाब ज़िन्दाबाद। रहमान मीर जिन्दाबाद, चिरागे कश्मीर जिन्दाबाद।" कई नवयुवक अपनी छातियों को बाहर निकालते हुए खूब ज़ोर से नारे लगाने लगे, "गोलियाँ खायेंगे, आज़ादी दिलायेंगे, हम गोलियाँ खायेंगे, आज़ादी दिलायेंगे" छात्रों ने आगे चलकर बहुत बड़ा जलूस बना लिया और यह भारी जलूस आगे बढ़ने लगा। लोगों और छात्रों की आवाज एक हो गई। भारत ज़िन्दाबाद के नारों से सारा श्रीनगर गूंज उठा। लोगों में जोश भर गया। सारी जनता नेताओं के साथ थी। सबका लहू उबल रहा था। सबके होंठों पर एक ही आवाज थी, एक ही उमंग थी, एक ही चाह थी। देश को स्वतन्त्र कराना था।

लोगों के नारों से वहाँ काफी पुलिस जमा हो गई। लाठी चार्ज शुरू हुआ। लोगों ने लाठियों का डट कर मुकाबला किया। पुलिस की लाठी असफल रही, उन्हें गोली का सहारा लेना पड़ा। कई गोलियाँ हवा में उड़ाई गईं, परन्तु उससे जनता के जोश में कोई अन्तर न पड़ा। लोगों के जोश ने पुलिस को भड़का दिया, उन्होंने लोगों पर गोलियों की वर्षा करनी आरम्भ की। लोगों में हा-हाकार मच गया, वह तितर-बितर होने लगे। कई घायल हुए, और कई शहीद हो गए। रोने और चिल्लाने की ध्वनियों से पृथ्वी फटने लगी। रहमान, शाबान और अन्य कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया। मोती, नूरा और करीम किसी तरह वहाँ से भाग निकले। जनता का खून आँखों में उतर आया था, पर निराश और लाचार सबको अपने-अपने घरों की ओर भाग जाना पड़ा। लोगों का गुस्सा जल्दी शान्त न हुआ और परिणाम-स्वरूप आठ-दस दिन हड़ताल जारी रही।

रहमान की माँ का मुँह चमक रहा था, आज उसे पता चला कि उसका बेटा कितना लोकप्रिय है। परन्तु उसे दुःख था रसूल अपने बेटे की बढ़ती को नहीं मानता है। इसलिए वह अपने हृदय की प्रसन्नता को किसी पर व्यक्त नहीं करना चाहती थी। उस दिन गुलामा और मुशताक एक कोने में चुपचाप बैठे थे, रसूलमीर हुक्के के लम्बे-लम्बे कश ले रहा था। चारों ओर नीरवता सी छाई हुई थी, कमरे में सन्नाटा था। कोई बोल नहीं रहा था, केवल गुरगुरी की ध्वनि कमरे में अट्टहास सा कर रही थी। रसूल ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा—

"क्या आज दिया नहीं जलेगा ?"

"आज उसमें डालने के लिए तेल नहीं है। गुलामा को बाजार भेज दिया था मैंने, वहां कुछ भी न मिला।" खतजी ने कहा।

"मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि वह सारी जनता को अपनी ओर कर लेगा। कितना जोश था उसकी वाणी में।" रसूल ने यह धीरे से कहा।

"क्या तुमने उसका लेक्चर (भाषण) सुन लिया ?" खतजी ने उत्सुकता से पूछा।

"जब मैं उस दिन काम पर चला गया, तो देखा मेरे सिवा वहाँ और कोई न था। सुना ज़ोरों का जलूस होगा। सब लोग लेक्चर सुनने के लिए जा चुके थे। अनजान में मेरे पाँव भी उसी ओर बढ़े जहाँ रहमान का लेक्चर हो रहा था। मुझे यकीन न हुआ कि यह मेरा ही बेटा है। मैंने उसे गौर से देखा, पर मुझ में हिम्मत न हुई कि मैं लोगों में बैठ कर उसका लेक्चर सुन लूं। कितने जोश से बोल रहा था। उस दिन मेरी आँखों पर बन्धी हुई पट्टी खुल गई। जनता को उस पर यकीन है। खुदा उनकी जरूर सुन लेगा।" रसूल के नेत्र यह कहते-कहते गीले हो गए।

"मुझे दुख है कि भाईजान की कदर तुमने पहले कभी न की। उसके साथ झगड़ते ही रहे। यदि वह जेल में यह सुन लेगा कि तुम उसके इस काम पर खुश हो तो वहबे हद खुश होगा। वह तुमसे बहुत डरता है और सदा यही कहता था कि "अब्बा, तब मेरी कदर करेंगे, जब मैं जेल में हूँगा, या जब मैं शहीद हो जाऊँगा।"

"चुप करो, खुदा के लिए मुंह से बुरी बात न निकालो। अल्लाह करे वह अपने काम में कामयाब हो। यह कहते-कहते रसूल रोने लगा। उसके रोने से खतजी का हृदय फटने लगा। आज उसे पति के प्रति सहानुभूति हुई। वह खुशी के आँसुओं को रोक न सकी। उसके नेत्रों से प्रेम और ममता की मधुर धारा बह चली। दोनों अपने आँसुओं को पोंछ रहे थे कि गुलामा बोला –

"कल से मैं भी इन्कलाबी कौंसिल में भाग लेना शुरू कर दूंगा।" उसकी इस बात को सुन कर भी दोनों ने अनसुनी कर दी। इतने में द्वार पर किसी के खटखटाने की ध्वनि हुई। गुलामा उठा, द्वार खोल दिया, और देखा सामने दो अपरिचित व्यक्ति खड़े हैं। धीरे से बोला—

"किससे मिलना है ?"

"हम अब्बाजान और अम्मा से मिलने आये हैं।"

"अन्दर चले आइये !"

दोनों कमरे के अन्दर चले आये। रहमान बिल्कुल अपनी माँ की शक्ल

पर गया था, इसलिए खतजी को पहचानने में उन्हें देर न लगी। दोनों खतजी के सामने बैठ गए। मोती ने अपना परिचय देते हुए कहा—

"हम रहमान के करीबी दोस्त हैं। मेरा नाम मोती लाल है और यह करीम है।"

"जीते रहो बेटा। रहमान ने कई बार आपके बारे में कहा है।" खतजी का मुंह खिल उठा।

"आप हमें बिल्कुल पराया न समझें। रहमान को हम अपना भाई समझते हैं। कहिए किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है? हम इसीलिए यहाँ आए हैं।"

खतजी ने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई जैसे बता देना चाहती थी कि, "हमारे पास कई वस्तुओं का अभाव है।" पर दिल के भाव होंठों पर न आए। उसे कुछ झिझक सी हुई, इसलिए उसने मौन रहना ही ठीक समझा।

"आप बोलती क्यों नहीं, हम बेगाने नहीं हैं। दिए में तेल नहीं है क्या?" मोती ने आग्रह करते हुए पूछा।

"हाँ बेटा, इसका तेल साफ़ हो गया है। हड़ताल होने से बाज़ार में तेल मिला नहीं। बाकी चीज़ों का गुजारा तो चल ही जाएगा।"

"करीम, तुम जाकर तेल और खाने की सब चीजें ले आओ। हम दोनों का इकट्ठे जाना ठीक नहीं है। कहीं हमें भी पकड़कर ले न जायें।" मोती ने उसे समझा कर कहा।

करीम ने अपनी काली लोई सिर के ऊपर से ओढ़ ली और धीरे से रहमान के घर से बाहर चला गया।

"तुमने यहाँ आने की तकलीफ़ क्यों की बेटा, मुझे डर है कि कहीं तुम को पकड़ कर ले न जायें, तब तो बहुत बुरा होगा।" खतजी ने ममतावश यह कह दिया।

"नहीं, अम्माँ जी, ऐसा नहीं होगा। जब तक रहमान जेल में है, तब तक मैं बाहर रहने की ही कोशिश करूँगा। इन्कलाबी कौंसिल का काम रुकना नहीं चाहिए। वैसे, हमारी कौंसिल में अब काफ़ी लोग शामिल हो गए हैं। काम किसी न किसी तरह से चलाना ही होगा।" मोती ने अपनी बात को पूरा करते हुए कहा।

"क्या तुम लोग अपने काम में कामयाब हो जाओगे ?" रसूल ने धीरे से पूछा।

"हाँ, अब्बाजान, हमें पूरा भरोसा है कि हम सफल होंगे। केवल हम ही स्वतन्त्रता के लिए लड़ नहीं रहे हैं बल्कि भारत का बच्चा-बच्चा जाग उठा है जब करोड़ों लोगों की आवाज़ एक हो तो समझो उनको प्रभु का साथ है। आज नहीं तो कल हमारा राज्य होगा। मजदूरों, पीड़ितों, गरीबों का राज्य होगा। यह होकर ही रहेगा। यदि हम वह सुन्दर दिन देख न पायेंगे तो कल हमारे ही बच्चे इस दिन का लाभ उठायेंगे।" मोती से कहा।

"मोतीलाल, मैं भी आपकी कौंसिल का मेम्बर बनना चाहता हूँ।" गुलामा ने अपनी इच्छा प्रगट की।

"यह लोग काफी हैं कौंसिल के लिए। इनको पहले निबटा तो लेने दो, फिर अपनी बात सोचो।" रसूल ने चिढ़ते हुए कहा।

"अब्बाजान का कहना ठीक है। अभी तुम्हारी हमें जरूरत नहीं है। जब होगी तब हम स्वयँ कह देंगे। इस समय तुम्हारा कर्तव्य अपने माँ-बाप की सेवा करना है।" मोती ने रसूल को प्रसन्न रखने के लिए कह दिया।

"रहमान कब तक छूट जाएगा बेटा ? मुझे डर लगता है कि कहीं वह ज्यादा देर तक जेल ही में न रहे।" खतजी ने दुखित स्वर में कहा।

"नहीं, अम्मा जी। आप हम पर भरोसा रखें कि वह शीघ्र ही छूट जाएगा।" मोती ने खतजी को शान्त करने के लिए कहा।

इतने में करीम दाल, चावल, सब्ज़ी और तेल लेकर आ गया। उसने यह सामग्री खतजी के सामने रख दी और बोला—

"यह लो अम्माजी, सब चीजें ले आया हूँ। इन्हें कहाँ पर रख दूँ ?"

"बेटा, जीते रहो। मैं खुद ही सब चीजें सम्भाल कर रख लूंगी। तुम इतनी चीजें क्यों लाए ?" खतजी ने आभारी होते हुए पूछा।

"अरे ऐसी क्या बात है अम्मा ? यह तो हमारा कर्तव्य ही है। जब आपको और किसी वस्तु की जरूरत हो तो हमें कहला भेजिए।" मोती ने उठते हुये कहा।

"बैठ जाओ बेटा, मैं तुम्हारे लिए चाय बना लूं।" खतजी ने प्रेम से कहा।

"नहीं, नहीं, चाय की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर किसी समय आकर पी लेंगे।" दोनों ने एक साथ कह दिया और बाहर निकल गए।

सर्दियाँ कट गईं। बर्फ पिघल गई, धूप निकल आई। महीने के उपरान्त आज सब बच्चे, बूढ़े, जवान और स्त्रियाँ प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। चारों ओर चहल-पहल थी। शिवरात्रि, नवरात्रि और ईद के त्यौहार मनाए गए। फूल खिलने लगे, शगूफों से वृक्ष भर गए। नरगिस ने अपनी सुगन्ध चारों ओर बिखेर दी। बच्चों के स्कूल कालेज खुल गए।

मोती की परीक्षा का समय निकट आने लगा। शीला को कालेज में ऐडमीशन मिल गया। माँ के मना करने पर भी मोती और शीला अपने हठ पर डटे रहे। आखिर तय यह हुआ कि शीला घर के काम में पहले की ही तरह हाथ बटाती रहेगी। उसकी पढ़ाई के लिए घर की आय में से एक दमड़ी भी व्यय नहीं की जाएगी। जहाँ मुश्किल से चार जनों का पेट पल रहा था, भला वहाँ पढ़ने के लिए कहाँ से आता। मोती और शीला के हठ करने पर माँ-बाप लाचार हो गए और शीला को कालेज जाने की अनुमति मिल गई। समस्या यह थी कि उसके कालेज जाने के लिए नए कपड़े कहाँ से आयें? यदि पिता के एक महीने का वेतन कपड़े सिलवाने में लगाया जाता तो सारा घर ठप हो जाता। शीला को आगे पढ़ने का इतना शौक था कि वह घर के ही कपड़ों में कालेज जाने के लिए तैयार हो गई। दोनों की हठधर्मी के सामने उनके माँ-बाप की हार हो गई। माँ का हृदय पिघल गया। उसने कई वर्ष पहले अपने फिरण के लिए कपड़ा मोल लिया था। परन्तु अभी तक उसे सिलवाने का मौका न मिला था। उसका विचार था कि यह कपड़ा मोती के ब्याह में काम

आ जाएगा। उसने कई बार कपड़े को ट्रंक से निकाला, उसे परख लिया, तह किया और फिर बन्द कर दिया था। परन्तु अब वह निराश हो चुकी थी। उसे लगता था कि शायद मोती की शादी अब कभी भी न हो पाए। कौन उसे अपनी लड़की देगा, जबकि वह एक पैसा भी कमाता नहीं है। फिर शहर के प्रसिद्ध गुण्डों के साथ घूमना भलेमानस के एक दम विपरीत है। मोती की माँ आए दिन आहें भर लेती। उसके दिल में कितने अरमान थे। घर में वहू लाने की अभिलाषा थी। वहू आने से चार दिन सुख से कट जाते। उसने सुन्दर स्वप्न देखे थे। मोती क्लर्क बन जाएगा। बड़े-बड़े अफसरों के साथ उठे बैठेगा। बड़े लोगों के साथ उठने-बैठने से उसकी बुद्धि का विकास होगा। बिरादरी में इज्जत से सिर ऊँचा हो जाएगा। चार पैसे घर में आ जाते तो दस आदमी उसकी बड़ाई करते। परन्तु उसके अरमानों पर पानी फिरने लगा था। उसे पूरा भरोसा था कि मोती को किसी न किसी दफ्तर में अवश्य काम मिल जाएगा। परन्तु वह यह सब करने के लिए तैयार न था। कितनी कठिनाई से उसे पढ़ाया-लिखाया था। यह किसे पता था कि स्वप्न की राख जलेगी। सुन्दर ख्वाब के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। आज सब उसकी ओर उँगली उठा कर कहते थे, "गुण्डे की माँ।" युवतियाँ उसके बेटे को देख कर दूर हट जाती हैं। मुहल्ले के सब लोग उन्हें नीची दृष्टि से देख रहे थे। शीला को कई बार भला-बुरा सुनना पड़ा था। माँ लोगों की बातों को सुनती थी और सुन कर अनसुना कर देती थी।

शीला कालेज जाने लगी। उसे अपने हाल पर बहुत दुःख था। कालेज में एक से एक सुन्दर लड़की थी। उनके पास कपड़ों की कमी न थीं। लड़कियाँ तितलियों की भान्ति प्रति दिन रँग बदलती थीं यानि तरह-तरह के डिज़ाइनों के फ्राक, कमीजें और सलवारें पहनतीं। लड़के भी खूब सज-धज कर आते। शीला के पास केवल एक कमीज़ और एक सलवार थी। और इस सूट के लिए भी माँ की कितनी मिन्नतें करनी पड़ीं। बहुत सारे छात्र ऐसे ... आए थे, जिन्हें खाने, पहनने और ओढ़ने की कमी न थी। शीला पढ़ने ... थी। उसके भोलेपन, उसकी सुन्दरता, उसकी सादगी पर कई ... । उसकी बोल चाल, उसके चलने, उठने बैठने का ढँग ... में चतुर होने के कारण सब प्रोफेसर उसकी

बुद्धि की दाद देने लगे थे। ऐसा कोई विषय न था, जिसे वह जानती न थी। मोती के नाम से सब परिचित थे। उसकी बहिन होने के नाते सब उसका आदर करते और उसे मैत्री का निमन्त्रण देते। वह कालेज में बहुत जल्दी पापुलर हो गई। उसने धीरे-धीरे डिबेटों में भाग लेना आरम्भ किया। अपने दिल तथा भाई के भावों को छात्रों पर व्यक्त करने का यह सुगम तरीका था। वह मिलनसार लड़की थी। उसने थोड़े ही समय में कई सखियाँ बना लीं। उन सहेलियों में एक शशि भी थी। शशि, मन ही मन में शीला की फ्रेन्कनेस (Frankness) की दाद देती। पहले पहल उनकी मित्रता नमस्कार तक ही सीमित रही, फिर धीरे-धीरे घनिष्टता में बदलने लगी। इधर-उधर की बातों के साथ-साथ इन्कलाबी कौंसिल, लीडरों का मकसद आदि भी उनकी चर्चा का विशेष अँग बन गए। शशि शीला की बातों को बड़ी दिलचस्पी से सुन लेती। सोचती—

"शीला ने यह बातें कहाँ से सीख ली हैं? कैसे इन बातों में दक्ष है। क्या वाकई यह लोग देश को स्वतन्त्र करेंगे? इनके भाव बुरे नहीं हैं। स्वतन्त्रता में कई घरों की हानि अवश्य है, पर यदि देखा जाए तो इसमें गरीबों का उत्थान है। और उन गरीबों का उत्थान करने वाला मामूली आदमी नहीं हो सकता।" उसने कई बार शीला से मोती और रहमान के बारे में सुना था। उसके दिल में इन लीडरों को देखने की उत्सुकता, एक प्रबल चाह बढ़ी। वह सोचती—

"शीला अपने भाई से यह सब बातें सीख कर आती है। वह कितना प्रसिद्ध है। शहर का बच्चा-बच्चा उन लोगों का नाम जानता है। शीला सदा अपने भाई की बढ़ाई करती है। उसका भाई बी० ए० की परीक्षा में बैठ रहा है। दिन भर इंकलाबी कौंसिल का काम करने पर रात को पढ़ना कितना कठिन है। शीला ने कहा था कि मोती लाल के ही कारण वह कालेज में दाखिल हो सकी थी। यह लोग बहुत गरीब हैं, पढ़ना इन के लिए एक तरह का मनोरंजन है। यदि शीला ने पढ़ना छोड़ दिया होता तो कितना बुरा होता, उस की बुद्धि के सामने तो सब छात्रों की बुद्धि फीकी है। शीला कहती है कि अब गरीबों का दौर आने वाला है। उसका कहना किसी हद तक ठीक ही है। अमीर सदा गरीबों को कुचलते आये हैं। यह उन की ज्यादती है। हमारे

घरों में किस वस्तु की कमी है, पर इन लोगों के लिए एक एक पाई की बहुत कीमत है। गरीबों के होनहार चतुर बच्चे केवल पैसों के अभाव के कारण आगे बढ़ नहीं सकते। न जाने यह भेद भाव है ही क्यों? क्या यह भेद भाव स्वतन्त्रता मिलने पर समाप्त होगा? हो सकता है कि इन लोगों की बातें सच निकलें पर मेरी समझ में यह सब बातें नहीं आतीं।"

शशि सदा इन प्रश्नों का उत्तर सुनने के लिए शीला के पास बैठ जाती और उस से इस प्रकार की बातें सुन लेती। शीला की बातें से वह प्रभावित हो रही थी, जिसे वह स्वयं भी जान नहीं पाई।

एक दिन कालेज के शीघ्र छूटने पर वह शीला के घर जाने के लिए तैयार हो गई और बोली—

"चलो शीला, आज तुम्हारे घर चला जाये। मैं तुम्हारी अम्मा से मिलना चाहती थी। इस से अच्छा अवसर नहीं मिलेगा।" शशि ने बड़े प्रेम तथा अपनेपन से कहा।

शीला को विश्वास न हुआ कि शशि उसके घर जायेगी। वह जानती थी कि शशि बड़े घर की बेटी है। इस के घर में मोटर होना मामूली बात न थी। परन्तु शशि के भोलेपन से न केवल प्रभावित ही हुई थी बल्कि उसे चाहने भी लगी थी। वह उस के प्रेम भरे आग्रह को टाल न सकी। उसे दुःख भी था और डर भी कि कहीं उसका घर देखने के उपरान्त शशि उससे नफरत न कर बैठे। बोली—

"तुम मेरा घर क्या देखोगी। वहाँ देखने लायक है ही क्या? अच्छा हो कि देखो ही ना। मैंने तुम से कह दिया है ना कि हम गरीब हैं। टूटा फूटा घर है हमारा।" यह कहते हुए उसके नेत्र भर आए।

"मैं तुम्हारी गरीबी या अमीरी का अंदाज लगाने नहीं जा रही हूँ। तुम मुझे गलत न समझो। मैं तुम्हें अपनी बहिन के बराबर समझती हूँ। मुझ पर विश्वास रखो।" शशि ने अपनी बात का विश्वास दिलाते हुए कहा। कुछ समय रुक कर फिर बोली—

"यदि तुम नहीं चाहती तो मैं नहीं जाऊँगी।"

"तुम हमारे घर आओ और मैं न चाहूँ। नहीं शशि मेरे कहने का मतलब यहन हीं था। क्या तुम जानती नहीं कि मैं तुम से कितना प्यार

करती हूँ। अब तो मैं तुम्हें अवश्य ही ले चलूंगी। चलो उठो।" शीला का मुंह प्रसन्नता से खिल रहा था।

दोनों उठीं और घर की ओर चल पड़ीं। रास्ते की गंदगी से शशि का दम घुटने लगा। जीवन में पहली बार वह इस तरह की गली से जा रही थी। मुहल्ले के लोगों ने जब शीला के साथ शशि को आते देखा तो उन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इस मुहल्ले में सुन्दर लिबास में लिपटी हुई अप्सरा सी लड़कियाँ बहुत कम पाई जाती थीं। शशि को देखते ही कई घरों की खिड़कियाँ खुलने लगीं। कई नवयुवक इस सुन्दरी को देखने के लिए घरों से बाहर आ गए। शशि के लिवास, उसके चलने के ढंग से मुहल्ले वालों को उस की अमीरी का अन्दाज लगाने में देर न लगी। लोगों की इस हरकत से शीला को बहुत गुस्सा आया पर वह अपने गुस्से को पी गई। एक जगह रुक कर बोली—

"यह रहा हमारा घर। बहुत बड़ा मुहल्ला है यह। देखा कितने लोग हमें घूर घूर कर देख रहे थे। यह इनका प्रतिदिन का कारोबार है।"

दोनों ऊपर चली गईं। शीला शशि को एक छोटी कोठरी में ले गई। उसने ट्रंक को आगे सरका लिया और शशि से बोली—

"तुम इस पर बैठ जाओ शशि! तुम्हारे कपड़े गन्दे नहीं हो जायेंगे?"

"कोई बात नहीं, मैं नीचे चट्टाई पर ही बैठ जाती हूँ।" यह कह कर उसने अपनी सेंडल उतार दी और चट्टाई पर ही बैठ गई। शीला रसोई घर में गई और अपनी माँ को साथ ले कर आ गई। बोली—

"यह मेरी माता जी हैं।"

"नमस्कार!" शशि ने हाथ जोड़ कर कहा। शीला की माँ शशि को देख कर झेंप सी गई। उस ने अपने फिरण की ओर देखा जो एकदम छलनी हो गया था। उसे मन ही मन बड़ा दुःख हुआ। शीला ने उसे बता दिया था कि शशि बड़े घर की बेटी है। माँ का पीला मुँह लाल हो गया। वह शरमा रही थी। उसे पता न था कि किस तरह वह शशि के साथ बात करे। परन्तु शीला को शशि के साथ बेधड़क बातें करते देख उस का हौंसला बढ़ा और वह बोली—

"जीती रहो बेटी ! शीला ने आपके बारे में कई बार कहा था।

यह कह कर वह चुप हो गई। वह मन ही मन प्रसन्न हो रही थी कि आज शशि उन के घर आई है। इधर उधर की बातों के उपरान्त माँ चाय बनाने चली गई। शीला और शशि की बात चल ही रही थी कि मोतीलाल अन्दर चला आया। शशि ने देखा कि उस का चेहरा चमक रहा था। बड़ी बड़ी मोटी आँखें, लम्बा कद, गोरा बदन तनिक दुबला सा लेकिन सुन्दर। अन्दर आते ही किसी गैर लड़की को देख कर हिचकिचाया। अपने भाई की असमंजसता को देख कर शीला फट से बोली—

"भैय्या ! यह मेरी सहेली शशि कौल है, मेरे साथ ही पढ़ती है।"

"नमस्कार !" मोती ने शशि की ओर एकटक देखते हुए कहा, और मन ही मन सोचने लगा।

"कितनी सुन्दर लड़की है। ऐसा लगता है जैसा कीचड़ में कमल खिल रहा है। जैसे इस अंधेरी कोठरी में प्रकाश आ गया हो।" शशि उसे देख कर लज्जा गई। उसने अपनी पलकें झुका लीं। मोती ने ट्रंक अपनी ओर सरका लिया और उस पर बैठते हुए शीला की ओर बोला—

"कोई चाय वाय बनाई इनके लिए ?"

"जी, चाय की कोई आवश्यकता नहीं है।" शशि ने धीरे से कहा।

"कहाँ रहती हैं आप ?"

"राज बाग में।"

"ओ,······तब तो आप काफी दूर रहती हैं।" मोती ने कहा।

"कोई बात नहीं भैय्या, कोई न कोई छोड़ आयेगा इसको। क्यों शशि ठीक है न ?" शीला ने पूछा।

शशि के लिए दूध वाली चाय आ गई। आज पहली बार उन के घर में ऐसा महमान आया था। इसलिए चाय के साथ मीठा कुल्चा और बाजार से खरीदी हुई नमकीन पकौड़ियाँ भी रखी गईं। शशि उन के प्रेम भाव से प्रभावित हो रही थी। उसे भूख न थी परन्तु कहीं वह लोग बुरा न मान बैठें, उसने चाय पीनी शुरू की। अपने सामने बहुत सारी पकौड़ियाँ और कुल्चे (रोटी) देख कर वह बोली—

"शीला आप लोग भी चाय ले लो न। मैं अकेली यह सब नहीं खा पाऊँगी।"

"अरे यह अधिक तो है नहीं? तुम्हें यह सब खाना पड़ेगा।" शीला बोली।

"हम शर्मिन्दा हैं आप के लिए कुछ भी नहीं ला पाये। यह बजार तो किसी काम का नहीं। कोई चीज साफ नहीं मिलती।" माँ ने वाकई शर्मिन्दा होते हुए कहा।

"नहीं ऐसी भी क्या बात है। आप मुझे पराया क्यों समझते हैं। यह सब कम तो नहीं।" शशि ने भोलेपन से कहा।

मीठी चाय समाप्त करने पर शशि के लिए शीर चाय (नमक वाली चाय) आ गई। उसके बहुत मना करने पर भी उसे वह पीनी ही पड़ी। इस चाय में मलाई और बादाम पड़े थे। मोती को यह देख कर आश्चर्य हुआ। उसने सोचा "न जाने माँ बादाम और मलाई कहाँ से ले आई?" उसने अपनी माँ को कभी इतना प्रसन्न नहीं देखा था। इससे वह भी मन ही मन शशि को दाद दे रहा था। माँ को आज पहली बार शीला के कॉलेज जाने का फायदा दिखाई दिया। बड़े लोगों से जान पहचान होना छोटी बात न थी। फिर मुहल्ले के लोगों ने शशि को आज उन के घर आते देखा था। रायसाहब के घर से जान पहचान होना ऐसी वैसी बात न थी। अब उसे मुहल्ले वालों की कोई चिंता न रही। कोई उसे गुण्डे की माँ कहने की हिम्मत न करेगा। चार आदमी उन्हें इज्जत की दृष्टि से देखेंगे।

शशि चाय पी चुकी। उस ने अपनी कलाई पर बन्धी घड़ी पर दृष्टि डाली। बहुत देर हो गई थी। वह शीला को कहने लगी—

"अब मुझे घर जाना चाहिए, बहुत देर हो गई है। घर में सब परेशान होंगे।"

"आप अकेली नहीं जा पायेंगी, मोती लाल आपको छोड़ आएगा।" माँ ने कहा।

"और फिर तुम तो इस रास्ते से भी परिचित नहीं हो।" शीला ने माँ की बात का समर्थन किया।

शशि उत्तर दिए बगैर उठ खड़ी हुई, चप्पल पहन कर जाने के लिए तैयार हो गई।

"फिर कभी आना बेटी।" माँ ने कहा।

"अवश्य आऊँगी, माँ जी।"

वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरते समय सोचने लगी, कितने गरीब लोग हैं यह। इस गरीबी में भी एक दर्द है, तड़प है, और इनके दिल में प्रेम का समुद्र भरा पड़ा है जो हम लोगों के दिल में नहीं है। मुझे देख कर कितने प्रसन्न हुए हैं जैसे मैं इनकी अन्नदाता हूं। बात-बात में प्रेम टपक रहा था। छल-कपट इनको छू तक नहीं गया। बड़े लोगों के हाव-भाव से यह लोग कोसों दूर हैं। यदि यह लोग आन्दोलन न करें तो और कौन करेगा। इनकी दशा देख कर मेरे नेत्र आज ही खुल गए। मैंने यह पहले कभी भी न सोचा था कि हमारे देश में इतनी गरीबी है। परन्तु शीला की बुद्धि कितनी तीव्र है। कैसे यह लोग पढ़ते हैं? एक ही कमरे में रहना कितना कठिन है।" मोती के कहने पर उसकी विचार शृँखला टूट गई।

"ताँगे पर जायेंगी न आप ?"

'नहीं-नहीं, पैदल ही चलेंगे।" शशि बिना सोचे समझे यह कह गई।

ज़ैना कदल से राजबाग़ तक कम फासला न था। मोती शशि की बात पर हैरान हो गया और बोला—

"आपको देर तो नहीं हो जाएगी? आपका घर नजदीक नहीं है?"

"जी नहीं, मुझे पैदल चलना बहुत अच्छा लगता है। पैदल चलना सेहत के लिए लाभदायक भी है।" शशि ने अपनी भूल को छुपाना ही ठीक समझा। वह मोती को यह कहना नहीं चाहती थी कि सोचे समझे बगैर ही वह पैदल चलने के लिए तैयार हो गई।

दोनों ज़ैना कदल की तँग टेढ़ी, गँदी, सड़ी गलियों से बाहर आ गए। शशि ने अपने मुंह पर ठँडे स्वच्छ हवा के झोंके महसूस किये। उसने अपनी नाक पर रखे हुए रूमाल को उठा लिया और एक लम्बा साँस अन्दर भर लिया। दूर तक दोनों खामोश चलते गए। मौनव्रत को तोड़ने के लिए शशि ने कहा—

"आपकी इन्कलाबी कौंसिल का आफिस कहाँ पर है?"

"हमारे घर के आसपास ही है। यही समझिए एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में है।"

"मैंने आपके बारे में शीला से बहुत कुछ सुना है।" यह कह कर शशि को अपनी भूल को एहसास हुआ, संभल कर बोली—

"मेरा मतलब है, आपकी कौंसिल के बारे में हम अक्सर बातें करते रहते हैं।"

"हम स्वतन्त्रता और निर्धनता से छुटकारा चाहते हैं। और चाहते हैं कि हम भी मनुष्यों की तरह जी सकें। दो समय भर पेट खा लें।" उसे ध्यान ही नहीं रहा कि शशि उसके साथ है। वह बोलता गया—

"हम लोगों के अरमान दिल ही में रहते हैं। ग़रीबी के कारण हम वह नहीं कर पाते जो हम करना चाहते हैं। यह मुझे ही मालूम है कि मैंने शीला को कैसे कालेज भेजा है। किन मुसीबतों का सामना किया। हमारे लिए उसको कालेज भेजना एक भारी समस्या थी। कैसे हमने फीस के लिए पैसे इकट्ठे किए, यह हमारी अम्मा भी नहीं जानती है। पिताजी को इन बातों से कोई सरोकार नहीं, कोई दिलचस्पी नहीं है। घर में कौन आया, कौन गया, क्या पका, क्या खाया, उन्हें यह सब जानने की फुर्सत नहीं है। रविवार को मुश्किल से एक छुट्टी मिलती है, परन्तु उस दिन भी उन्हें अपने अफसरों के घर जा-जा कर काम करना पड़ता है। दिन को थक कर रात को आराम करना उनके भाग्य में लिखा ही नहीं। यहाँ तक कि कभी उन्हें अपने बच्चों के साथ एक-आध घँटा बिताने का भी समय नहीं मिलता। यह भी क्या जीना है। इससे तो जानवरों की जिन्दगी अच्छी है। परन्तु मुझे दुःख इस बात का है कि जब हम अपने लोगों को उठाने का यत्न करते हैं तो वह प्रतिवाद करते हैं। मैंने अपने कानों से अपने बारे में बुरा भला सुना है। मुझे गुण्डा उपनाम मिला है। यह क्यों ? केवल इसलिए कि मैं उन्हें सच्ची बातें बताता हूँ। और हाँ, मैं अपने बाप की तरह एक चपरासी या क्लर्क नहीं हूँ। कभी मुझे इन लोगों पर हँसी भी आती है और कभी रोना भी। यह सब अज्ञानता के ही कारण है। कौन उन्हें यह बातें समझाए ? मेरे दोस्त रहमान ने कई बार लोगों को समझाने का प्रयत्न भी किया था, परन्तु यह सब बातें उन की समझ

से बाहर की हैं।" मोती ने यह सब एक ही साँस में कह डाला। दम सम्भालने के उपरान्त बोला—

मुझे माफ कीजिए, न जाने क्या कह गया मैं। मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि आप मेरे साथ हैं। खूब बोर किया मैंने आपको। वास्तव में बात यह है कि हर समय इन्हीं बातों को दुहराने की मेरी आदत ही बन गई है।" उसने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"क्या आपको विश्वास है कि आप सफल होंगे?" शशि ने मोती की बात की ओर ध्यान ही नहीं दिया।

"मुझे पूरा भरोसा है कि एक बार चिंगारी लगने के उपरान्त आग जल्दी चमकती है। जनता को उकसा कर दबाना बहुत कठिन है। आखिर हमारी माँग उनकी भी तो माँग है। भारत का बच्चा-बच्चा जाग उठा है। करोड़ों लोगों की आवाज़ एक हो गई है, इस सूरत में अनहोनी भी होकर ही रहती है।" मोती ने कहा।

"आजकल आपकी कौंसिल की खूब चर्चा हो रही है। मैं चाहती हूं कि आपके परिश्रम का फल मिल जाये। सब प्राणी बराबर हैं, सबको जीने का अधिकार मिलना चाहिए।" शशि ने यह बात बड़ी गम्भीरता से कही।

मोती शशि की बातों से प्रभावित हो रहा था। उसने सोचा, "इतने अमीर घर से हो कर भी यह प्रगतिशील है। महलों में रहने के बाद भी ग़रीबों से सहानुभूति रखती है। हमारी गलियों में आना, इसके लिए छोटी बात नहीं है। वह शशि के भोलेपन तथा उसकी फ्रेन्कनेस (Frankness) पर मुग्ध हो गया वह मन ही मन में सोच रहा था। उसे आज अजीब प्रकार का आनन्द मिल रहा था। वह चाहता न था कि शशि का घर अभी आ जाए। इधर शशि का विचार भी कुछ ऐसा ही प्रतीत होता था। वह मोती के भावों से बहुत प्रभावित थी। उसे मोती के साथ चलने और बातें करने में आनन्द प्राप्त हो रहा था। वह जान न पाई कि कैसे बातों ही बातों में इतना रास्ता कट गया। कुछ देर चलने के उपरान्त मोती ने पूछा—

"आप थक तो नहीं गईं?"

"नहीं तो। वैसे आज तक मैं इतना चली नहीं, परन्तु न जाने आज मुझे थकान क्यों नहीं हुई। बल्कि इतना और भी चलना पड़े तो खुशी से चल सकती हूं।" उसने अपने नेत्र मोती की ओर उठाते हुए कहा। मोती के शरीर में एक लहर सी दौड़ गई।

"आपके घर में और कौन-कौन हैं ?" मोती ने पूछा।

"हम दो बहिनें, और दो भाई हैं। मेरे बड़े भाई नारायण इँगलैंड चले गए हैं। वह वहाँ से डाक्टर बन कर आयेंगे। मेरे पिताजी जज हैं।"

"तब तो आपको भी इंगलैण्ड जाना होगा, क्यों ?" मोती ने आह भरते हुए कहा।

"मेरी दीदी इंगलैण्ड जाना चाहती थी। बी. ए. फाईनल में पढ़ रही है। परन्तु बड़ी माँ और पिताजी लड़कियों का विलायत जाना ठीक नहीं समझते। आजकल दीदी के विवाह की खूब चर्चा हो रही है।"

"हूँ,...तब तो आपकी बारी भी शीघ्र ही आएगी ?" मोती ने बड़ी उत्सुकता से कहा।

"नहीं, मैं अपने बहिन, भाइयों में सबसे छोटी हूँ। अभी मेरी शादी का प्रश्न ही नहीं उठता, और फिर मैं भी तो इंकार कर सकती हूँ ?" शशि यह कहते समय रुक गई, लज्जा के कारण उसका सिर झुक गया, उसके मुँह का रँग गुलाबी हो गया, जो मोती से छुपा न रह सका। उसने अपने मन के चोर को छुपाना चाहा, धीरे से बोली—

"आपकी शादी कब होने जा रही है ?"

"मेरी शादी ? हा-हा, मुझ निखट्टू के साथ कौन मूर्ख शादी करेगी। हम लोग तो आवारा ठहरे।" मोती ने हँसते हुए कहा।

"आप निखट्टू हैं ! यह उपनाम आपको कहाँ से मिल गया ? आप तो लोगों का कल्याण करते हैं, आप परोपकारी हैं।"

"यह ग्राप कहती हैं, पर ग्रापके घर वाले यह मानने को कभो तैयार नहीं कि मैं किसी का कल्याण या उपकार कर रहा हूँ।"

"मेरी ग्रौर मेरे घर वालों की राय में भेद हो सकता है।"

दोनों राज बाग के बंड पर से जा रहे थे। चारों ग्रोर ग्रंधेरा छा रहा था। नदी के तट पर डोंगों (बड़ी किश्तियाँ जिस में मल्लाह लोग रहते हैं) की कतारें लगी थीं। इन डोंगों में बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं। चारों ग्रोर नीरवता छाई हुई थी बंड के ग्रासपास कई सुन्दर भवन रोशनी से जगमगा रहे थे। हर एक भवन के साथ बड़े सुन्दर बगीचे थे। कई घरों के बागों में बिजली की बत्तियों के नीचे टेनिस, बेडमिन्टन खेली जा रही थी। कितना ग्रन्तर था इन दो वर्गों में। शहर की गंदी गलियों में मकान एक दूसरे से एकदम सटे हुए थे। एक घर की खिड़की दूसरे कमरे में खुलती थी। जहां साँस लेना भी कठिन था। बच्चों के खेलने का स्थान या बाजारों में था या पुलों पर। इसके विपरीत ग्रमीर लोगों के घरों में जगह की कमी न थी। एक एक कोठी के साथ एकड़ एकड़ ज़मीन थी। टेनिस, बेडमिन्टन, क्रिकेट खेलने के लिए खुला हवादार स्थान। शशि एक भवन की ग्रोर संकेत करते हुए बोली—

"यह रहा हमारा घर। चलिये ग्राप भी ग्रन्दर चलिए। ग्राप को ग्रपने भैय्या से मिला दूं।"

"नहीं, धन्यवाद! इस समय काफी ग्रंधेरा हो गया है। मुझे घर पहुँचने में भी काफी देर लगेगी। घर वाले परेशान हो जायेंगे।" मोती ने हँसते हुए कहा।

"इस समय मैं जाने दूंगी, परन्तु ग्राप वायदा कीजिए कि ग्राप फिर कभी हमारे घर ग्रायेंगे?"

"मैं वायदा नहीं कर सकता। ग्राज नहीं तो कल मुझे पुलिस पकड़ कर ले ही जायेगी। वह मेरी तलाश में है। मैं केवल ग्रपनी परीक्षा तक किसी भी सूरत में बाहर रहना चाहता हूं। इस हालत में वायदा कैसे कर सकता हूँ।"

"तो क्या आप नहीं मिल सकते ?" शशि के स्वर में निराशा थी।

"क्या आप वास्तव में मुझ से मिलना चाहती हैं ?"

इस के उत्तर में वह चुप हो गई। उस की खामोशी से मोती का हौंसला बढ़ गया, वह बोला—

"मैं कल शाम के छः बजे लाल मण्डी में आपकी प्रतीक्षा करूँगा। वह तो पास ही है।"

"बिल्कुल ठीक है, मैं अवश्य आऊँगी।" शशि ने प्रसन्न होते हुये कहा।

"अच्छा मैं चलता हूं। नमस्कार !"

"नमस्कार !"

शशि घर के अन्दर दाखिल हुई तो मोती लाल ने अपने घर की राह ली। वह तेज तेज डग भरने लगा। आज वह बहुत प्रसन्न था। चलते चलते सोचने लगा—

"कितनी सुन्दर है शशि। उसे देख कर मेरे मन में अजीब सी उमंग प्रतीत होती है। आज पहली बार किसी लड़की को देख कर मेरी यह दशा हुई है। क्या इसी को प्रेम कहते हैं ? क्या वह भी मुझे चाहती है ? प्रेम एक तरफ नहीं हो सकता। लेकिन वह क्या सोच कर मुझ से प्रेम करने लगी है ? मैं गरीब और वह अमीर। आज तक कभी ऐसा हुआ है ? उस के माँ, बाप को पता चलेगा तो न जाने क्या कर बैठेंगे। जज साहब की लड़की है आखिर। शीला और उस की मित्रता कैसे हो गई ? शायद शीला बहुत दिलचस्प लड़की है। वह शशि और मेरे मिलाप का कारण बन गई। उसे शशि की हर बात याद आ गई। वह उस के साथ पैदल चलने पर राजी थी, प्रसन्न थी। उसे एक तरह की गुदगुदी हुई। वह इस मधुर मिलन को भुलाना नहीं चाहता था। शशि की सब बातों को दुहराने से उसे पूरा विश्वास हो गया कि वह उसे चाहने लगी है। यदि वह न चाहती तो दूसरे दिन मिलने के लिए कैसे मान जाती ?" परन्तु उसका हृदय शंकित हो रहा था। उसने सोचा कि शशि और उस का साथ बिल्कुल ठीक नहीं बैठता है।

परन्तु दूसरे ही क्षण उस ने अपनी शंका को दबा दिया। वह मन ही मन हँसा—

"क्या किसी से प्रेम होना भी पाप है? क्या इस पर भी अमीर लोगों का जन्मजात अधिकार है? केवल दो वर्गों में जन्म लेने से क्या हम एक दूसरे के काबिल नहीं रहे? परन्तु जिस वस्तु को पाने के लिए हम ने अपने कदम आगे बढ़ाये हैं, उससे पीछे हटना कायरता नहीं तो और क्या है? और फिर शशि को मैं जबरदस्ती तो नहीं पाना चाहता? इस में दोनों ओर का खिंचाव है, लगाव है। मैं यह रटी हुई बातों को मानने के लिए कभी तैयार नहीं हूँ। केवल निर्धन होने के नाते मैं उस से दूर नहीं हट सकता।"

उस ने मन ही मन में फैसला किया कि वह शशि से मिलेगा और सदा मिलता रहेगा। उसको अपने प्रेम के बारे में साफ साफ कह देगा। वह इन्ही विचारों के ताने बाने बुनता हुआ अपने घर पहुँच गया।

लीडरों के जेल चले जाने के उपरान्त इन्कलाबी कौंसिल का कार्य गुप्त रूप से चलता रहा। चोरी छुपे लोगों तक इश्तेहार पहुँचाये जाते थे। कालेज में शीला, शशि और अन्य कई छात्रों द्वारा पत्र बिक रहे थे। सरकार को लगा कि लीडरों के जेल जाने से आन्दोलन थम गया है। लोग सर्तक थे, पर बाहर से सब कार्य शाँति पूर्वक होता रहा। सरकार ने समझा कि लोगों का जोश ठंडा पड़ गया है, इस लिए वह यूं ही अपने जेलों को भरना नहीं चाहते थे। कैदियों को रिहा करने का फैंसला किया गया।

लोगों में इस समाचार से प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। लीडरों के छूटने के दिन गिने जाने लगे।

मोतीलाल की परीक्षा समाप्त हो गई। पेपर एक से एक अच्छे हो गए थे। अभी तक वह पढ़ाई में व्यस्त था पर परीक्षा समाप्त होते ही वह कौंसिल का काम दिलो जान से करने लगा। कौंसिल के प्रोपगन्डा के लिए एक अंग्रेजी समाचार पत्र भी निकलने लगा। कालेज के छात्र बड़ी दिलचस्पी से इसे पढ़ने लगे।

वह दिन भी आया, जिस दिन की प्रतीक्षा में जनता उतावली हो रही थी। जेल के बाहर हजारों लोग जमा हो गये। कई लोगों के हाथों में फूल मालायें थीं जो लीडरों के गले में डाली जानी थीं। रहमान के दोस्त और उस के घर के सब व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। आज खतजी अपने बेटे को

देखने के लिए तड़प रही थी एक वर्ष के उपरान्त बेटे की रिहाई हो रही थी। उस का मुंह प्रसन्नता से चमक रहा था। भीड़ में खड़ी वह ग्राज लोगों की बातों का विषय बन गई थी। एक लीडर की माँ होना मामूली बात न थी। लीडर रिहा हो गए। रहमान ग्रागे बढ़ा, हजारों लोगों ने उस के गले में फूल की मालायें डालीं। खतजी ग्रपने बेटे को गले लगाने के लिए भीड़ को चीरती हुई ग्रागे बढ़ी। दोनों ग्रोर से लोगों ने ग्रादर पूर्वक उसके लिए रास्ता बनाया। माँ-बेटा गले मिले। माँ के नेत्र खुशी से भर ग्राए। लोगों में फिर से जोश भर ग्राया। भारत जिन्दाबाद के नारों से ग्राकाश गूँज उठा। माँ, बाप भाईयों से मिलने के बाद रहमान दोस्तों के गले मिला ग्रौर मोती से बोला—

"कहो पेपर कैसे हुए ?"

"ग्ररे, ग्रभी तुम घर चलो फिर बातें होंगी।"

रहमान के संग सैंकड़ों लोग उस के घर की ग्रोर जा रहे थे। ग्राज उन की खुशी का दिन था, उन का नेता रिहा हुग्रा था।

खतजी को ग्रपने बेटे पर गर्व था। ग्राज वह ग्रपने पति की ग्रोर ऐसे देख रही थी, जैसे बता देना चाहती थी "देखो मेरा बेटा कितना लोक प्रिय है।" वह ग्रपनी प्रसन्नता में ग्रतिथियों के सत्कार को भी भूल गई। पर ग्राज कौन किस का मेहमान था। लीडर सब का बेटा, भाई ग्रौर मित्र होता है। उस के माता पिता की बारी जनता के उपरान्त ही ग्राती है। ग्राज रहमान की झोंपड़ी जगमगा रही थी। कितने चिराग जल रहे थे। ग्राज खतजी के सामने पका पकाया खाना ग्रा गया। किस ने बनाया कहां से ग्राया उसे इन बातों का पता न चला। दिन भर लोगों का ताँता बन्धा रहा। रात ग्रा गई सब लोग ग्रपने घरों को चले गए। परन्तु रहमान ने ग्रपने मित्रों को नहीं जाने दिया। वह ग्राज उन से बहुत कुछ कहना चाहता था, ग्रौर बहुत कुछ जानना चाहता था।

"कौंसिल का काम कैसा चल रहा है ?" रहमान ने पूछा।

"काम तो ग्रच्छी तरह चल रहा है। परन्तु करीम का घर बहुत छोटा है। मेम्बरशिप बहुत बढ़ गई है, इस हालत में मैं सोच रहा था कि यदि हमें कहीं बड़ा कमरा मिल जाता तो वह बहुत ग्रच्छा रहता।" मोती ने ग्रपनी राय प्रगट की।

इस में शक ही क्या है। एक के बदले दो कमरे किराये पर लिये जायें।"

"दो कमरों की बात तो ठीक है। देर हो जाने पर हम उसे रात को भी प्रयोग में ला सकते हैं।

"आज मैं शाबान के घर गया था। खूब रौनक थी। वहाँ एक आता था और एक जाता था। उसे तो आराम करने का अवकाश ही नहीं मिला।" करीम ने बात बदलते हुए कहा।

"वैसे तो उसके घर वालों को उसके जेल जाने और छूटने की आदत ही है। पर उन दिनों का जेल और अब के जेल में बहुत अन्तर है। अब लोगों का लीडर बन कर जेल गया था।" नूरा बोला।

"मुझे पूरा विश्वास है कि तुम लोगों के कारण ही कौंसिल का काम अच्छी तरह से चल रहा है।"

"हमारे लिए कौंसिल है ही क्या चीज़। बड़े-बड़े काम किए हैं हमने, फिर भला इतना छोटा सा कार्य भी नहीं कर सकते।" नूरुद्दीन ने हँसते हुए कहा।

"मोती, मुझे जेल में यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जेल के सब कर्मचारी शाबान को भली-भान्ति जानते थे। उसी ने मेरी बहुत लोगों से जान-पहचान कराई। कौन सी वस्तु थी, जो हमें मिल नहीं रही थी। सब कर्मचारी शाबान से बहुत डरते थे और उसे प्रसन्न रखने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखते थे। जेल में शाबान का साथ बहुत अच्छा रहा।" रहमान ने कहा।

"अरे भाई, तुमको क्या बताऊँ, जब हम हजूरीबाग की हाथापाई में जेल गए थे तो जेल वालों को ऐसा नाच नचाया कि तंग आ उन्होंने हमें रिहा कर दिया और जाते समय सबने हमसे माफी माँग ली।"

"इसमें शक ही क्या है।" मोती बोला।

करीम और सूरुद्दीन चले गए। मोती और रहमान वहाँ रह गए। मोती बोला—

"जेल में कभी पुस्तक पढ़ते थे क्या?"

"अरे यार, मैं यह कहना भूल ही गया कि मैंने दोनों पुस्तकें वहाँ पढ़ लीं। पहले वाली भी, और जो तुमने भेज दी थी वह भी।" वहाँ और करना

ही क्या था । हाँ, यह कहो, तुम्हारे पेपर कैसे हुए ? खुदा की कसम, मुझे डर था कि तुम्हें भी जेल न भेज दें। तब तो तुम्हारी पढ़ाई ठप हो जाती । खैर, खुदा का शुक्र है कि ऐसा नहीं हुआ ।"

"मेरे पेपर बहुत अच्छे हो गए । मुझे लगता है अच्छे दर्जे में पास हो जाऊँगा ।"

"माँ और शीला कैसी हैं ? शीला कालेज जाती है क्या ?"

"अरे हाँ, शीला ने नमस्कार भेजा था । और यह भी कहा था कि वह तुमसे स्वयं आकर मिल लेगी, परन्तु बहुत लोगों को देख कर वह ज़रा लज्जा गई । कालेज तो जाया करती है ।"

"मैं स्वयं जाकर उससे मिल लूंगा । नया सबक भी तो लेना है मुझे ।" इस पर दोनों हँस दिए । वह फिर बोला—

"कल शाम के चार बजे घर ही में रहना, मैं वहीं तुमसे मिल लूँगा ।" उसने अपना हाथ मोती के कन्धे पर रख दिया ।

"कल चार बजे शशि को मिलने का समय दिया है मैंने । मुझे वहाँ से लौटने में ज़रा देर लग जाएगी ।"

"कौन शशि ? क्या नए गुल खिले हैं ?"

शशि, शीला की सहेली है । एक दिन शीला के साथ हमारे घर आ गई, उसी दिन से हम एक दूसरे को जानते हैं । और हाँ अधिक कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है, तुम तो समझदार हो ।"

"जी हाँ, मैं बहुत समझदार हूँ । साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि इश्क हो गया है । यह बताओ, किसकी लड़की है ?"

मोती ने रहमान को शशि के बारे में सब बातें बता दीं । रहमान यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला –

वाह दोस्त, यह तो सोलह आने बात की तुमने । यही सच्चा आन्दोलन है । हमारे पग अपने आप उस ओर बढ़ रहे हैं । क्या शीला इस बात को जानती है ? "

"हाँ, वह सब जानती है । उस दिन से हम दोनों प्रायः प्रतिदिन ही मिलते हैं । इतने बड़े घर की लड़की होकर भी वह हमारी संगति में रहना बहुत पसन्द करती है ।" मोती ने शशि की बड़ाई करते हुए कहा ।

"इसका मतलब है कि तुम प्रेम में तो पूरी तरह जकड़े गए हो । अब उसके अवगुण भी गुण ही प्रतीत होंगे । अब तुम्हारी शादी उसी से हो जानी चाहिए ।" रहमान ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा ।

"मेरी शादी उसके साथ हो ही नहीं सकती । उसके माँ-बाप इस बात पर कभी तैयार नहीं होंगे । यह मैं सब जानता हूँ परन्तु उसके कहने पर मुझे मजबूरन उससे मिलना पड़ता है ।" मोती ने ठंडी आह भरते हुए कहा ।

"यह तो तुमने खूब कही । तो तुम उसे अपनी मर्जी से मिलने नहीं जाते क्या ?"

"अपनी इच्छा से अवश्य मिलता हूँ, परन्तु कहीं हम बिछड़ ......?" मोती ने वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया ।

"कोई बात नहीं, अभी से क्यों परेशान हो रहे हो, तेल देख तेल की धार देख ।"

दोनों की बातें थम गई मोती अपने घर चला गया । रहमान आज बहुत थक गया था । दिन भर व्यस्त रहने के कारण अपने घर वालों से उसकी बात-चीत हो ही नहीं पाई थी । कितने ही रिश्तेदार उसे आज मिलने आए थे । आज उन सब की दृष्टि में वह उच्च था । उन्हें पूरा विश्वास था कि उसकी राह सही है । जिसे लाखों लोगों का साथ हो, भला उसके सम्बन्धियों की क्या राय हो सकती थी । आज सब उसे इज्जत की दृष्टि से देख रहे थे । उसकी माँ का हृदय प्रफुल्लित था । वह अपने बेटे से बहुत कुछ कहना चाहती थी और उससे कई बातें सुनना चाहती थी । खतजी की आँखें अपने बेटे की राह देखते-देखते थक गईं, वह अपने बेटे से मिलने के लिए तड़प उठी । बहुत समय बीत गया, तब कहीं जाकर रहमान को लोगो से छुट्टी मिली । सबको विदा करके वह सरोई में चला गया । माँ एक चौकी पर बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी । प्रतीक्षा में उसकी झपकी लग गई थी । रहमान की अन्दर आने के आहट से वह जाग गई, उसका मुंह खुशी से चमक उठा । बोली—

खुदा का शुक्र है कि सब लोग चले गए । मैंने तुम्हें सुबह से अच्छी तरह देखा भी नहीं ?"

इधर-उधर की बातें होती रहीं । रसूलमीर, गुल्ला, खतजी सब रहमान की बातों को आज ध्यान से सुन रहे थे । कैसे भारत स्वतन्त्र होगा, कैसे लोगों

की गुलामी और निर्धनता का अंत होगा । खतजी की नींद उचट गई । रसूल ने अपने हुक्के को एक ओर कर लिया । बेटे की बात समाप्त होते ही खतजी ने बीते दिनों का हाल सुनाया । कैसे मोती ने हड़ताल के दिनों में उनकी सहायता की । किस तरह कठिनाइयों का सामना किया उन्होंने, कैसे रहमान के जेल से छूटने के दिन गिने जाने लगे । कई बातें होती रहीं, और भी कुछ था, जिसे कहने के लिए खतजी उतावली हो रही थीं—

"बेटा लड़की वाले तुम्हारे ब्याह के लिए पीछे पड़े हैं । अब तो लड़की सियानी हो गई है । सगाई को हुए बहुत समय हो गया है । जवान लड़की को अधिक देर घर में रखने से बदनामी होती है । तुम कहो, तुम्हारा क्या विचार है ?" खतजी के इस प्रश्न का उत्तर रहमान दे न सका । वह माँ को सदा प्रसन्न देखना चाहता था । इसलिए उसने अपने सिर से हामी भर ली । माँ ने समझ लिया कि रहमान ब्याह के लिए तैयार है तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । बोली—

"मैं तो तुम्हारे ब्याह का दिन कल ही तय करने जाऊँगी । बूढ़ी हो गई हूँ, सुन्दरी के आने से चार दिन सुख से तो कट जायेंगे । तुम्हें क्या, लड़के हो, चाहे दिन भर घूमते फिरो, परन्तु बेटी तो सदा मेरे पास ही रहा करेगी ।" फिर कुछ रुक कर बोली—

अल्लाह की कसम, सुन्दरी खूब जवान हो गई है । बहुत हसीन लग रही है वह । उस दिन रसूल को देख कर भाग गई थी ।" खतजी ने अपने पति की ओर देखते हुए कहा ।

सुन्दरी खतजी की अपनी ही बहिन की लड़की थी । बच्चों के जन्म लेते समय दोनों बहिनों ने रहमान और उसका रिश्ता जोड़ा था । दोनों साथ-साथ खेले थे । खेल ही खेल में एक दूसरे की पिटाई भी हुई थी । जब दोनों ने होश सम्भाला तो एक दूसरे से लज्जाने भी लगे थे । सुन्दरी प्रायः अपनी मौसी के घर आ जाया करती थी । खतजी का विचार था कि आने-जाने से सुन्दरी इस घर को भी अपना ही घर समझने लगेगी । फिर पराई लड़की तो थी नहीं, अपनी लड़की न सही, बहिन की बेटी भी अपनी बेटी के ही समान होती है । खतजी को विश्वास था कि सुन्दरी मौसी होने के नाते उसकी इज्जत करेगी ।

बुरा-भला कहने पर प्रतिवाद नहीं करेगी। पराये घरों की लड़कियाँ तो सदा झगड़ा मोल ले बैठती हैं और घर में उधम मचा देती हैं।

सुन्दरी का बाप एक मामूली सुनार था। रहमान के घर से उसके घर की आय अधिक थी। सुन्दरी के बाप की इच्छा थी कि सुन्दरी का व्याह और किसी लड़के से कर दिया जाए। परन्तु उसकी पत्नी अपनी बेटी को कभी पराये घर में न देना चाहती थी। उसे यकीन था कि सुन्दरी खतजी के पास सदा सुखी रहेगी। इस बात पर सुन्दरी का बाप चुप हो जाता और पत्नी की बात को मानने पर मजबूर हो जाता।

दूसरे दिन खतजी और रसूलमीर लड़की के घर जाकर शादी का दिन तय करके आ गए। यह शुभ समाचार देने के लिए खतजी स्वयं ही सुन्दरी के घर जा पहुँची।

रहमान के घर में आज बहुत रौनक थी। उसके कई सगे-सम्बन्धी वहाँ आ पहुँचे थे। उनके घर में कई लोग ऊपर से नीचे, और नीचे से ऊपर आते-जाते प्रतीत हो रहे थे। रहमान का घर बहुत छोटा था, इसलिए मुहल्ले का सबसे बड़ा मकान शादी के लिए प्रयोग में लाया जा रहा था। उसका विवाह होना मामूली बात न थी। लोगों के लीडर का व्याह रचाया जा रहा था। लोग आकर आज बधाई देते और कुछ न कुछ खतजी के हाथ में थमा देते। खतजी के सामने आज इलाची, बादाम, किशमिश और नबात का ढेर लग गया। आज जीवन में प्रथम बार उसने यह सम्पदा देखी थी। उसे पता चला कि रहमान का लीडर होना कितना अनिवार्य था। उसी के कारण उसके घर में यह चीज़ें आ गई थीं। उसने अपने बचपन में सुना था, कि अमीर लोगों की भूख इन्हीं पदार्थों के सेवन से समाप्त होती है। उसने देखा था कि अमीर लोग कितने हृष्ट-पुष्ट होते हैं। और उनके स्वास्थ्य का एक मात्र कारण यह बादाम, पिस्ता आदि ही तो हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि पिस्ता, बादाम, खजूर, संगतरा, केला आदि निम्नवर्ग के लोगों की पहुँच से बाहर की चीजें थीं। यहाँ तक कि दूध पीना भी एक तरह की विलासता समझी जाती थी। केवल मरीज़ को एक प्याला दूध का पिलाया जाता था। इसलिए लोगों को दूध पीना या पिलाना केवल बीमारी का संदेश देता था।

रहमान के घर में केवल एक ही कमरा था, और समस्या यह थी कि शादी के उपरान्त दुल्हा, दुल्हन को कहाँ ठोंसा जाए। मोती की सलाह के अनुसार एक कमरे को दो हिस्सों में बाँट लिया गया। कमरे के बीच में एक दीवार पड़ गई और इस समस्या का भी हल निकल ही आया। रहमान के घर में आज दावत थी। वह सज-धज कर तैयार हो गया था। उसके कई सम्बन्धी वहाँ आ गए थे। सब खाना खाने बैठ गये। मेहमानों के सामने एक एक बड़ी त्रामी (थाली) रखी गई। त्रामी भात और नाना प्रकार के व्यंजनों से भरी पड़ी थी। एक-एक त्रामी के इर्द-गिर्द चार-चार व्यक्ति खाना खाने बैठ गए। गोशताब, रिस्ता, कोफता और रोग़नजोश की खुशबू से सारा कमरा भर गया। आज रसूलमीर अति प्रसन्न था। जीवन भर की आय कई एक त्रामियों में समाप्त होते देख उसका मन खिल रहा था। यदि बचाई हुई आय इस काम न आये तो जीवन का उद्देश्य ही क्या है। चार आदमियों के घर में जब खाया है तो किसी न किसी दिन उनको भी अपने घर बुलाना ही पड़ता है। रसूल और खतजी दोनों दौड़-धूप में लगे थे। आज वह दोनों अपने अरमानों को पूरा होते देख फूल रहे थे। रहमान को आश्चर्य था कि उसके माँ-बाप ने शादी के लिए इतने पैसे कहाँ से लाये। उसे याद था कि उसके बाप की मज़दूरी के पैसे घर खर्च के लिए कम पड़ते थे। कई बार उन्हें भूखा भी रहना पड़ा था। परन्तु आज का यह शोरगुल, इतने लोग, इतनी त्रामियाँ उसने जीवन में पहली ही बार देखी थीं। वह इसी सोच में डूबा रहा और वह अपनी अम्मा से पूछ ही बैठा।

"जी थोड़े बहुत पैसे तुमने दुकान से कमा लिए थे, वह मैंने अलग रख छोड़े थे। सोचा यदि किसी न किसी तरह पैसे जोड़ न सकूँगी तो बहू का मुँह देखने से ही रह जाऊँगी। और जब तुम्हारी नौकरी छूट गई तो मैंने रसूल की आमदनी में से थोड़ा बहुत जमा करना शुरू किया। इस बात को मेरे बिना और कोई नहीं जानता था। रसूल तो इतने पैसे देख कर हैरान रह गया। उसे यह जान कर बहुत खुशी हुई कि मैं उसकी आमदनी में से कुछ बचा पाई हूँ। सब मिला के दो सौ के लगभग जमा हो गए थे।" खतजी ने उसे वह डिब्बा भी दिखा दिया, जिसमें वह सदा पैसे जमा करती आई थी। फिर अपने बेटे का माथा चूम कर बोली—

"इससे बढ़ कर माँ-वाप की खुशी ग्रौर क्या हो सकती है। ग्रौर फिर बड़े लड़के का ब्याह तो चाव से ही होना चाहिए। ग्रपनी विरादरी में हमारा नाम भी तो इज्जत से लिया जाएगा।"

"परन्तु ग्रम्मा यह बड़े-बड़े चाँदी के कड़े बनवाने की क्या जरूरत थी। ग्रौर फिर दो फिरणों से काम नहीं चलता ?" रहमान ने लज्जावश सुन्दरी के बारे में ग्रधिक बोलना ठीक नहीं समझा।

"ग्ररे बेटा, ब्याह रोज़-रोज़ तो होता नहीं है कड़े न बनवा लेती तो क्या खाली हाथ उसे घर में रखती। कानों के लिए सिर्फ दो जोड़े बालियाँ ही तो बनवा पाई हूँ। न जाने सुन्दरी क्या सोचेगी। मैं उसके लिए बहुत गहने बनवा लेना चाहती थी, पर इस वक्त मेरा हाथ तंग है। ग्रगर खुदा ने चाहा तो उसके लिए कभी झुमके बनवा लूँगी। तीन फिरण ज्यादा तो नहीं होते। घर में पहनने के लिए भी तो कुछ चाहिए उसे। सच कहती हूँ बेटा, झुमके उस पर खूब सजेंगे। शायद ग्रपने बाप के घर झुमके ही मिल जायेंगे उसे। मैंने फाता से कह दिया था कि मैं उसके लिए झुमके नहीं बनवा पाऊँगी।" खतजी ने प्रेमवश सब कह दिया।

"ग्रम्मा, तुमने ग्रपने लिए भी कुछ बनवा लिया है या नहीं ?"

"मेरे पहनने ग्रोढ़ने के दिन बीत गए। मुझ बुढ़िया पर यह सब चीजें नहीं सजेंगी। ग्रब तो तुम लोगों के पहनने ग्रोढ़ने के दिन हैं। खुदा करे मेरी ग्राँखें तुम्हें बड़ा ग्रफसर बनते देखें।"

बारात चली गई। रहमान ने ग्रचकन, तंग पाजामा, ग्रौर पगड़ी बांध रखी थी। उसे सजे सजाये घोड़े पर बैठाया गया। कई ग्रौरतें गाना गाते-गाते दूर तक उसके साथ चली गईं। दुल्हा दुल्हन के घर पहुँच गया। उसको घोड़े पर से उतारा गया ग्रौर सुसज्जित कमरे में बैठाया गया। मौलवी साहब ग्रा गए। दोनों का निक्काह पढ़ दिया गया। दोनों इस शादी पर राज़ी थे। दावत ग्रारम्भ हुई। यहाँ भी कई ग्रामियाँ लगाई गई थीं। कई प्रकार के व्यंजन यहाँ भी पकाए गए थे। रसमें समाप्त हुईं। रहमान तथा सुन्दरी को खुशी से विदा किया गया। रहमान के घर में खूब चहल-पहल थी। ग्रपनी रसम के ग्रनुसार सुन्दरी को ससुराल में सात दिन तक रहना पड़ा। इन दिनों बहू को

देखने के लिये सब तरह के लोग, सगे, सम्बन्धी आते रहते हैं। सुन्दरी सुन्दर कपड़े तथा गहने पहने हुये कमरे की एक ओर बैठी थी। उसके बैठने का स्थान गद्दों और कढ़ाई वाले मेज़पोश से सजाया गया था।

सुन्दरी हृष्ट-पुष्ट साधारण ढंग की लड़की थी। न उसे सुन्दर ही कहा जायेगा न असुन्दर ही। वह काफ़ी गोरी थी, पर मुह की बनावट उतनी अच्छी न थी। उसकी नाक और होंठ काफी मोटे थे। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था, और वह सदा हँसती रहती थी। घर के काम काज को करने में वह बहुत चतुर थी। अपने माँ के घर को सदा उसने चूने और हल्के लाल रंग से लेपा था। इससे सदा उसका घर सुन्दर प्रतीत होता था। उसकी इस चतुराई पर न केवल उसके माँ-बाप को नाज़ था, बल्कि मौसी को भी ऐसी बेटी पाने का गर्व था। खतजी को पूरा विश्वास था कि सुन्दरी के आने से उनके घर का हुलिया ही बदल जायेगा। वह सुन्दरी के गुणों के गीत गाने लगी। जो भी काम होता वह सुन्दरी को बताए बिना नहीं हो पाता। उसे पूरा भरोसा था कि उसकी बहू इस घर को अच्छी तरह सम्भाल लेगी। इन्हीं मधुर स्वप्नों के सहारे वह प्रसन्नता में दिन व्यतीत करने लगी।

नारायण के इंगलैंड चले जाने के उपरान्त नजमा और उसके बीच में और भी पक्की गाँठ पढ़ गई। नजमा के नाम हर सप्ताह पत्र आने लगे। वह उसे विलायत के बारे में बातें लिखता था। वहाँ की सभ्यता के बारे में बता देता और वहाँ के लोगों के रहन-सहन के बारे में लिखता रहता था। हर पत्र में वह नजमा को इंगलैंड आने के बारे में लिखता। उसे एक नई दुनिया, जो कि इस दुनिया से एक दम भिन्न है दिखाना चाहता। नजमा उसके पत्रों को पाकर विभोर हो जाती और दूसरे पत्र के आने के दिन गिनने लगती। यदि पत्र आने में एकाध दिन का हेर फेर हो जाता तो वह परेशान हो जाती। उसकी नींद छिन जाती। वह नारायण के फोटो को लेकर घँटों सोच में पड़ जाती। नारायण ने उसके जीवन की शान्ति छीन ली थी। एक दिन वह बाग़ में इसी चिन्ता में डूबी थी कि जैना ते उससे पूछ लिया।

नजमा, तुम आज कल खोई-खोई सी क्यों हो? वैसे हर एक लड़की का इस उम्र में यही हाल हो जाता है। लेकिन बेटी, कोई बात हो तो मुझे बता दो। तुम मुझसे न कहोगी तो किसे जाकर कहोगी?"

"नहीं अम्मा, ऐसी कोई बात नहीं हैं। तुम से कोई बात छुपी नहीं है।"

"देखो बेटी, अब तुम्हारी उम्र ब्याहने के काबिल है। हम चाहते हैं कि तुम्हारा विवाह जलदी हो जाये। मैं तुम्हारे हाथों पर मेंहदी देखना चाहता हूँ। जमाना खराब हो रहा है, न जाने कल क्या होगा। तुम्हारे अब्बाजान,

तुम्हारी शादी के बारे में मुझसे कल ही कह रहे थे। तुम भी कहो, तुम्हारा क्या ख्याल है ?" जैना ने प्रेम से पूछा।

"लेकिन अम्मा, मेरे व्याह की इतनी जल्दी क्या है। मुझे पढ़ने भी दोगे या नहीं ?" नजमा ने चिढ़ते हुए कहा।

"तुम्हारी पढ़ाई रुक तो नहीं जायेगी। शादी के बाद भी तो पढ़ सकोगी। तुम्हारे अब्बाजान अब जवान नहीं हैं। चाहते हैं कि जल्दी ही तुम्हारा व्याह हो जाये। इतनी बड़ी लड़की को घर में रखने से लोग यूँ ही बातें करते हैं। तुम समझदार हो यह बातें खुद समझ सकती हो।"

"मैं लोगों से नहीं डरती हूँ। मैं जो चाहती हूँ, वही करूंगी। इसमें किसी की नानी क्यों मरती है।" नजमा ने लापरवाही से कहा।

"नहीं बेटी, ऐसी कोई बात नहीं है। लोगों की बात को छोड़ो, लेकिन यह सोचो कि तुम्हारे अब्बाजान लड़के वालों को कैसे इन्कार कर सकते हैं। कुछ ही दिनों में सगाई होने जा रही है। आज नहीं तो कल तुम्हारी शादी होगी ही। इसमें तुम्हारा नुकसान ही क्या है। और फिर वह ऐसे-वैसे घर का लड़का नहीं है।"

"किसका लड़का है, जरा मैं भी तो सुन लूँ ?" नजमा ने व्यंग से कहा। परन्तु उसके व्यंग को जैना न समझ सकी, बोली—

यही अपने जागीरदार ख्वाजा अब्दुल रहीम का बेटा फारुक, और कौन क्या नहीं है उनके पास। नौकर, चाकर, मोटर, ताँगा, ज़मीन, ज़िरात, बड़ा बंगला और क्या चाहिये हमें। फारुक विलायत से बड़ा डाक्टर बन कर आया है। तुम्हारे अब्बा को डर था कि कहीं ऐसा न हो कि ख्वाजा साहब का साहबजादा और किसी लड़की से शादी करने का खयाल रखता हो। लेकिन उनकी खुशी का ठिकाना न रहा जब खुद साहबज़ादे ने तुम्हारे हाथ को उसके हाथ में देने का ख्याल जाहिर किया।" जैना ने हँसते हुए कहा।

"ओ—फारुक ने मुझे मंजूर किया है, बहुत खुशी की बात है। लेकिन मुझे अफसोस है कि मैं उसे पसन्द नहीं करती। मुझे यह रिश्ता बिल्कुल मंजूर नहीं है। तुम अब्बाजान से यह सब कह देना, और हाँ, मैंने विलायत जाने का फैसला किया है।" नजमा ने अपना पक्का फैसला सुना दिया। नजमा की यह बातें जैना को बहुत बुरी लगीं। ज़हर का एक घूंट अन्दर ही पी गई।

उसे नजमा पर गुस्सा आया, परन्तु इस गुस्से को उसने दबा दिया। उसे पता था कि नजमा अधिक लाड-प्यार में बिगड़ गई है। जो कुछ वह चाहती थी कर लेती थी। इस सूरत में उसको दबाना ठीक भी न था। जैना ने बड़ी शान्ति से कहा—

"तुम्हीं सोचो, यह भी कोई कहने की बातें हैं। आज तक किस लड़की ने अपनी शादी के बारे में राय दी है। इससे बिरादरी में बदनामी होता है। यह खबर मैं खूजा को नहीं सुना सकती। उन्होंने ख्वाब में भी यह सोचा नहीं है कि तुम उन्हें टक्का सा जवाब दोगी। मेरी एक बात मान लो लाडली, तुम इस रिश्ते को मन्जूर कर लो। इसी में हम सबों की भलाई है। और फिर हम तुम्हारी भलाई ही तो चाहते हैं।" जैना ने नजमा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"नहीं अम्मा, यह नहीं होगा। फारुक एक नम्बर का बदमाश है। कई बार मैंने उसे रास्ते में कई लड़कियों को सताते देखा है। अगर अब्बाजान की शान इस रिश्ते से बढ़ती है तो मेरी शान अवश्य घटती है।" नजमा इस बात को टालना चाहती थी।

"ओ—इतनी सी बात है। इसीलिए हमारी बिटिया बुरा मान बैठी। लेकिन बेटी, बचपना है, टट्ठा मखौल तो होता ही रहता है। ब्याह के बाद सब सुधर जाते हैं।"

"ऐसे लड़के शादी के बाद भी गुलछर्रे उड़ाते हैं। एक बार की पड़ी हुई आदत को आदमी एक दम ही नहीं छोड़ सकता है। तुम उसकी मनमानी को बचपना कहो या और कुछ, मैं यह सब सहने के लिए कभी तैयार नहीं हूँ। मैं उस आदमी के पास कभी नहीं रह सकती, जो मेरे होते हुए किसी और को चाहता हो। इस जीने से तो मरना अच्छा है।" यह कहते कहते उसका मुंह लाल हो गया।

इस बात को सुनते ही जैना का मुँह फीका पड़ गया। उसके पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। उसकी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। आखिर वही हुआ जिसका उसे भय था, वहम था। किसी ने नजमा को सचाई का ज्ञान कराया था। आज उसे लगा कि वह नजमा की नज़रों में एक आदर्श माँ नहीं बल्कि पतित दासी के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। उधर नजमा को भी

ग्रपनी भूल पर पश्चाताप हुग्रा। वह न चाहती थी कि उसकी बात से जैना का हृदय दुखित हो। वह जैना को ग्रपनी माँ से कम नहीं चाहती थी, जैना ने भी कभी उसे पराई नहीं समझा था। उसे माँ का प्रेम मिला था। जैना ने सदा उसे ग्रपनी बेटी समझा था। नजमा को वह दिन याद ग्राया जब—

एक बार वह टाइफाइड की बीमारी का शिकार हुई थी। उस समय जैना का रोते-रोते बुरा हाल हो गया था। वह दिन-रात नजमा के सिरहाने बैठी रहती थी। कई दिन उससे खाना भी नहीं खाया गया था। जब नजमा ठीक होने लगी तो भी जैना उसका साथ नहीं छोड़ती थी। घंटों फलों के रस से भरे हुए गिलास को लेकर उसे मना कर पिलाती। नजमा ने जैना को कई बार ख्वाजा साहब से ग्रपने बारे में कहते सुना था—

"मैंने कहा जी, नजमा बेटी, बीमारी से काफी कमज़ोर हो गई है। न जाने मेरे किन गुनाहों का फल मिल रहा है। ग्राप किसी बड़े डाक्टर को तो बुला लीजिए।"

"मुझे लगता है कि वह तुम्हारी देख रेख में ठीक हो गई है। कमजोरी तो चली जायेगी टाइफाइड मामूली बीमारी नहीं होती है। इतनी बड़ी बीमारी से उठी है। सेहत बनने में कुछ टाईम तो लग ही जायेगा। ग्रौर फिर बड़े डाक्टरों का ही तो इलाज हो रहा है ग्रभी तक। फिक्र करना ठीक नहीं है।" खूजा ने जैना को शान्त करते हुए कहा।

"ग्राप कहते हैं वह ठीक हो रही है, लेकिन मुझे लगता है कि वह दिन-ब-दिन कमजोर होती जा रही है। इसे तो भूख भी नहीं लगती। एक बार डाक्टर को यहाँ बुलाने से कोई नुक्सान तो नहीं होगा।

"नहीं जैना, खुदा की कस्म वह ठीक हो रही है। बीमारी के बाद एक दम हट्टी कट्टी तो हो नहीं जायेगी। रही तुम्हारी बात वह तो है ही, माँ जो ठहरी।"

"तो छोड़िये, मैं उसे सेहतमन्द बना लूँगी।

परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हुई। दूसरे दिन प्रातः जैना नजमा को पीर साहब के पास ले गई। वहाँ से उस ने कई तावीज़ लिए। कोई नजमा के गले में पहनाए गए ग्रौर कोई उस की चारपाई के नीचे लटकाये गए।

जैना को पूरा विश्वास था कि नजमा को नजर लगी है । उसने बचपन से इस तरह की हजारों गाथाएँ सुनी थीं । इसलिए उसे पीर साहब के दिए हुए ताबीज़ों पर काफी भरोसा था ।

नजमा के नेत्रों में छुटपन के दिन नाच उठे जैना ने उस पर कड़ी निगरानी की थी नजमा उसे बहुत प्यार करती थी । इस लिए उसे अपनी ही बात पर दुःख भी हुआ और गुस्सा भी आया परन्तु तीर कमान से निकल चुका था । उस को वापस लाना बहुत ही कठिन था वह संभल कर बोली—

"अम्मा मुझे माफ कर दो । मुझे तुम्हारे सामने इस तरह बोलना नहीं चाहिए था । मुझे फारुक पर गुस्सा आ रहा था, और न जाने बिना सोचे समझे मैं क्या कह गई । कहो माफ करोगी न । बोलो चुप क्यों हो ।" यह कहते कहते नजमा की आँखें भर गईं । वह सिसकने लगी ।

जैना के मुंह पर फिर से रंग लौट आया । उसका गुस्सा काफूर हो गया । वह अपने दुःख को एक दम भूल गई । उस का ममत्व जाग उठा । हृदय पिघल गया, नजमा को प्यार करते हुए बोली—

"कैसी बातें करती हो पगली माफ करने वाली बात भी तो हो कोई और फिर तुम मुझे नहीं कहोगी तो किस के पास जा कर कहोगी । मैंने किसी बात का बुरा नहीं माना तुम्हारी कसम ।" और उस के सिर पर हाथ फेरने लगी ।

"अम्मा, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ । इस संसार में मेरा भी और कौन है । तुम मुझ से रूठ न जाना ।" यह कहते कहते वह जोर-जोर से रोने लगी ।

"अरी बेटी, यह कहने की क्या जरूरत है । मैं क्या देख नहीं सकती । चुप करो, तुम्हें मेरी कसम । तुम्हारी आंखों में पानी मेरे से देखा नहीं जाता ।" यह कहते कहते वह स्वयं भी रोने लगी ।

उस की शंका अपने आँसुओं से धुल गई । उस का मन फिर से प्रसन्नता के हिलोरों में मग्न हो गया । आज उसे पता चला कि नजमा उसे कितना चाहती है । उस ने नजमा को गले से लगाया और बोली—

"मैं तुम्हारे अब्बाजान से कह दूंगी कि वह लड़का ठीक नहीं है। जब तुम उसे नहीं चाहती तो हमें उसे लेकर क्या करना है। खुदा का शुक्र है कि अभी सगाई नहीं हुई है।"

"मेरी अच्छी अम्मा, तुम कितनी प्यारी हो। और हाँ मेरे विलायत जाने के बारे में उन से कहना भूलना नहीं।"

"मगर बेटी, आज तक कौन लड़की विलायत गई है। फिर तुम वहाँ जाकर करोगी क्या?"

"कितनी भोली हो अम्मा तुम। पुराना जमाना तो चला गया, अब नया जमाना है। इस लिए इस तरह की बातें सोचना ठीक नहीं। मैं बेगारी के लिए नहीं जा रही हूँ, पढ़ने जा रही हूँ पढ़ने।" नजमा ने हँसते हुए कहा।

"कँवारी लड़की को दूसरे देश में जाना मुझे बिल्कुल नहीं भाता है। अब अगर जाना ही है तो पहले शादी करा लो तब तुम बेशक चली जा सकती हो।"

"मैं वहाँ से जल्दी लौट आऊँगी। आके शादी होगी। अगर मियाँ के साथ जाऊँगी तो समझो जल्दी लौटना मुशकिल है। शादी से पहले जाने में फायदा ही फायदा है। नजमा की यह युक्ति जैना को कुछ कुछ ठीक लगी, बोली—

"अगर तुम चली भी गई तो कब तक लौट आओगी?"

"एक साल से ज्यादा नहीं लगेगा।"

"जो कोई भी वहाँ जाता है, काफी वक्त लगा कर लौटता है। तुम इतनी जल्दी कैसे वापस आओगी?"

"वह लोग पढ़ते कम हैं, और गुल्छर्रे ज्यादा उड़ाते हैं। मुझे ज्यादा वक्त रह कर वहाँ क्या करना है।

जैना ने नजमा की बातें खूजा को बता दीं खूजा को सुनते ही बहुत गुस्सा आया परन्तु जैना के कहने पर वह शान्त हो गए। नजमा को बहुत

मनाया गया, परन्तु वह लकीर की फकीर अपने फैसले पर डटी रही। हठी होने के कारण वह अपने मन की करती थी। खूजा को विश्वास हुआ कि नजमा के इस हठ को टालना असम्भव है। दो चार दिन बाप-बेटी आपस में रूठे रहे। दोनों एक दूसरे के साथ बात तक नहीं करते थे, पर जैना ने खूजा को उसके विलायत जाने की अनुमति देने के लिए काफी कहा। और लाचार, मजबूर उन्हें नजमा को जाने की आज्ञा देनी ही पड़ी। इस बात से नजमा की जैना के प्रति और भी श्रद्धा हुई।

धीरे धीरे उस के यूरोप जाने की तैयारियाँ होने लगीं। उसका पास-पोर्ट निकलवाया गया। उस के जाने की तिथि भी निकट आने लगी।

रहमान के विवाह के उपरान्त इन्कलाबी कौंसिल का कार्य और भी बढ़ गया। कौंसिल के दफ्तर के लिए हब्बाकदल में एक बड़ा कमरा किराये पर लिया गया। सब दोस्त आज कल अपना अधिक समय वहीं पर बिताने लगे। उन का एक पेपर निकल रहा था जो इन्कलाब के गानों से भरा रहता था। लड़के श्रीनगर की गलियों, कूचों और सड़कों पर यह गाने गाते फिरते दिखाई देते थे। गानों के द्वारा लोगों का जोश फिर से उभरा। उन्होंने सरकारी कामों में हाथ बटाना छोड़ दिया। इस कौंसिल के काफी मेम्बर हो गए थे, जिन में हिंदू मुसलमान दोनों ही थे। सब मेम्बरों में काफी भाई-चारा था। सब की जबान पर एक ही नारा था वह था, स्वतन्त्रता का।

सारे भारत में हलचल मच गई थी। गाँधी जी ने न केवल पढ़े लिखे लोगों को ही जगाया था, बल्कि किसान, मजदूर और सब निर्धन उन को प्रभु का अवतार मानते थे। कई लोग शहीद हो चुके थे। भारत की नारियों मं एक लहर दौड़ गई थी। जिन्होंने कभी सूर्य का प्रकाश देखा न था अपनी जान की बाजी लगा कर, आज पर्दे को तिलाँजलि देकर आगे बढ़ रही थीं। कई माँओं के लाल शहीद हो गए, कईयों का सिन्दूर मिट गया, कईयों की गोद सूनी हो गई, इस से भी वह पीछे हटी नहीं बल्कि डटी रही।

यही हाल कश्मीर में भी था। लोग सुखमय दिन देखने के लिए व्याकुल हो रहे थे। वह अपना राज्य चाहते थे। स्वराज्य की लालसा दिनों

दिन बढ़ती जा रही थी। लोग लीडरों की राह पर चलने लगे। वह अपने घर की चिन्ताओं को छोड़ कर मर मिटने के लिए तैयार हो गए। कायरों की भान्ति पीछे हटना उन्होंने सीखा ही नहीं था।

लोगों का जोश देख कर लीडरों का हौंसला बढ़ रहा था। दिन रात वह नए तरीके सोचने में मग्न थे। उन्होंने एक और भारी हड़ताल की घोषणा करने का फैसला किया। यह हड़ताल ऐसी होगी कि लोग दफ्तरों, कालेजों, स्कूलों में भी न जा सकें। विज्ञापन छपवाने का कार्य शुरू हो गया। दूसरे दिन एक बड़ा जलूस निकालने का कार्यक्रम बन गया। इस जलूस को शहर के बाजारों से हो कर लाल चौक पहुँचना था। लीडरों के भाषण का समय तय किया गया। कौंसिल के कार्यक्रम का प्रोग्राम विज्ञापनों द्वारा घर घर में पहुँचाया गया। दो तीन दिन लगातार काम करने के कारण सब लीडर हड़ताल से पहले अपने अपने घर चले गए। डर यह था कि यदि सरकार को हड़ताल की सूचना मिल गई तो लीडरों को पहले ही पकड़ कर ले जाया जायेगा। इसलिए उस दिन सब एक दूसरे से अलग हो गए।

रहमान अपने घर पहुँचा। इतनी देर के उपरान्त उसे आते देख खतजी ने पूछा—

"कहाँ रहे तीन दिन? तुम ने हमें इतला तो भेजी होती?"

"कई दिन बहुत काम रहा, इसलिए घर नहीं आ सका। कल फिर हड़ताल होगी।" रहमान ने जम्हाई लेते हुए कहा।

'सुन्दरी बेचारी रो रही थी। इस हालत में हर स्त्री अपने पति के पास रहना चाहती है। अच्छा जाओ अब सो जाओ।" खतजी ने कहा।

रहमान अपनी कोठरी में चला गया। सुन्दरी बिस्तरे में लेट रही थी। फटी सी मैली रजाई ओड़े उस का मुंह बहुत उदास सा दिख रहा था। वह गहरी नींद में डूब चुकी थी। उस के मुंह पर दुःख की रेखायें उभर आईं। उस की एक बाँह रजाई के बाहर थी जो अति सुन्दर, सुडोल तथा गोरी थी। न जाने आज उसे देख कर रहमान को दुख क्यों हुआ। वह सोचने लगा—

"जब से यह इस घर में आई है, सुख की एक साँस भी नहीं ली। कभी इस की हथेली पर मैंने एक पैसा भी नहीं रखा। कभी सुन्दर फिरण

नहीं बनवाया। शादी के फिरणों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। अब तो फटने भी लगे हैं। कितनी भोली है यह। कभी इसने मेरे आगे किसी वस्तु की इच्छा प्रगट नहीं की। इसे मैंने क्या दिया? कुछ भी नहीं। बल्कि दो-दो तीन-तीन दिन घर से लापता हो जाता हूँ। अम्मा ने कहा कि इस हालत में इसे अकेला छोड़ना ठीक नहीं हैं। यदि कभी दर्द उठेगा भी तो शर्म के मारे किस को जाकर कहेगी। पहला बच्चा होने में स्त्रियों को प्राय: कठिनाई होती है। उस के लिए न सही, पर बच्चे के लिए मुझे अवश्य कुछ सोचना चाहिए। बाप के कर्तव्य को निभाहना मक्कारी (दुष्टता) नहीं तो और क्या है। परन्तु मैं कर भी क्या सकता हूँ? मैं लाचार हूँ। इस में मेरा कोई दोष नहीं हैं।" यह सोचते सोचते वह धीरे से सुन्दरी की रजाई में घुस गया। सुन्दरी का बिस्तरा बहुत गर्म था। रहमान के ठंडे पैरों के स्पंश से वह एक दम जाग गई। उसने अपनी आँखें मलते हुए चौंक कर कहा—

"तुम! कब आये यहाँ?"

"अभी आ गया। कहो तुम्हारी तबीयत कैसी है?" रहमान ने उसे प्यार किया। उसे अपने आलिंगन में बंद कर दिया। सुन्दरी ने अपने को छुड़ाते हुए कहा—

"छोड़ो मुझे। यह क्या करने लगे।" उस का मुँह रोश से भरा हुआ था। रहमान ने उस की बात का ध्यान ही नहीं दिया। उसे और भी अपनी ओर खींच लिया और बोला--

"कहो कैसी है सेहत, बताये बगैर छोड़ूंगा नहीं।"

"मैं मरूँ या जीयूँ, तुम्हें इस से क्या मतलब।" सुन्दरी का मुंह गुस्से से तमतमाया हुआ था।

"इतना गुस्सा है तो बैठो, में अभी चला जाऊँगा।" रहमान ने उठते हुए कहा। सुन्दरी एक दम खड़ी हो गई। रहमान की कमीज का एक छोर पकड़ लिया। उसके नेत्रों से एक धारा फूट निकली। वह कुछ कहना चाहती थी, परन्तु बोलने में असमर्थ थी। रहमान का हृदय तड़प उठा। उसे दुःख हुआ कि क्यों उसने सुन्दरी को तड़पा दिया। वह उसके समीप गया, आँसुओं को पोंछते हुए बोला—

"पगली मैं तो मजाक कर रहा था। कहाँ भाग जाता मैं ? तुम्हारे पास आकर और कहीं जाने को दिल नहीं करता है मेरा।"

"हाँ इसी लिए तीन दिन लगा कर आ गए ना।"

"क्या करूँ काम ही ऐसा है। मैं अब पीछे हट भी नहीं सकता। दिल करता है कि तुम भी इन बातों को जान जाओ। चाहता हूँ कि तुम्हें स्वर्ग की परी बना सकूं। यही वजह मेरे आन्दोलन की है। समझी।" रहमान ने कुछ सोचते हुए कहा।

"जब तक कमाओगे नहीं, तो यह सब चीजें कहाँ से आ जायेंगी। इस तरह बातें करना तो बहुत आसान है।" उस की इस बात पर रहमान हँस दिया और बोला—

"तुम सच ही कहती हो। खैर, छोड़ो इन बातों को। अभी तुम इनको समझ नहीं सकती। यह कहो मेरा बेटा कैसा है ?" यह कहते कहते उसने सुन्दरी के पेट की ओर संकेत किया।

सुन्दरी का मुंह इस बात से लाल हो गया। लज्जा के मारे उसकी गर्दन नीचे झुक गई, धीरे से बोली—

"कितने बेशर्म हो।"

"क्यों मेरा बेटा नहीं है क्या ? इस में लज्जाने की कौनसी बात है। उत्तर दो, मैं क्या पूछ रहा हूँ ?" रहमान ने उसे चूमते हुए कहा।

"कल मौसी अम्मा से पूछ लेना, हाँ।"

"अम्मा से क्या पूछूं कि हमारा मुन्ना कब आ रहा है। यही ना ?" रहमान ने हँसते हुए कहा।

"और नहीं तो क्या।" सुन्दरी ने शर्माते हुए उत्तर दिया।

बातों ही बातों में वह रात बीत गई। रहमान चाहता था कि वह सुन्दरी को हर बात साफ साफ कह दे। वह जानता था कि उसे पुलिस अवश्य पकड़ कर ले जायेगी। वह उसे सच्चाई का ज्ञान कराके सुख, सुन्दर और प्यार की यह कुछ घढ़ियां खराब करना नहीं चाहता था। उसे पता था कि जेल जाने के नाम से सुन्दरी सिहर उठेगी और उसे गहरा सदमा पहुँच जायेगा। न केवल इस बुरे समाचार से सुन्दरी को दुःख होता, बल्कि उन के होने वाले

बच्चे पर भी बुरा प्रभाव पड़ जाता। इसलिए वह इस बारे में मौन रहा, और भावी सुन्दर दृश्यों से सुन्दरी का मन बहलाता रहा।

दूसरे दिन प्रातः उठ कर जब रहमान जाने लगा तो अपनी माँ से बोला—

"अम्मा मुझे आशीर्वाद दो। आज हड़ताल है ना।"

"जीते रहो बेटा, अल्लाह तुम्हें कामयाब करे। बेटा, जरा समझदारी से काम लेना पुलिस के हाथों में न पड़ना।"

"हाँ अम्मा, कोशिश जरूर करूँगा।"

सुन्दरी रसोई में चाय बना रही थी। दोनों की बातों को सुन कर बाहर आ गई, बोली—

"मौसी, इसे कह दो कि आज ही लौट कर घर आ जाये।"

"आज नहीं तो कल, कभी न कभी लौट कर तो आ ही जाऊँगा।" रहमान ने एक रूखी हँसी हँस कर कहा। और आँखों ही आँखों से सुन्दरी को दिलासा देने लगा।

खतजी के लिए अब यह नई बातें न थी। वह जानती थी कि रहमान सही राह पर है। परन्तु आज उसे यह भय था कि कहीं पुलिस उस को पकड़ कर न ले जाये। उस का हृदय शंकित था। उसे अपनी चिन्ता न थी, परन्तु सुन्दरी का उदास चेहरा उस से देखा नहीं जाता था। सुन्दरी का पाँव भारी था, इस दशा में रहमान का जेल जाना ठीक नहीं था। उस ने अपने दिल पर पत्थर रखा, और सुन्दरी के कारण बाहर से शान्त रही।

रहमान हब्बाक़दल पहुँच गया। कौंसिल के बाहर हज़ारों लोग एकत्रित हो गये थे। युवकों का लहू गर्म हो रहा था। जलूस की तैयारियाँ हो रही थीं। सब दुकानें बन्द थीं। स्कूल और कालेज बंद थे। कोई भी बच्चा आज स्कूल जाता दिखाई नहीं दे रहा था। लोगों के पैर अपने आप हब्बाकदल की ओर बढ़ रहे थे। स्त्रियाँ, युवक, बच्चे सब आज उत्साहित थे। लड़कों के हाथों में लाल झंडे थे जिन पर "इन्कलाब ज़िन्दाबाद, भारत ज़िन्दाबाद" के नारे लिखे हुए थे। "गद्दारो, हमारे देश से निकल जाओ" के नारों से सारा कश्मीर गूंज उठा। लीडरों को घेरते हुये, जलूस आगे बढ़ गया। कहीं तिल धरने की जगह न थी। हज़ारों की संख्या में जलूस चला जा रहा था। लोगों को रोकना

आज किसी के बस की बात न थी। बच्चा-बच्चा जाग गया था। जलूस लाल चौक में पहुँच गया। यह साम्राज्यवाद का अन्तिम दौर था। बड़े-बड़े अमीर मानी लोग डर के मारे काँप रहे थे। उन्हें भय था कि लोग इस जोश और ताव में आकर उन्हें मार न डालें। इसलिये उन्होंने अपने घरों में बैठने में ही अपनी सलामती समझी।

लाल चौक खचाखच भर गया। मकानों, छतों, दुकानों और वृक्षों पर जहाँ तक भी नज़र जाती वहाँ लोग-ही-लोग नज़र आ रहे थे। लीडरों का भाषण आरंभ हुआ। वही बातें, वही विचार, वही कहानियाँ दुहराई गईं, जिसे जनता सुनने की आदी हो चुकी थी। जनता का जोश भड़क उठा। लोग आपे से बाहर हो गये। छात्रों ने ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने शुरू किये। जिन्दा-बाद के नारों से पृथ्वी हिल गई। इस भयंकर ध्वनि से पुलिस तिलमिला उठी। भीड़ में खलबली मच गई। पुलिस ने लोगों पर गोलियाँ चलायीं। इससे लोगों पर भूत सवार हुआ। दोनों में मुठभेड़ हुई। जहाँ पुलिस के पास गोलियाँ थीं, वहाँ लोगों के पास पत्थरों के अतिरिक्त और कुछ भी न था। लोगों ने पत्थरों से ही कइयों को घायल किया और कइयों को मौत के घाट उतारा। इससे और भी खलबली मच गई। लोग तितर-बितर हो गये। कई घायल हुये, कई ज़ख्मी तथा कई शहीद हो गये। जनता के नारे रोने, चिल्लाने, चीखने में बदल गये। पुलिस की सहायता के लिये और पुलिस मँगवाई गई। लीडरों के हाथों में हथ-कड़ियाँ पड़ गईं। उन्हें जेल लेजाया गया। लोग हताश, निराश अपने घरों को लौट आये।

आज सुष्मा का विवाह था। सारा घर जगमगा रहा था। घर में खूब चहल-पहल थी। रंगबरंगी रेशमी आंचल लहरा रहे थे। बाहर बगीचे में बड़े-बड़े शामियाने लगे हुये थे। इनमें सुन्दर कालीनों का फर्श बिछा हुआ था। बड़ी माँ आज अति प्रसन्न थी। सुष्मा के लिये मनचाहा दुल्हा मिल गया था। दूल्ले का घर कौल साहब के घर के बराबर का था। बहुत पुराना खानदान था। सदियों से इज्जत बनी हुई थी। रुपये पैसे की कोई कमी न थी और फिर लड़का भी मामूली न था, हाल ही में इंग्लैंड से चार्टर्ड एकाउंटैन्सी पास करके आया था। बाप-दादा की बड़ी जागीर थी। पढ़ना केवल मनोरंजन ही था। उनका विचार था कि पढ़ने से दिल भी लगा रहता है और अपनी बिरादरी में मान भी बढ़ता है।

इस तरह के घरों के लड़के बड़े चाव से पढ़ने लगे थे। जो जितना धनी होता, वह अपने बच्चों को वैसी ही शिक्षा भी देता। बच्चों को बोर्डिंग हाउस में रखना, या उन्हें श्रीनगर से बाहर कहीं पढ़ने के लिये भेजने से उनके मान में काफ़ी वृद्धि हो जाती थी। कई लोग ऐसे भी थे, जो अपने बच्चों को भारत में शिक्षा देने के हक में न थे। यही कारण था कि वह अपने बच्चों को योरुप शिक्षा पाने के लिये भेज देते। जो जितने पैसे अपने बच्चों पर व्यय करता उसको अपने समाज में ऊँचा दर्जा मिल जाता। उसको औरों की अपेक्षा काफ़ी

अमीर समझा जाता। इन्हीं बातों का ध्यान रख कर वह अपने बच्चों का सम्बन्ध दूसरे घरों में जोड़ते।

इन सब बातों के होते हुये रायसाहब ने अपनी बेटी की शादी राधाकृष्ण मट्टू के साहबज़ादे जवाहर मट्टू से की। जवाहर सुन्दर तथा होनहार लड़का था। उसने सुष्मा को पसन्द किया, तब कहीं जाकर उनकी बात पक्की हुई। जवाहर नये विचारों का व्यक्ति था। उसका कहना था कि लड़के और लड़कियों को साथ-साथ आगे बढ़ना चाहिये। योरुप में रहने के कारण वह पश्चिमी सभ्यता का प्रेमी हो गया था। वह पुरानी रूढ़ियों, रीति-रिवाजों का खंडन करने पर तुला था। वह अपने समाज की बुराइयों को जड़ से उखाड़ना चाहता था। उसने अंग्रेज़ पुरुषों और अंग्रेज स्त्रियों को कंधे से कंधा मिला कर काम करते देखा था। उसके विचार जितने प्रगतिशील थे, उसके बाप के विचार उतने ही पुराने थे। राधाकृष्ण लड़कियों की स्वतन्त्रता के विरुद्ध था। उसके घर की बहू-बेटियाँ सदा पर्दे में रहा करती थीं। उनका विचार था कि ख़ानदानी घर की बेटी या बहू को देखने के लिये लोग तरसने चाहियें। राधाकृष्ण की दो बहुएँ बड़े घरों की लड़कियाँ थीं और उन बहुओं की सूरत घर के व्यक्तियों के अतिरिक्त और कोई देख नहीं पाया था। यही कारण था कि राधाकृष्ण अपने छोटे लड़के जवाहर के लिये भी इसी तरह की बहू लाना चाहते थे। परन्तु जवाहर ने साफ इन्कार किया था। उसने अपने माँ-बाप को इंग्लैंड वापस जाने की धमकी दी। वह अपनी इच्छा से ब्याह करना चाहता था, जो कि उस घर की प्रथा के बिल्कुल विपरीत था। इस बात से उनके घर में कोहराम मच गया, परन्तु जवाहर अपने प्रण पर अड़ा रहा।

उसके विलायत से लौटने का समाचार हर घर में फैल गया। कई घर उनके बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता जोड़ना चाहते थे, परन्तु जवाहर लड़की को देखे बिना शादी की बात पक्की करने पर राजी नहीं था। एक दिन रायसाहब के घर से भी सुष्मा का समाचार आया। राधाकृष्ण को उनके घर तथा खानदानियत से कोई शिकायत न थी। किसी भी बात में वह उनसे कम न थे। परन्तु रायसाहब के घर की लड़कियाँ स्वच्छन्द, जहाँ चाहतीं जा सकती थीं। उन्होंने अच्छी शिक्षा पाई थी। यह बातें मट्टू साहब के कानों तक

भी जा पहुँची थीं। यही कारण था कि वह इस रिश्ते को स्वीकार करने से हिचकिचा रहे थे। जवाहर सुष्मा को देखने के लिये उसके कालेज जा पहुँचा और उसकी शक्ल, सूरत पर लट्टू हो गया। उसने इस बात का समाचार अपनी माँ और भाभियों को दिया। पहले माँ को बहुत बुरा लगा, परन्तु अपने बेटे के कारण वह इस सम्बन्ध को जोड़ने पर राज़ी हो गई। दोनों की शादी की बात पक्की हो गई। शादी से पहले कई बार दोनों आपस में मिलते रहे। सुष्मा के विचारों को जान कर जवाहर बहुत प्रसन्न हुआ।

इधर सुष्मा भी उसकी ओर खिची जा रही थी। जवाहर में कोई कमी न थी। सुष्मा आये दिन शशि और विष्णु के सामने उसके गुण गाया करती थी। उसका हृदय प्रसन्न था। कौन ऐसा पति पाकर प्रसन्न न होगी। सुष्मा को शादी के शीघ्र उपरान्त दिल्ली जाना था। वहाँ जवाहर को चार्टर्ड एकाउंटैंट का पद मिल गया था। जवाहर ने उसे योरुप के बारे में कई बातें बताई थीं और वहाँ के सुन्दर चित्र भी खींचे थे। उसने सुष्मा को वहाँ ले जाने का प्रण भी किया।

बारात आ गई। बारात के स्वागत के लिये शहर के बड़े-बड़े लोग आये हुए थे। लोग फूलों के हार लेकर दूल्हे के आने की प्रतीक्षा में खड़े थे। उसके गले में फूलों के अनगिनत हार पहनाये गये। दूल्हे को देखकर सबका मन खिल गया। बड़ी माँ और उसकी बहुओं की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

सुष्मा अपनी सखियों के बीच में सज धज कर बैठी थी। उसने गुलाबी ज़रीवाली बनारसी साड़ी पहन रखी थी। कई सखियाँ उसे छेड़ रही थीं। आज शशि के निमन्त्रण पर शीला भी वहाँ आ गई थी। उसने साधारण छींट की कमीज़ और सफेद सलवार पहनी थी। इस साधारण लिबास में भी वह बहुत सुन्दर लग रही थी। आज सब उसको ध्यान से देख रहे थे। रहमान और मोती के नाम से सब परिचित थे। इसलिये सब लड़कियों की बातों का विषय शीला बन गई थी। वह आज गंभीर सी दीख रही थी। वह मन ही मन अपने घर और इस घर की तुलना कर रही थी। कितना अन्तर था दो वर्गों में, वह सोचने लगी।

रसमें समाप्त हुईं। सुष्मा ससुराल चली गई। उसके साथ घर के कई नौकर भी गए। दहेज की कमी न थी। बीस हज़ार नगद, जेवर, सैंकड़ों

साड़ियाँ, चाँदी के बर्तन, सब वस्तुयें दहेज में थीं। सुष्मा के ससुराल वाले दहेज देख कर प्रसन्न हो गए। किसी का साहस न हुआ कि उसकी आलोचना करें।

शादी के दूसरे ही दिन दोनों हनीमून के लिए पहलगाँव चले गए।

आज सुबह से ही सुन्दरी को दर्द उठना आरम्भ हुआ। उसका मुंह पीला पड़ गया था। कोई भी काम आज उस से किया नहीं जा रहा था। शर्म के मारे वह खतजी से अपने दर्द के बारे में कहना नहीं चाहती थी। परन्तु खतजी के लिए यह बातें नई न थीं। उस ने भी कई बच्चों को जन्म दिया था। उस ने सुन्दरी का दर्द देख कर आह भर ली। आज रहमान घर में न था। उसके जेल में होने के कारण वह दुःखी थी। बाहर से वह शान्त रहने का बहुत प्रयत्न करती थी, और सदा सुन्दरी की प्रसन्नता चाहती थी।

सुन्दरी के दर्द को उठते देख खतजी ने मोहल्ले की एक दाई को बुला लिया। वह स्त्री बहुत बूढ़ी थी। सारी उमर बच्चे जन्माते ही बीत गयी। किसी का समय होता तो झट दादी को बुला लिया जाता।

"कब से दर्द शुरू हुआ है इस का ?" दादी ने पूछा।

"आज सुबह से कोई काम नहीं कर सकी यह। यह पगली तो मुझे बताने से शरमा रही थी। पर मैं भाँप गई, इस लिए तुम्हें कहला भेजा।" खतजी ने सुन्दरी की ओर प्यार भरी दृष्टि दौड़ाई।

"कुछ खिलाया पिलाया भी लड़की को या नहीं ?" उस ने अपने फिरण की बाहों को लपेटते हुए पूछा।

"मेरे कहने पर तो कुछ भी नहीं खाया, अब तुम्हीं खिला दो।"

"खतजी, इसके लिए चाय का एक प्याला, तेलवोर (तिल और आटे से बनी हुई रोटी) और एक टिकिया मक्खन ले आओ।" फजी दादी ने शीघ्रता दिखाते हुए कहा।

खतजी नमक वाली चाय ले कर आ गई। चाय में बड़ा तेलवोर डाल दिया गया। और दादी के कहने पर चाय में मक्खन की एक टिक्किया भी डाली गई।

सुन्दरी ने बच्चे को जन्म दिया तो घर में शोर मच गया। सब औरतें पूछने लगीं—"लड़की है या लड़का?"

"यदि लड़का होगा तो क्या खिलाओगी?" दादी ने बड़ी प्रसन्नता से खतजी की ओर देख कर कहा।

"जो तुम माँगो, वही खिलाऊँगी।"

"खुदा की कस्म, बेटा बिल्कुल तुम पर है। लो अब तो खुश हो गई न।" फजी ने बच्चे की ओर देख कर कहा।

सुन्दरी के स्वस्थ होते ही रसूलमीर का स्वास्थ्य गिरने लगा। दिन भर की मजदूरी के कारण, रात को थका माँदा घर को लौटता। उसका शरीर अब चूर चूर हो गया था। अब मजदूरी करना उस के लिए बोझ बन गया था। दिन भर की थकान को वह रहमान के बच्चे को गोद में लेकर भुला देता। उस से खेल कर वह अपना जी बहला लेता। परन्तु अपने जी को बहलाने से कहाँ तक उसका काम चलता? परिणामस्वरूप रात भर वह मारे खाँसी के जागता रहता। इकट्ठे सोने के कारण घर के अन्य लोगों की नींद हराम हो जाती। खतजी को रहमान के घर में न होने का बहुत दुःख था। उसे अपने पति का भय था कि कहीं उस की दशा और न बिगड़ जाये। वही हुआ जिस की उसे चिन्ता थी। रसूल की दशा और भी बिगड़ गई। उसे हकीम साहब के पास ले जाया गया। हकीम साहब ने नमकीन चाय, भात, सब्जी सब चीजों का सेवन बन्द कर दिया। उसने कई जड़ी बूटियों का शर्बत पीने का आदेश दिया। दिन में रसूल को हकीम साहब के दिए हुए शर्बत पाँच, छः बार पीने पड़ते थे। किसी समय कहवा पीने की भी अनुमति दे दी जाती। इतना इलाज करने पर भी रोग घटने के बदले बढ़

ही गया और शर्बत का असर भी उल्टा ही होने लगा। रसूल का शरीर पैसे की भाँति गलने लगा। वह सूख कर काँटा हो गया। इधर घर की आर्थिक दशा दिनों दिन बिगड़ती जा रही थी। गुल्ला थोड़ा बहुत कमा के लाता था पर वह घर के खर्च के लिए भी कम पड़ जाते। इन्हीं पैसों में दवा-दारु करना बहुत कठिन हो गया था। खतजी अपने पति की दशा से सिहर उठती। उस का दिल बैठा जा रहा था। उसे पूरा विश्वास था कि रहमान के वहाँ होते उस के बाप की यह दशा कभी न हुई होती। खैर होनी को कौन टाल सकता है। इस तरह दुःख भय और पश्चाताप में उन के दिन यूं ही बीतने लगे।

एक दिन खाँसते-खाँसते रसूल मूर्छित हो गया। उसका मुँह पसीने से भर गया। खाँसी का शक्तिशाली दौरा पड़ा था। यह हाल देखकर खतजी का कलेजा मुँह को आ गया। वह दौड़ती हुई पानी का एक गिलास ले आई। उसके मुंह पर पानी छिड़क दिया, वह होश में आ गया। खाँसी के कारण उसके प्राण सूख रहे थे। खतजी पति की हालत देख कर रोने लगी। एक ओर सुन्दरी रो रही थी। गुलामा दौड़ता हुआ हकीम के पास गया, परन्तु उसने पीने के लिए वही घास-फूस का शर्बत भेज दिया। हकीम के कहने के अनुसार रसूल को जिगर की गर्मी हो गई थी। और खाँसने का यही एक कारण था। उसे फिर से शर्बत पिलाया गया, परन्तु वह फिर भी बुरी तरह खाँसता रहा। खाँसी के मारे उसका फेफड़ा फट गया, खून उसके मुँह और नाक के रास्ते बाहर आने लगा। खून की उल्टी के कारण सारा बिस्तर खून-खून हो गया। खतजी ने अपना सिर पटक दिया। उसका रंग पीला पड़ गया। अपनी ओढ़नी से रसूल का मुंह पोंछती गई। खतजी के आँसू रसूल पर गिर रहे थे। वह अपने पति की पीठ को सहलाने लगी। खून की उल्टी के कारण रसूल की आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। वह मुंह के बल नीचे गिरने लगा, पर खतजी ने उसे सम्भाल लिया।

यह समाचार सुनते ही मुहल्ले का मुहल्ला वहाँ आ पहुँचा। खतजी और उसके बच्चे बुरी तरह रो रहे थे। रसूल के होंठ फड़क रहे थे, वह कुछ कहना चाहता था। खतजी ने अपना सिर उसके एकदम पास ले जाकर रोते हुए पूछा—

"क्या चाहिए तुम्हें रसूल ?"

"निक···का···क···हाँ है ?" रसूल ने टूटी हुई आवाज़ में मुन्ने के बारे में पूछा। सुन्दरी ने मुन्ने को खतजी की गोद में डाल दिया। रसूल ने अपना काँपता हुआ हाथ निक्के की ओर बढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया, परन्तु उसकी बाँह में अब बिल्कुल ताकत न था। उसका हाथ ढीला पड़ गया। उसके नेत्रों से दो बून्दें लुड़क गईं। वहाँ कई बुजुंग बैठे थे। खतजी की ओर बोले--

"यह निक्के को कैसे सम्भाल पाएगा। तुम निक्के को उसके निकट ले जाओ।"

खतजी मुन्ने को रसूल के बिल्कुल पास ले गई। रसूल ने उसे प्यार करना चाहा, पर जो उसका दिल कहता था, वह कर नहीं पाया। रसूल रहमान का नाम लेकर कुछ कह रहा था, जो किसी की समझ में न आया।

"कितना अच्छा होता यदि रहमान इस समय इसके पास होता ?" लोगों की इस बात से खतजी को धक्का सा लगा, उसे ठेस पहुँची। लोगों के कहने से वह जान गई कि यह रसूल की अन्तिम घड़ियाँ हैं। कैसे उन्होने इस जीवन के लम्बे सफर को एक साथ तय किया था। भूख में, प्यास में, सुख में, दुःख में वह दोनों एक साथ चले थे। जीवन के इस सफ़र में उन दोनों ने सुख की घड़ियाँ कम ही देखी थीं, पर जब मनुष्य मुड़कर देखता है तो लगता है कि वह दुःख के दिन भी किसी हद तक सुनहरे दिन ही थे। खतजी को अपने जीवन साथी के बिछुड़ने का बहुत दुःख था। कैसे जीवन के यह थोड़े से दिन वह रसूल के बिना काटेगी। उसके नेत्रों से एक धारा फूट निकली। वह यह कभी नहीं चाहती थी कि रसूल अपने दिल के अरमानों को लेकर संसार से कूच कर ले। उसने अभी कुछ भी नहीं देखा था।

रसूल को खाँसी का एक और दौरा पड़ा। फिर से खून की उल्टी हुई। वह अचेत हो गया। उसका मुँह नीला पड़ गया। उसने अपने हाथ-पैर छटपटाए और प्राण उड़ गए। उसके हाथ खाली थे।

खतजी तथा सुन्दरी अपना सिर पीट रही थीं। स्त्रियों के रोने-चिल्लाने की आवाज़ दूर-दूर तक फैल गई। खतजी को रसूल के मृत शरीर से अलग

किया गया। वह अचेत हो गई। उसका संसार उजड़ गया। उसका अस्तित्व मिट गया था। उसकी दुनिया लुट गई थी। उसका जीवन साथी उसे छोड़ कर सदा के लिए चला गया था।

नजमा लन्दन पहुँच गई। वहां के हवाई अड्डे पर नारायण उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। नजमा आज बहुत प्रसन्न थी। उसे फिर से नारायण मिल गया था। उसने सुन्दर साड़ी पहन रखी थी। लन्दन के हवाई अड्डे पर पहुँचते ही उसे बहुत सर्दी लगी, और अपना काला ओवरकोट पहन लिया। नारायण ने जब नजमा को देखा तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने नजमा के सामान को एक टैक्सी में रखवा लिया और नजमा के साथ उसमें बैठ गया। टैक्सी ड्राइवर को पेड़िन्गटन की ओर चलने को कहा, जहाँ नारायण के रहने का मकान था। टैक्सी में बैठ कर नजमा अपनी चंचल बड़ी बड़ी आँखों से बाहर का दृश्य देखने में मग्न हो गई।

वहाँ की सड़कें साफ-सुथरी तथा काफी चौड़ी थीं। सड़क के दोनों ओर सुन्दर भवन थे जो कि श्रीनगर के इने गिने भवनों से मिलते जुलते थे। परन्तु इन मकानों की खिड़कियों के शीशे चमकदार थे। खिड़कियों पर सुन्दर पर्दे लटक रहे थे। घरों के सामने छोटे छोटे बग़ीचे लहलहा रहे थे। हर एक वस्तु करीने से रखी गई थी। जितने भी लोग सड़क से जा रहे थे, सब सुन्दर कपड़े पहने नजर आ रहे थे। कोई कोई स्त्री अपने बच्चों को गाड़ियों (Prams) में हाँकती जा रही थीं। सब बच्चे हृष्ट पुष्ट, गोरे, लाल, मोटे, ताजे दिख रहे थे। उनके सुनहरे बाल हवा के झोंको से बिखर रहे थे। नजमा को यह प्यारे प्यारे बच्चे बहुत अच्छे लगे। नारायण ने जब नजमा को कुछ सोचते हुए पाया तो पूछ बैठा—

"क्या सोच रही हो नजमा ? अब्बाजान की याद आ रही है क्या ?"

"नहीं तो, सोच रही थी कि यह दुनिया हमारी दुनिया से बिल्कुल भिन्न है। कितना साफ़ सुथरा है यह देश।"

"अभी तुमने देखा ही क्या है, खूब सैर कराऊँगा। आज आराम कर लोगी तो कल तुम्हें घुमाने ले जाऊँगा।"

"इसीलिए तो बहुत बेताब थे कि मैं शीघ्र चली आऊँ।" नजमा ने हँसते हुए कहा।

"तुम्हारी कसम नजमा, मैं सचमुच तुमसे मिलने के लिए बहुत बेताब था। अच्छा यह बताओ अब्बाजान ने तुम्हारे यहां आने में कोई ऐतराज़ तो नहीं किया ?" नारायण नजमा की उँगलियों से खेलने लगा।

टैक्सी एक बहुत बड़े सुन्दर मकान के पास आकर रुक गई। दोनों टैक्सी से नीचे उतरे और घर की ओर जाने लगे।

"चलो मेरे साथ, तुम वह छोटा सूटकेस उठा लो।" नारायण ने कहा।

"क्यों, यहाँ कुली नहीं हैं। इतने बड़े सूटकेस को कैसे संभाल पाओगे ?"

"इस देश में कुली न के बराबर हैं। सब लोग अपना कार्य स्वयं करते हैं। यहाँ काम की कमी नहीं है। एक आदमी के लिए दस काम हैं। हमारे देश में लोग अधिक हैं और काम थोड़ा, पर यहाँ इतने काम हैं लेकिन करने वाले आदमी नहीं हैं।" नारायण ने मकान की दूसरी मंजिल में यह सामान रख दिया। उसने अपने फ़्लेट को खोला।

उसके पास एक बहुत बड़ा कमरा था, जो सोने के लिए था, इस कमरे के साथ एक और छोटा कमरा था, जो उसकी पढ़ाई के लिए था। इस फ्लेट (Flat) में एक छोटी सी रसोई भी थी जिसमें एक गैस का चूल्हा रक्खा हुआ था। नारायण अधिकतर कालेज के होस्टल में ही खाना खा लेता था। इसलिए कभी उसने रसोई को काम में नहीं लाया था। इन कमरों में सुन्दर पर्दे लटक रहे थे। कमरों की दीवारों पर बढ़िया वाल पेपर (Wall paper) कमरे की और भी शोभा बढ़ा रहे थे। कमरों में यथास्थान चीजें रखी गई थीं। पलँग के स्थान पर पलँग था, ड्रेसिंग टेबल, डाईनिंग टेबल और कुर्सियाँ सब करीने से रखी गई थीं। रसोई में एक साइडबोर्ड (अलमारी) रखा गया था। आज उसमें नाना प्रकार के खाने की वस्तुयें रखी गई थीं। नजमा ने नारायण

के घर पहुँचते ही सुख की साँस ली। इतने लम्बे सफर के कारण उसका बदन थक कर चूर हो गया था। उसने अपना कोट उतारा और पलँग पर आराम करने चली गई। नारायण ने उसका कोट वॉडरोब (अलमारी) में लटका दिया और आकर नजमा के निकट बैठ गया।

"मुझे यहाँ कितनी देर रुकना है ? मेरे रहने का भी कुछ इन्तजाम किया है या नहीं ?" नजमा ने पूछा।

"क्यों, यहाँ नहीं रहोगी ? घर वालों से डर लगता है क्या ?" नारायण ने नजमा को प्यार करते हुए कहा।

"यह क्या करने लग गए, इसीलिए मुझे यहाँ बुला लिया है ?" नजमा ने रूठने का अभिनय करते हुए कहा।

नजमा के ऐसा कहने से नारायण के शरीर में एक लहर सी दौड़ गई। उसने नजमा को अपनी बाहों में कस लिया और अपने गर्म होठों को उसके प्यारे प्यारे होठों पर रख दिया। नजमा ने भी जवाब में नारायण के गले में अपनी बाहें डाल दीं। दोनों कुछ देर के लिए एक दूसरे में खो गए। नारायण ने उसे चूमते हुये कहा—

"हम दोनों एक साथ रहेंगे। यानी हमेशा के लिए! क्यों, ठीक है न ?"

"बिल्कुल ठीक। तुम्हारे लिये ही तो यहाँ आई हूँ।"

"अब्बाजान को पता चला या नहीं ?"

"किस बात का ?"

"यही कि हम...यानि तुम मेरे कहने पर यहाँ आ गई।"

"मुझे उनसे यह कहने का अवसर ही नहीं मिला।"

"वह क्यों ?"

"मेरे ब्याह की बात पक्की हो गई है। इस हालत में मैं उनसे यह कैसे कह देती।" नजमा ने नारायण को चिढ़ाने के लिये कह दिया।

"शादी की बात तय हो गई ?" नारायण ने नजमा से सवाल किया।

"हां, हो तो गई है।" नजमा का मुंह गम्भीर हो गया।

"यदि यही बात थी, तो तुम्हें यहाँ आने की आवश्यकता ही क्या थी। इस हालत में हम दोनों का एक साथ रहना बिल्कुल ठीक नहीं है। और फिर

सगाई तो तुम्हारी इच्छा ही से हुई होगी ? "नारायण का मुंह क्रोध से जल रहा था। नजमा को इस नाटक में खूब आनन्द आ रहा था, बोली—

"उस लड़के में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। मगर मैं साफ इन्कार भी नहीं कर सकी।" वह पलंग पर से उठ खड़ी हुई और अपने बालों को सम्भालने में जुट गई।

"अच्छा तो तुम इन्कार भी न कर सकी ?"

"खैर, जो हो गया, सो हो गया। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। रही अलग रहने की बात, उसके लिए तो मैं पहले ही तैयार थी।" नजमा ने नक़ली आह भरते कहा।

"परन्तु यह क्यों नहीं कहती, जो कुछ भी हुआ है तुम्हारी इच्छा ही से हुआ है। यह मेरी गलत धारणा थी कि तुम मुझे चाहती हो। मुझे यह बात पहले पता होती तो तुम्हें यहाँ बुलाने की कभी गुस्ताखी न करता। तुमने मेरी आँखों में धूल झोंक दी।" यह कहते कहते वह खड़ा हो गया और अपना कोट पहनने लगा।

"मैं आपके लिए यहाँ तो नहीं आई। सोचा कुछ पढ़ाई भी होगी और दूसरे देश की सैर भी होगी। यदि आप न भी लिखते तब भी मैं यहाँ चली आती। और फिर मेरे यहाँ आने से आपको कोई हानी तो नहीं होगी।" नजमा के कहने में लापरवाही थी।

"नहीं मुझे कोई हानि नहीं होगी। मैं तो पूरा बुद्धू ही बना रहा।" यह कहते हुए वह बाहर जाने लगा, तो रुक कर फिर बोला—

"मैं बाहर जा रहा हूँ। आपको यदि भूख लग जाए तो किचन में सब सामान रखा है। अपने लिए खाना बना लेना। मैं होस्टल में ही खाकर आऊँगा।" यह कह कर वह नजमा के उत्तर की प्रतीक्षा के बिना ही ज़ीने से उतरने लगा।

नजमा ने नारायण को चिढ़ाने के लिए यह सब कहा, पर जब इस नाटक का परिणाम जरा उल्टा रहा तो उसे आनन्द भी मिला और दुःख भी हुआ। उसको आज पता चला कि नारायण उसे कितना प्यार करता है। इससे बढ़ कर एक नारी की प्रसन्नता का ठिकाना और क्या हो सकता है। कभी कभी उसके दिल में कई प्रकार की शंकायें उठी थीं। परन्तु आज वह सब शंकायें

धुल गईं। उसे ज्ञात हुआ कि जिसे उसने चाहा है, वह मामूली मनुष्य नहीं है। न केवल वह नजमा के शारीरिक सौंदर्य पर लट्टू हुआ था, बल्कि उसे नजमा की सब ख़ूबियों से भी प्रेम है। वह उसे दिल से चाहता था। यह सोचते ही नजमा के दिल में गुदगुदी हुई। प्यार केवल एक बार होता है, चाहे वह शादी के उपरान्त हो या पहले। वह सोचने लगी, यदि यह मज़हब की दीवार न होती तो शायद उनके मिलाप में किसी को भी आपत्ति न होती। वह सिहर उठी, अब्बाजान क्या सोचेंगे, रिश्तेदार, नातेदार क्या कहेंगे? परन्तु इतना होते हुए भी उसको पूर्ण विश्वास हुआ कि नारायण के बिना अब वह एक पल भी जी नहीं सकेगी और फिर दुविधा तो दोनों ओर से थी। उसने अपने दिल में तय किया कि जब नारायण लौट कर आएगा तो उसे सब बातें साफ-साफ कह दूँगी।

वह कमरे में इधर उधर टहलने लगी, कि एकाएक उसे ध्यान आया कि किचन जाकर देखे कि वहाँ क्या है। वह रसोई में चली गई। वहाँ हर तरह के फल, दूध, किशमिश, काजू, चावल, आटा, मक्खन अन्य कई प्रकार की सब्जियाँ पड़ी थीं। उसने चावल और दो सब्जियाँ बना लीं। सोचा, "न जाने प्रतिदिन होस्टल का खाना कैसा मिलता होगा। आज घर का खाना मिलेगा तो बहुत प्रसन्न होंगे। दोनों मिल कर खा लेंगे। मैं उनके क्रोध को अधिक देर रहने न दूँगी। जब सब खाना तैयार हो गया तो उसने उनको बोऊलों में डालकर टेबल पर सजा दिया। स्वयं मुँह, हाथ धोकर अपने कपड़े बदल लिए और नारायण के सोने के कमरे में गैस फायर (Gas fire) जला कर उसके निकट कुर्सी पर बैठ कर किसी पुस्तक में खो गई। काफी देर प्रतीक्षा करने पर भी जब नारायण नहीं लौटा तो उसकी चिन्ता का ठिकाना न रहा। रह रह कर वह खिड़की पर जाती और दूर तक दृष्टि दौड़ाकर नारायण को देखती। उसका मन व्याकुल हो उठा, वह दिल ही दिल में तड़प उठी। उसे अपनी भूल पर पश्चाताप होने लगा। यदि नारायण को उसने यूँ न चिढ़ाया होता तो वह इस समय मेरी बाहों में होता। इस परदेश में नजमा का उसके बिना और कोई न था। उसकी चिन्ता घबराहट में बदल गई। उसका मन उससे तरह तरह के प्रश्न करने लगा, जिनका उत्तर उसे अपनी घबराहट में सूझ नहीं रहा था।

बहुत देर हो गई। ज़ीने पर किसी के चढ़ने की आहट हुई। उसका दिल बैठा जा रहा था। उसके कान चौकन्ने हो गए। द्वार पर किसी के खट-खटाने की ध्वनि हुई। वह धीरे से उठी, द्वार खोला, तो उसके हृदय में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। नारायण लौट आया था। नजमा को सज धज कर देख उसके तन बदन में आग लग गई। उसे नजमा की बातें अभी भी कुरेद रही थीं। वह रूखी हँसी हँसा।

"कहाँ रहे इतनी देर ? मुझे अकेली छोड़ कर। मैं डर रही थी।" नजमा यह कहते आँसू बहाने लगी।

नारायण उसे रुलाना नहीं चाहता था, पर जो हुआ उसके बस की बात भी न थी। उसे अपनी भूल पर दुःख भी हुआ और पश्चाताप भी। वह मन ही मन कह उठा कि नजमा को परदेश में इस तरह अकेला छोड़ना एक असभ्य व्यक्ति का सा काम था। वह उसकी कुर्सी के समीप गया और बोला—

"नजमा, मुझे माफ कर दो। मैं तुम्हें किसी भी हालत में कष्ट देना नहीं चाहता था, परन्तु बिना सोचे समझे मुझसे भूल हो गई।" इतना कहते-कहते उसने नजमा का हाथ अपने हाथों में लिया। जाने कब नजमा ने अपना सिर उसकी गोद में रख दिया, नारायण को ध्यान ही न रहा। वह किसी गहरी सोच में डूब कर अपनी उँगलियों के साथ नजमा के बालों से खेल रहा था। एकाएक न जाने कब उसका स्वप्न टूटा और वह नजमा से पूछ बैठा।

"नजमा, तुम्हारी शादी की बात किससे पक्की हुई है ?"

नजमा ने अपना सिर ऊपर उठा लिया। उसका मुँह लाल हो गया था। वह नारायण को पाकर बहुत प्रसन्न थी। आज खुशी के कारण उसका हृदय एक प्यार रूपी समुद्र बन कर उमड़ आया था। इस प्रश्न को सुन कर खिल उठी, हँसते हुए बोली—

"कितने भोले हैं आप ? बहुत ईर्ष्या होती है आपको, क्यों ठीक है न ?"

"हाँ, मुझे बहुत ईर्ष्या होती है। सारा दिन अपने को सम्भालने का खूब प्रयत्न किया मैंने। परन्तु न जाने मुझे हो क्या गया। मेरे प्रश्न का उत्तर दो। मैं अपने दिल की शान्ति चाहता हूँ।" नारायण ने आह भर ली।

"तो सुनिए मेरी सगाई किसी से नहीं हुई ।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि मेरी सगाई किसी के साथ हुई ही नहीं । क्यों यकीन नहीं आ रहा है ?" उसने नारायण के हाथ को दबाते हुये कहा ।

"यदि तुम्हारी बात सच्ची है तो क्या मैं यह जान सकता हूँ कि मुझे इतनी देर क्यों तड़पाया गया ?" उसने आश्चर्य से यह पूछा ।

"इसीलिए, कि मुझे आप से···।"

"कहो, रुक क्यों गई । मुझे तुम्हारे वाक्य को पूरा करने की आज्ञा है क्या ?"

"अवश्य ।"

"यानि कि तुम्हें मुझसे नफरत है । कहो ठीक है न ?"

"हो सकता है कि आपका कहना ठीक हो ।"

नारायण की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । आज उसने देखा कि नजमा कितनी नटखट है । और इस तरह उसके नाटक रचने से नारायण को उसके प्रति प्यार उमड़ आया । उसने नजमा को दोनों बाहों में भर लिया और बोला—

"मुझे माफ करना नजमा । जो कुछ भी हुआ उसकी जिम्मेदारी तुम पर है । क्या यही मेरे प्यार का तोहफा था ?" यह कहते कहते उसने उसके होंठों को चूम लिया । दोनों एक दूसरे के प्यार में खो गए । जब काफी समय बीत गया तो नारायण पूछ बैठा—

"नजमा, तुमने कुछ खाया भी है या नहीं ?"

"मैं तो आपकी प्रतीक्षा कर रही थी । अकेली कैसे खा लेती ।" नजमा ने मुस्कराते हुए कहा ।

"तो उठो, तुम्हें कुछ खिला दूँ । फिर बातें होंगी ।" यह कह कर उसने नजमा की बाँह पकड़ ली और उसे रसोई की ओर ले गया । जब उसने टेबल पर सजा सजाया खाना पाया तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । चावल, अंडे, सब्जियाँ तैयार थीं । दोनों ने मिल कर खाना खाया । नारायण एक एक चीज को सराहने लगा । आज उसे अपने घर जैसा भोजन मिला । उसने भर पेट खा लिया ।

"मुझे मारकिट के बारे में कुछ भी नहीं पता था। जो कुछ यहाँ रखा था उसी को पका लिया।"

"मैं घर में कभी खाना नहीं खाता हूँ, जी अवश्य करता है कि कभी अपने घर जैसा खाना मिल जाए, परन्तु पकाना आए तब न। आज यह सब चीजें तुम्हारे यहाँ आने की खुशी में मैंने लाकर रखी थीं। सोचा था मिल कर पका लेंगे। परन्तु तुमने मेरी सहायता के बिना ही इतना कुछ बना लिया है, बल्कि मैं पास होता तो शायद यह सब चीजें इतनी स्वादिष्ट न बन पातीं।"

दूसरे दिन रविवार की छुट्टी थी। दोनों ने हाथ-मुंह धोया, कपड़े बदले, नाश्ता किया और घूमने चल दिए। नारायण ने लंदन शहर को छान मारा था। वह नजमा को इस शहर का परिचय कराना चाहता था। दोनों आक्स फोर्ड स्ट्रीट पहुँच गए। वहाँ नजमा ने अपने लिए कुछ आवश्यक वस्तुयें खरीदीं। नजमा अपनी भोली-भाली आँखों से लंदन की चकाचौंध देख रही थी। वहाँ के स्टोरों को देख कर, वहाँ की हर चीज़ को देख कर यही लगता था कि हमारा देश तो इस देश से सौ वर्ष पीछे है। वहाँ से निकल कर वह ट्रेफलगर स्क्वेयर (Trafalgar square) हेइड पार्क की ओर चल दिए। यह बहुत बड़ा पार्क है। बहुत से लोग घूम फिर रहे थे। नजमा ने देखा कि इस पार्क के हर दूसरे-तीसरे गज़ की दूरी पर युवक और यूवतियाँ खुले आम प्रेम का प्रदर्शन कर रहे हैं। विवाहित जीवन के गुप्त राज़ों का यह छोकरे प्रेक्टीकल (Practical) कर रहे थे। इन छोकरों और छोकरियों को हज़ारों व्यक्ति देखते थे। पर उनके मुंह पर किसी भी तरह का भाव न होता था। यह कहना कठिन है कि बड़े-बूढ़ों को यह दृश्य देख कर प्रसन्नता होती थी या घृणा। नजमा मन ही मन पानी पानी हो रही थी। उसने आज तक ऐसा कभी देखा न था।

"क्या सोच रही हो नजमा ?"

"कुछ भी तो नहीं।"

"यह इन लोगों का आम कारोबार है। तुम शर्माती क्यों हो ?"

"अगर यह सब खुलेआम है, मुझे तो बेहूदा लगता है।" उसने अपना मुँह घृणा से दूसरी ओर फेर लिया।

"तुम इस देश में नई आई हो, इसलिए तुम्हें यह सब बहुत बुरा लगता है। पहले पहल सबका यही हाल होता है। पर जब आदमी प्रतिदिन यही

नज़ारे देखता है तो धीरे धीरे इन खेलों को देखने का आदी हो जाता है। इनका प्रणय जानवरों के प्रणय से अधिक महत्व नहीं रखता है। यहाँ कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ तुम्हें यह दृश्य देखने को न मिले। बस स्टापों को भी नहीं छोड़ते यह।" नारायण ने कहा।

"चलिए अब घर चला जाए। मैं बहुत थक गई हूँ।"

"अभी घर जाकर क्या करोगी। चलो किसी रेस्टोरैंट में चाय पी लें?"

"नहीं, मैं जरा आराम करना चाहती हूँ। दिन भर घूमते-घूमते बुरा हाल हो गया है।"

"अच्छा बेगम साहिबा, जैसा आप फरमायेंगी, मुझे मंजूर है।"

दूसरे दिन नारायण नजमा को क्यूगार्डिन्ज़ दिखाने ले गया। यह शहर कुछ दूर है। वहां के लिए ट्रेन से जाना पड़ता है। दोनों वहाँ पहुँच गये तो नजमा वहाँ की सुन्दरता को देख कर दंग रह गई

यह स्थान बहुत रमणीय था। हर प्रकार की सुन्दरता यहाँ फूट रही थी। नकली सरोवर में कमल खिले थे। छोटी-छोटी नकली पहाड़ियाँ, जिन पर पगडन्डियाँ बनी थीं। इन पहाड़ियों पर घने जंगल उग आए थे। क्यारियाँ रंग बिरंगे फूलों से खिल रही थीं। सरोवर, परिन्दों हँसों से भरा हुआ था। नजमा को यह स्वर्ग से कम सुन्दर न प्रतीत हुआ। कई स्थानों पर झाड़ियों के खेमे जैसे बन गए थे। इन्हीं स्थानों पर बैठ कर युवक युवतियाँ अपना मनोरंजन कर रहे थे।

"खुदा का शुक्र है कि यह लोग इन झाड़ियों में बैठे हैं। इन्हें तो कोई भी नहीं देख सकता है?" नजमा ने सुख का साँस लेते हुए कहा।

"इसमें आह भरने की बात ही क्या है। इन लोगों के लिए यह बातें साधारण हैं। और फिर इसमें बुराई ही क्या है। छोड़ो, इनकी बातें, चलो हम भी तो कुछ अपनी सोचें।" यह कहते हुए वह नजमा को एक खेमे की ओर ले गया।

"बैठने का विचार है क्या? मैं बहुत थक गई हूँ।"

"बैठ जाओ, इसीलिए तो यहाँ ले आया हूँ।"

दोनों बैठ गए। नारायण नजमा की ओर एक टक देख रहा था। नजमा कभी अपनी पलकों को झुका लेती, तो कभी घास से खेलने लगती।

नारायण ने उसके हाथ को अपने हाथों में ले लिया, और बोला—

"तुम्हारे सुन्दर चेहरे को देख कर मेरी थकान, मेरा दुःख, मेरा ग़म सब दूर हो जाता है।" यह कहते हुए उसने नजमा को अपनी ओर खींच लिया।

"अरे, आप ज़रा दूर हट जाइए, कोई देख लेगा तो क्या कहेगा ?" नजमा ने अपना मुँह बनाते हुए कहा।

"कोई क्या देख लेगा, यही न कि हमें एक दूसरे से प्रेम है। यहाँ तुम्हें डर किस का है। यह तो एकान्त स्थान है।" उस ने नजना को आलिंगन में बन्द किया और उसे चूमते हुये बोला —

"सच बताना नजमा, क्या उस दिन से पहले कभी तुम्हें मेरी ओर झुकाव यानि आकर्षण हुआ था ?"

"कुछ कह नहीं सकती। जब अब्बाजान आप की बढ़ाई करते थे तो न जाने मुझे कुछ अजीब सा लगता था। घंटो आप के बारे में सोचती रहती थी।"

"तो फिर तुम ने यह बात कभी व्यक्त क्यों नहीं की ?"

"वाह, यह मैं कैसे कर सकती थी। मुझे क्या मालूम था कि आप भी मुझे चाहते हैं। इसलिये इस बारे में खामोश रहना ही ठीक था।" उस की इस बात से नारायण ने उस की पलकें चूम लीं और बोला—

"तुम्हें मेरे प्रेम का क्या सबूत चाहिये। तुम्हारी कसम मेरा जीवन तुम्हारे बिना रूखा है। मैं तुम्हारा हूं, जी जान से केवल तुम्हारा।" दोनों ने एक दूसरे को प्यार में बांध लिया। दोनों प्रेम के सरोवर में खो गये। जैसे फूल और सुगन्ध का मेल है, जैसे चाँद ओर चाँदनी एक दूसरे के विना नहीं रह सकते, जैसे दीया और उसकी लौ, वैसे ही वह एक दूसरे के हो गये।

कई दिन नारायण के पास रहने के उपरान्त नजमा लेडीज़ होस्टल में जा कर रहने लगी। दोनों प्रायः शाम के समय मिलते थे और रविवार की (Weekend) छुट्टियों को इकट्ठे बिताते थे। इस तरह दोनों किसी खास मोड़ की ओर जा रहे थे। धीरे धीरे उन के जीवन पर पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव पड़ने लगा। जो दुविधायें नजमा के दिल में थीं, वह अब इस देश में जाने से जैसे धुल गई। दोनों को मज़हब आदि की बातें बेहूदा सी लगने लगीं। दोनों दिनों दिन एक दूसरे के बहुत निकट आने लगे।

वर्षों का आन्दोलन विफल नहीं गया। सारे भारत में गुलामी की जंजीरें टूट गईं। भारत दो सौ वर्ष के उपरान्त स्वतन्त्र हो गया। देश को दो हिस्सों में बाँट दिया गया। जाते दम तक विदेशियों ने अपनी कूटनीति का साथ नहीं छोड़ा। भारत को दो हिस्सों में काटने की पूरी ज़िम्मेदारी उन ही हत्यारों पर है। सारे भारत में लहू की नदियाँ बह चलीं। हिन्दू, मुसलमानों ने एक दूसरे के सिर धड़ अलग किये। मनुष्य, मनुष्य के खून का प्यासा बन गया। चारों ओर हाहाकार मच गया। सब के होठों पर एक ही प्रश्न था," क्या इसी को स्वतन्त्रता कहते हैं?" जहाँ मनुष्य अपनी इन्सानियत को त्याग दे, जहाँ मनुष्य और जानवर में कोई भेदभाव न रहे। लाखों घर उजड़ गये। लाखों की संख्या में लोग शरणार्थी बन गये। जहाँ देखो शरणार्थियों के केम्पों खुले मैदान भर गये। और जिन्होंने इस नाटक को रचने की चिन्गारी लगाई थी, वह विदेशी इस खून की होली का नज़ारा दूर से देख रहे थे। उन्हें इस दृश्य से आनन्द मिल रहा था कि कैसे भारत के लोगों पर भूत सवार हो गया। जो एक दूसरे के भाई थे, जो एक दूसरे के सम्बन्धी थे, घनिष्ठ मित्र थे, आज इन्सानियत को तिलाँजलि दे कर एक दूसरे के शत्रु बन बैठे। यदि हमारे देश के लोगों ने इस समस्या पर गौर किया होता या कभी सोचा होता तो शायद यह दशा कभी न बनती। दूसरों के नाच नचाने पर वह बहक न जाते। खैर, यह भी आन्दोलन का एक रुख था। भारत स्वतन्त्र हो गया।

जहाँ पहले खून की नदियों से लोगों के हाथ रंगे थे, वहाँ एक बार मधुर शह-नाई भी बज उठी। चारों ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। खूब खुशियाँ मनाई गई।

कश्मीरी लोगों को आन्दोलन का फल मिल गया। सारे देश की तरह यहाँ भी दासता की जंजीरें खनक उठीं और सदा के लिये टूट गई। सब के हृदय प्रफुल्लित थे, सब के मन में आशा से भरी हुई किरणों का श्रीगणेश हुआ। सारा बाग़ लहलहाता हुआ दिखाई दिया। साम्राज्यवाद का अन्त हुआ। लोगों को अपना हक मिल गया। सरकार की बागडोर को संभालने के लिये लोग आगे बढ़े।

नेताओं को जेल से छोड़ दिया गया। और उनका खूब स्वागत किया गया।

सारा शहर आज जगमगा रहा था। अपने देशभक्त चिरागे कश्मीर की रिहाई और देश की स्वतन्त्रता के लिये सड़कों, मकानों और दुकानों को सजाया गया। श्रीनगर का चप्पा चप्पा आज सुन्दर लग रहा था। हिन्दू, मुसल-मान, सिक्ख सभी एक थे। घर घर में दीप माला थी। जहाँ तहाँ लोगों का जम-घट था। सब अपने नेताओं के दर्शनों को पाने के लिये बेताब थे। जहाँ, तहाँ भारत के नारे लग रहे थे। हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद के नारों से आकाश गूंज रहा था।

खतजी का घर आज जगमगा रहा था। उस घर को सुन्दर रंग से रंगा गया था। इस कुटिया को ऐसा सजाया गया जैसे यह एक महल था। सुन्दरी का दिल धड़क रहा था। खतजी प्रसन्नता के आँसू बहा रही थीं। आज न केवल रहमान का मुहल्ला प्रसन्न था बल्कि सारा शहर खुशी में झूम रहा था।

खतजी और सुन्दरी आज अपने मकान को सजा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न थीं। रहमान अब मामूली आदमी न था, यह अब दोनों समझ गई थीं। आज अपने जीवन में पहली बार उन्होंने अपने घर को यूँ सजाया पाया। दोनों कालीन और नमदे पर से अपने पैर पोंछ कर चल रही थीं कि कहीं यह ख़राब न हो जायें। निक्का अपने बाप को नहीं जानता था कि कौन है वह? कहाँ है वह? यह बातें उस की समझ के बाहर थीं। वह आज अपने घर में चहल

पहल देख कर घबरा गया, और रोने लगा। खतजी के जीवन में यह सब से शुभ घड़ी थी, अपने पोते को रोते देख, सुन्दरी से कहने लगी।—

"सुन्दरी इसे चुप तो करा लो। आज किसी को रोना नहीं चाहिये। यह बुरा होता है।"

"मैं स्वयं तो नहीं रुला रही हूँ इसे। यह इधर उधर घूमना चाहता है। मैं इसे रोक रही हूँ कि कहीं यह नमदे, कालीन गन्दे न करे।" सुन्दरी ने निक्के के रोने का कारण बताते हुये कहा।

"तुझे यह कालीन पसन्द आया? देख कितना नर्म है। इस पर बैठने से बहुत आनन्द आता है। ज़रा बता तो कितने का होगा?" खतजी ने कालीन पर अपना हाथ फेरते हुये कहा।

"होगा तीस या चालीस रुपये का।"

"तेरी गिनती तो बस तीस पर ही समाप्त होती है। सुबानजू कह रहा था कि एक-एक कालीन की कीमत दो तीन हजार से कम नहीं है। यह कालीन दो ढ़ाई हजार का है। अमीर लोगों की चीजें हैं।" खतजी ने सुन्दरी को विश्वास दिलाते यह कहा।

"दो हजार रुपये। बाप रे बाप, यह तो बहुत ज्यादा रकम होती है। सारा जीवन पैसा जोड़ते ही बीत जाती होगी अमीर लोगों को। क्यों मौसी?"

"और नहीं तो क्या। आज तुझे पता चला होगा, मेरा बेटा कितना बड़ा आदमी है। पहले तो रोया करती थी। बता आज खुश हुई कि नहीं। तेरी ही तरह रसूल की समझ में भी यह बातें नहीं आती थीं। आज जिन्दा होता तो फूल कर कुप्पा हो जाता। रहमान का नाम ले कर ही तो इस संसार से चला गया।" खतजी ने यह कहते कहते आह भर ली, फिर बोली—

"रहमान ने बाप की मौत की ख़बर सुनकर अपना सिर पीटा था। उसे बहुत सदमा पहुँचा था। उस ने गुल्ला को बता दिया था कि रसूल केवल उस के ग़म में फौत हो गया था। वह तो ऐसी बीमारी का शिकार हो गया, जो कभी मेरी समझ में न आई। हकीम कहता था कि उसे जिगर की गरमी थी, पर ऐसी भी गर्मी क्या जिसका कोई इलाज न हो। इतनी दवाइयों के बाद भी उसे कोई फायदा नहीं हुआ। उसे मरना ही था, तो रहमान की रिहाई के

बाद मर जाता तो मुझे इतना दुःख न होता। परन्तु खुदा की करनी को कौन टाल सकता है।" खतजी ने अपनी गीली आँखों को पोंछते हुए कहा—

"मौसी तुम्हारा यह फिरण बहुत मैला हो गया है। मैंने धुला हुआ बाहर निकाल के रख दिया है।" सुन्दरी ने बात को बदलते हुए कहा।

"नहीं बेटी, तुम अपना फिरण बदल लो। शादी वाला फिरण पहन लेना। आज का दिन खुशी का दिन है। निक्के का कुर्ता भी बदल दो। आज अपने बाप को पहली बार ही तो मिल रहा है।" खतजी ने निक्के की नाक साफ करते हुये कहा।

"नहीं मौसी, तुम अपने कपड़े बदल दोगी तो मैं भी दूसरा फिरण पहन लूंगी, वर्ना मैं जैसी हूँ उसी तरह रहूँगी।"

"अरी पगली, मेरा शोहर तो नहीं आ रहा है। बेटा, मां को हर सूरत में पसन्द करता है। अच्छा चल मैं भी बदल लूंगी फिरण।" खतजी ने हँसते हुये यह कहा।

रहमान मीर को कश्मीर का चीफ मिनिस्टर बना दिया गया। गोवनर्र ने उसे इस पद को संभालने के लिये कहा। लोग इसी दिन को देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह उल्लासित थे। आज नया दौर शुरु हुआ। आज नये युग का श्रीगणेश हुआ। आज गरीबों की गरीबी का अन्त हो गया। आज दलितों, दबे हुये मनुष्यों का उत्थान हो गया था।

रहमान ने अपने पद को शपथपूर्वक संभाल लिया। एक बार उसका हृदय काँप उठा, "क्या मैं इतने बड़े पद को संभाल सकूंगा?" परन्तु इस प्रश्न के उत्तर से पहले ही उस की दृष्टि मोतीलाल पर पड़ी। वह मन ही मन मुस्कराया और सोचा, जैसा आज तक निभा लिया, आगे भी निभा लूंगा। मोती पढ़ा लिखा तो है ही, वह सब चीजों को संभाल सकेगा। शाबान, नूरा और करीम, इन सब की मुझे बहुत जरुरत है।" यह सोचते ही वह अपने दोस्तों की ओर बोला—

"दोस्तों, मुझे राज्य की बागडोर संभालने के लिए आप की सहायता की जरूरत है?"

"हम दिलो जान से तुम्हारे साथ हैं।" मित्रों ने आश्वासन दिलाते हुए कहा।

वहाँ से निकल कर रहमान एक सरकारी कार में घर की ओर चला गया। उसके घर में आज अनगिनत लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। रहमान को निम्नवर्ग के लोगों का पूरा पूरा साथ था, पर आज यह पहला अवसर था जब सूट, बूट, टाई, पहने हजारों की संख्या में लोग इस की झोंपड़ी के सामने खड़े थे। उसके हृदय में अजीब तरह की गुदगुदी हुई। उसका दिल धड़क उठा, उसे कुछ घबराहट हुई। परन्तु तत्काल उसने अपने दिल को मजबूत किया और आगे बढ़ा। लोगों ने अपने आप अदब से रहमान के लिये रास्ता बनाया। रहमान के साथ दो चार चपरासी थे, जो उसके कुछ कागज अपनी बगल में दबाये उसके पीछे पीछे चल रहे थे। एक अफसर रहमान के सामने आया। उस के गले में बादले का हार डाल दिया और रहमान को बाकी मानी प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ जान पहचान कराने लगा।

"आप हैं यहाँ के मेजिस्ट्रेट, मिस्टर मुशताक अहमद।" यह सुनते ही मिस्टर मुशताक ने अपना हाथ बढ़ाया और अबदुल रहमान मीर से हाथ मिलाया। इसके उपरान्त रहमान को लाईन में खड़े कई अफसरों से परिचय कराया गया। एक जगह रहमान ठिठक गया, सरकारी अफसर कह रहा था—

"आप हैं रायबहादुर त्रिलोकी नाथ कौल, जज हाईकोर्ट।" रायबहादुर ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। रहमान ने ध्यान से देखा। उस से हाथ मिलाते समय वह बेचैन हो गया। उसे याद आया, जब वह एक अदना मजदूर की हैसियत से उन के घर गया था। पर आज रायसाहब ही उसके द्वार पर खड़ा था। विधि के विधान को कौन टाल सकता है। यह सोचते ही उसके मन की दुविधा मिट गई आज उसे स्वयं पर गर्व होने लगा। उसे पता चला कि उस का महत्व क्या है। उस के मस्तिष्क पर बड़पन का एक नशा सा छा गया और इस नशे की मस्ती में वह आगे बढ़ा।

"आप हैं यहाँ के प्रसिद्ध जगीरदार ख्वाजा शौकत अली।" रहमान ने ख्वाजा साहब से हाथ मिलाया। एक बार उस के बदन को ऊपर से नीचे तक नजर दौड़ाई और मन ही मन हँसने लगा, और सोचा—

"ओ ...आप हीं हैं कश्मीर के रईस ख्वाजा साहब। आप ने तो अपने नाम से सब को डरा दिया था। परन्तु नाम और शरीर में कोई मेल नहीं। हमारे सामने भीगी बिल्ली की तरह खड़े हैं।" यह सोचते हुये वह आगे बढ़ा।

"इन का नाम गुलाम अखतर बानी है। यह फुल्लाड कण्ट्रोल डिवीजन के चीफ इन्जीनियर हैं"

"आप इरिगेशन और पावर के चीफ इन्जीनियर मिस्टर जियालाल वजीर हैं।"

अन्त में मिस्टर फोतेदार, डाइरेक्टर इन्डस्ट्रीज आदि से रहमान का परिचय हुआ। शहर के सब मानी, इज्जतदार व्यक्तियों से उस का परिचय हुआ। कई व्यक्ति अपने अपने घरों को चले गये। कुछ लोग ऐसे भी थे, जो इस अमूल्य समय को हाथ से गंवाना न चाहते थे। वह उसी समय रहमान की हाँ में हाँ मिलाने लगे और चापलूसी के तरीके ढूँढ़ने में व्यस्त हो गये। मधु के इर्द-गिर्द मधुमक्खियाँ मंडराने लगीं। इन्हीं मधुमक्खियों में एक मिस्टर वजीर भी थे, बोले—

"जनाब, अब आप का यहाँ रहना बिल्कुल शोभा नहीं देता है। अब आपको शीघ्र सरकारी मकान में शिफ़्ट (तबदील) करना चाहिये। यदि आप की आज्ञा हो तो हम कल के लिये उस मकान को तैयार रखें?"

"हजूर इन का फरमाना बिल्कुल दुरुस्त है। आप वहाँ रहेंगे तो आप को अपने काम में काफी आसानी रहेगी।" डाइरेक्टर मिस्टर माशुक ने वजीर की बात की पुष्टि करते हुये कहा।

"जनाब के उस मकान में जाने के उपरान्त इस मकान की सही मरम्मत होगी। हम ने इस मकान की मरम्मत शुरु की होती, पर हजूर को वंकर्स (मजदूरों) के Noise (शोर) से अपने काम में हानि होगी।" कमिश्नर मिस्टर प्यारेलाल ने अपनी इच्छा प्रकट की।

रहमान सब की बातों को ध्यान से सुन रहा था। इस खुशामद से उसे बहुत प्रसन्नता हो रही थी। आज उसे पता चला कि इस पद को पाना कितनी बड़ी बात थी। वह जरा रुक कर बोला —

"जैसा आप लोग फरमायेंगे, मुझे मन्जूर है। जब भी आप कहेंगे, मैं यहां से शिफ्ट कर लूंगा।"

"हुजूर, तो कल दिन कैसा रहेगा? मैंने आप के उस मकान में जाने का अच्छा मुहूर्त भी देख लिया है। कल का दिन शुभ दिन है, इस सप्ताह में

ऐसा दिन दूसरा नहीं है । मेरी इच्छा है कि आप सुबह सवेरे उस मकान में पधारिये ताकि आप सुबह का नाशता वहीं कर सकें ।" मिस्टर वजीर ने कहा ।

"बिल्कुल ठीक है ।"

"हाँ जनाब आप निश्चित रहें । हमें इस समय आज्ञा दो, कल हजूर की सेवा में हाज़िर होंगे ।" सब मियाँ मिट्ठुओं का दल यह करकर विदा हुआ ।

सब लोगों के चले जाने के उपरान्त रहमान अपनी माँ के पास गया । माँ ने रहमान को आज अच्छी तरह देखा भी नहीं था । बेटे को देख कर बोली —

"अरे बेटा, लीडर होना भी मुसीबत है । अपना बेटा भी माँ से जुदा हो जाता है । खुदा की कसम, मैंने तुम्हारा मुँह अच्छी तरह देखा भी नहीं ।" खतजी ने बेटे को प्यार करते हुए कहा ।

"अम्मा, तुम्हारा बेटा कश्मीर का चीफ मिनिस्टर बन गया है । अब तुम खुश हो गई न ?" रहमान ने माँ को प्यार से यह कहा ।

"हाँ बेटा, सुना तो मैंने भी है । परन्तु यह कहो कि चीफ मिनिस्टर सब अफसरों से बड़ा होता है न ? यानि रायसाहब और ख्वाजा साहब से भी बड़ा ?"

"हाँ अम्मा, उनसे बड़ा अफसर । तुमने उन दोनों को अपने आँगन में नहीं देखा ?"

"मुझे नियाज़ का अब्बा बता रहा था कि तुम कितने बड़े अफसर बन गए । परन्तु बेटा, मेरा दिल धड़क रहा है, कहीं तुम्हें नज़र न लग जाए ।"

"अरी अम्मा, क्यों तुम नाहक परेशान हो रही हो । नज़र से बचने के लिए तो मैंने कई बार जेल की सैर की है । और हाँ यह कहना मैं भूल ही गया कि कल सुबह सवेरे हमें दूसरे बंगले में जाना है । वह सजा-सजाया होगा । खूब कालीन, नमदे, मसलन्द होगे वहाँ । यह कालीन तो उनके मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं ।" रहमान ने बिछे हुये कालीन की ओर संकेत करते हुए कहा ।

"वहाँ जाना तो ठीक है, परन्तु उस मकान में रहने के लिए इतना पैसा भी तो चाहिए । हमारे पास तो एक दमड़ी भी नहीं है ।" खतजी का मुँह ज़रा गम्भीर हो गया ।

"कितनी भोली हो तुम अम्मा। पैसों की तुम अब चिन्ता न करो। वह मकान तो चीफ मिनिस्टर के लिए रखा ही रहता है। तब तक मैं तेरा बेटा नहीं जब तक तेरे सामने पैसों का ढेर न लगा दूं।" रहमान ने यकीन दिलाते हुए कहा।

"अच्छा बता, निक्का किस पर गया है?"

"बिल्कुल तुम पर, खुदा कसम।"

"शैतान इतना है कि कुछ कहते नहीं बनता है। रसूल के साथ काफी हिल मिल गया था। वह इसके साथ खेला भी खूब।" खतजी ने दुःखी होकर कहा।

"अगर अब्बाजान जिन्दा होते तो आज मैं कितना प्रसन्न होता। मेरे ही कारण उनको इतना दुःख उठना पड़ा, यह मैं समझता हूँ और हमेशा भगवान से अपनी भूल की माफी माँगता रहा।" यह कहते कहते रहमान के नेत्र गीले हो गए।

"नहीं, तुम्हारे कारण उसे कभी दुःख नहीं पहुँचा। बल्कि वह तो तुम्हें बहुत मानता था। उसका रोग ही ऐसा था, जिसका कोई इलाज नहीं था। हमने उसकी दवादारू करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। उठो बेटा, जरा सुन्दरी से भी मिल लो, बेचारी तुम्हारे आने के दिन गिन रही थी। तुम बहुत थक गए हो।" खतजी ने बात बदल कर कहा।

"कहाँ है वह?" रहमान ने उत्सुकता से पूछा।

"निक्के को सुला रही होगी। आज बहुत शरमा रही थी, जैसे नई नवेली दुल्हन हो। उसे मैंने समझा दिया कि जाकर निक्के को अपने बाप के पास ले जा, पर वह तो बहुत ढीठ है। कह रही थी कि जिसे बच्चा देखने का शौक होगा, आकर खुद देख लेगा। अच्छा बेटा, अब जाकर लेट जाओ, बहुत देर हो गई है।"

रहमान अपनी कोठरी में चला गया। सुन्दरी बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। निक्का मस्त नींद में सो रहा था। रहमान को आते देख सुन्दरी का दिल धड़क उठा। वह आज उससे लज्जा रही थी। उसने एक बार पति की ओर देखा और फिर पलकें नीचे झुका लीं। रहमान धीरे से उसके समीप आ गया और बोला—

"ग्राज बहुत सुन्दर लग रही हो सुन्दरी, बिल्कुल शादी वाले दिन जैसी। रहमान ने उसकी बाँह पकड़ ली और उसको अपनी ओर खींच लिया। सुन्दरी का दिल धक धक कर रहा था। उसके शरीर में सिहरन हो रही थी। वह मुँह से कुछ भी न बोल पाई। रहमान ने उसके मौन को तोड़ते हुए कहा—

"अब तुम बड़े आदमी की बीबी बन गई हो। सब तुम्हारी इज्जत करेंगे। जो कुछ भी तुम चाहोगी, तुम्हें मिलेगा। जो कुछ तुम पहनना चाहोगी, पहन सकोगी, खा पी सकोगी। मैं कल ही निक्के के लिए नए कपड़े मँगवा लूंगा। बोलो, अब तुम खुश हो?" रहमान ने सुन्दरी को प्यार करते हुए कहा।

सुन्दरी ने इन बातों का उत्तर न दिया।

"क्यों, तुम खामोश क्यों हो? मुझसे रूठ गई हो क्या? अब मैं तुम्हें छोड़कर कभी जेल नही जाऊंगा, तुम्हारी कसम। अब तो कुछ बोलो।" यह सुनते ही सुन्दरी का हृदय खिल गया। ज़रा रोष भरे स्वर में बोली—

"मेरी तो कभी याद नहीं आई तुम्हें। अब लगे खुशामद करने, पास हैं न इसलिए।"

"तुम्हारी याद नहीं आई? कैसी बातें करती हो। तुम्हारी याद तो हरदम सताती थी मुझे परन्तु मैं कर भी क्या सकता था। तुम्हारे पास अम्मा थी, निक्का था, गुल्ला था, पर मैं वहाँ बिल्कुल अकेला था। यह तुमने कभी सोचा भी या नहीं?"

"हाँ, मेरे पास सब थे, परन्तु तुम नहीं थे।" सुन्दरी ने बड़ी भोली सूरत में यह सब कह दिया। रहमान ने दोनों बाहों में उसे भर लिया। उसे प्यार करते हुए बोला—

"अब तो हूँ तुम्हारे पास। तुम्हें छोड़ कर अब मैं कहीं नहीं जाऊँगा।" यह कह कर दोनों लेट गए। कई तरह की बातें हुईं। बिछड़ते हुए दिल मिल गए, बहुत दिनों के उपरान्त आज मुलाकात हो गई। दोनों एक दूसरे में खो गए।

नेताओं की रिहाई के उपरान्त मोतीलाल और शशि एक पार्क में जा मिले। शशि ने आज अपने बालों को सुन्दर जूड़े में बाँध रखा था। जूड़े में लाल गुलाब का फूल शोभायमान था। आज बहुत दिनों के उपरान्त वह अपने प्रिय से मिल रही थी। उसके नेत्रों में प्रसन्नता की चमक थी। प्रतीक्षा करते करते उसके नेत्र पथरा गए थे, दिल तड़प रहा था। आज उनका मिलन साकार हो गया था। वह मोती को सदा पत्र लिखती रही थी, परन्तु आज के मिलने और उस मुलाकात में काफी अन्तर था। आज उसे संसार का ग़म न था, किसी की चिन्ता न थी। आज वह स्वच्छन्द थी, उसे अपना पति आप चुनने का पूरा हक था। उसकी साड़ी का रंग हल्का नीला जिस पर जरी का बार्डर लगा था। आज वह एक अप्सरा से कम सुन्दर नहीं लग रही थी। दोनों एक चिनार के वृक्ष के नीचे बैठ गए। मोतीलाल आज धरती की अप्सरा की सुन्दरता को मन ही मन सराह रहा था। आज मोती मूक भाषा में शशि से बहुत कुछ कहना चाहता था, पर शशि उसकी इस भाषा से अभी अपरिचित ही थी। सो मौन को तोड़ते हुई बोली—

"आप चुप क्यों हैं। आज तो आपको खूब प्रसन्न होना चाहिए।"

"सोचता हूँ कि जिस चीज़ को पाने के लिए हमने आन्दोलन किया, वह हमको मिल गया। हम स्वतन्त्र हो गए, विदेशियों को हमने भगा दिया। हमारा आन्दोलन निष्फल नहीं गया। हाँ, यह हमारी जीत है। परन्तु इतना होते हुए भी मुझे ऐसा लगता है कि मेरा जीवन खाली है, एकदम खाली।" मोती का चेहरा गम्भीर हो गया।

"खाली है! सो क्यों? आपकी जीत सारे देश की जीत है। आपको आज प्रसन्न होना चाहिए। मैं हैरान हूँ कि आप आज भी प्रसन्न नहीं हैं?" शशि उसकी उदासी का कारण जानना चाहती थी।

"शशि तुम बड़ी भोली हो। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या मनुष्य की अपने जीवन में हर तमन्ना हर मनोकामना पूरी होती है? क्या उसे हर पसन्द की चीज़ मिल सकती है?" मोती ने प्रश्नात्मक स्वर में पूछा।

"मुझे लगता है कि आप स्वतन्त्रता प्राप्त करके कुछ घबरा गए हैं। मैं तो यही कहूँगी कि संसार की नजरों में आप सफल रहे हैं।" शशि ने शान्ति से कहा।

"तुम्हारा कहना किसी हद तक ठीक ही है, परन्तु मुझे लगता है कि एक बात में सफलता मिलनी कठिन ही है।" मोती ने आह भरते हुए कहा।

"वह बात क्या है ? जरा मैं भी तो सुन लूँ।" शशि ने उत्सुकता दिखाते हुए पूछा।

"यही कि कहीं हम दोनों का मिलना सदा के लिए बन्द न हो जाए।"

"यह वहम आपके दिल से अभी गया नहीं है क्या ? मैंने तो सोचा था कि अब आपके मुँह से यह बातें सुनने को नहीं मिलेंगी।" शशि ने कहा।

"तुम मुझे गलत न समझो शशि। मुझे केवल तुम्हारे माँ-बाप का डर है कि कहीं वह हम दोनों को जुदा न कर दें। मैं एक गरीब और तुम···।" यह कहते-कहते मोती रुक गया।

"इसमें डरने की बात ही क्या है। मैंने अपने मन में फैसला किया है।"

"क्या फैसला किया है तुमने ?"

"मैंने यह फैसला किया है कि मैं किसी से डरूँगी नहीं। मैं जो चाहूंगी वही करूँगी। डरते केवल कायर लोग हैं। मैंने पीछे हटना सीखा ही नहीं।" शशि ने बड़े जोश से यह कहा। मोतीलाल की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसे पूरा विश्वास हुआ कि शशि उसे दिलोजान से चाहती है। वह प्रसन्न हो कर बोला—

"तुम्हारी सौगन्ध, मेरा जीवन तुम्हारे बिना सूना है। मुझे केवल तुम्हारा साथ चाहिए। मैं अब तुम्हारे बिना बेचैन हो गया हूँ। मैं चाहता हूँ कि अब हमारी शादी जितनी जल्दी हो सके हो जाए। अब मैं अधिक देर प्रतीक्षा नहीं कर सकता। क्यों तुम्हारी क्या राय है ?" मोती ने उतावलेपन से पूछा।

"व्याह तो होगा ही, पर पहले घर वालों को भी इत्तला दोगे या ऐसे ही व्याह रचा लोगे।" शशि का मुंह प्रसन्नता से खिल रहा था।

"तुम्हारे घर में हम दोनों के इस नए रिश्ते को कोई जानता भी है या नहीं ?"

"आज तक मैंने इस रहस्य को रहस्य ही रखा था। पर अब मैं इस

रहस्य को अवश्य प्रगट करूँगी। आपके घर वालों को मालूम है न ?" शशि ने पूछा।

"शीला तो इस बात को जानती ही है। अम्मा भी कुछ-कुछ भाँप गई है।" मोती ने शशि के हाथ को दबाते हुए कहा।

"अम्मा को किसने बता दिया है ?"

"जब मैं घंटों लापता हो जाता था तो क्या वह इतनी मूर्ख है जो इस बात को समझ नहीं पाती।" मोती ने देखा कि शशि का सर यह सुनते ही झुक गया। उसने शशि के मुंह को दोनों हाथों से ऊपर उठाया और बोला—

"न जाने मेरे किन अच्छे कर्मों का फल है कि तुम जैसी गुणवान, सुन्दर सुशील लड़की के साथ मेरा सम्पर्क हुआ। यदि तुम्हारे घर वालों ने कुछ भी आना कानी की तो मुझे दुःख अवश्य होगा, पर मैंने निश्चय किया है कि मेरे जीते जी तुम और किसी की नहीं हो सकती। चाहे तुम्हें पाने में मुझे दूसरा आन्दोलन ही क्यों न खड़ा करना पड़े। आपको मन्जूर है न ?" यह कहते-कहते मोती ने शशि के होंठों को चूम लिया। वह धीरे से बोलता गया—

"तुम मेरी हो शशि, केवल मेरी। सदा के लिए। तुम्हें मुझसे कोई छीन नहीं सकता है। तुम मुझे अपनी जान से भी प्रिय हो। कहीं तुम मुझे धोखा तो न दोगी ?"

"नहीं, कभी नहीं।"

उत्तर पाते ही मोती खुशी में झूम उठा। उसने शशि को अपनी बाहों में कस लिया। शशि ने इस मधुर प्रेम का प्रतिकार न किया। मोती उसके अंग-अंग को चूम रहा था, धीरे से उसके कान में बोला—

"मुझे तुम से यही उम्मीद है।"

काफी समय बीतने पर मोती शशि को साथ लेकर उसके घर तक चला गया। द्वार पर दोनों रुक गए।

"अच्छा गुडनाइट (Good Night) शशि। कल फिर इसी समय और हाँ खुशखबरी लाना भूल न जाना।"

"यदि खुशखबरी न होगी तो क्या करोगे।" शशि ने चंचल नेत्रों को नचाते हुए कहा।

"तो क्यों न मैं अभी जाकर तुम्हारे पिताजी से बात कर लूँ।"

"अधिक जल्दी अच्छी नहीं होती, पहले मुझे यह काम सुलझाने दीजिए। जब नहीं कर पाऊँगी, तो आपकी मदद लूंगी। और हाँ अपने घर वालों को तैयार रखिएगा।" शशि ने हँसते हुए कहा।

"मेरे घर में सब बेताब हैं। केवल तुम्हारे आने की देर है।" मोती ने शशि की उँगलियों को दबाते यह कहा।

"तो क्या मैं स्वयं चली जाऊँ?"

"नहीं, नहीं, आपको लेने के लिए हम खुद आयेंगे। आप सिर्फ फरमा तो लें।" मोती ने अदा से कहा।

"बहुत बातें बनानी आती हैं आपको।" शशि ने लज्जाते हुए कहा।

"मैंने अपनी जिन्दगी में और सीखा ही क्या है।"

"अच्छा तो मैं चली जाऊँ? कोई बाहर आ गया तो बहुत बुरा होगा। जानने से पहले ही सब जान जायेंगे।"

"इसमें बुराई ही क्या है। आज नहीं तो कल उन पर यह राज़ प्रगट होगा ही।"

"अच्छा गुडनाइट।"

"दिल नहीं करता है तुम्हें जाने दूं।" यह कहते हुए मोती ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया। शशि ने एक झटके से स्वयं को छुड़ा लिया और भागते हुए दूर से अपने हाथ को हिलाते हुए बोली—

"टाटा!"

शशि अन्दर चली गई परन्तु उसका दिल बेचैन था। वह चाहती थी कि वह अपनी प्रेमगाथा को सब पर व्यक्त करे। पर उसके हृदय में दुविधा थी। वह रह-रह कर सोचने लगी, "न जाने पिताजी क्या कहेंगे? बड़ी माँ तो आफत ही मचा देगी। मेरी अम्मा बड़ी माँ की हाँ में हाँ मिलाएगी। छोटी अम्मा बहुत बुरा-भला कहेगी। आज तक हमारे घर में कभी इस तरह के ब्याह हुए ही नहीं। खानदानी लड़का, कैसी बेहूदा बातें हैं यहाँ। चाहे मैं उसे पसन्द करूँ या न करूँ, मुझसे यह बात कौन पूछेगा। मेरी राय तो इस बारे में नहीं के बराबर होगी। दीदी के ब्याह से पहले कभी उसकी राय किसी ने नहीं जानी। ठीक है कि जीजाजी बहुत अच्छे हैं, सभ्य हैं, सुन्दर हैं। यह सब मैं जानती हूँ। परन्तु मेरा मोती उनसे किस बात में कम है। कितना विशाल है

उसका हृदय, कितना विवेक है उस में। यदि मोती इंगलैंड नहीं गया तो क्या इसी कारण वह मेरे योग्य नहीं रहा। मोती कितना गुणवान हैं। यदि एक ही बार पिताजी उसे देख लेते तो बात बन जाती। बिना देखे, सुने किसी को भला बुरा कहना कितना बुरा है। यह ठीक है कि वह ग्रमीर नहीं है। गरीब घर में जन्म लेने के कारण क्या वह मुझे नहीं पा सकता, जबकि हम एक दूसरे को चाहते हैं, प्रेम करते हैं। खैर, जो कुछ भी हो, मैं मोती की होकर ही रहूँगी। जब प्यार किया तो फिर डरना ही किस बात से है। ग्राज मैं सबको मोती के बारे में कहूंगी। बिना कहे मेरे दिल में शान्ति न होगी।" शशि इन्हीं विचारों को दुहरा रही थी। वह ग्रपने कमरे की एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक चक्कर काटने लगी। वह समस्या को जितना सुलझाना चाहती थी, उसे उतनी ही उलझनें दिखाई देतीं। उसने ग्रपने मन में निश्चय किया, कि यदि घर वाले इस शादी पर राज़ी न हुए तो वह मोती के साथ सिविल मैरेज करेगी। न रहेगा बाँस ग्रौर न बजेगी बाँसुरी।

वह ग्रपने कमरे से निकल कर विष्णु के कमरे में चली गई। विष्णु एक सुन्दर चित्र बना रहा था। उसने शशि को ग्रन्दर ग्राते देखा ग्रौर फिर ग्रपने कार्य में जुट गया। शशि ग्राज ग्रपने ही विचारों में मग्न थी। पास की एक कुर्सी को सरका लिया ग्रौर उस पर बैठ गई। जब विष्णु ने शशि की ग्रोर ध्यान न दिया तो वह बोली—

"भैय्या, ग्रब प्रभु के लिये इस ब्रश (बुरुश) को नीचे रख दो, मैं तस्वीर देखने नहीं ग्राई हूँ।" शशि का स्वर भारी था।

"थोड़ा सा काम बाकी रह गया है। फिनिशिंगट चिज़ हो रहे हैं। कहो कैसी तस्वीर बनी?" विष्णु ने तस्वीर पर ब्रश को फेरते हुये पूछा।

"तस्वीर बहुत ग्रच्छी बनी है। किस की तस्वीर है यह?"

"क्यों देख नहीं रही हो। यह गाँव की एक नटखट लड़की है।" विष्णु ने लापरवाही से कहा।

"यदि गाँव की गोरियाँ ऐसी हों, यानि हृष्ट पुष्ट, साफ सुथरी, ग्रौर सुन्दर तो यह धरती स्वर्ग न बन जाये।"

'स्वर्ग मनुष्य ही तो बना पाता है। जिस का दिल शान्त है, वह स्वर्ग में

है और जिस का दिल अशान्त है वह नर्क में रहता है ।" विष्णु ने ब्रश को मेज़ पर रखते हुए कहा और दोनों बाहों को फैला कर अँगड़ाई ली ।

"अच्छा, यह तस्वीर समाप्त हो गई ?"

"हो तो गई आज । तुम कुछ सीरियस (गंभीर) सी नजर आ रही हो, क्या बात है ?'

"मैं इस समय नर्क में हूँ, यानि कि मेरा दिल बहुत अशान्त है । मैं तुम से कुछ कहना चाहती हूँ इसीलिये मैं इस समय यहाँ आई हूं ।"

"तुम्हारा दिल अशान्त है ! वह क्यों ?"

"भैय्या, मैं...मैं चाहती हूँ···कि...।"

"कहो रुक क्यों गई ।"

"क्या तुम मेरी कुछ सहायता करोगे ?" शशि ने अपने सिर को झुकाते हुये धीरे से कहा ।

'सहायता ? पर बात है क्या ?" विष्णु की उत्सुकता बढ़ने लगी ।

"मैं चाहती हूँ कि मेरा ब्याह शीघ्र हो जाये ।"

इस बात के सुनते ही विष्णु ने कहकहा लगाया और बोला—

"इसी बात के लिये सहायता चाहती थी क्या ! दीदी का ब्याह हो गया है ना, इसीलिये अब तुम उतावली हो गई हो । मैं तो तुम से बड़ा हूँ, पर मुझे शादी का शौक़ नहीं चराया है अभी ।"

"नहीं भैय्या, तुम ने मेरी बात का उल्टा ही अर्थ निकाला ।"

"मैं सब समझ गया । यही न कि घर में खबर कर दूँ कि शशि की शादी की बात शीघ्र पक्की हो जाये ।"

"मेरी शादी की बात कोई पक्की करने नहीं जा रहा है । मैंने स्वयं अपनी इच्छा से शादी करने का फैसला किया है ।"

"कौन है वह खुशकिस्मत जिसे तुम ने पसन्द किया है ?" यह कहते कहते वह गंभीर हो गया ।

"मेरी सखी शीला है न, उसी का भाई ।" यह कहते हुए उस ने अपनी पलकों को झुका लिया, और उस के मुंह पर गुलाबी छा गई ।

"कौन से भाई के साथ ? मोती लाल तो नहीं ?"

"हाँ वही, उस का दूसरा कोई भाई नहीं है ।"

"तुम दोनों एक दूसरे से मिलते भी हो ?"

"चुप।"

"यह कहानी कब से शुरु हुई है ? मेरा मतलब है कि यह नई कहानी है या पुरानी ?"

"पुरानी।"

"मगर शशि, तुम ने कभी मुझ से इस बारे में ज़िक्र तक नहीं किया। मुझे तुम्हारे बोल चाल से इस बीमारी की गन्ध आ गई थी, पर मैंने यह कभी नहीं सोचा कि बात यहाँ तक बढ़ गई है। खैर, अब क्या सोचा है तुम ने ?"

"भैया मोती बहुत अच्छा लड़का है। वह सभ्य, पढ़ा लिखा है। यदि तुम भी उस से मिल लेते तो पता चलता कि उस के विचार कितने उच्च हैं।" विष्णु के बोल चाल से शशि को उत्साह मिला और उस ने मोती की बढ़ाई की।

"मैंने भी उस की काफ़ी तारीफें सुनी हैं और यह भी सुना है कि वह होम मिनिस्टर बन रहा है। क्या यह सच है ?"

"बनेगा तो वह अवश्य कुछ न कुछ, परन्तु अभी मिस्टर रहमान ने मंत्री मंडल नहीं बनाया है।" शशि अपनी बात पर आना चाह रही थी।

"शीला तुम्हारे साथ ही पढ़ती है न ?" विष्णु ने सिगरेट सुलगाते हुये पूछा।

"हाँ वह मेरे साथ ही पढ़ती है। उस के भी अपने भाई की तरह उच्च विचार हैं।" शशि ने विष्णु के अन्तःकरण को जानने का प्रयत्न किया।" "तुम्हारे बारे में मुझ से एक दिन पूछ रही थी वह।"

"ओ...मेरे बारे में पूछा था उस ने, बहुत खुशी की बात है। परन्तु पहले तुम अपनी बात पर आ जाओ।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करुँ, इसीलिये तो मैं तुम्हारे पास आ गई हूँ। तुम चाहो तो यह बात बड़ी माँ और पिता जी से कह दो।"

"मोती वाकई होनहार लड़का है। मेरे विचार में हमारे घरवालों को इस रिश्ते में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये। आखिर अब इन्हीं लोगों का राज्य है।" उस ने सिग्रेट का कश लगाते हुये कहा।

"तुम बड़ी माँ से क्या कहोगे ? यही कि तुम्हारी शादी मोतीलाल से पक्की हो जाये। यदि वह नहीं मानेंगे तो उन पर सच्ची बात प्रगट करनी ही पड़ेगी। क्या विचार है तुम्हारा ?"

"विल्कुल ठीक है भैया। मैं जीवन भर तुम्हारी आभारी रहूँगी।" कह कर वह विष्णु के गले से लिपट गई।

"मैं प्रण करता हूँ कि मैं तुम्हारी पूरी सहायता करुँगा। चाहे मुझे कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।"

विष्णु ने सोमावती से यह बात की, परन्तु उस ने इस बात को ध्यान से सुना भी नहीं। उस के उपरान्त वह बड़ी माँ के पास चला गया। ज्यों ही विष्णु ने इस बात को मुंह से निकाला बड़ी माँ ने उसे खूब डाँटा।

"क्या सारे श्रीनगर में केवल ग्यारह घर रह गये, जो तू ऐसी बात कह रहा है। लाख वह मिनिस्टर बने, परन्तु है तो वह मामूली घर का। हमारे घर की बेटी वहाँ कैसे जा सकती है। लड़की का व्याह सदा अपने बराबर के घर में ही होना चाहिये। क्या जात है उनकी ?"

"कौल है, बड़ी माँ।"

"कौल है, बड़े आये हैं कौल बनने वाले। रहे होंगे किसी कौल के पास नोकर, तो अब स्वयं को कौल कहलाने लगे। छोड़ो इन बातों को, तुम्हें इन झमेलों में नहीं फंसना चाहिये और फ़िर शशि तो अभी छोटी है"

"मोतीलाल मामूली लड़का नहीं है। आप को शशि की शादी उसके साथ करने में कोई हानि नहीं है। आज कल किसी को खानदानी, या कमीना कहना वेहूदा लगता है।" विष्णु ने नम्र स्वर में कहा।

"तुम्हारी तो अधिक पढ़ने से मती मारी गई है। तुम्हें ऐसी बातें करने में शर्म नहीं आती है। उस लफंगे के साथ कभी शशि की बात पक्की नहीं हो सकती है, समझे। जब तक मैं जिन्दा हूँ यह बात कभी होने नहीं पायेगी।" बड़ी माँ ने गुस्से से कहा।

"आप स्वयं अपने हठ धर्म से अपने ही बच्चों को दूर भगा रही हैं। आप नहीं जानतीं कि दुनिया वदल गई है। पुरानी रूढ़ियों की रट लगाना अब शोभा नहीं देता है।" विष्णु का मूंह तमतमाया हुआ था।

"चुप करो विष्णु, मुझे उपदेश सुनने की ज़रूरत नही हैं। कितने बेशर्म मुँह फट हो गए हैं आज कल के बच्चे।"

"मगर शशि और मोती एक दूसरे को चाहते हैं। आप मानिए या न मानिए, उनका ब्याह होकर ही रहेगा।" यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

इस बात से सारे घर में हलचल मच गई। बड़ी माँ की आंखों से चिन्गारियां बरस रही थीं। शशि की माँ को दुःख हुआ। रायसाहब भी लाल पीले होने लगे। घर के नौकर चाकर कानाफूसी करने लगे। सारे घर पर बादल छा गए। जो घर लहलहा रहा था, उसमें आग का शोला गिर गया। शशि को खूब पीटा गया, परन्तु वह अपने हठ पर डटी रही। जब पीटने से कुछ न बना तो उसे मना लिया गया। परन्तु फिर भी वह बाज़ न आई। घर में परामर्श किया गया कि शशि का ब्याह किसी अच्छे घर के लड़के से किया जाए, क्योंकि अभी तक इस राज़ को उनके बिना कोई नहीं जानता था। बात फैलने के उपरान्त शायद ही कोई लड़का शशि से विवाह करने पर राज़ी होता। सो शशि के ब्याह की तैयारियाँ ज़ोरों से होने लगीं।

इधर विष्णु ने भी डट कर इस समस्या का सामना करने की ठान ली। वह दूसरे ही दिन लालमन्डी की ओर लपका और मोती लाल से मिल गया। मोती को शशि के बदले विष्णु को देख कर आश्चर्य हुआ। उसका हृदय शंका से भर गया, वह झिझक गया। विष्णु उसकी दुविधा को भाँप गया। अपने हाथ को आगे वढ़ा कर बोला—

"हैलो, मैं शशि का भाई विष्णु हूँ।"

"बहुत खुशी हुई आपसे मिल कर। कहिए आपका यहाँ अचानक आना कैसे हुआ?" मोती ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

"मैं आपसे पहले भी मिलना चाहता था, परन्तु आज तक मौका नहीं मिला। कभी आप जेल में रहे तो कभी इतने बिज़ी (Busy) कि मुलाकात के लिए समय ही न मिला।" विष्णु ने बात को जारी रखते हुए कहा।

मोती शशि के बारे में पूछना चाहता था। लेकिन उसे यह्न न पता था कि शशि ने इस बारे में उसे बताया भी है या नहीं। उसके मन में दुविधा थी। यदि शशि ने किसी से बात न की तो विष्णु के यहाँ आने का क्या प्रयोजन हो सकता है? मन की बात होंठों पर आकर फिर लोप हो जाती। विष्णु की

भी कुछ ऐसी ही हालत थी। कैसे बात को आरम्भ किया जाए। घर वालों की सच्ची बातें बताने से मोती को बहुत दुःख होगा। पर छुपाने से भी तो काम नहीं चलेगा। इसलिए उसने मोती को साफ-साफ कहना ही ठीक समझा।

"शशि ने कल रात सबको आपके बारे में बता दिया।"

"तो क्या फैसला हुआ है?" मोती जानना चाहता था।

"फैसला कुछ भी नहीं हुआ। हमारे घर में अभी तक किसी ने अपनी इच्छा से शादी नहीं की। यह स्वाभाविक ही है कि वह शशि को अपनी मर्जी से ब्याह नहीं करने देंगे।" विष्णु की बात को अधूरी ही छोड़ कर मोती ने गुस्से से कहा।

"इसका मतलब यह तो नहीं कि हमारी शादी हो ही नहीं सकती। मैं इन बातों को नहीं मानता। यदि उनकी इच्छा नहीं है तो न सही। हमारी शादी हो कर ही रहेगी।"

"आप ने मेरे दिल की बात की। मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। मेरी इच्छा है कि आपकी शादी आर्य समाज की रीति के अनुसार हो। घर में शशि के ब्याह की बात कहीं और पक्की करने पर खूब जोर लगाया जा रहा है। कहीं ऐसा न हो कि उसकी बात पक्की हो जाए और आप देखते ही रह जायें। इस हालत में आप दोनों का ब्याह इसी सप्ताह में हो जाना चाहिए। शशि को मैं किसी भी तरह मण्डप में ले आऊँगा। जब आपकी शादी हो जाएगी, तो घर के सब लोग स्वयं शान्त हो जायेंगे।" विष्णु की इस युक्ति से मोती को बहुत प्रसन्नता हुई। उसके दिल में विष्णु के प्रति आदर तथा स्नेह की भावना उभर आई। मोती ने विष्णु के कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए कहा—

"मुझे हैरानी है कि आपके घर वालों को हमारी शादी में ऐतराज ही क्या है जबकि हम दोनों एक दूसरे को चाहते हैं।"

"उनके दिमाग़ में सदियों से बैठी बातों को एक क्षण में निकालना बहुत कठिन है। परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि धीरे-धीरे समाज में इस तरह की भी स्वतन्त्रता आ ही जाएगी। किसी न किसी को तो आगे बढ़ना ही है। नेता के बिना समाज में परिवर्तन आना ब त ही कठिन है।" विष्णु ने जरा गम्भीर होकर कहा।

"तो क्यों न आर्य समाज में चला जाए। वहाँ सब बातों का ज्ञान हो जाएगा और तारीख भी निकाल लेंगे।" मोती के दिमाग़ में यह सुझाव एकदम आया।

"चलिए, मैं तैयार हूँ।"

दोनों आर्य समाज चल दिए। तीसरे ही दिन का शुभ मुहूर्त निकल आया। वैदिक रीति से ब्याह होना निश्चित हो गया। मोती बहुत प्रसन्न था, और विष्णु ने भी एक सुख की साँस ली।

रायसाहब के घर में इस बात को शशि और विष्णु के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। शशि ने अपनी सबसे अच्छी साड़ी इस अवसर के लिए रख छोड़ी। उसका दिल धड़क रहा था। उसे शंका भी थी और भय भी था। इतना होने पर भी वह पीछे हटना नहीं चाहती थी। उसे विष्णु का साथ मिल गया था। वह उसका न केवल भाई था, बल्कि हितकारी सहोदर भी था। उसका साहस बढ़ रहा था।

वह दिन आ गया। शशि अपनी सहेली से मिलने के बहाने विष्णु के साथ आर्य समाज चली गई। ब्याह वैदिक रीति से हो गया। लग्न के बीच किसी प्रकार कोई विघ्न न पड़ा। विष्णु, शशि, मोती और रहमान के अतिरिक्त वहाँ और कोई न था। रहमान का हृदय आज प्रफुल्लित था।

मोती आज ही अपने नए बँगले में चला गया। वहाँ किसी भी वस्तु की कमी न थी। पूरा घर सजा-सजाया था। यह बँगला बहुत बड़ा था। मोती के माँ-बाप और शीला इस बँगले में पहले ही जा चुके थे। माँ इस नए बँगले में अपने को ग़ैर समझ रही थी। शीला ने अपनी सखियों के घर में जाकर यह सब वस्तुयें देखी थीं, परन्तु उसे मालूम न था कि कौन सी वस्तु किस स्थान पर प्रयोग की जाती है। अपनी पढ़ाई के साथ उसके नए जीवन की तालीम भी आरम्भ हुई।

जब कार द्वार पर आकर रुक गई, तो शीला और अम्मा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दोनों ने बड़ी खिड़की से जो बगीचे की ओर खुलती थी, झाँका। कार से मोती जिसके गले में फूलों के हार थे, बाहर आ गया। उसके बाद रहमान, शशि और विष्णु कार से उतरे। शशि को देख कर शीला हर्षित

हुई, वह खुशी से पागल हो गई। दौड़ती हुई नीचे चली गई और शशि के गले मिल गई। काफी देर तक दोनों एक दूसरे की बाहों में लिपटी रहीं। कल की दो सखियाँ आज ननद-भावज बन गईं। दोनों को आलिंगन में देख कर रहमान बोला—

"अरे शीला, कब तक अपनी भाभी को इस तरह घर के बाहर रखोगी। दोनों लग्न से आ रहे हैं।" रहमान ने सरलता से कहा।

"शादी हो गई। कहाँ, कब ? हमें ख़बर भी नहीं दी। कैसे हैं आप रहमान भैय्या।" शीला के नेत्रों से खुशी के आँसू चमक उठे। वह अपनी चुन्नी के पल्ले से आँखें पोंछने लगी।

"खबर देने ही तो हम आए हैं। जल्दी करो, शशि को ऊपर ले जाओ, थक गई होगी।" शीला अपनी माँ को यह खुशख़बरी देने दौड़ी। अम्मा नीचे आ रही थी। शीला अपनी माँ के गले में लिपट गई। उसे सीढ़ियों पर रोकने लगी।

"क्या बात है शीला, तुम झूम क्यों रही है ?"

"तुम भी झूमो अम्मा, हँस लो, खूब खुशियाँ मना लो। मेरी भाभी आ गई है। मेरी प्यारी शशि आई है।" शीला ने खुशी से उछलते हुए कहा।

"अभी से उसे भाभी बुलाने लगी, शादी तो होने दे।"

"उनका ब्याह हो गया है। शशि मेरी भाभी बन गई है, तुम्हारी सौगन्ध।"

अम्मा के कुछ और पूछने से पहले ही शशि, मोती, रहमान तथा विष्णु ऊपर चढ़ आए। माँ ने अपनी बहू का माथा चूम लिया। दोनों बहू, बेटे को गले से लगाया उन्हें आशीर्वाद दिए और अपनी रसम के अनुसार एक दूसरे को मिठाई खिलाई।

दूसरे दिन सारे शहर में शशि और मोती के विवाह की घोषणा हुई। इस उत्सव में एक महाभोज दिया गया। नगर के सब मानी प्रतिष्ठित लोग आज मोती के घर आये थे। श्रीनगर का हर बड़ा व्यक्ति उस दिन वहाँ उपस्थित था। परन्तु एक व्यक्ति अनुपस्थित था। वह थे रायबहादुर श्री त्रिलोकीनाथ कौल। जिनकी इज्जत आज खाक में मिल गई थी। कौल साहब के घर में

अंधेरा छा गया था। लड़की ने एक मामूली घर के लड़के से व्याह किया था। शशि घर से भाग गई थी, जिसको सहने के लिए उसके घर वाले कभी तैयार न थे। इससे उनकी रही सही इज्ज़त भी मिट्टी में मिल गई। राय साहब को अपनी बेटी और विष्णु पर बहुत गुस्सा था। उन दोनों ने मिलकर यह षड़यन्त्र रचा था। उनकी आँखों में धूल झोंकी थी। मारे शर्म के वह अपने कमरे से बाहर नहीं निकले। इधर बड़ी माँ की भी बुरी दशा थी। आज उसके घर की नींव हिल गई थी। जिस घर की ओर कोई देख नहीं सकता था उस घर की चोरी की गई थी। उस घर की ईंट से ईंट बजा ली गई थी। इस घटना से उन्हें काफी सदमा पहुँचा था। कुछ एक दिन बड़ी माँ से कुछ खाया भी न गया। यह उनके लिए प्रलय से भी बड़ी बात थी। आज तक इस घर में किसी ने नियमों का उल्लंघन नहीं किया था। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि यह बात हुई क्यों कर। बड़ी माँ को पूरा विश्वास हुआ कि लड़कियों को कालेज भेजना भारी भूल थी। सारा घर शोकग्रस्त था, जैसे शशि का देहान्त हो गया हो। यदि वह मर गई होती तो शायद इस घर में इतना मातम न होता।

बात फैलते फैलते राई से पहाड़ बन गई। कोई कहता, "रायबहादुर को भरी सभा में लज्जित होना पड़ा। हर आदमी तरह तरह की बात कर रहा था।" कहने का तात्पर्य है कि जितने मुंह थे उतनी ही बातें होने लगीं। यह बातें, बड़ी माँ और सारे परिवार में घावों पर नमक का काम कर रही थीं। बड़ी माँ ने फैसला किया कि शशि उनके लिए मर गई, जिसके कारण आज उनकी यह दशा हो रही थी। शशि के लिए इस घर के द्वार सदा के लिए बन्द हो गये।

शशि अपने ससुराल में खुशी से रहने लगी। उसे किसी भी वस्तु का अभाव न था। बड़ा घर, मोटर, नौकर चाकर, क्या नहीं था उसके पास। उसका पति गृह मंत्री बन गया था। इज्जत आदर सब कुछ था उसके पास, पर उसे दुःख था कि एक ही शहर में रह कर भी वह अपने माँ, बाप से मिल नहीं सकती। उसे उनसे मिलने की लालसा अवश्य हुई परन्तु उस की हिम्मत न पड़ी कि वहाँ जाये। वह अपने मायके वालों को बताना चाहती थी कि मोती

क्या है । किस व्यक्ति को उसने जीवन साथी बनाया है । कितने मानी, प्रतिष्ठत लोग उसके सामने झुक जाते हैं । वह उनको अपनी शान शौकत, रौबदाब दिखाना चाहती थी । परन्तु यह सब चाहते हुए भी वह कुछ कर नहीं पाती थी । यह सोचते सोचते उसका अहं चूर-चूर हो जाता और वह चोरी छुपे आँसू बहा लेती ।

शशि की शादी के उपरान्त विष्णु भी रहमान तथा मोती की संगत में रहने लगा । कई दिन वह अपनी बहिन के पास ही रहने लगा । रहमान ने उसे डाइरेक्टर आफ इन्डस्ट्रीज लगा दिया । इस पद को संभालते ही वह अलग घर में रहने लगा ।

मिस्टर [illegible] अमीर था और आर्य नगर में था। [illegible] [illegible] के समान था। नौकरों, चाकरों की कमी न थी। [illegible] अतिथियों [illegible] अफसर होने के कारण उसका बहुत आदर था। तनख्वाह के अतिरिक्त भी [illegible] आमदनी बहुत थी। इन के घर में हर समय शान शौकत और [illegible] बना रहता। कोठी के आगे भी लोगों की भीड़ जमा रहती। कब अफसर साहब बाहर आयें या कार में बैठें और कब उनके दर्शन हों। ज्यों ही वह [illegible] पांच सात लोगों की भीड़ उनको घेर लेती। परन्तु प्राईवेट सेक्रेटरी लोगों को कुत्तों या बिल्लियों की तरह भगा देता और इसी अवसर की ताक में अफसर साहब कार में बैठ जाते और कार धूल उड़ाती आगे बढ़ जाती। वह इन लोगों का [illegible] का काम था। लोग कहते, "बड़े लोगों के मिजाज ही ऐसे होते हैं। उनके पास समय कहाँ है जो वह हमारे पीछे उसे बर्बाद करें।" लोग भी प्रसन्न थे और अफसर भी प्रसन्न।

इन अफसरों को अपने पद को संभालने के लिये क्या नहीं करना पड़ता था। प्रातः हर बार मिनिस्टर की कोठी पर अपनी हाजिरी लगानी पड़ती थी। जो मिनिस्टर के घर में पहले पहुँच जाता था, उसे औरों की अपेक्षा कई नम्बर अधिक मिलते थे, और उनका नाम मिनिस्टर साहब के रजिस्टर में लिखा जाता। घंटों की प्रतीक्षा के उपरान्त उन्हें भी अपने इष्टदेव के दर्शन हो जाते। वह अपने सीखे हुए तरीकों को प्रयोग में लाते। चापलूसी, बूट पालिशी, से वह

अपने इष्टदेव को प्रसन्न रखने का काफी प्रयत्न करते। इस तरह के लोग अपने पद को संभालने के लिए कुछ भी करने पर तैयार रहते, यहाँ तक कि अपनी बहु बेटियों की इज्जत को बेचना भी इनके कारोबार का एक हिस्सा बन गया था। जब यह तरीके भी सफल न रहते तो इष्टदेव की सिद्धी के लिए पिछले द्वार से अन्दर घुसते। उसके घर वालों से, बच्चों, बीवियों से ऐसे मिलते जैसे जन्म जन्मान्तरों की पहचान हो। खैर, कोई न कोई तरीका सफल रहता ही था। एक दूसरे के घर में आना जाना रहता। हँसी, दिल्लगी के साथ ही साथ अपना काम भी सिद्ध हो ही जाता। अफसर अपने मातहतों की ईमानदारी पर प्रसन्न रहते और मातहत प्रसन्न होते कि उन्होंने अपने अफसर को उल्लू बना दिया। दोनों अपनी प्रसन्नता तथा चतुराई पर मन ही प्रसन्न हो जाते।

मिस्टर वज़ीर प्रातः अपने पलंग से उठे। एक अंगड़ाई ली। ड्रेसिंग गाऊन पहन कर स्नानाघर की ओर जाने लगे। उनके इधर उधर चलने से कमरे में आहट हुई। उनकी धर्म पत्नी जो दूसरे पलंग पर सो रही थी आहट से जग गई, बोली—

"इतनी जल्दी क्यों उठे? क्या आप को दौरे पर जाना है?"

"मीर साहब से मिलना है। उनसे कई बातें पूछनी हैं।"

"मीर साहब कौन? चीफ मिनिस्टर?"

"हाँ, हाँ और कौन।"

"अरे उन से क्या बातें करियेगा। उनको पता ही क्या है। कहीं उन्हें ए० बी० सी० तो नहीं पढ़ाना है?" पत्नी ने यह कहते कहते ठहाके की हसी हँसी।

"यही समय है उन्हें फुसलाने का। अभी नये नये आये हैं, जैसा हम कहेंगे मान जायेंगे। इसमें हमारी बुराई ही क्या है। भगवान के लिये यह बातें औरों के सामने न किया करो।" मिस्टर वज़ीर ने पत्नी को समझाते हुये कहा।

"यहाँ और तो कोई नहीं है। और फिर मैं कुछ झूठ तो नहीं बोल रही हूँ।"

"झूठ हो या सच, तुम्हें इस बारे में चुप रहना चाहिए, समझी।"

"जैसा कहिएगा।"

मिस्टर बजीर का घर कर्ण नगर में था। घर एक महल के समान था। नौकरों, चाकरों की कमी न थी। चीफ इन्जीनियर या बड़ा अफसर होने के कारण उनका बहुत आदर था। तनखाह के अतिरिक्त भी ऊपर की आमदनी बहुत थी। इन के घर में हर समय दीवान आम और दीवान खास बना रहता। बगीचे में प्रातः से ही लोगों की भीड़ जमा रहती। कब अफसर साहब बाहर आयें या कार में बैठें और कब उनके दर्शन हों। ज्यों ही वह घर से बाहर पांव रखते लोगों की भीड़ उनको घेर लेती। परन्तु प्राईवेट सेक्रेटरी लोगों को कुत्तों या बिल्लियों की तरह भगा देता और इसी अवसर की ताक में आफिसर साहब कार में बैठ जाते और कार धूल उड़ाती आगे बढ़ जाती। यह इन लोगों का प्रतिदिन का काम था। लोग कहते, "बड़े लोगों के मिजाज ही ऐसे होते हैं। उनके पास समय कहाँ है जो वह हमारे पीछे उसे बर्बाद करें।" लोग भी प्रसन्न थे और अफसर भी प्रसन्न।

इन अफसरों को अपने पद को संभालने के लिये क्या नहीं करना पड़ता था। प्रातः उठ कर मिनिस्टर की कोठी पर अपनी हाजिरी लगानी पड़ती थी। जो मिनिस्टर के घर में पहले पहुँच जाता था, उसे औरों की अपेक्षा कई नम्बर अधिक मिलते थे, और उनका नाम मिनिस्टर साहब के रजिस्टर में लिखा जाता। घंटों की प्रतीक्षा के उपरान्त उन्हें भी अपने इष्टदेव के दर्शन हो जाते। वह अपने सीखे हुए तरीकों को प्रयोग में लाते। चापलूसी, बूट पालिशी, से वह

अपने इष्टदेव को प्रसन्न रखने का काफी प्रयत्न करते । इस तरह के लोग अपने पद को संभालने के लिए कुछ भी करने पर तैयार रहते, यहाँ तक कि अपनी बहु बेटियों की इज्जत को बेचना भी इनके कारोबार का एक हिस्सा बन गया था । जब यह तरीके भी सफल न रहते तो इष्टदेव की सिद्धी के लिए पिछले द्वार से अन्दर घुसते । उसके घर वालों से, बच्चों, बीवियों से ऐसे मिलते जैसे जन्म जन्मान्तरों की पहचान हो । खैर,कोई न कोई तरीका सफल रहता ही था । एक दूसरे के घर में आना जाना रहता । हँसी, दिल्लगी के साथ ही साथ अपना काम भी सिद्ध हो ही जाता । अफसर अपने मातहतों की ईमानदारी पर प्रसन्न रहते और मातहत प्रसन्न होते कि उन्होंने अपने अफसर को उल्लू बना दिया । दोनों अपनी प्रसन्नता तथा चतुराई पर मन ही प्रसन्न हो जाते ।

मिस्टर वज़ीर प्रातः अपने पलंग से उठे । एक अंगड़ाई ली । ड्रेसिंग गाऊन पहन कर स्नानाघर की ओर जाने लगे । उनके इधर उधर चलने से कमरे में आहट हुई । उनकी धर्म पत्नी जो दूसरे पलंग पर सो रही थी आहट से जग गई, बोली—

"इतनी जल्दी क्यों उठे ? क्या आप को दौरे पर जाना है ?"

"मीर साहब से मिलना है । उनसे कई बातें पूछनी हैं ।"

"मीर साहब कौन ? चीफ मिनिस्टर ?"

"हाँ, हाँ और कौन ।"

"अरे उन से क्या बातें करियेगा । उनको पता ही क्या है । कहीं उन्हें ए० बी० सी० तो नहीं पढ़ाना है ?" पत्नी ने यह कहते कहते ठहाके की हसी हँसी ।

"यही समय है उन्हें फुसलाने का । अभी नये नये आये हैं, जैसा हम कहेंगे मान जायेंगे । इसमें हमारी बुराई ही क्या है । भगवान के लिये यह बातें औरों के सामने न किया करो ।" मिस्टर वज़ीर ने पत्नी को समझाते हुये कहा ।

"यहाँ और तो कोई नहीं है । और फिर मैं कुछ झूठ तो नहीं बोल रही हूँ ।"

"झूठ हो या सच, तुम्हें इस बारे में चुप रहना चाहिए, समझी ।"

"जैसा कहिएगा ।"

मिस्टर वज़ीर रहमान के घर जा पहुँचे। वहाँ अभी सब सो ही रहे थे। केवल खतजी अपने बगीचे में टहल रही थीं। वजीर साहब ने इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। एकदम वहाँ जा पहुँचा जहाँ वह खड़ी थीं। बोला—

"अदाबअर्ज, अम्मा जी।"

"सलाम" खतजी ने झेंपते हुए कहा।

"आप को यह घर पसन्द आया? कोई कठिनाई तो नहीं आई?"

"नहीं ऐसी कोई बात न थी।"

"अम्मा जी, मैं आप और आप की बहु के लिये कुछ कपड़े लाया हूँ। आप उन्हें पसन्द कर लीजिये। यदि कोई रंग पसन्द न आये तो हम उसे बदल भी सकते हैं। चलिए आप अन्दर चल कर देख लीजिये।" यह कह कर मिस्टर वजीर ने अपने ड्राईवर को संकेत किया। ड्राईवर एक बड़ा सूटकेस लेकर अन्दर चला आया।

सूटकेस में कई फिरण थे। एक से एक बढ़िया। सब के ऊपर तिल्ले का काम किया गया था। खतजी को यह सब फिरण पसन्द आये। वह किसी भी फिरण को लौटाना नहीं चाहती थी। उसने कई अपनी बहु के लिये तो कई अपने लिए अलग रख छोड़े। उसने अपने जीवन में पहली बार ही इतने कीमती कपड़े देखे थे। वह आज हर्षित थी। उस का मन प्रसन्नता के समुद्र में हिलौरे खा रहा था। उसके नेत्रों में वज़ीर साहब के प्रति कृतज्ञता के भाव थे। वज़ीर साहब अपनी इस चाल पर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। फिरण देखने के उपरान्त मिस्टर वज़ीर खतजी और सुन्दरी दोनों को यह मकान अच्छी तरह दिखाने लगा और कौन सी वस्तु किस काम आती है उसकी भी जानकारी करवाना आवश्यक था। एक स्थान पर खतजी रुक कर बोली –

"तो क्या बिजली की यह काँगड़ी (रेडियेटर) इतनी ही फायदेमन्द है। न इसमें कोयला ही डालना पड़ता है और न उन्हें सुलगाना ही पड़ता है। क्या इसको कोई छू सकता है?" खतजी के नेत्रों में आश्चर्य की झलक थी।

"परन्तु इसे छूने की आवश्यकता ही क्या है। यदि आप दूर भी

बैठेंगी, तब भी इसकी गर्मी आप तक पहुँच जायेगी।" मिस्टर वज़ीर ने रेडियेटर का स्विच खोलते हुये दिखा दिया।

इसके उपरान्त पानी को गर्म करने का बायलर, स्नानाघर में लगे हुये वाशवेसन, टब और कई अन्य वस्तुओं के प्रयोग के बारे में बता दिया। खतजी ने यह चीजें पहले कभी नहीं देखी थीं। आज वह तन्मयता से इन वस्तुओं की जाँच कर रही थीं। उसे किसी भी वस्तु को छूने का साहस नहीं हो रहा था। मिस्टर वज़ीर जानबूझ कर उसके डर को भगा रहे थे। जब खतजी ने टब को देखा तो उस ने सोचा कि इस में नहाने वाले को कितना आनन्द मिलता होगा। टब स्फेद बर्फ जैसा था। उसने झिझकते हुये पूछ ही लिया।

"क्यों वज़ीर साहब, टब में स्त्रियाँ भी नहा सकती हैं ?"

यह बात सुनते ही वज़ीर की हँसी छूटने लगी, परन्तु तत्काल ही अपने को संभाल लिया और बड़े अदब से बोला—

"बेशक, बेशक अम्मा जी, इस में कोई भी नहा सकता है। यह जो दो नलके हैं न, एक में गर्म पानी से और दूसरे में से ठंठा पानी निकलता है। टब को भर कर नहाया जाता है। गर्म पानी में नहाने से बदन की सारी थकावट एकदम जैसे धुल जाती है और आदमी रात भर सुख की नींद सो सकता है।"

वज़ीर साहब की इस बात से खतजी को अपने बीते दिन स्मर्ण हो आये, कैसे रसूल थका माँदा घर लौटता था। उसकी देह थक कर चूर हो जाती थी। वह मुश्किल से शाम को घर के किसी व्यक्ति से बात कर पाता था। कभी चुल्लू भर पानी पैर धोने के लिये मिला नहीं। हर समय किसी न किसी वस्तु की कमी रहती ही थी। तब थकान को दूर करने का कोई साधन न था, बल्कि घर चलाने के इतने दाव पेच थे कि आदमी को अपना शरीर भी भूल जाता था। वहाँ उलझनों पर उलझनें थीं। जिन्हें दूर करना न केवल कठिन था, बल्कि असम्भव भी था। मज़दूर लोगों के लिये हुक्का ही एक ऐसा साधन है, जो ग़म दफ़ाई करता है। पर जब हुक्के से चिन्ता दूर होती है तो अमीर लोगों को प्रतिदिन नहाने की क्या आवश्यकता पड़ती है ? उसके मन में प्रश्नों पर प्रश्न उठे। वह मिस्टर वज़ीर से यह सब बातें पूछना चाहती थी। परन्तु एक झिझक थी, इन प्रश्नों में एक उलझन थी। वह यह बात

किसी पर व्यक्त नहीं करना चाहती थी कि रहमान का बाप मज़दूर था। वह इस सच्चाई को अपने ही हृदय में सीमित रखना चाहती थी। उसे प्रसन्नता थी कि उसका बेटा बड़ा अफसर बन गया है। वह अपने अतीत को भूल जाना चाहती थी। सदा के लिये उस अतीत को भूल जाना चाहती थी जिस में दुःख, दर्द, चीत्कार और कराह के सिवा कुछ भी न था। जहाँ आदमी, आदमी न रह कर हैवान बन कर रहता था। वह अपने भविष्य के लिये पुराने दिनों को याद करना भी नहीं चाहती थी। सब लोग सच्चाई को जानते थे। परन्तु खतजी सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन रही थी। जिस चिथड़े को एक बार फेंक दिया था, उस को फिर से उठाने का प्रयत्न ही क्यों करना था।

रहमान जाग गया, अंगड़ाई लेता हुआ वह बाहर आ गया। रहमान को देखकर मिस्टर वज़ीर थोड़ा झुक गया और बोला—

"आदाबअर्ज जनाब।"

"आदाब, आप कब आये यहाँ, अभी तो बहुत सवेरा है।"

"यदि जनाब की इच्छा हो तो क्यों न आज गुलमर्ग का दौरा किया जाये। हज़ूर को ताज़ी हवा की आवश्यकता है, और उस एरिया (तरफ) का मुआयना भी हो जायेगा। मैंने सब इन्तज़ाम करवा दिया है?" वज़ीर ने बड़े अदब से कहा।

"जब आप की यही मर्जी है तो हमें कोई ऐतराज़ नहीं है।"

तो" आप तैयार हो लीजिये। यह कर मिस्टर वज़ीर कमरे के बाहर आया और अपनी कार में बैठकर कहीं चला गया।

जब से करीम, शाबान, मक्खनलाल, नूरुद्दीन, मोतीलाल, रहमान के मन्त्री मंडल के मिनिस्टर (मन्त्री) बने तब से उन के जीवन का हुलिया ही बदल गया। जीवन भर की गुँडागर्दी खूब काम आयी। लोग उन से इस कदर डर रहे थे कि कहीं उनकी जान ही न निकाल दें। इन सब मन्त्रियों का भय सारे कश्मीर पर छा गया। किसी को उनके सामने अपना दुखड़ा, या कोई विनती करने का साहस न होता था। उनके अधीन जितने भी अफ़सर थे, उन के नाम से थर काँप रहे थे। उनके अवगुणों को कहने की किसी की हिम्मत न थी। अपने अन्दर की बात कोई किसी के सामने व्यक्त नहीं कर सकता था। कारण यह था कि इन मंत्रियों ने जगह-जगह पर अपने खरीदे हुये सी० आई० डी० (C. I. D.) रखे हुए थे। जब भी कोई उनके विरुद्ध बात मुंह से निकालता तो दूसरे ही दिन उसे नौकरी से जवाब मिल जाता, तब उस व्यक्ति की प्रार्थना को न केवल मंत्री महोदय न सुनते बल्कि भगवान भी उस की प्रार्थना को कबूल न करता। सब अपने घनिष्ट मित्रों तक को भी सी० आई० डी० समझने लगे थे। इस तरह लोगों ने अपने होंठों पर पक्की सील लगा दी थी। यदि कोई सी० आई० डी० अच्छा कार्य करता तो उस का वेतन बढ़ाया जाता और उस की पदवी में भी बढ़ौती हो जाती। इस परिणाम से सब एक दूसरे के सी० आई० डी० बन बैठे और किसी हद तक सब एक दूसरे को अपना शत्रु समझने लगे। इस युक्ति को अपनाने से मंत्रियों को काफी लाभ हो रहा था।

शाबान ठाठ से रह रहा था। सब बच्चे अब अच्छे स्कूलों में पढ़ रहे थे। सब के लिये अलग अलग नौकर रख लिया गया। खाने, कपड़े की अब कोई कमी न थी। अच्छा खाना, कपड़ा ओढ़ना यह सब उन के लिये मामूली बात बन गई। इधर उधर घूमने के लिये कई मोटरें, जीपें हाजिर रहती थीं। जो बच्चे कल तक दूध की एक एक बूंद के लिये तरसते थे आज उन के पीछे चल चल कर उनके नौकर उन्हें खाने पीने के लिये मना रहे थे, मिन्नतें कर रहे थे। आज शाबान की बीवी, रेशम के तथा सुन्दर कपड़ों में लिपटी हुई दुल्हन सी लग रही थीं। फिरणों पर तिल्ले का काम किया गया था। सिर पर सुन्दर ओढ़नी रहती थी। अब उसे जाना के नाम से कोई नहीं जानता था। वह बेगम मुहम्मद शाबान बन बैठी थी। इसे इस नये नाम से नशा सा चढ़ जाता था, आँखों में मादकता सी छलकती। उसे विश्वास नहीं होता कि यह वही स्त्री है, जो टूटी फूटी झोंपड़ी में से एक मिट्टी के मटके को लेकर बाजार के नल पर पानी भरने जाती थी उन चीथड़ों में लिपटी जो सर्दी, गर्मी, और वर्षा में काम देते थे। उसे उन चीथड़ों को बदलने का कभी अवसर नहीं मिला था। उन कपड़ों में वर्षों की मैल जमी रहती थी और उन में काले रंग के अतिरिक्त और कोई रँग दिखाई नहीं देता था। यह हकीक़त थी, स्वप्न नहीं। जब भी उसे वह दिन स्मरण होते तो वह सिहर उठती थी, कि कहीं उस की नींद न टूटे। और यह सुनहरे स्वप्न टूट न जायें। इसलिए वह उस अतीत को अतीत ही में डुबाना चाहती थी। वह उस अतीत की छाया को अपने बच्चों पर न पड़ने देती, चाहे यह स्वप्न ही क्यों न हो, वह इस स्वप्न से जागना भी मुनासिब नहीं समझती थी।

जाना की शकल और सूरत अच्छी थी। रंग इतना गोरा था कि दूध से धुली हुई प्रतीत होती। उस की आँखें नीली थीं। जब से वह इस घर में आई थी, तब से घर का काम काज सब छूट गया था। उसको स्वयं खाना खाने के अतिरिक्त और कोई कार्य न था। वह दिन भर सोती रहती और जीवन भर की थकान को दूर कर रही थी। अच्छा खाने पीने से उसका बदन दिनों में भर गया और वह काफी मोटी होने लगी। शाबान उसे आधी आधी रात तक बात करने की तमीज और अदब सिखाता रहता था, परन्तु जाना को अपने पर इतना भरोसा न था। सदा उसे डर रहता कि किस के साथ कौन सी बात

की जाये। इस दुविधा के कारण उसने कम बोलने में ही अपनी भलाई समझी थी। शहर भर के अफसरों की बीवियां उस से मिलने आ जाया करती थीं। नौकरों से जब उसे पता चलता कि वह स्त्रियां भी उस जैसी हैं तो झट उन से मिल लेती थी लेकिन जब उसे यह पता चिलता कि कोई माडर्न स्त्री मिलने आयी है तो वह सिर दर्द का बहाना कर के उसे टाल देती थी। खैर, धीरे-धीरे यह झिझक भी जाती रही, जो एक समय उस का शृंगार था।

एक दिन वह अपने कमरे में बैठी थी कि शावान ने द्वार खोला और अन्दर चला आया। उस के हाथ में एक बड़ा लिफ़ाफा था, जिस में एक सुन्दर नाइट गाऊन रखा था। उस ने इस लिफ़ाफे को पलंग पर रख दिया और बोला—

"जरा इस के अन्दर देखो तो क्या है ?"

जाना ने लिफाफा खोला और गाऊन को बाहर निकाल लिया। गाऊन पर सुन्दर फूल काढ़े गये थे। जाना ने इस तरह की चीज़ पहले कभी न देखी थी। उसे आश्चर्य हुआ, और पूछ बैठी।

"क्या है यह ? यह तो फिरण नहीं हैं ?"

"यह तेरे लिये मैंने मोल लिया है। पसन्द आया तुझे ?"

"मैंने यह बला पहले कभी नहीं पहनी। तू ही इसे पहन ले न।"

"इसे औरतें पहनती हैं, यह कढ़ाई नहीं देखती है क्या ?"

"मुझे यह फिरण नहीं पहनना है। मैं तो बन्दरी जैसी लगूंगी।"

"तुम तो बिल्कुल पागल हो। यह फिरण नहीं है। इसे गाऊन कहते हैं गाऊन। समझी ? जरा बता दे क्या कहते है इसे ?"

"गोन कहते हैं इसे। अब तू खुश हो गया है या नहीं।"

"गोन नहीं, ड्रेसिंग गाऊन।"

"ड्रेशंग गोन।"

"तुझे तो बोलना भी नहीं आता है तेरे लिये तो मास्टर रखना पड़ेगा।"

"पहले तू अपने लिये तो माशटर रख।"

"कितनी बार तुझे मना किया कि मुझे तू...तू न कहा कर मैं मामूली आदमी नहीं हूँ, मिनिस्टर हूं मिनिस्टर। तू ने मुझे समझ क्या रखा है।"

"अच्छा बाबा, आप कहूंगी । मगर तू मुझे आप क्यों नहीं कहता ?"

"तू औरत है, मेरा मुकाबला करेगी क्या ?" इस पर दोनों हँस दिये। शाबान उठा, कमरे का द्वार बंद कर दिया और बोला—

"बेगम, उठो तो, जरा देखूँ इस गाऊन में कैसी लगोगी ?"

"कैसे पहनना है इसे।" जाना अपने पहने हुये कपड़ों को उतारने लगी। शाबान की सहायता से जाना ने गाऊन पहन लिया। उसने अपने बदन पर गाऊन की नरमी को महसूस किया। उसे गुदगुदी होने लगी और वह खिलखिला कर हँस पड़ी।

"क्या हुआ तुझे ? हँस क्यों रही हो । कोई सुन लेगा तो क्या कहेगा।"

"यह बहुत ही मुलायम है। गुदगुदी हो रही है।" यह कहते कहते वह अपनी हँसी को रोकने लगी। शाबान ने जब उसे इस लिबास में देखा तो वह उस पर भूखे सियार की तरह झपट पड़ा और बोला—

"खुदा की कसम अब जिन्दगी का लुत्फ उठा लूँगा। तेरे सामने ही सुन्दर लड़कियों को......। तुझे ऐतराज तो न होगा ?" यह कहते-कहते वह उसे अपनी ओर कसने लगा। जाना को उसकी यह बात बहुत बुरी लगी। उस से अपने को छुड़ाते हुये बोली—

"तो जा कर उन्हीं सुन्दर लड़कियों को पकड़ कर क्यों नहीं लाते ?"

"ओ......तो जल गई बेगम। चाहे मैं बीसों को क्यों न पकड़ लूँ, पर तू तो मेरी जोरु है। मेरे सात बच्चों की माँ है। तुम मेरे लिए दुनिया की सब से हसीन औरत हो, समझी।" यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ। अपने बालों और कपड़ों को संभालने लगा। उसने देखा जाना का मुंह क्रोध की अग्नि में जला रहा है, जरा मधुर स्वर में बोला—

"बेगम, वाकई तुम नादान हो। सात बच्चों की माँ हो कर भी तुम बच्चों की तरह मुंह फुलाए बैठी हो। तुझे देखकर ही तो मुझे नशा आ गया था। जो मुंह में आया, कह गया। मैंने जो कुछ कहा यूं ही मखोल में कह दिया। यह बातें सच थोड़ी ही थीं। लानत है पराई स्त्रियों को, मैं तुम पर

उन को कुरबान कर दूं। कहो, तुम्हें खुदा की कसम है, कभी मैंने किसी गैर औरत को बुरी नजर से देखा है? कहो, बोलती क्यों नहीं हो।"

"जब यह सब झूठ है तो फिर ऐसी बातों को मुंह से निकालना ही क्यों। कहीं तुमको भी मोतीलाल की दुल्हन देखकर छोकरी को रखने का शौक तो नहीं चराया?"

जाना की इस बात ने शाबान के दिल में उथल-पुथल मचा दी। वह सोचने लगा, "वाकई मोती हम सब से खुशकिस्मत है। कितनी सुन्दर है शशि। चाँद सी जोरु को पाकर मोती तो मस्त रहता है। जब वह हँसती है तो फूल बरसाती है। चलती है तो लचक कर। मोतीलाल अवश्य मुझ से छोटा है पर ऐसी दुल्हन पाना सौभाग्य की बात ही तो है। मोती के घर की वह जान है। दिल करता है कि सदा उसी के पास बैठा करूँ। पर वह कम्बख्त सदा भाइजान की रट लगाती रहती है। न जाने वह मेरे दिल का हाल क्यों नहीं जानती है।" पर बाहर से वह शान्त स्वर में जाना की ओर बोला—

"वह छोकरी, उसे देखकर शौक चराया मुझे। क्या कहती हो जाना। वह तो अभी बच्चे हैं, तेरे सामने वह बिल्कुल फीकी है।" यह कह कर वह जाना के उत्तर की प्रतीक्षा के बिना ही जीने से नीचे उतरने लगा।

बैठक में काफी लोग उस की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसे अन्दर आते देखकर सब खड़े हो गये। उस ने सब से हाथ मिलाया और सोफे पर बैठ गया। उस ने संकेत से सबको बैठने का आदेश दिया। एक व्यक्ति शाबान के पास गया और बोला—

"जनाब, मुझे एक अर्ज करनी है।"

"क्या बात है?"

"मैंने हाल ही में एम. ए. पास किया है। जितनी देर मैं पढ़ने चला गया, मेरे पीछे एक मामूली मैट्रिक पास लड़के को मेरा अफसर बना दिया गया है। मैं उसी स्थान पर हूँ जहाँ मैं पाँच वर्ष पहले था।"

"तुम ने कहाँ तक पढ़ा है?"

"हजूर मैंने अर्ज़ किया कि मैंने हाल ही एम. ए. पास किया है।"

"तुमने एफ ए. नहीं किया है क्या ?" शाबान ने बड़ी शान्ति से पूछा।

"जी हां, और एम. ए. भी किया है।" आदमी ने सोचा शायद मंत्री बहरा है इसलिए ज़रा ऊँचे स्वर से बोला—

"मैं बहरा नहीं हूँ। तुमने एम. ए. किया है तो क्या हुआ। एफ. ए., बी. ए. तो नहीं किया है न। पहले और पढ़ लो फिर फरियाद करने आना। मेरे पास यह वाहियात बातें सुनने के लिए समय नहीं है।"

इसके उपरान्त कई लोग अपनी फ़रियादें सुनाने लगे। हर एक को उल्टा, सीधा उत्तर मिल गया। उस दिन की सभा समाप्त हो गई। लोग एक दूसरे का मुंह देख कर अपने-अपने घरों को चले गये।

समय व्यतीत होता गया। रहमान का रोबदाब सारे कश्मीर पर छा गया। उसके गुणों के गीत गाये जाने लगे। उसके अवगुणों को सब अपने ही दिलों में दबाये रखते। जो भी उसके विरुद्ध बोलता, उसे सख्ती से कुचल दिया जाता। जब वह प्रार्थना के लिये रहमान के पास जाता तो वह यूँ कहता।

"हजूर मैंने आप के विरुद्ध कुछ नहीं कहा है। यह सब झूठ है। वन्दापरवर आप रहम कीजिए मुझ पर, गरीब पर दया कीजिये।"

"तुम मेरे विरुद्ध क्यों हो। तुम्हें किस चीज की कमी है?"

"जनाब, आप प्रजापालक हैं, करुणानिधान हैं। आप हमारे माई बाप हैं। भला मैं आप के विरुद्ध कैसे बोल सकता था। मैंने कभी आप के बारे में कोई बात करने का साहस नहीं किया। मैं तो आप की जूती के बराबर भी नहीं हूँ। हजूर इस नाचीज को माफ कीजिये।" यह कहकर वह उसके पैरों पर गिर जाता।

"उठो, उठो, कोई बात नहीं। तुम कुछ फिक्र मत करो, परन्तु याद रखो, फिर कभी ऐसी बात करने की गुस्ताखी की तो जीवन भर चक्की ही पीसते रहोगे।" जब वह व्यक्ति घर की ओर चलने लगा तो रहमान ने कहा—

"सुनो, क्या नाम है तुम्हारा?"

"सरकार, मेरा नाम अज़ीज़ है।"

"कुछ करते भी हो या केवल नहीं ?"

"सरकार, मैं आप के पैरों की कसम खा कर कहता हूँ कि मैं इन बातों में कभी नहीं पड़ता। आप हमारे माई बाप हैं, राजा हैं, फिर मैं कैसे जनाब के ख़िलाफ कुछ कह सकता था।" आदमी ने दोनों हाथ जोड़ते हुये कहा।

"ठीक है हमें तुम पर भरोसा है। यह लो बच्चों को मिठाई खिला देना।" रहमान ने सौ का एक नोट जेब में से निकाल लिया और उस व्यक्ति के हाथ में थमा दिया और बोला—

"अगर कोई भी आदमी मेरे खिलाफ कुछ कहे तो उसे मेरे पास लाकर पेश करना। यह काम हम तुम्हारे ऊपर छोड़ रहे हैं।" रहमान ने देखा वह व्यक्ति उसके पैरों पर रो रहा था। वह अपनी भूल को आँसुओं से धो रहा था। उसके हृदय में रहमान महान बन बैठा। उसे दुःख था कि क्यों उसने उसके बारे में बुरी बातें की थीं। रोते-रोते ही उसने सोचा कि आज से ही वह रहमान का काम ईमानदारी से करेगा और अपना सर सदा उसके कदमों में रखेगा।

जब वह व्यक्ति चला गया तो रहमान ने सुख की साँस ली। आज एक और रँगरूट को जेब में डाल लिया था। न जाने उस में क्या था, यह शायद रहमान ही समझ सका। उसने उसकी आँखों में धोके की एक झलक देखी थी। परन्तु सौ के नोट ने अच्छा काम किया था। उसके नेत्रों में दग़ा के स्थान पर कृतज्ञता का समुद्र उमड़ आया था। न केवल उसकी जबान रहमान के वश में हो गई थी, बल्कि दिल भी उसके अधीन हो गया था। रहमान की बातों में जादू था, न चाहते हुये भी सब उसके संकेतों पर नाच उठते थे।

इस तरह धीरे धीरे यह बातें सारे कश्मीर में फैल गईं। रहमान को कई उपनाम मिल गये। कोई उसे कठोर कहता, तो कोई उसे रहम दिल, कोई उसे डिकटेटर कहता और कोई गरीबों का अवतार मानता था। खैर, यह लोगों के अपने-अपने दृष्टिकोण थे।

रहमान के पैर अब मजबूत हो गये थे। पहले पहल जो चिन्तायें थीं वह सब दूर हो गईं। पढ़े लिखे लोग उसके सामने भीगी बिल्ली बन जाते थे, इससे

उसका होंसला काफी बढ़ चुका था। अब उसे किसी की चिन्ता न थी। जो उस का दिल चाहता, वह वही करता। चाहे वह गलत ही राह पर क्यों न था, उस को सही राह पर लाने की किसी की हिम्मत न पड़ती थी। उसकी मनमानी के भी कई दाद देने वाले थे। सब उसकी हाँ में हाँ मिला रहे थे, चाहे परिणाम बुरा भी निकलता। जो उसकी हाँ में हाँ मिला रहे थे, उनको काफी लाभ हो रहा था। जो पैसा कश्मीर की उन्नति के लिए रखा जाता उस पैसे से कश्मीर की उन्नति का तो बहाना बनता, बल्कि घरों की उन्नति अवश्य हो जाती। इंगलैन्ड, अमरीका से तरह-तरह की चीजें मँगवाई जाने लगीं। मोटर-कारों की कमी न थी। बेगमों के लिये एक, बच्चों के लिये एक, स्वयं मिनिस्टर के लिये एक और नौकरों चाकरों के लिये एक रखी जाने लगी। बेगम के लिए अच्छे कपड़े योरुप से मँगवाये जाने लगे। हर पिट्ठू के घर में रेडिएटर थे, जो चौबीस घंटा चलते रहते थे। जब बिज़ली का बिल आ जाता जो न केवल सैंकड़ों में बल्कि हजारों में होता। यह बिल गर्वनमेंट के खाते में चला जाता।

इसी तरह पैट्रोल और घर की तमाम चीजों के बिल जो बहुत अधिक होते थे, उसे सीधे ही सरकार के बजट में डाल दिया जाता। इस तरह उन लोगों की शान और आन में कोई घाटा न होता।

इस शान शौकत को देखकर सब लोगों के मुंह में पानी भर आता और उनकी आँखें ललचा जातीं। लोग अपनी मान इज्जत को तिलाँजली देकर मिनिस्टरों और बड़े अफसरों के तलवे चाटते, नौकरी चाकरी करते, उनके बच्चों और बीवियों का दिल बहलाते, यहाँ तक कि उनके नौकरों की खुशामद करते थे, तब कहीं जाकर उन पर एक दिन दया की जाती।

इस तरह मन्त्रियों, मियाँ मिट्ठुओं, चापलूसों की एक सोसाइटी सी बन गई थी। लोगों ने समझा कि रहमान को पावर (Powar) और पुजीशन (Position) ने बर्बाद किया है। इस बात का कभी लोगों ने ध्यान भी नहीं किया था। लोगों को पूरा भरोसा हो गया कि यह लोगों का राज्य नहीं बल्कि गुँडों का राज्य था। उन दिनों गुँडागर्दी का खूब बोलबाला था। एक राजा के उपारान्त दूसरे राजा ने स्थान पा लिया था। अन्तर केवल इतना था कि एक का जन्म राज महल में हुआ था और दूसरे का जन्म झोंपड़ी में हुआ था। एक ने गरीबों

के दिल की बातें कभी नहीं जानीं और न जानने का प्रयत्न ही किया। दूसरे ने स्वयं गरीबी देखी, उन्हें सब्ज बागों का चकमा दिया, जब वह स्वयं ऊपर उठ गया तो पहले की हुई सब बातों को एकदम भूल गया और जानबूझ कर भुलाने का प्रयत्न किया। शायद हकूमत के नशे में सब अपने विवेक को खो देते हैं। जो वह पहले कहते हैं, वह एक कहानी बन जाती है। सचाई से कोसों दूर।

एक दिन रहमान मीर को दौरे पर जाना था। सब तरह की तैयारी पहले ही हो चुकी थी। नौकरों और बावरचियों का एक कारवां गुलमर्ग की ओर पहले ही रवाना किया गया था। टँगमर्ग से ले कर गुलमर्ग को खूब सजाया गया था। लोग रहमान के दर्शनों को पाने के लिये बेताब थे। यद्यपि चीफ मिनिस्टर और कुछ एक कर्मचारियों को दौरा करने की आवश्यकता थी, परन्तु चापलूस भी रहमान को प्रसन्न रखने के लिये उस के साथ हो लिये। इस तरह यह एक बड़ा कारवाँ गुलमर्ग की ओर चल दिया। सब अफसरों के खाने का पूरा इन्तेजाम किया गया। शराब, कबाब,मछली हर चीज तैयार थी। कई डाक बँगले और कई होटल इन लोगों के ठहरने के लिये रखे गये, जिन में सुन्दर तथा कीमती फरनीचर (Furniture) रखा गया था। रहमान के सोने के लिये सब से सुन्दर कमरा था। इस में रेशम के सुन्दर पर्दे लटक रहे थे, जो कि गुलमर्ग की मन्द हवा से हिल रहे थे। रहमान आज प्रकृति का सौंदर्य और ही नेत्रों से देख रहा था। कितने ऊँचे पहाड़ शोभायमान थे। जोकि पाइन[Pine] वृक्षों से भरे हुये थे। गुलमर्ग के चारों ओर पर्वत मालायें थीं, जिन के शिखर हिम के मुकुट से सुशोभित थे। जब सूर्य की किरणें उन पर पड़ रही थी तो ऐसा लगता था, कि उन के सिर के ताज चमक रहे हों। न जाने किस देव ने, किस प्रभु ने उन के मुकुटों को बनाया था, जिन में लाखों रत्न जटित थे, लाखों जवाहर तथा लाल जड़े थे। गुलमर्ग उस दिन वास्तव में गुलों (फूलों) से भरा था। वृक्षों के झुरमुट में से हवा सरक सरक कर बह रही थी। लगता था कई देव अपने हाथों से पंखा झल रहे हैं।

रहमान यहाँ पहले भी आया था। जिन दिनों आन्दोलन चल रहा था, तब वह वोटों के लिए टँगमर्ग की ओर चला आया था। परन्तु तब के नेत्रों और अब की आँखों में काफी अन्तर था। तब उस की चाह मंजिल की ओर

जाने की थी, और जब खवैया को साहिल मिल गया तो उसे किनारे को परखने, देखने का मौका मिल गया। अब वह कश्मीर को देखने लगा था, इस की सुन्दरता को निहारने लगा था, जिस का चप्पा चप्पा मेहमान नवाज है, जिस की सुन्दरता को देखने के लिये संसार भर के लोग आते रहते थे। जो कि धरती का स्वर्ग है। परन्तु यह सुन्दर कश्मीर, कश्मीरियों के लिये नहीं बल्कि दुनिया के उस कोने में रहने वालों के लिये है, जो हजारों मीलों को लाँघ कर इसे देखने आता है। कश्मीरियों के लिये कश्मीर परियों की कहानी बन कर रहती है। रहमान को आज अजीब तरह का दुःख हुआ। उसे अपने घर वालों की याद आई। वह उन को भी अपने साथ क्यों न लाया। यहाँ की वायु से सब प्रसन्न हो जाते, यहाँ आने से सब का दुःख तथा कष्ट दूर हो जाना। वह सोचने लगा, अम्मा अब बूढ़ी हो गई है। उसे यह स्थान दिखाना बहुत आवश्यक है। यदि अचानक वह भी फौत हो गई तो दिल के अरमान लेकर ही जाएगी। नहीं, मैं उसे यूँ मरने न दूंगा, उस के आगे पैसों का डेर लगा दूंगा। तब उसे पता चलेगा कि वह राज माता से कम नहीं है। उसने अपने मन में निश्चय किया कि वह गुलमर्ग में एक सुन्दर मकान बनवा लेगा। घर वालों को अपने मकान में रहने में कोई असुविधा न होगी। और फिर यदि अब न बना पाया तो फिर कब बना पाऊँगा।

उस दिन शाम को खूब गाना-बजाना हुआ, रहमान के साथ उसके सब दोस्त, मिनिस्टर तथा कई अफसर थे। आज सब प्रसन्न थे। शराबों के दौर चलने लगा। जाम खटकने लगे। आज सबको खुली छुट्टी थी। जो जितनी पी सकता था, पी रहा था। शराब के नशे तथा मस्ती में कोई किसी का अफसर न था। आज गुलमर्ग पर सब कुछ कुर्बान था। रहमान, मोती, शाबान, मक्खनलाल, करीम, मिस्टर वज़ीर सब झूम रहे थे। रहमान ने अपने भरे हुए जाम को उठाया और मिस्टर वज़ीर के होंठों के पास ले जाकर बोला—

"वज़ीर, पी लो इसे, जितनी पी सकते हो पी लो। दुनिया में जीना है लो इसे पी लो, खुशी से पी लो।" यह कहते-कहते उसका हाथ काँपने लगा।

मिस्टर वज़ीर ने रहमान के गिलास को होंठों से लगाया और एक ही घूंट से खाली करते हुए बोला—

"ग्रौर दीजिए सरकार, न जाने ग्राप ने ग्रपने गिलास में क्या मादकता का रस भर दिया है। यही तो जिन्दगी का मज़ा है।"

शाबान पैगों पर पैग उड़ा रहा था। उसके होश हवास खो चुके थे। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ है। इसी मस्ती भरे स्वर में बोला—

"क्यों मक्खनलाल, ग्राज कोई ग्रच्छा सा माल नहीं लाया ? खुदा की कसम यह···स · ब···न···शा उसके बग़ैर फजुल है। तुमने तो वादा किया था न, फिर उसका क्या हुग्रा। ग्ररे, यहाँ नहीं तो फिर कहाँ।"

"ग्राज कोई चिड़िया नहीं फंसी। जब लुत्फ उठाना है तो फिर माल भी तो वसा ही हो।" मक्खनलाल ने शराब को ग्रपने गले के नीचे उतारते हुये कहा।

"माल की यहाँ क्या कमी है, ग्रापने मुझे पहले ज़रा सा ही इशारा किया होता तो मैं ग्रापके सामने एक नहीं दस माल जमा करवा देता। ग्राप देखते, कैसे ग्राज की महफिल में रंग ग्रा जाता।" मिस्टर फारुक ने कहा।

"वाह बरखुरदार, यह भी क्या कहने की बात है। यह सब तो पुराने वक्त से चला ग्रा रहा है। तुम्हें तो पता ही है कि हम जरा ग्राशिक मिजाज मिनिस्टर हैं। करीम ने फारुक के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"ग्ररे, यह सब ग्रपनी बीवियों को पता चल गया तो समझो घर से बाहर निकाल देंगी।" रहमान ने झूमते हुए कहा।

"क्यों, घर की खातूनों से डरते हो, वह वहीं ठीक हैं, जहाँ हैं। हमें कोई ऐसी चाहिए जो हमारा इस समय दिल बहलाए। हमारी बीवियाँ तो घर की चार दीवारी में ही ठीक हैं।" नूरुद्दीन ने कहा। नूरुद्दीन की यह बातें सुनते ही मिस्टर वजीर बोला—

"यदि ग्रापकी इच्छा है तो ग्रभी मैं कोई इन्तेजाम कर लूँगा। परन्तु माल सैकन्ड क्लास ही है।" वजीर की इस बात पर सब झूम उठे ग्रौर बोले—

"माल पहले दर्जे का हो या दूसरे दर्जे का हमें सब मंज़ूर है।"

मिस्टर वजीर ने किसी गाने वाले को पहले ही तैयार कर रखा था, जिसका यही पेशा था। उसे उचित पैसा दे दिया गया ग्रौर कुछ समय के उपरान्त उसे महफिल में उपस्थित किया गया।

इस तरह वह रात गाने, बजाने और शुगल मेले में बीत गई। करीम, रहमान, मोती, शाबान और अन्य लोग सब मस्त थे। भूखे सियारों की तरह उस स्त्री पर टूट पड़े। कई सौ रुपयों के बदले उस स्त्री का सब अस्तित्व लूट लिया गया। जिसके मुकाबले में यह सिक्के कुछ भी न थे।

दूसरे दिन उस इलाके की जाँच की गई और करोड़ों रुपयों का बजट बना लिया गया। इस बजट में रहमान के लिए सुन्दर भवन बनाने का भी ऐस्टीमेट (Estimate) बनाया गया। इस बजट में एक नहर बनाने का भी फैसला किया गया जिससे लोगों को खेतीबाड़ी के लिए पानी मिल सके। यह स्कीम तो अच्छी खासी थी, परन्तु हुआ यह कि जिस नहर को बनाने में दस लाख रुपये रखे गए, उस नहर को बनाने में केवल दस हज़ार रुपये की लागत आई। बाकी सब पैसा अफसरों ने आपस में बाँट लिया। यही हाल हर काम का होने लगा, और सारी आय मिनिस्टरों के महल बनाने के काम में आने लगी। रहमान का महल भी बन कर तैयार हुआ। इसकी दीवारों पर सुन्दर तस्वीरें लटका दी गई। इस महल को धरती का महल न कह कर स्वर्ग के महल जैसा सजा दिया गया। ऐसी कोई वस्तु न थी जो इस भवन में न थी।

इस तरह के कई उदाहरणों को देख कर जितने सरकारी कर्मचारी थे, घूसखोर बन गए। मिनिस्टर से लेकर अदना चपरासी तक सब लालची हो गए और इस तरह घूस के बिना कोई किसी का काम न करता। मिनिस्टर या बड़े-बड़े अफसर लोगों से साफ घूस माँगने लगे। परिणाम यह हुआ कि हर आदमी एक दमड़ी पर मर मिटने के लिए तैयार हो गया। जिस मनुष्य को कोई काम करवाना होता, वह पहले ही घूंस लेकर अफसर की प्रतीक्षा करता और वह अफसर घूंस लेने के लिए खुलेआम हाथ पसारता। इस तरह लेने-देने का यह व्यापार दिनों दिन बढ़ता गया। न लेने वाला हिचकिचाता था न देने वाले को ही दुःख होता था।

कई स्थानों पर लाखों रुपया लगा कर कई बार पुल बनाए गए, परन्तु हल्के पानी के झटके से वह पुल पानी में बह जाते। तब फिर लाखों रुपयों का बजट बनाया जाता।

यही हाल डाक्टरों, डाइरेक्टरों, ठेकेदारों, व्यापारियों का भी था। डाक्टर तब तक मरीज़ को नहीं देखता था, जब तक उसे अपनी फीस के

अतिरिक्त और तोहफे न मिलते थे। जो मरीज अच्छी तरह डाक्टर को प्रसन्न रख सकता था, उसका इलाज अच्छी तरह हो पाता था। बड़ी बीमारी के साथ बड़ी रकम लेकर अस्पतालों में जाया जाता, और जो ऐसा नहीं कर सकता था, उसे अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ता। अस्पताल के अन्दर घुसना भी एक कहानी बन गई थी। अस्पताल के द्वार तब तक बन्द रहते थे जब तक चौकीदार की जेब गर्म न होती थी। जो मरीज चौकीदार को खुश कर सकता था उसकी जीत होती थी, पर जिसकी जेब में एक पैसा भी न होता, वह एक फाटक से दूसरे फाटक तक चक्कर काटता रहता और शाम को हताश अपना सा मुंह लेकर घर लौटता था। उसकी इस बेवसी पर कोई ध्यान न देता और उसे अकेला ही तड़पने के लिए छोड़ दिया जाता। मानो हर ओर रिश्वत का बाजार गर्म था। चाहे अस्पताल हो या स्कूल।

इन्हीं बातों के कारण गवर्नमेन्ट का सालाना बजट दिन प्रति दिन बढ़ने लगा। चारों ओर बड़े-बड़े सुन्दर भवन बनने लगे। स्कूलों, कालेजों, अस्पतालों, विश्वविद्यालयों के लिए बड़े-बड़े सुन्दर भवन बन गए। परन्तु इन भवनों के अन्दर कुछ भी न था। यही हाल अस्पतालों का था। भवन अवश्य थे, पर मरीज के आपरेशन के लिए पूरा सामान न था।

यह देखकर लोगों में त्राही-त्राही मच गई। न किसी को किसी का डर था, न किसी का दबाव। पढ़े लिखे आदमी सिर झुकाये, अनपढ़ों की लातों और बातों को सह रहे थे। मिनिस्टर लोग अपनी ही मनमानी कर रहे थे।

रहमान का दौरा समाप्त हुआ। उसने अपने जीवन का उद्देश्य घूमना, फिरना, और मौज उड़ाना बना लिया। उसके इन विचारों की पुष्टि करने के लिए उसके मंत्री-मंडल के सब मंत्री काफी थे।

जब से शशि का ब्याह हुआ था रायसाहब के घर से उसे कोई मिलने नहीं आया था। अब वह मिनिस्टर की बीवी थी। उसे किसी भी वस्तु की कमी न थी। अच्छा खाना, ओढ़ना, इज्जत और सब कुछ था उसके पास। जब भी कहीं कोई पार्टी होती तो शशि को सबसे पहले बुलाया जाता। क्लब, सोसाइटियों, डान्स में जाना उसका नित्य का काम बन गया था। उसकी सुन्दरता ने उसे और भी प्रसिद्ध किया था। जब भी कोई बाहर से आता उसके स्वागत के लिए शशि आगे बढ़ती। मोतीलाल को प्रसन्न करने के लिए लोगों को शशि के ईद गिर्द घूमना पड़ता। जब वह प्रसन्न हो जाती तो उनका काम दिनों में हो जाता था। शशि अब दो बच्चों की माँ बन गई थी। परन्तु उसे उनकी देखभाल के लिए समय ही नहीं मिलता था। बच्चों को सदा आया ही खिलाती पिलाती थी और वह अपनी दादी के साथ खूब हिल-मिल गए थे। शशि को इस शान-शौकत, इज्जत के होते हुए अपने माँ बाप की याद भी कभी न आई।

इधर बड़ी माँ दिन प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी। शशि की शादी के उपरान्त वह उदास रहने लगी थी। उसने सुन्दर स्वप्न देखे थे। नारायण, शशि, विष्णु सबके बारे में उसने कल्पना के तारों को छू लिया था। पर जब वह स्वप्न अधूरे ही रह गए तो उसे बहुत दुःख होने लगा। उसे अपने जीवित रहने में कोई प्रसन्नता न थी। उसे डर था कि कहीं इससे भी बुरी खबर सुनने या

देखने को न मिले। उसे यही चिन्ता काट खा रही थी। इसी चिन्ता के कारण वह दिनोंदिन सूखती जा रही थी। उसकी इस दशा को देखकर घर के सब लोग चिन्तित थे। रायसाहब ने बड़े बड़े डाक्टरों को बलाया था, परन्तु बड़ी माँ को उनके इलाज से कोई लाभ न हुआ। एक दिन शाम को सब उसके पास बैठे थे। रायसाहब ने पूछ लिया—

"डाक्टर कहते हैं कि बीमारी कोई खास नहीं हैं। आखिर आप को किस बात का दुःख है ?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ बेटा, अब मेरी अवस्था ही ऐसी है। यौवन लौट कर तो नहीं आयेगा।" उसने आह भरते हुये कहा।

"मैं कब कहता हूँ कि यौवन लौट कर आयेगा, परन्तु दिल की खुशी तो लौटकर आ सकती है बड़ी माँ ?"

"दिल की खुशी तो मेरे बच्चों ने छीन ली। हमें शशि के बारे में उस समय कितना बुरा लगा था। परन्तु था तो लड़का हिन्दू ही। केवल निर्धन होने के लिए ही हमने उसे अपना न बनाया।"

"अब तो हवा ही कुछ ऐसी चली है कि रोकने से कोई नहीं रुकता। परन्तु बड़ी माँ, आप दूसरी खबर सुनकर बहुत प्रसन्न हो जायेंगी। विष्णु डाइरेक्टर आफ ब्रोडकास्टिंग बन गया है और सुना है कि वह अपने काम को बड़ी अच्छी तरह निभाह रहा है।"

"यह तो बड़ी खुशी की बात है। आखिर, वह बड़े घर का लड़का ही ही तो है। उसका काम को अच्छी तरह निभाना तो स्वाभाविक ही है। आपने उसे बधाई भेज दी ?" बड़ी माँ का मुंह चमक उठा।

"मैंने उसे अभी कोई संदेशा नहीं भेजा है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि उसे अपने घर बुला लिया जाये और उसकी पदवी पर एक भारी पार्टी दी जाये। आखिर है तो वह हमारा ही बेटा।" त्रिलोकी नाथ चाहता था कि अब एक दूसरे से दूर रहना ठीक नहीं। आखिर सारा देश बदल रहा था। इसमें उन का दोष ही क्या था।

"सब से पहले शशि को बुला लिया जाये। उसीके कारण तो विष्णु रूठ गया था। आज मैं उसे वर्षों के उपरान्त देख पाऊँगी। न जाने कितनी बदल गई होगी। उसके तो नन्हें-नन्हें बच्चे भी हुये हैं। सुना है कि दोनों बच्चे विल्कुल

शशि पर हैं । अपनी लाडली को देखने के लिए तो मेरा कलेजा मुंह को आता था । उसको देखने का शौक मुझे बहुत पहले हुआ था, पर मैं इस बात को अंदर ही छुपा रही थी । इसने कोई बुरा कार्य नहीं किया है । यह हमारा सौभाग्य है कि हमारा दामाद इतना बड़ा आदमी है ।" बड़ी माँ की आँखों से आँसू गिर गए । उन्हें पोंछते हुए बोली—

"सुष्मा भी एक दो दिनों में यहाँ आने वाली है । उससे बढ़कर और क्या प्रसन्नता की बात हो सकती है । आप अभी उन्हें सन्देश भेज दें और उन्हें यहाँ बुलवा लें । शशि ने हमारे बारे में क्या सोचा होगा, यही न कि उसके मायके वालों ने उसे त्याग दिया है । हर लड़की को अपने ससुराल में अपने मायके वालों पर नाज होता है । पर जब लड़की के मायके में कोई न हो तो उसे यूं लगता है कि उसका संसार में कोई नहीं हैं ।" बड़ी माँ के यूं कहने से सारे घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई । सोमावती तथा सौभाग्यवती प्रसन्नता के आँसू बहाने लगीं । दोनों मन ही मन बड़ी माँ की सराहना करने लगीं ।

जब शशि को यह समाचार मिला तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । कहने को तो उसने अपने माँ बाप को तो भुला ही दिया था, परन्तु आज उसे पता चला कि वह स्वयं को भी धोका दे रही थी । उसके हृदय में सुप्त समुद्र उमड़ आया । वह पागलों की तरह खुशी में झूम उठी । उसने आज एक खजाना पा लिया, जो अनमोल था, जिसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता था । वह चाहती थी कि उसके माँ-बाप और अन्य सम्बन्धी यह जान जायें कि वह कौन है, उसका अस्तित्व क्या है, परन्तु जब उन्होंने उससे मुंह फेर लिया था तो शशि ने अपने मन में ठान लिया कि वह भी उनकी कोई नहीं है । उसे कई बार उन पर गुस्सा आता, कई बार दुःख होता, कई बार पश्चाताप होता । वह उनको अपने दिल से निकालने का भरसक प्रयत्न करती रही परन्तु कोई अज्ञात शक्ति उसे उस ओर झुका रही थी । वह चाहती थी कि उसके माँ-बाप मोती को जान जायें, उसे पहचानने की कोशिश करें, परन्तु उसकी सब इच्छाओं पर पानी फिर रहा था । वह अपने ही अन्दर तड़पती थी, परन्तु उस के अन्तरतम की दुविधा को कोई नहीं जान पाया । आज के इस शुभ समाचार

से वह झूम रही थी। उसने अपने बच्चों को बाहों में भर लिया। उन्हें प्यार किया और बोली—

"डब्बू, डेली, आज तुसको नाना जी के घर जाना है।" डब्बू तथा डेली इन बातों को नहीं समझ सके। वह दोनों अभी संसारिक झमेलों से काफी दूर थे। उन के दांतों पर अभी केवल पवित्र दूध ही पड़ा था। संसाररूपी समुद्र के खारेपन का स्वाद उन्होंने अभी चखा नहीं था। आज अपनी माँ को इस तरह झूमते, पुचकारते, हँसते देखा तो उन्हें भी आश्चर्य हो गया। पर इस मधुर तथा सुन्दर समय को वह हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। इसके बदले में वह भी शशि को प्यार करने लगे, पुचकारने लगे। अपने नन्हें-नन्हें हाथों से उसके बालों से खेलने लगे। शशि ने दोनों को प्यार किया और बोली—

"नाना जी के घर में बड़ी माँ टॉफी देंगी, अम्मा खिलौने देंगी, बाबूजी प्यार करेंगे, छोटी अम्मा बिस्कुट देंगी और हाँ, बड़ा मामू विलायत से बढ़िया खिलौने लाएगा। मौसी चूमी करेगी।" शशि की ये सारी बातें उन दोनों की समझ में न आई, परन्तु अपने मतलब की बात को वह झट समझ गए, बोले—

"तोपी खाना, बिकुत खाना, बदा...बदा किपोना पैना ?"

"हाँ राजा, बहुत कुछ खाना है।" शशि ने दोनों को प्यार करते हुये कहा।

शशि अपने बच्चों को लेकर मायके चली गई। आज उस घर को देख कर उसे अजीब तरह का आनन्द मिला। जिस घर में उसने जीवन के चंद सुनहरे दिन बिता दिए थे। वहाँ उसकी खूब आवभगत की गई। सब एक दूसरे से गले मिले। शशि बड़ी माँ से लिपट गई और खूब रोई और रोते-रोते ही बोली—

"माँ, मुझे माफ कर दो। आपने मुझे त्याग क्यों दिया था। अब मैं आपके विरुद्ध कोई कार्य नहीं करूँगी।" उसके रोने से सब रो पड़े। बड़ी माँ ने उसे अपने सीने से लगा लिया और कहा—

"तुमने कोई पाप नहीं किया बेटी, हम से भी काफी भूल हुई। हमें गर्व है कि हमारा दामाद इतने ऊंचे पद पर है। उस समय न जाने हमें गुस्से में हो क्या गया था। प्रभु तुम्हें सदा सुहागन बनाये रक्खे। तुम फूलो फलो,

पूतो बढ़ो। तुम्हारे जीवन में बहार आ जाए।" इस तरह बीच की खाई भर गई। जैसे कभी उनके बीच में मनमुटाव था ही नहीं। जैसे कभी वह बिछुड़े ही नहीं थे। आज उनका पुर्नमिलन हुआ। उनकी खुशी लौट आई। शशि ने अपने भाई विष्णु की खूब सराहना की। सबको अपने बीते दिनों के नए-नए किस्से सुनाये। वह आज सबके साथ दिल खोल कर बातें करने लगी। उन्हें डब्बू, डेलिया के जन्म के बारे में बता दिया की कैसे उस समय उसने उन सबको याद किया था।

"तुमने हमें उस समय कहला क्यों नहीं भेजा बेटी, हम तो तुरन्त चले आते।" बड़ी माँ ने प्रेम से कहा।

"मैं आपको बुलाना अवश्य चाहती थी, पर मुझे डर था कि कहीं आप बुरा न मान जायें। उस समय तो मैंने आप ही के नाम ले लेकर चिल्लाया था। मेरी सास ने कहा कि—'खिलायें, पिलायें और तिमारदारी करें हम, और याद आए मायके वालों की।' मैं आपकी याद को दिल ही दिल में दबा रही थी।"

"यह न समझो कि हम तुम्हें याद नहीं करते थे। हर समय तुम मेरी आँखों के सामने रहती थी। परन्तु न जाने किन बुरे कर्मों का फल हम सब भोग रहे थे। मैं अब तुम से माफी माँग रही हूँ। हमने जो कुछ किया, उसे सदा के लिए भूल जाओ। कहो मोती जी कैसे हैं? उनका स्वभाव कैसा है?"

"वह बहुत अच्छे हैं अम्मा। मुझे इतने दिन आप लोगों की जुदाई महसूस नहीं होने दी उन्होंने। कभी यह न कहा कि माँ के घर से खबर लेने कोई न आया।"

शशि सबके संग मिल गई। उनके सम्बन्धी भी उससे मिलने आ गए। यह सम्बन्धी चापलूस थे। अपना उल्लू सीधा करने के लिए शशि के घर भी पहुँच गए थे। वहाँ आए दिन वह बड़ी माँ तथा कौल साहब के बुरे व्यवहार की बातों से शशि के हितैषी बन बैठे थे। पर शशि की भोली बुद्धि में यह बातें कभी नहीं आई। आज वह बड़ी माँ को बधाई देने आ गए और इस घर की खुशी में शरीक हो गए।

शशि के बच्चों को कई तरह के तोहफे दिए गए। सब ने उन्हें प्यार किया। उनकी सुन्दरता की सराहना की। आज शशि के हृदय में मातृ प्रेम जाग उठा। जो उसके बच्चों को कभी पहले न मिला आज कदम-कदम पर मिलने

लगा। वास्तव में शशि स्वयं मातृप्रेम के लिए तरसती रही और जब उसे वह मिल गया तो उसे भी अपने बच्चों के प्रति प्रेम उमड़ आया।

विष्णु और मोती के आने पर घर के सब सदस्यों ने उन्हें गले से लगाया। उस दिन शशि और मोतीलाल वहीं ठहरे। दूसरे दिन विदाई के समय अपने हिस्से का दहेज लेकर शशि अपने घर को लौट आई।

विष्णु अब अपने ही घर में रहने लगा। वह प्रतिदिन शशि के घर में जाता और वहाँ शीला से उसकी मुलाकात हो जाती थी।

जब से मोतीलाल गृहमन्त्री बन गया था तब से शीला के जीवन का भी हुलिया बदल गया था। अपनी भाभी से उसने माडर्न दुनिया का ज्ञान करा लिया था। वह सभा, सोसाइटियों तथा क्लबों में जाने के उपरान्त भी एकान्त चाहती थी। वह खामोश प्रकृति की लड़की थी। बचपन की गरीबी ने उसके जीवन पर काफी प्रभाव डाला था। वह सदा हर बात को पहले तोलती और फिर बोलती। अब उसे किसी भी वस्तु की कमी न थी। परन्तु उसने साधारण जीवन ही अपना लिया था। वह सदा सादी पोशाक पहनती थी। उसकी इस सादगी में भी एक आकर्षण था। कई लोग उसकी सादगी पर मिटते थे। परन्तु कोई उसे बुरी नजर से नहीं देखता था। उसकी पढ़ाई समाप्त हो गई थी और वह लड़कियों के कालेज में प्रिन्सिपल के पद पर नियुक्त हो गई थी। वह सदा पुस्तकें पढ़ती रहती, और अक्सर गाँवों में जाकर गरीब, अनपढ़, दरिद्र बच्चों तथा स्त्रियों को पढ़ाने में सहायता करती थी। सोशल वैलफेयर (Social welfare) में वह काफी भाग लेती थी। सारे कश्मीर में वह अपने काम, शराफत सादगी तथा ईमानदारी के कारण प्रसिद्ध हो गई थी। उसको पाने के लिए कई लोग प्रयत्न कर रहे थे, परन्तु उससे हृदय में केवल एक व्यक्ति था, और वह विष्णु। वह उसे बहुत चाहती थी। उसके प्रेम में बनावट न थी, दिखावा न था। जब भी वह विष्णु के पास हो तो कभी अपने हृदय में दबे प्रेम का प्रदर्शन न करती थी। वह दोनों इधर-उधर, सोशल वैलफेयर कश्मीर की उन्नति की बातों के बारे में बोलते रहते थे। इधर विष्णु का भी यही हाल था। वह शीला को मन ही मन बहुत चाहता था, परन्तु शीला की किसी बात में प्रेम की गन्द न दिखाई देती। इससे उसे कई बार शंका हो गई थी। कई बार उसने चाहा था कि शीला की किसी बात से उसे कोई संकेत मिलता, परन्तु

शीला इतनी ढीठ थी कि कभी वह प्रगट में कुछ बोल न पाती। विष्णु सदा अपने दिल की बात को दिल ही में दबाए रखता। दिन बितते गए परन्तु दोनों में से कोई इस बात को प्रगट न कर सका। विष्णु चाहता था कि अब वह शीला पर अपने मन के भाव प्रगट कर दे और उसके मन के भावों को जान जाए। वह नहीं चाहता था कि दोनों अन्दर ही अन्दर तड़पते रहें। एक दिन वह शशि के पास बैठा था। शशि उसके मन की दुविधा को कुछ-कुछ भाँप गई। वह चाहती थी कि दोनों का सम्बन्ध पक्का हो जाए। उसे पूरा विश्वास था कि अब कई गल्तियों के उपरान्त बाबूजी और बड़ी माँ को शीला जैसी लड़की को पाने में कोई इन्कार न होगा। वह विष्णु और शीला दोनों को बहुत चाहती थी और इस शुभ कार्य में विलम्भ भी नहीं करना चाहती थी। परन्तु दोनों की खामोशी ने उसके हृदय में शंका के बीज बो दिए थे। इस बात की पुष्टि के लिए वह विष्णु से पूछ ही बैठी—

"क्यों भैय्या, कब तक कंवारे रहने का विचार है? मैं तो दो बच्चों की माँ भी बन बैठी, और आप हैं कि अपने व्याह के बारे में एकदम चुप हैं। यदि इच्छा है तो क्या मैं बात आगे बढ़ाऊँ?"

"कोई बात होती तो ठीक था। तुम कौन सी बात आगे बढ़ाओगी?" विष्णु ने हँसते हुए कहा।

"अच्छा तो मुझसे बात छुपाई जा रही है। जो बात आप नहीं जानते उस बात से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ। समझे आप।" शशि हंस दी और विष्णु के मुंह के भावों का पढ़ने का प्रयत्न सा करने लगी।

"जब तुम मुझसे अधिक मेरे बारे में जानती हो तो फिर कहने की क्या ज़रूरत ही है। मैं तुम्हें अपनी शादी की बात को पक्का करने का पूरा अधिकार सौंप रहा हूं।" विष्णु ने मुस्कराते हुए कहा।

"सो तो है ही, परन्तु यह बताइए कि किस तरह की लड़की को पसन्द करेंगे आप? यानि मेरी जैसी, दीदी की जैसी, शीला जैसी या हम सब से फरक?" शशि ने देखा शीला के नाम से विष्णु का मुँह कुछ लाल हो गया, बोली—

"कहिए क्या राय है आपकी?"

"सच बताना शशि, मेरे लिए किस टाइप (Type) की लड़की रहेगी ?" विष्णु शशि के मन की बात जानना चाहता था। शशि कुछ सोचते हुए बोली—

"मेरे ख्याल में शीला सबसे अच्छी रहेगी। क्यों कहा न मैंने आप ही के दिल की बात ?"

"हाँ तुमने मेरे दिल की बात तो जान ली परन्तु मैं अभी शीला को समझाने में असमर्थ रहा। जब भी हम दोनों एक दूसरे से बातें करते हैं तो सारी दुनिया की बातें होती रहतीं हैं। हमने अपने बारे में कभी एक शब्द भी नहीं कहा या सुना। कई बार मैंने विचार किया कि मैं उससे अपने दिल की बात साफ-साफ कह दूं, पर न जाने उसके सामने मैं इस प्रण को भूल क्यों जाता हूँ। शीला का स्वभाव कुछ ऐसा है कि मुझे उससे इस तरह की बात करने की हिम्मत ही नहीं पड़ती। वह बहुत ही खामोश लड़की है।"

"वह केवल एक व्यक्ति को चाहती है, वह हैं आप। यह मैंने बहुत पहले जान लिया था। वह अपने प्रेम का प्रदर्शन करना नहीं चाहती। उसके दिल की बातों को जानना बहुत कठिन है।"

"उसने कभी मेरी परवाह नहीं की। उसके दिल की बातें वही जानती होगी, मैं उसके दिल की थाह को नहीं पा सका। यदि हम एक दूसरे पर अपने दिल की बात को व्यक्त न कर सकें तो कहो काम कैसे चलेगा।" विष्णु ने कहा।

"मगर भैया, इसमें केवल उसका दोष नहीं है। क्या कभी आप ने अपने दिल की बात उसको बताई है। नहीं, आप दोनों मन में एक दूसरे से डरते हैं। अब मैं ही आप के बीच की दीवार को समाप्त करूँगी।" विष्णु को अपनी भूल का एहसास हुआ। कभी उसने शीला को संकेत भी नहीं किया था। आखिर शीला लड़की ही है भी, वह क्यों कर अपने हृदय की व्यथा को उस पर व्यक्त करती।

दूसरे दिन शशि ने शीला को विष्णु की सब बातें बता दीं। शीला जिस बात की प्रतीक्षा में थीं वह हो गई। परन्तु इस प्रसन्नता को वह मन ही में दबा कर बोली—

"देखो भाभी, तुम्हारी बात ठीक है। मेरे हृदय में उनके लिए बहुत आदर है।" शीला ने अभी बात भी पूरी न की थी कि शशि बोल उठी—

"क्या केवल आदर ही है तुम्हारे दिल में, और कुछ भी नहीं?"

"सब कुछ है भाभी। आदर, प्रेम, इज्जत। परन्तु तुमने उनसे यह क्यों नहीं पूछा कि वह मेरे ही दिल की बात को क्यों जानना चाहते हैं। क्या मुझे उनके दिल के अन्दर झाँकने का कोई अधिकार नहीं? जो गिला उन्हें मेरे प्रति है मुझे उससे भी बढ़कर उन से है। उन्होंने स्वयं कभी मुझ पर कोई बात व्यक्त नहीं की, क्यों?"

शीला के नेत्र भर आये और वह उन्हें छुपाने का प्रयत्न करने लगी।

"दोनों ही पागल हो। वास्तव में दोनों अन्दर ही अन्दर तड़पते रहे और बाहर से कोई जान न सका। हमको धोका दे रहे थे तुम दोनों। यदि मैं दोनों की बात को पक्की कराने में सहायक बन जाऊँ तो बोलो क्या खिलाओगी?" शशि ने शीला को गले से लगाते हुए कहा। शीला का मुंह इस बात पर बहुत ही गम्भीर हो गया, बोली—

"नहीं भाभी, मैं शादी नहीं करूंगी। मैंने अपने दिल में ठान लिया है कि मैं सदा क्वारी रहूँगी।"

"क्वारी रहोगी, मगर क्यों?" शशि को शीला की बात तीर की तरह चुभ गई और वह बोली—

"इसका मतलब है कि तुम मेरे भाई को नहीं चाहती हो। क्या और कोई आदमी है तुम्हारे दिल में?" शशि की बात में व्यंग था।

"नहीं भाभी, मेरे दिल में और कोई नहीं है। मैंने बीसों से प्रेम करना नहीं सीखा। मेरे दिल में एक आदमी है, और वह है विष्णु। यदि किसी से प्यार किया जाए तो यह जरूरी नहीं है कि शादी भी अवश्य ही हो।" शीला का स्वर शान्त था।

"अच्छा तो आप केवल प्रेम ही करेंगी। यह कैसा प्रेम है?"

"मुझे केवल प्यार ही में आनन्द प्राप्त होता है।"

"शीला, मजाक छोड़ो, यह बताओ कि वास्तव में तुमने विवाह न करने की ठान ली है। क्या तुम आजीवन क्वारी रहोगी।"

"कुछ कह नहीं सकती ।"

"परन्तु क्यों ?"

"मैं नहीं चाहती कि मेरे स्वार्थ के कारण किसी को दुःख पहुँचे ।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी ? तुम्हारे ब्याह से किस को दुःख पहुँच सकता है ? तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहती हो । पहेलियाँ डालना छोड़ दो शीला ।"

"यह पहेली नहीं है भाभी । तुम्हीं कहो कि तुम्हारे विवाह के कितने वर्ष उपरान्त विष्णु अपने घर वालों से जा मिला है । यदि हमारी शादी भी हो जाए तो फिर तुम्हारे भाई को दुबारा अपने घर को त्यागना होगा, यह मैं जानती हूँ । इसलिए यही ठीक है कि आप विष्णु का ब्याह और कहीं कर दीजिए । मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए ।"

"क्या तुम मुझे नीच और स्वार्थी समझती हो जो मैं वह घर छोड़कर तुम्हारे भाई के साथ यहाँ चली आई ?"

"नहीं भाभी, तुम मुझे गलत न समझो, मेरे दिल में तुम्हारे प्रति ऐसी कोई भावना नहीं है । उस समय वही कदम ठीक था । परन्तु मेरे बारे में यह मिसाल ठीक नहीं बैठती है ।"

"मुझमें क्या था जो तुम में नहीं है ?"

"यदि हमारा ब्याह उनकी इच्छा के विरुद्ध हुआ तो वह यही कहेंगे कि वह शादी जबरदस्ती हो गई, भाई के मिनिस्टर होने का प्रभाव पड़ा । इसलिए मैं यह बातें सुनने के लिए तैयार नहीं हूं ।"

"यह धारणा तुम्हारे मन में क्यों बैठ गई कि तुम दोनों की शादी में उन्हें ऐतराज होगा । मुझे पूरा विश्वास है कि तुम दोनों के ब्याह से उन्हें प्रसन्नता होगी । इस बात को तुम मेरे ऊपर छोड़ दो, जैसे जानूगीं, करूँगी ।" शशि ने शीला के गले में बाँहे डाल कर कहा ।

इस बात पर दोनों हँस दीं । इतने में विष्णु वहाँ आ पहुँचा । दोनों को हँसते देखा तो जरा रुक गया । उसे खाँसते देख दोनों उसकी ओर मुड़ गईं । शशि उसको देखकर प्रसन्न हुई । शीला का मुंह लाल हो गया । उसका हृदय धड़कने लगा, आज पहली बार विष्णु को देखकर उसका यह हाल हो गया ।

"तुम हँस क्यों रही थीं। क्या कोई खास बात थी ?" विष्णु उनकी बातों में शरीक होना चाहता था।

"हम दोनों इस बात पर झगड़ रहे थे कि कौन किस की ननद है और कौन किस की भाभी।"

"क्या मतलब, मैं समझा नहीं।" विष्णु शीला की ओर देख रहा था, जो लज्जा के मारे पसीने पसीने हो रही थी। शीला शशि को संकेतों द्वारा इस बकवास को बन्द करने को कह रही थी, पर शशि भी पूरी ढीठ थी। वह इस बात को जारी रखना चाहती थी, बोली—

"मतलब यह है भैया कि शीला से शादी की बात कर रही थी।" शशि ने देखा दोनों के दिल धड़क रहे थे। विष्णु को आज शीला की आँखों में प्रेम की झलक दिखाई दी।

"अब फैसला क्या हुआ ?" विष्णु ने शीला की ओर देखते हुए पूछा। शीला की पलकें झुक गईं धीरे से बोली—

"फैसला आप पर छोड़ दिया है, क्यों भाभी ?"

"भैय्या, ज़रा समझदारी से फैसला सुनना, हाँ।"

"तो सुनो फैसला, शशि तुम जो कहती हो वही मेरा फैसला है। क्यों शीला कैसा रहा फैसला।" शशि का मुंह खिल गया। शीला ने मुंह बना कर कहा—

"जी हाँ। आप तो यही कहेंगे।" शीला ने कहा।

"शीला, मैं चाहता हूँ कि हमारा ब्याह शीघ्र ही हो जाये। तुम्हारी क्या राय है ?"

"आप ने अपने घर वालों की राय ले ली है क्या ?"

"घर वालों की राय ! उनको ऐतराज़ ही क्या हो सकता है। तुम जैसी बहू पाने में पूछना ही क्या है।"

"यह मैं मानती हूं परन्तु फिर मोती भैय्या और शशि के ब्याह में उन्हें क्या ऐतराज़ था। मैं यह नहीं चाहती कि सब मुझे बुरी दृष्टि से देखें। जिस घर में मेरे लिए जगह नहीं, उस घर में जाने का मुझे कोई हक नहीं हैं। मैं उस शादी से क्वारी रहना पसन्द करूँगी।" शीला का मुंह यह कहते समय लाल हो रहा था। उस की इस तरह की बातों से विष्णु का दिल उसकी ओर

ग्रौर भी झुक रहा था। वह उसके निःस्वार्थता को मन ही मन सराह रहा था। जरा गम्भीर होकर बोला—

"यह तो बहुत ज्यादती है शीला। वह चाहें या न चाहें उससे क्या होता है। क्या हम दोनों को एक दूसरे का साथ नहीं है। क्या तुम्हें स्वयं पर विश्वास नहीं है। मुझे किसी की राय के बारे में चिन्ता नहीं है। मैं जो चाहूंगा, वही करूँगा। वह ग्रपने ग्राप इस बात को सहर्ष स्वीकार करेंगे। ग्राज कल मोती जी ग्रौर शशि के गीत गाते उनका मुंह थक गया है। हर चीज का ग्रपना समय होता है।"

"परन्तु उनके विरुद्ध हो जाने की भी क्या ग्रावश्यकता है?" शीला की इस बात से विष्णु को धक्का सा लगा, बोला—

"तो क्या तुम्हें शादी की जरूरत नहीं?"

......

"मेरे सवाल का जवाब दो शीला। में नहीं चाहता कि मैं सदा पहेलियां ही बूझता रहूँ।" शीला की ख़ामोशी से विष्णु को गुस्सा ग्राया ग्रौर बोला—

"मुझे लगता है कि तुम ग्रौर किसी को चाहती हो। शशि के कहने पर भी तुम शादी की बात को टालती रही हो। तुम सच्ची बात कहने से घबरा क्यों रही हो। मैंने तुम्हें कैद तो नहीं किया है। तुम ग्रपनी मर्ज़ी की मालिक हो, जो तुम्हारा मन चाहे कर सकती हो। ग्रब मैं कभी तुम्हें इस तरह की बात नहीं कहूँगा।"

यह बात सुनते ही शीला के हृदय में दर्द हुग्रा। उसने ग्रपना मुंह ग्रपनी धोती के पल्लू में छुपा लिया ग्रौर वह सिसक सिसक कर रोने लगी। विष्णु का गुस्सा काफूर हो गया। धीरे से बोला—

"शीला, तुम्हारे दिल में क्या कशमकश है। तुम बोलती क्यों नहीं। केवल एक बार ग्रपने दिल की बात कह दो, तो मेरे मन का बोझ हलका हो जाये।" विष्णू ने मधुर स्वर में कहा।

"मैं कैसे बता दूँ कि ग्रापके बगैर मेरे दिल में ग्रौर कोई नहीं है। ग्राप यह समझने का प्रयत्न क्यों नहीं करते?"

विष्णु की खुशी का ठिकाना न रहा, ग्राज शीला ने पहली बार उस

पर अपने दिल के भेद को व्यक्त किया था। उसने अपनी जेब से रूमाल निकाल दिया और उसकी आँखों को पोंछते हुए बोला—

"यह बताओ कि शादी से तुम्हें क्या ऐतराज है ?"

"कितने भोले हैं आप, किसी के दिल की बात को नहीं जानते।"

"तुम समझा दो न मुझे।"

"केवल इसलिए कि कहीं आपके घर में फिर से ऊधम न मच जाए।" शीला ने कहा।

"यदि न मचा तो ?"

"तो मुझे मंजूर है।"

"अन्यथा ?"

"तड़पते रहेंगे, जैसे अब तक तड़पते रहे हैं।" शीला ने मधुर स्वर में कहा। विष्णु ने उसके दोनों हाथों को अपने मुँह के पास ले जाकर चूम लिया। शीला की पलकें झुक गईं। विष्णु ने उसके मुंह को अपने हाथों में भर लिया और बोला—

"बाकी सब ब्याह के उपरान्त। मैं शादी से पहले रोमान्स (Romance) में विश्वास नहीं रखता हूँ। क्यों, तुम्हारी क्या राय है ?"

शीला का मुंह इस बात से एकदम लाल हो गया, उसकी आँखें झुक गईं। उसे आशा न थी कि विष्णु ऐसा प्रश्न करेगा, उसकी दुविधा बढ़ गई कि क्या उत्तर दें। वह अपने हाथों से धोती के पल्ले को मरोड़ने लगी कि विष्णु ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा—

"इस सवाल का जवाब तुम सोच कर रख लेना। पूछे बगैर छोड़ूंगा नहीं ?" वह उठ खड़ा हुआ, उसके बालों को चूम कर बाहर चला गया। शीला भी उसके पीछे-पीछे बाहर चली आई।

शीला की अम्मा का जीवन अब भरपूर था। हर एक वस्तु थी उसके पास। न अब घर की देखभाल करनी पड़ती थी, न छोटी मोटी वस्तुओं के लिए सिर ही खपाना पड़ता था। जहाँ पहले मोतीलाल की मनमानी के कारण उसका सिर झुक जाता था, वहाँ अब उसका सिर ऊँचा उठता था। उसे अपने बेटे पर गर्व था, जिसके कारण उसके जीवन का कायाकल्प हो गया था। अब उसे सब लोग इज्जत से देखते थे। उसे मान और आदर मिल गया था। अब

उसके मूंह की झुरियाँ नहीं रही थीं, और वह पीलापन समाप्त हो गया था। अब उसके मुंह पर लालिमा छाई रहती थी। उसका गोरापन निखर आया या वह सदा साफ सुथरी साड़ियाँ ही पहनती थी। जब से शशि इस घर में आई थी, उसने इस घर का रहन-सहन ही बदल दिया था। वह अपनी सास को माँ की तरह प्यार करती थी और सदा उसको अच्छी-अच्छी बातें सिखाती थी। सास भी उसे बहुत चाहती थी। उसे पूर्ण विश्वास था कि वह भाग्यवान बहू है क्योंकि ज्योंही उसने उनके झोंपड़े में पैर रखा त्योंही वह सोना बन गया। उसे शशि जैसी बहू पाने का गर्व था। शशि के दोनों बच्चों डब्बू, डेलिया को वह बहुत चाहती थी। उनकी देखभाल करना, यह सब उसी पर था। जब कभी वह मीरसाहब या और किसी के घर जातीं तो डब्बू, डोलिया दोनों उसके साथ हो लेते। वह अपने बच्चों की बहार देख रही थी। उसके जीवन में कोई कमी न थी, परन्तु उसे एक बात खटकती थी, वह थी, शीला की शादी की बात। वह चाहती थी कि वह भी अपने ससुराल चली जाए, तो उसका यह बोझ भी हल्का हो जाता। शीला और शशि की आयु लगभग बराबर ही थी। शशि एक दो बच्चों की माँ भी बन गई थी। इस बात को कई बार उसने छेड़ा भी, शशि को कहा, मोतीलाल से जिक्र किया, शीला से भी पूछा परन्तु तीनों ने यह बात अनसुनी की थी। उसे शीला और विष्णु के प्रेम के बारे में कई बार शक हुआ था, इसलिए वह इस बात को आगे भी बढ़ाना चाहती थी। उसे अभिलाषा थी कि शीला शीघ्र अपने ससुराल चली जाए। वह लव मैरेज (Love Marriage) को बुरा नहीं मानती थी। उसका अच्छा खासा सबूत शशि और मोती था। उनका जीवन सुखमय, सुन्दर, तथा मधुर था। इसलिए स्वयँ शादी रचाने में कोई ऐतराज़ न था। और फिर विष्णु मामूली घर का बेटा न था। शीला की शादी उससे हो जाने पर अम्मा अपना धन्यभाग्य समझेगी। आज जब शीला और विष्णु कमरे से बाहर आए तो अम्मा ने दोनों को देख लिया। उसके हृदय में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। शीला से बोली—

'जरा तुम मेरे साथ आओ ? मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

शीला बिना उत्तर के उसके संग हो ली। माँ ने अपने कमरे का द्वार खोला, स्वयं एक कुर्सी पर बैठ गई, शीला को बैठने का संकेत किया और बोली—

"अब तुमने अपने ब्याह का फैसला किया है या जीवन भर कंवारी रहना है ?"

"मैंने कब कहा कि मैं जीवन भर कुंवारी रहूँगी । क्या मैं स्वयं ही शादी रचाऊँ या तुम चाहती हो कि मेरा ब्याह भी आर्यसमाज ही में हो जाए ।" शीला ने हल्की हँसी हँस कर कहा ।

"नहीं, मैं नहीं चाहती कि तुम्हारा ब्याह भी वैसे ही हो जाए । जब मोतीलाल का ब्याह हुआ तो मुझे उस समय बहुत दुःख हुआ था । एक ही लड़का है, सोचा था उसका ब्याह बड़ी धूम-धाम से करूँगी । अब मैं अपने अरमानों को तुम्हारी शादी में पूर्ण करना चाहती हूँ कि तुम्हारा ब्याह शीघ्र हो जाए । ब्याह से पहले मिलने में बुरी अफ़वाहें फैलती हैं ।"

"ठीक है अम्मा । जो चाहो करो, मुझे सब मन्जूर है । तुम्हारा दिल रखना तो मेरा कर्तव्य है ।" शीला ने अपनी माँ पर प्यार भरी दृष्टि दौड़ाई ।

"जीती रहो बेटी, प्रभु तुम दोनों की जोड़ी सदा सलामत रखे । कितना अच्छा है विष्णु जैसे मेरा अपना बेटा है ।"

"ज्यादा तारीफें मत करो अम्मा ! क्या पता बाद में कैसा रहेगा ।"

"जो जिस का स्वभाव होगा, वह उस को सहजे ही में नहीं बदल सकता । मैं आज ही उस के घर वालों को बात पक्की करने का संदेश भेजूंगी ।"

"जैसा ठीक समझो करो ।" छोटा सा उत्तर देकर शीला वहाँ से चली गई ।

अम्मा ने आज शाह कारून का खजाना पा लिया था । उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । वह उठी और कौल साहब के घर संदेश भेजने के लिये तैयारी करने लगी ।

रहमान के इर्द गिर्द सदा मियाँ मिट्ठुओं का टिड्डी दल मँडराने लगा। रहमान की इज्जत तथा शान बढ़ने लगी। और इस परिणाम पर सब मीर साहब के चहेते बनने का प्रयत्न करते थे। जब भी कहीं किसी भी साहब के यहाँ ब्याह शादी होती तो मीर साहब से लेकर सब मिनिस्टरों को बुलाया जाता और दूल्हे के गले को पहला हार मीर साहब के हाथों ही पड़ता था। इस से लड़की वालों की काफी शान बढ़ती थी और लड़के वालों पर लड़की वालों का खूब रौब जम जाता। कारण यह था कि मीर साहब का उस घर में होना उन की मित्रता का काफ़ी बड़ा सबूत था। खैर, यह सिलसिला चालू हो गया और चालू होते होते इतना फैल गया कि हर बड़ा आदमी चीफ मिनिस्टर को अपने घर बुलाने पर राजी कर लेता। कई कई घरों में न केवल मीर साहब को न्योता मिलता बल्कि उस के घर वालों को भी बुलाया जाता। मीर साहब ने मित्रता को भी कई तरह के रूप दिये थे। यदि केवल चीफ मिनिस्टर किसी के घर जाता तो लोग समझते कि दफतरी तौर पर वह व्यक्ति काफी जोरदार है। परन्तु जहाँ उस के घर वाले भी शरीक होते तो लोग यही समझते कि इन दोनों घरों के आपस में घरेलू सम्बन्ध हैं। इससे उस व्यक्ति की धाक भी सारे शहर में फैल जाती। अमुक आदमी अपने दायरे में सच और झूठ कहता और एक के बदले हज़ार और हजारों के बदले लाखों बना पाता। जब उस का पेट भर जाता तो वह अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करने लगता और

जहाँ तक हो सकता लोगों को डराने धमकाने से बाज नहीं आता। इन बातों के होते हुये शरीफ आदमी को न केवल शारीरिक कष्ट होता बल्कि उस की आत्मा तड़प उठती ।

इस के परिणामस्वरूप, देखा देखी चपरासी से लेकर मिनिस्टर तक सब पैसा बटोरने में लग गये। कुछ एक वर्षों में मीर साहब के कई बंगले बन गये, जिन की लागत करोड़ों रुपयों के हिसाब में थी। कई होटल, कई दुकानें, कई अड्डे उन के बन गये। जहाँ भी किसी सुन्दर मकान या जमीन के टुकड़े पर उनकी दृष्टि जाती, उसे खरीद कर ही दम लेते। आदमी को बेचने पर बाध्य किया जाता। अच्छा पैसा उसे अवश्य मिलता, परन्तु वह घर उस से सदा के लिये छीन लिया जाता था। इन्हीं बातों के कारण लोगों में बुरी तरह का डर फैलने लगा था।

नूरुद्दीन, शाबान, मक्खनलाल आदि न केवल पैसा बटोरने में लग गये बल्कि लोगों की बहु, बेटियों पर भी हाथ चलाना इन का पेशा बन गया। जब इनकी नजर किसी हसीना पर पड़ती तो झट उस के घर का पता करते, ठिकाना मालूम करते और उस सुन्दरी को पैसे दे दिला कर बुक किया जाता। यदि यह लड़की सहज ही में उन के जाल में न फँस जाती तो किसी न किसी तरीके से उसे फ़ाँस लिया जाता। यानि उस के भाई या किसी घनिष्ठ संबन्धी को पैसे मिलते और उनकी नौकरियों में भी तरक्की होती। इस प्रकार लड़की की इच्छा के विरुद्ध उसे उन को प्रसन्न करने के लिये जाना ही पड़ता था। दूसरे ही दिन से यह युवती सुन्दर जेवर पहनती, कीमती पोशाक में लिपटी, तरह तरह के सूट, साड़ियों में कालेज आ जाती तो उसे देख कर अन्य लड़कियों का दिल ललचा जाता और वह अपने आप का सौदा सैंकड़ों में नहीं हजारों में कर बैठतीं और इस का परिणाम यह हुआ कि कई लड़कियाँ माँ बन बैठीं, और जो इस बात को छुपा न सकीं, वह या तो स्वयं जहर खा कर मर गई या उन के माँ, बाप ने उन्हें जहर खिला कर मार दिया। बेईमान डाक्टरों के लिये इस से सुनहरा समय और कोई न था। और लगे हाथों इन लड़कियों से वह भी पैसा बटोरने की कसर निकालने लगे। मिनिस्टर उन की इस चतुराई पर प्रसन्न हो रहे थे, और परिणाम स्वरूप उन्हें ऊँचे पद मिलने आरम्भ हुये।

इस तरह की बातों से लोगों में ग्रातंक फैल गया । किसी माँ-बाप को ग्रपने बच्चों पर भरोसा न रहा । लड़कियों को कालेज, स्कूल तो भेज दिया जाता परन्तु जब तक वह शाम को लौट कर नहीं ग्राती थीं तब तक उसके माँ-बाप का कलेजा मुंह को ग्राया रहता ग्रौर दूसरे दिन भी यही चिन्ता उन्हें घेर लती ।

शाबान के नेतृत्व में ग्रब्दुल रहमान मीर भी इन बातों से ग्रछूता न रहा । ग्राये दिन किसी न किसी लड़की के चक्कर में पड़ता ग्रौर उसको बुक करा के ही दम लेता । उसकी इस मनमानी पर खतजी ने कभी गौर ही नहीं किया ग्रौर यदि कभी कोई उसके कानों में यह बातें डाल भी देता तो वह केवल यह शब्द "बड़े लोगों के बड़े ही शुगल भी होते हैं" कह कर टाल देती । वह सदा ग्रपनी बेटी की प्रसन्नता चाहती थी । चाहे वह किसी भी तरह की क्यों न हो । परन्तु इसके विपरीत सुन्दरी को ग्रपने पति की यह हरकत बिल्कुल पसन्द न थी, बल्कि वह ग्रन्दर ही ग्रन्दर कुढ़ती रहती थी । वह नहीं चाहती थी कि उसका पति उससे दूर रहे । क्योंकि जीवन के कटु ग्रौर मधुर क्षण उन्होंने इकट्ठे बिताये थे । जब रहमान जेल में था तो कैसे उसने उसकी याद में वह दिन बिताए । ग्रौर जब वह बड़ा ग्रादमी बन बैठा तो क्यों वह पर स्त्रियों के चँगुल में फँसने लगा । उसे याद ग्राया, "कितना वफादार था वह, कभी किसी स्त्री की ग्रोर ग्राँखें नहीं उठा सकता था । हमेशा मुझे चाहता था । ग्रपने बच्चों की देखभाल करता था । उस निर्धनता में भी हम धनी थे । पर ग्रब मुझे क्या मिला ? कुछ भी नहीं । सब कुछ होते हुये भी मेरा जीवन सूना है । कैसे वह इन कई वर्षों में बदल गया, उसकी तो काया ही बदल गई । पहले वह कभी घर से लापता न होता था, पर ग्रब उसका मुंह ईद के चाँद जैसा हो गया है । वह सोचता होगा कि उसने मुझे इज्ज़त दी, ग्राबरु दी, धन-दौलत दी, पर उसे मैं कैसे समझाऊँ कि मैं इन सबके होते हुये उसे गंवाना नहीं चाहती । उसके प्रेम को ग्रपने हृदय में छिपा कर मैंने दुःखी दिन भी प्रसन्नता से काट दिये । ठीक है कि मेरे पास बच्चे हैं, घर बार है, सब कुछ है, पर क्या एक नारी के लिए यह सब काफी है । मुझसे ग्रच्छी तो वह लौंडी है जिसे ले जाकर वह घूमता फिरता है । ग्रम्मा इन बातों को क्या समझे । वह तो समझती है कि बहुत काम होने के कारण ही वह ग्रपने घर नहीं ग्रा पाता ।

परन्तु वह मुझे इन बातों से धोखा नहीं दे सकता। आखिर मैंने भी तो अपने गुप्तचरों (C.I.D.) को उसके पीछे लगा रखा है। अब मैं खामोश नहीं रह सकती। आखिर चुप रहने की भी तो कोई हद होती है।" यही बातें सोचते-सोचते उसके दिन बीतने लगे। वह चाहती थी कि वह अपने दिल की बातों को पति पर व्यक्त करे, पर रहमान की छाया भी आज कल उससे दूर थी। इसलिए वह किसी पर अपनी बात व्यक्त न करती और आये दिन षडयन्त्र रचाने में ही अपना समय व्यतीत करने लगी थी।

एक दिन सुबहानजू प्रातः रहमान के घर चला आया। सबसे पहले वह खतजी के पास जाकर बोला—

"अम्मा जी, मीरसाहब कुछ और दिन घर नहीं आ सकेंगे। उन्होंने मुझे यह खबर आप तक पहुँचाने के लिए यहाँ भेजा है।"

"वह आज कल कहाँ हैं ?"

"वह पहलगाँव में हैं। रात-रात भर सरकारी काम करना पड़ता है उन्हें। आज कल उनकी नींद भी हराम हो गई है।"

"न जाने क्यों वह इतना काम करते हैं। अपनी सेहत ठीक रहेगी तो सरकारी काम भी हो पायेगा। उनसे कह देना कि अपने शरीर का ध्यान रखें, और हाँ तुम भी ख्याल रखना कि उन्हें अच्छा खाना मिल रहा है या नहीं। दिमाग़ी काम के साथ तो वैसा ही खाना भी होना चाहिये।" यह कह कर खतजी अपने बेटे की आयु के लिए प्रार्थना करने लगी और बोली—

"सुबहाना, उनसे कह देना कि ज्यों उनका काम समाप्त होगा, उसी क्षण वह अपने घर चले आयें।"

"खाने-पीने की वहाँ कमी नहीं है अम्मा जी, परन्तु काम दिन रात करना पड़ता है उन्हें। अच्छा मालकिन मैं, अब चलता हूँ, मुझे वहाँ शीघ्र पहुँचना है।"

सुबहानजू रहमान साहब का ड्राइवर था। उसका इनके घर में काफी आना जाना था। घर के सब भेद उसे पता थे, और उन्हीं भेदों के सहारे वह खूब पैसे जमा करने में सफल रहा था। वह सुन्दरी को रहमान के सब भेद बता देता और उससे अपनी एक-एक बात की उचित फीस माँग लेता था। उस पर सुन्दरी को काफी नाज़ था। उसके साथ वह अपने दिल की बातें करने

में हिचकचाती न थी। सुबहानजू ने सुन्दरी का काफी पैसा हड़प लिया था, इसलिए वह उसका काम ईमानदारी से करता था। उसी ने रहमान के बारे में सुन्दरी के दिल में शक के बीज बो दिए थे। और वह शक अब यकीन में बदल गया था। वह सुन्दरी को रहमान के नये गुलछरों के बारे में कह कर अपनी ईमानदारी का सबूत देता था। नये-नये किस्सों को सुन कर सुन्दरी को बहुत दुःख पहुँच रहा था।

इधर रहमान भी सुबहान को अपने खास आदमियों में गिन रहा था। उसे अपने भेद बता देता था। जो कोई इन्तजाम करवाना होता वह सुबहान के जिम्मे ही होता था। इस तरह वह दोनों के बीच में रह कर अपने जीवन को सुखी बना रहा था। उसकी बात इसको और इसकी बात उसको कह कर वह उनका हितैषी बन बैठा था। उसकी इस मक्कारी को कोई जान नहीं पाया था।

रहमान अपने मित्रों की संगति में रहकर रहे सहे राह पर से डगमगा गया। उसके पैर उन मित्रों ने सही रास्ते से उखाड़ दिए। इन्हीं मित्रों के कहने पर रहमान सुन्दरी के प्रति उदासीन हो गया। उन्होंने सुन्दरी के अवगुणों के ढेर लगा दिए और उसके लिए सुन्दर सी, सर्वांग सुन्दरी, गुणों से सम्पन्न, युवती का इन्तजाम किया। यह कह नहीं सकते कि वह युवती वास्तव में सब गुणों से सम्पन्न थी, परन्तु रहमान की नजरों में वह एक दम समा गई। उसके दिलो दिमाग़ पर वह छा गई। उसीके कारण उसकी नींद हराम होगई। उसकी इस हालत पर उसके मन्त्री तथा मित्रों की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा औरयथा राजा तथा प्रजा की सी बात होने लगी।

रहमान ने अपना सर्वस्व उसके कदमों पर लुटा दिया। वह उस परम सुन्दरी को लेकर पहलगाँव चला गया। एक दिन के बदले एक सप्ताह बीत गया, दो सप्ताह बीत गये, पर रहमान वहाँ से वापस लौटना नहीं चाहता था। वह हसीना के संग गुलछर्रे उड़ाने में मस्त था। उसे उसके सामने सारा संसार भूल सा हो गया। उसकी एक-एक बात पर वह झूमने लगा, उसकी हर अदा पर वह कुर्बान होने लगा, उसकी चाल पर वह मतवाला बन बैठा, उसकी शोखी पर वह नाच उठा। वह उसे अपना सब कुछ दे चुका। वह उसी में खो गया। लोग समझने लगे कि मीर साहब आज कल अपने काम में और भी

व्यस्त रहने लगे, कि उन्हें अपने घर जाने का भी अवसर नहीं मिल रहा था।

जब हसीना ने देखा कि उसके सब दाव पेच रहमान पर ठीक पड़ रहे हैं तो वह मन ही मन फूल रही थी। एक दिन वह दोनों लिटर नदी के किनारे बैठे बातें कर रहे थे, कि वह पूछ बैठी—

"क्यों मीर साहब बेगम की याद तो नहीं सताती ?"

"बेगम, कौन बेगम ? सुन्दरी ?"

"हाँ, हाँ वही बेगम, और कौन बेगम।" यह कहकर उसने अपने मोती जैसे दांत दिखा दिये।

"उसकी याद तो अब मुझे कभी नहीं आती। हसीना, खुदा की कसम, तुमने न जाने क्या जादू कर दिया है मुझ पर।"

"मगर पहले तो आप उसी के गीत गाते थे।"

"उसके गीत मैंने कभी नहीं गाये। समझो यूँ ही दिन बिता रहा था। उसमें क्या है ? कुछ भी नहीं। जब अम्मा ने छोटी आयु में मेरा व्याह किया तो मैं इन्कार भी नहीं कर सका।"

"आप के साथ तो आप ही जैसा साथी होना चाहिए जो आपकी देखभाल करे। आपके सुख-दुःख में शरीक हो, आपके काम में हाथ बटा सके, आपके कंधे से कंधा मिला सके, और आप ही के संग मैदान में उतर आये। उस गंवार को तो अपना घर भी संभालना नहीं आता होगा, फिर भला आपकी देख-रेख क्या खाक करेगी।"

"छोड़ो उसकी बातें। मेरे दिल में उसके लिए अब कोई स्थान नहीं है। दुनिया की रीत निभाहने के लिए वह वहीं ठीक है। सच पूछो तो अब मुझे घर जाना भी अच्छा नहीं लगता है। मैं सुन्दरी की छाया से भी भागता हूँ। जब कभी घर जाता भी हूँ तो केवल अम्मा के ही कारण।"

"तो फिर आप हमारे ही घर में क्यों नहीं रहते ?"

"आधी-आधी रात तुम्हारे पास ही तो गुजार देता हूँ। लोगों के मुंह बन्द करने के लिये अपने घर भी तो जाना पड़ता है।"

"जब आप घर चले जाते हैं तो मुझे बहुत बुरा लगता है। परन्तु सोचती हूं कि मुझ से अधिक रखवाली आपको देश की करनी है। यही सोचकर चुप हो जाती हूँ अन्यथा आप को एक पल लिए दूर न जाने दूं।" हसीना

की बातों में अनोखा जादू था और यही जादू उसकी आत्मा की चोरी कर रहा था।

"जब मैं तुम से दूर होता हूँ तो मेरा दिल किसी काम में नहीं लगता। मुझे ऐसा लगने लगता है कि हम वर्षों से बिछड़ गये हैं। जब तुम मेरे पास होती हो तो मैं दुगुना काम कर सकता हूँ।" यह कहकर रहमान जरा रुक कर फिर बोला—

"कल श्रीनगर लौटने का तो मुझे बहुत दुःख है।"

"कल ही जाना है ? इतनी जल्दी ?"

रहमान ने देखा हसीना का मुंह उतर गया है, बोला—

"क्या करूँ, मेरे पीछे मेरे मिनिस्टर लगे हैं। इसलिए जाना ही पड़ेगा। दिल करता है कि यह चीफ मिनिस्टरी आदि सब तुम्हारे कदमों पर निछावर कर दूँ और सदा तुम्हारे पास ही रहूँ। जब तक चीफ मिनिस्टर हूँ किसी न किसी तरह काम को तो चलाना ही होगा।"

"मैं चाहती हूँ कि कुछ दिन और यहाँ बिता दूं। आप को काम है तो आप चले जाइये।" हसीना ने मुंह बनाते हुए कहा।

"यह बुरा ख्याल नहीं है। मैं हर शाम को तुम्हारे पास लौट आया करूँगा। काम का काम और अपना भी काम। क्यों, अब खुश हो न ?" रहमान ने हसीना का खिला चेहरा देखा तो उसे बाँहों में भर कर खूब प्यार किया।

रहमान का प्रतिदिन का काम पहलगाँव से आना जाना हो गया। जब कभी मीटिंग या खास काम होता तो सब अफ़सर मिनिस्टर जाकर उस काम को पहलगाँव ही से करा लेते। रहमान के नये प्रेम की कहानी छुपी न रह सकी। बल्कि घर-घर में इस की चर्चा होने लगी। परन्तु इन अफवाहों से रहमान के जीवन पर कोई प्रभाव न पड़ा। इस तरह न केवल एक हसीना बुक हो गई बल्कि कई हसीनाओं की बोली लग गई। सब कर्मचारी, बड़े से लेकर छोटे कर्मचारी तक इन बातों में खूब होशियार होने लगे। जहाँ किसी सुन्दर लड़की पर दृष्टि जाती त्यों उसको फंसाने के षडयन्त्र रचे जाने लगे। जहां कई लोग अपनी बहू-बेटियों-बहिनों का सौदा करते वहाँ वैसे भी लोग थे, जिनके मुंह पर शराफत का पर्दा पड़ा था। जिनकी आंखों में दया की झलक थी, जिन की रगों में खून था जो इस तरह की बुराई को देख नहीं सकते थे। उनका

खून उबल उठता था। जो इन झमेलों में फंसने से बच कर रहना चाहते थे। जो अपनी मजबूरी पर या अपनी संतान को जहर खिलाते थे या स्वयं ज़हर खाते थे। वह इस दलदल से बचने का बहुत प्रयत्न करते थे।

रहमान कई महीनों से घर नहीं लौटा। इस बीच में वह एक आध बार अपनी माँ से मिलने अवश्य आया था, पर अपने काम की अधिकता और झूठ, सच कह कर घर में रहने से साफ़ इन्कार कर देता था। अम्मा कभी उसे शक की दृष्टि से नहीं देखती थी। वह सदा उस की इज्जत, सेहत, आबरु को बनाये रखने की प्रार्थना करती रहती। उसे अपने होनहार बेटे पर गर्व था। उसी ने उन के कुल के नाम को रोशन किया था। सदियों के लिये उस ने अपने कुल को उठा लिया था। आज रहमान के सब संबन्धी अच्छे अच्छे पदों पर थे। सब धन दौलत में खेल रहे थे और उन को चाहिये भी क्या था।

परन्तु सुन्दरी ईर्ष्यावश अन्दर ही अन्दर जल रही थी। वह यह नहीं चाहती थी कि कोई उस की सौत बन कर सर्वस्व लूट ले। उस के पति को छीन ले। यह बात उस ने अपनी सास पर प्रगट भी की पर उस ने उस की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि सुन्दरी को उल्टा बुरा भला सुनना पड़ता—

"न जाने तेरे दिमाग में यह कैसे बैठ गया कि वह पर स्त्रियों के संग ऐश उड़ाता है। कितनी बार तुम से कहा कि उस का काम ही ऐसा है जहाँ उसे घर को क्या, स्वयं को भी भुलाना पड़ता है।"

"मगर मौसी अम्मा, पहले भी तो काफ़ी काम रहता था उसे। पर अब घर से लापता रहने की जरूरत कैसे पड़ी ?"

"मगर यह जरूरी नहीं है कि वह किसी के चंगुल में फंसा हो।"

"अम्मा, मुझे पूरा पता है कि उस का चालचलन अब काफी खराब हो गया है। पहले क्या कभी मैंने ऐसी बात कही थी।" सुन्दरी का मुँह तमतमाया हुआ था।

"जा के सुधारती क्यों नहीं उस का चाल-चलन, बड़ी आई है चाल-चलन वाली। पहले बात नहीं करती थी, अब मुंह लगती है। औरतों के साथ ऐश उड़ाता है तो ठीक करता है। मगर तू क्यों जलती है। तुझे पता नहीं बड़े लोगों के शुगुल।" खतजी का मुंह क्रोध से जल रहा था। उस का उत्तर

सुन कर सुन्दरी का रहा सहा सहारा भी टूट गया। उसे लगा कि वह कहीं गिर रही है। पर घायल नागिन की तरह उस ने फन फैलाये और गुस्से में कह गई—

"तुम्हीं ने उस को सिर पर चढ़ा रखा है। तुम ने ही उसे खराब किया है। तुम्हीं ने उसे बर्बाद किया है। परन्तु क्या तुम्हें मालूम नहीं उस की इन हठखेलियों का क्या नतीजा होगा ?" यह कहते कहते वह रुक गई।

"क्या होगा नतीजा, तेरा सर। खबरदार अगर कभी मेरे बेटे को बुरा कहा तो मैं तेरी जबान खींच लूँगी। मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करुँगी।" यह कह कर वह वहाँ से चली गई।

सुन्दरी जितना रो सकी, रोई।' उस ने फैसला किया कि जैसे हो सके वह पहलगाँव जा कर अपने पति से मिल लेगी और सच्ची बातें जान कर अपने दिल का बोझ हल्का करेगी।

दूसरे ही दिन घर में बहाना कर के वह पहलगाँव चली गई। उस ने सुबहान की बीवी नूरी को अपने साथ ले लिया। शाम के लगभग सात बजे पहलगाँव पहुँच गई। और सीधी अपने बंगले पर पहुँची।

वहाँ पहुँचते ही उस ने किसी स्त्री को बागीचे में टहलते हुये देखा। सुन्दरी का दिल बैठा जा रहा था। उस का रहा सहा साहस भी टूट रहा था। परन्तु वह हिम्मत हारने वाली स्त्री न थी, उस ने अपने दिल में फैसला करने की ही ठान ली।

ज्यों ही सुन्दरी की कार द्वार पर आ कर रुकी त्यों ही सब माली, नौकर उस ओर दौड़ते हुये चले गये। सब बेगम साहब को पहचानते थे। सुन्दरी की नजर हसीना पर पड़ी, जो कि सुन्दर हल्के गुलाबी रँग की बारीक साड़ी पहने थी। उस के बाल खुले थे, जो हवा से हिल रहे थे। सुन्दरी ने देखा हसीना बहुत सुन्दर है। गोरी, बड़ी बड़ी आँखें, गोल चेहरा, हल्की नाजुक खंजन जैसे, पतले पतले गुलाबी होंठ, हसीना कुछ पढ़ने में व्यस्त थी, और सुन्दरी के आने से वह बिल्कुल हिली डुली तक नहीं। उस की इस गुस्ताखी पर सुन्दरी के बदन में आग लग गई। वह चाहती थी कि वह इस स्त्री को घसीट कर बाहर कर दे, परन्तु नौकरों के सामने उस ने मौन रहना ही ठीक समझा। उस ने अपना सामान एक कमरे में डलवा दिया। और वह स्वयं

रसोई में चली गई। उस को देख कर नौकरों ने अदब से अपने हुक्के को एक ओर कर दिया और एक नौकर बोला—

"बेगम साहिबा, चाय तैयार है। मैं अभी लेकर आता हूं, आप चलिए।"

"चाय तो मैं पी लूँगी, मगर तुम मुझे यह बताओ कि बाहर बगीचे में वह औरत कौन है ?"

"वह हसीना मेमसाहब हैं।"

"हसीना मेमसाहब कौन ? यहाँ कब से रह रही हैं ?"

"इसे यहाँ रहते काफी अरसा (समय) हो गया है।"

"शादी शुदा है या नहीं ?" सुन्दरी धीरे से पूछ रही थी।

"जी हाँ।"

"मीर साहब के साथ काफी दोस्ती है इसकी।"

इस बात पर सब नौकर चुप हो गए। सुन्दरी बहुत उतावली हो रही थी। जेब में से सौ का नोट निकाल कर नौकर के हाथ में थमा दिया और उसे बोलने पर मजबूर कर दिया।

"जी हाँ बेगम साहिबा, साहब के साथ बिल्कुल हिल मिल गई हैं। साहब रोज शाम को यहाँ आ जाते हैं। अगर हम मेमसाहब की आज्ञा का पालन न करेंगे तो हमें नौकरी से निकालने की धमकी दी गई है।"

"क्या इस स्त्री के बिना भी और कोई औरत यहाँ आती है ?"

"वैसे तो यहाँ कई स्त्रियाँ पहले भी आ चुकी हैं। पर इस स्त्री पर मीरसाहब दिलोजान से फिदा हैं। इसका खावन्द कई बार इसे लेने आया था, पर मीरसाहब ने उसे यहाँ दोबारा आने के लिए मना किया है।"

"क्या इसके खाविन्द को यह बात खलती नहीं है ?"

हाल ही में वह बहुत बड़ा अफसर बन बैठा। उसे और क्या चाहिए। पैसा ही तो दुनिया में सब कुछ है।"

सुन्दरी सब बातें जान गई। उसने चाय पी ली, परन्तु आज चाय में स्वाद ही नहीं आया। वह कमरे की खिड़की से हसीना को देखने लगी। उसे उस पर घृणा होती गई। आखिर उससे न रहा गया, अपनी दाई नूरी को साथ ले जाकर वह भी बगीचे की ओर गई। वह हसीना के पास की एक कुर्सी पर

बैठ गई। हसीना ने अपनी पलकें पुस्तक से उठा लीं और सुन्दरी को सलाम किया।

"आप कौन हैं ? मैं आपको जानती नहीं हूँ ?" सुन्दरी ने अपने क्रोध को दवा कर पूछा—

"पहले आप बताइये कि आप कौन हैं ?" हसीना ने अनजान बनते हुये कहा।

"मैं मीरसाहब की बेगम हूँ। अब तो समझ गई होंगी मैं कौन हूँ।" सुन्दरी का मुंह क्रोध से लाल हो रहा था।

"ओ...तो आप हैं बेगम साहिबा, बहुत खुशी हुई आप से मिल कर।" हसीना ने हल्की हँसी हँस दी। इससे सुन्दरी के दिल पर हथौड़ा सा पड़ा। इस बात ने आग पर घी का काम किया, बोली—

"तुम्हारा यहाँ क्या काम है। क्या अपना घर नहीं है ?"

"पहले बोलने की तमीज़ सीख लो।" हसीना ने गम्भीर होकर कहा।

"शर्म नहीं आती तुम्हें इस तरह बोलते। अपने घर को तो आग लगा ही दी है, और अब मेरा घर बर्बाद करने पर तुली हो। बेहया कहीं की। तुझे तो कहीं डूब मरना चाहिये।" सुन्दरी का क्रोध आपे से बाहर हो गया। यह देख कर हसीना का भी पारा चढ़ गया, बोली—

"मुझे समझाने से तो अच्छा यही था कि अपने खाविन्द को समझा लेतीं। उनके सामने एक भी नहीं चलती, अब मुझ पर रोब जमाने आई हो। मुझे इस रोब का कोई असर नहीं होगा। मैं तुम्हारे कहने पर मीरसाहब को नहीं छोड़ सकती। जाओ, जाकर जो मर्जी हैं करो, मैं किसी से नहीं दबती।" यह कहते-कहते उसका बदन काँप उठा, और वह अपने कमरे में जाकर लेट गई।

सुन्दरी के ऊपर आकाश गिर पड़ा। उसे रहमान पर बहुत गुस्सा आया। क्यों वह परस्त्रियों के चंगुल में फंस गया। अपने पति के कारण ही तो उसे आज लज्जित होना पड़ा। पर होनी को कौन टाल सकता है। सुन्दरी नूरी आया के पास आँसू बहा रही थी, और नूरी उसे दिलासा दे रही थी।

रहमान रात के दस बजे वापस लौट आया और आते ही नौकरों से

हसीना का हाल चाल पूछ लिया। परन्तु आज का हाल चाल ठीक नहीं था। मेमसाहब ने आज खाना नहीं खाया था, चाय नहीं पी थी। रहमान को डर लगा कि कहीं हसीना बीमार तो नहीं। बिना कुछ कहे सुने वह हसीना के पास चला गया। हसीना बिस्तर पर पड़ी रो रही थी। रहमान उसके सिरहाने बैठ गया और पूछने लगा—

"हसीना क्या बात है ? तबीयत तो ठीक है ?" रहमान ने बड़ी उत्सुकता से पूछा। हसीना चुप हो गई, परन्तु रहमान को हसीना की खामोशी खल गई, बोला—

"बोलती क्यों नहीं हो हसीना, तुम्हारे चुप रहने से मुझे न जाने क्या होता है ? क्या किसी नौकर ने गुस्ताखी की है ? मैं उसका सिर काट दूंगा।" हसीना मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। उसने अपना सिर हिला कर इन्कार किया।

"फिर क्या बात है ?"

हसीना रोने लगी और अपने मुंह को रहमान की गोद में छुपा लिया। रहमान कुछ भी न समझ सका। वह नीचे झुक गया और बोला—

"तुम रोती क्यों हो हसीना, क्या मिस्टर महमूद यहाँ आया था ?"

"नहीं, वह यहाँ नहीं आया, पर अब मैं अधिक अपमान को नहीं सह सकती।" हसीना के मुंह पर आँसुओं की झड़ी लग गई थी।

"किसने तुम्हें अपमानित करने की गुस्ताखी की, उसे मैं जीता नहीं छोड़ूँगा।" रहमान का शरीर गुस्से से काँप रहा था।

"आपकी बीवी ने मेरी बेहद बेइज्ज़ती की है।

"मेरी बीवी ! क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"आपकी बेगम ने मुझे बुरा-भला कहा और सब नौकरों के सामने मेरा अपमान किया।"

"क्या सुन्दरी यहाँ आई थी ?"

"थी नहीं, अभी यहीं है।" हसीना ने अपने आँसू पोंछते हुये कहा।

"तुमने मुझे पहले ही क्यों नहीं बताया। उस कमबख्त की इतनी हिम्मत। मैं उसे अभी तुम्हारे सामने ही बेइज्ज़त करके इस घर से निकालता हूँ।" रहमान क्रोध से जल रहा था। वह सुन्दरी को घर से निकालने पर उतारु हो गया। वह उसे अब पराई समझने लगा था। जिसके साथ उसने जीवन की यात्रा करने का प्रण किया था, उसे उसने पानी के बंबर में ही डुबो दिया। उसे उसके नाम से चिढ़ थी, उसकी सूरत से घृणा हो गई थी, उसकी हर बात उसे खल रही थी। परन्तु हसीना इस नाटक को नहीं रचाना चाहती थी। वह रहमान को अपने इर्द-गिर्द ही रखना चाहती थी। वह सुन्दरी को दिखाना चाहती थी कि कैसे रहमान उसके कदमों पर मर मिट रहा था। जिस स्त्री ने उसे अपमानित किया था, उसी स्त्री को वह नीचा दिखाना चाहती थी। जरा मुस्करा कर बोली—

"अरे कहाँ जाएगा इस समय। दिन भर काम से थक कर अब आपको आराम की ज़रूरत है। कल उससे निबट लीजिए। यह गंवार औरतें काम को को क्या समझें।"

"नहीं डार्लिंग, मुझे जाने दो, उसकी यह जुर्रत कि तुमको अपमानित करे और वह भी यहाँ आकर। अब तो पीछा भी करने लगी है। वह अवश्य अम्मा को कहे बगैर यहाँ आई होगी।" रहमान का क्रोध दुःख में बदल रहा था।

"छोड़िए उसको, पड़ी रहने दीजिये आज रात, कहाँ जाएगी रात के इस समय।" हसीना ने अपने अच्छे स्वभाव का परिचय दिया।

"जो जैसा काम करता है, उसे वैसी ही सज़ा भी मिलनी चाहिए। बेशक उसे रास्ते पर ही क्यों न सोना पड़े।"

"देखिए मेरी कसम, छोड़िए न उस गंवार की बात, कुछ अपनी भी तो कहिए।" हसीना ने रोष भरे स्वर में मनाते हुए कहा। रहमान इस आग्रह को टाल न सका। दोनों खूब हँसने लगे। खाना और शराब वहीं आ गया। दोनों ने खाया, पिया, पिलाया और शराब की मस्ती में मदमस्त दो प्राणियों ने रात बिताई।

सुन्दरी यह सब दूसरे कमरे में कान लगा कर सुन रही थी। कैसे दोनों कहकहे लगा रहे थे। हर एक कहकहा उसके दिल को नोच रहा था। उसका रहा सहा साहस भी टूट गया। उसका शरीर क्रोध की ज्वाला में जल रहा था। उसकी रग रग में ज़हर भर गया, जिसे उगलने के लिए वह वेताब थी। वह उतावली हो रही थी। उसने सब देख भी लिया और सुन भी लिया। अब यह एक झूठ भी सच्चाई बन गया था, जिसको उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। उसे रहमान के परिवर्तन पर दुःख हुआ। उसे आश्चर्य हुआ जो इतना सीधा-सादा था, जिसने कभी किसी को बुरी दृष्टि से देखा नहीं था, जो सदा सुन्दरी के साथ शरमाते हुए बात करता था उस रहमान का राक्षस रूप कहाँ छिपा था। यह तृष्णा कहाँ दबी थी, जो कि उच्च पदवी को प्राप्त करते ही फूट पड़ी। उसके सब साथियों की यही दशा हो गई थी, जो उससे भी गए गुज़रे थे। जो वेहया थे, जिन्होंने हया का पर्दा उतार कर फेंक दिया था, जो हया, शर्म के नाम से भी चिढ़ते थे।

सुन्दरी उस रात को सो न सकी। वह रात करवटें बदल-बदलकर बीत गई। रात भर वह रहमान और हसीना की बातें सुनती रही और सोचती रही। जिस सुन्दर वातावरण से मनुष्य को जीने का संदेश मिलता है वही सुन्दर वातावरण आज सुन्दरी के लिए निराशा का संदेश दे रहा था। आज सारा पहलगाँव चाँद की धवल चाँदनी में जैसे धुला जा रहा था। एक-एक चट्टान पर चाँदनी छिटक रही थी। कितना मनोहर दृश्य था। पर सुन्दरी को आज चाँद में जलन सी महसूस हो रही थी। जो नदी कल-कल की ध्वनि से पहलगाँव में चार चाँद लगा रही थी, वही लिदर नदी आज सुन्दरी के लिए मौत का संदेश दे रही थी। उसे सब जलता सा दिखाई दिया। आज यह गाँव उसके लिए रेगिस्तान या श्मशान से भी बुरा लग रहा था। यह पवन, यह महक आज उसे तीर की तरह चुभ रही थी। उसने निश्चय किया कि सुबह सवेरे उठते ही वह रहमान को खरी खोटी सुनायेगी।

सुन्दरी दूसरे दिन और दिनों से भी जल्दी उठ गई। यह रहमान के उठने के लिए बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा करने लगी। उससे चाय न पी गई। वह कई बार नौकरों से पूछ बैठी।

"जरा देखो तो साहब की नींद खुली या नहीं ?"

"कई बार देख चुका हूँ, अभी वह सो ही रहे हैं।"

"वह नहीं जागी अभी ?" सुन्दरी ने हसीना के बारे में पूछा।

"जी नहीं, दोनों साथ ही साथ उठते हैं।"

सुन्दरी का काफी समय प्रतीक्षा में बीत गया। परन्तु रहमान के जागने के चिन्ह नजर न आये। आज रविवार होने के कारण वह घोड़े बेचकर सो रहा था। सुन्दरी के दिल में दर्द शुरु हुआ, उसकी बेचैनी बढ़ने लगी, उसका दिल धड़कने लगा, वह हताश हो गई। कई बार पूछने पर उसे कोरा इन्कार मिला। उसने दिल में निश्चय किया कि वह रहमान के कमरे में जाकर दोनों के रंग में भँग करेगी। बेशक उसे लज्जित ही क्यों न होना पड़े, पर वह उन के भी लज्जित करके ही दम लेगी। उसने साहस बटोरा और वह उनके कमरे की ओर गई। परन्तु उनके कमरे के बाहर एक संतरी खड़ा था जो कमरे का पहरा दे रहा था। सुन्दरी को आते देखकर बोला—

"आप को कहाँ जाना है बेगम साहिबा ?"

"अन्दर साहब हैं न, उन से जरा मिलना है।" सुन्दरी ने अपनी इच्छा प्रगट की।

"जी नहीं, आप वहाँ नहीं जा सकती। साहब का आर्डर है कि अन्दर किसी को न जाने दें। और फ़िर वह तो सो रहे हैं।"

"क्या मुझे भी अन्दर जाने की आज्ञा नहीं है ?"

"जी नहीं।" संतरी ने छोटा सा उतर दिया।

सुन्दरी निराश अपने कमरे की ओर लौट गई। घड़ी में सुबह के पूरे साड़े ग्यारह बज चुके थे। जब उसकी दृष्टि उस पर पड़ी तो उसके मुंह से अनायास ही निकल गया, "क्या यही लोग इस देश के सरताज हैं ? खुदावन्द, अब तू ही रहम कर।" कुछ देर और प्रतीक्षा के उपरान्त उसे पता चला कि रहमान और हसीना दोनों कहीं बाहर घूमने चले गये हैं। उस समाचार को पाते ही उसकी आंखों से आँसू आ गए, पर वह अपने हृदय की व्यथा को किस पर व्यक्त करती। उसका हृदय फट गया, उसे उस के हाल पर नूरी के अतिरिक्त दिलासा देने वाला और कोई न था। उसका बदन टूट रहा था, उसका सब

कुछ लुट गया था, सब कुछ छिन गया था। वह उठी, अपना सामान बंधवाया और घर की राह ली। अब उसके लिए पहलगाँव में एक पल बिताना भी कठिन हो गया।

घर पहुँचते ही नूरी ने अपने दिल का बोझ हल्का किया। जो उसके मन में आया बक गई। मुहल्ले-मुहल्ले में जाकर अपने आंखों देखे चित्र का बखान करने से चूकी नहीं। सुन्दरी की रही सही आबरु भी समाप्त हो गई। रहमान और हसीना की प्रेम कहानी गली-गली, घर-घर में फैल गई। आये दिन होटलों, काफी हाऊसों, क्लबों, दुकानों, टैक्सी स्टेंडों और ताँगा अड्डों पर इसी बात की चर्चा होने लगी। यह बात आग की तरह फैल गई। पर इस से रहमान हसीना के और भी निकट आ गया। जब पर्दा हट गया तो उसे छुपाने के लिए नकली नकाब की कोई आवश्यकता न रही।

नजमा और नारायण को श्रीनगर पहुँचे बीस दिन हो गये। नजमा, अपने घर में, और नारायण अपने घर में चले गये। नजमा के आने से खवाजा साहब के घर में फिर से रौनक लौट आई। खूजा नजमा के दर्द-गिर्द रहने लगे। वह उस से यूरुप के बारे में पूछते, वहाँ के रहन-सहन के बारे में सुन कर उन्हें खूब मजा आ रहा था। नये-नये क़िस्सों से नजमा उनका दिल बहला रही थी। पहले कई दिन नजमा को अपने सगे सम्बंधियों के आने जाने में लगे कभी उसे किसी के घर जाना पढ़ता या कभी वह उन्हें। अपने घर बुला लेती थी। जैंना आजकल बहुत प्रसन्न दीख रही थी। वह नजमा को प्रसन्न रखने के लिए सदा यत्न कर रही थी। क्योंकि नजमा की प्रसन्नता उसकी प्रसन्नता थी। वह नजमा के पास घंटों बैठी रहती और दुनिया के उस कोने के किस्से सुनने में व्यस्त रहती। नजमा को मोटी ताजी स्वस्थ देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। जैंना नजमा को बुरी नजर से बचाने के लिये उसके सिर के ऊपर लाल मिर्चों को उतार कर जला देती। उसे पूरा भरोसा था कि इस इलाज से वह कभी कमजोर नहीं होगी और न कभी उसे इस घर को फिर छोड़ने की लालसा ही होगी।

एक दिन नजमा अपने पलंग पर लेटी थी। उसके नेत्रों ने सोने से इन्कार कर दिया। उसका मस्तिष्क चक्कर काट रहा था। वह अपने विचारों में खो गई। उसके हृदय में धड़कन थी, इन्हीं बातों को वह सोचने में मग्न थी

कि उसकी दृष्टि जैना पर गई, जो उसके सिर से लाल मिर्चीं को उतार रही थी। नजमा ने बत्ती जलाई ग्रौर बोली—

"यह क्या करने लग गई ग्रम्मा ? मैं तो डर गई ।"

"यह मिर्चें हैं बेटी, सोचा कहीं तुझे नजर न लग जाये। ग्रब तेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा।"

"ग्रभी तक तुम इन बातों को भूली नहीं हो। दुनियाँ बदल गई, पर तुम तो वैसे ही जैसे ही तुम मेरे बचपन में थीं। कितने ग्रच्छे थे वह दिन, न कोई ग़म था, न कोई दुःख था, न कोई परेशानी ही थी। केवल एक खेलना था, वह भी जब दिल करता था तो खेल लेते थे।"

"तुम्हें क्या दुःख है। मुझे लगता है कि बिल्कुल वैसी ही हो, जैसे लड़कपन में थीं। तुम्हें खेलने से कौन मना करता है।" इस बात से नजमा कुछ गम्भीर हो गई। थोड़ी देर चुप रहने के उपरान्त बोली—

"ग्रम्मा, बैठ जाग्रो न, इस तरह खड़े-खड़े थक जाग्रोगी।" नजमा ने बड़े प्रेम से कहा। जैना उसके पलंग पर बैठ गई।

"लो रजाई को ग्रपने घुटनों पर डाल दो, बाहर बहुत ठंड है।" नजमा ने कहा ।

"सर्दियाँ भी कट गईं, ग्राधी बहार भी बीत गई, पर कमबख्त वारिश ग्रभी भी हमारा पीछा नहीं छोड़ती। वर्षा थम जाती तो मौसम भी ठीक हो जाता। क्यों, उस मुल्क का मौसम ग्राजकल कैसा है ?"

"वह देश सदा ठंडा रहता है। गर्मियों में बहुत सुन्दर मौसम होता है। ग्रभी कश्मीर की तरह ही ठंड है वहाँ।"

इधर उधर की बातों के उपरान्त जैना ग्रपनी बात पर ग्रा गई। बोली—

"क्यों बेटी, ग्रब शादी करने पर तैयार हो न ?" जैना ने बड़ी सरलता से पूछा। इस बात से नजमा का दिल धड़क उठा, ग्रपने पर काबू रख कर बोली—

"इतनी जल्दी क्या है ग्रम्मा ?" नजमा के मुंह से निकला ग्रौर वह मन ही मन इस बात पर पछताने लगी।

"अब नहीं तो फिर कब करोगी बेटी। क्या अभी पढ़ाई बाकी रह गई है ? तुमने वादा किया था न कि लौटते ही शादी करोगी ?" जैना ने नजमा को प्यार कहा।

"तो अम्मा फिर जैसा तुम कहोगी मैं कर लूंगी, बड़ों के सामने बोल थोड़ा ही सकती हूँ।" नजमा ने बड़े शान्त स्वभाव से कहा।

जैना यह सुन कर खिल खिला उठी और उठ फर नजमा को गले से लगा लिया और उस के सर को चूमते हुए बोली। "जीती रहो बेटी मुझे तुम से यही उम्मीद थी। अच्छा हुआ विलायत से बड़ों की बात मानना तो सीख आई हो, मैं अभी जा कर ख्वाजा साहब से कहती हूँ।" यह कहती हुई जैना ख्वाजा साहब के कमरे की ओर दौड़ी।

ख्वाजा साहब कमरे में बैठे हुक्का पी रहे थे, जैना को दौड़ी दौड़ी आते देख कर बोले—"क्या बात है, आज तो खुशी से फूली नहीं समा रही हो ? कहीं शाह कारुन का खजाना तो नहीं मिल गया ?"

"खजाना ही समझ लो जी, यह कोई खजाने से कम तो नहीं है।" जैना ने उत्तर दिया।

"तो बताओ क्या बात है ?" ख्वाजा साहब बात सुनने के लिये उतावले हो रहे थे।

"तो सुनो—आप के मुँह में शक्कर। मेरी नजमा शादी के लिये मान गई है।" जैना ने हाँफते हाँफते कहा।

"सच—फिर तो तुम्हें भी मुबारक हो, यह तुम ने बहुत बड़ा काम किया जो मैं नहीं कर सकता था। तो लड़का देखें अच्छा सा।" खूजा बोले।

"अजी वाह ! यह भी कोई मुश्किल काम है, लड़का तो मेरी आँखों में है और फिर कौन सा ऐसा लड़का होगा जिसे हमारी नजमा से ब्याह करना मन्जूर नहीं होगा।" जैना ने उच्छलते हुए कहा।

"तो कौन सा लड़का है तुम्हारी आंखों में ?" खूजा ने पूछा।

"अजी आप नहीं जानते, अपने रशीद को, गुलाम हसन वकील का लड़का। इसी साल वह भी वकालत कर के आया है। माशा अल्लहा जवान है, खूबसूरत है। किस चीज की कमी है रशीद में और फिर नेक है। उसे तो मेरी नजमा भी ज़रूर पसन्द करेगी।" जैना ने कहा।

"बात तो ठीक है, मुझे तो उसका ध्यान ही नहीं था ।" खूजा बोले ।

"भला आप को कभी ऐसी बातों का ध्यान रहता भी है । आप को तो बस हुक्का चाहिये या फिर मेरी जरुरत पड़ती है ।" जैना ने आंखें मटकाते हुए कहा ।

"तो करो बात पक्की, गुलाम हसन से मिलो ।"

"समझो कि हो गई ।" जैना चमक कर बोली ।

दूसरे ही दिन जैना शेख गुलाम हसन एडवोकेट के घर गई और रिश्ते की बात छेड़ी । शेख साहब और उन की पत्नी तो जैसे पहले ही तैयार बैठ थे । यह सुनते ही उन के चेहरे पर रौनक आ गई । बोले—

नजमा तो हमारी अपनी बेटी है । हमारी तो खुद ख्वाइश थी कि रशीद का रिश्ता नजमा से कर दें । यह भी इस साल एल० एल० बी० कर के आया है और वह भी विलायत से तालीम हासिल कर के आई है । मुझे तो सुन कर खुशी हुई है । मेरी तरफ से ख्वाजा साहब से कह दो कि बात पक्की है, नजमा आज से हमारी बेटी है ।"

यह सुनते ही जैना खुशी से झूम उठी और अपने घर लौट आई । घर आकर उसने यह सूचना खूजा साहब को आकर दी तो वह भी मारे खुशी के लोटपोट हो गये । जैना को अपने सीने से लगाते हुए बोले—"आज तुमने अपना फर्ज अदा किया है जैना । मैं तुम से बहुत खुश हूँ ।"

रिश्ते की बात जब नजमा तक पहुंची तो वह अचम्भे में रह गई कि यह रशीद इन लोगों ने कहाँ से ढूढ़ निकाला । वह तो वाकई बहुत अच्छा और लायक लड़का है । नजमा का मन मारे खुशी के अंगड़ाईयां लेने लगा । लेकिन वह मौन ही रही ।

नजमा का रिश्ता हो गया, व्याह की तारीख पक्की हो गई और कुछ ही दिनों बाद नजमा की शादी रशीद से हो गई और वह अपने ससुराल चली गई ।

श्रीनगर लौटने पर नारायण के लिये बड़े बड़े घरों से रिश्ते आने शुरु हो गये। बड़ी माँ सब को दिलासा दे देती कि लेख संयोग की बात है यदि मेरे बेटे के संयोग आप की बेटी के साथ हुए तो अवश्य रिश्ता हो जायेगा। जरा हम लोग घर में सलाह कर लें।

कई रिश्ते देखते देखते आखिर नारायण को डा० बदरी नाथ दर की लड़की पसन्द आई। घर में सलाह मश्विरे हुए और नारायण का रिश्ता डा० बदरी नाथ की लड़की रीता से कर दिया गया। रीता बहुत सुन्दर लड़की थी। उसका सुडोल बदन, नीली और नशीली आंखें, सुनहरे बाल, अच्छा कद, यह सब इस प्रकार हसीन थे कि सारी कायनात उस पर निछावर थी। वह चलती तो मानों देखने वाले के मन को ठोंके से लगते थे। हंसती तो मानों चन्द्रमा नीचे को झुक आता और उसकी हंसी की दाद देता।

नारायण के भाग ही खुलने वाली बात थी कि जिसे रीता सी सुन्दर सुशील और पढ़ी लिखी लड़की मिल गई थी और उधर रीता की भी यही दशा थी। नारायण भी सुन्दरता में किसी प्रकार कम न था। विलायत पास था। गोया आपस में अच्छा जोड़ा मिल गया था।

शादी की तारीख पक्की हो गई।

संसार के हाव भाव उतार चढ़ाव और बदलते रूख देख कर बड़ी माँ और घर के सब सदस्यों ने शीला और विष्णु के ब्याह की सहर्ष अनुमति दे दी। आय दिन शादी की चर्चा होने लगी। सुषमा के ब्याह के बाद आज इस घर में फिर से तुम्बकनारी (ढोल) की आवाज आने लगी। दोनों भाईयों के ब्याह एक साथ ही हो रहे थे। नारायण और विष्णु दोनों ही प्रसन्न थे। कितने वर्ष बीत गये जब इस घर में स्त्रियों ने तुम्बकनारी बजाई थी, जैसे युग बदल गये। इस दौर में उन के बनाये हुये स्वप्न टूट गये थे, उन की इज्जत गई थी। उन के बच्चे हाथ से गये थे। पर आज का यह प्रस्ताव सब के लिए फिर से आशा लेकर आया था, इस को ठुकराने की हिम्मत अब किसी में न रही थी। उन का नशा, मस्ती, अहं चूर-चूर कर खाक में मिल गया था। जो लोग उन्हें जूता साफ करने के लिये ठीक लगते थे, वही आज उन के सरताज बन

वैठे थे। आज उन के सामने यह स्वयं को हीन, तुच्छ समझते थे। लक्ष्मी ने करवट बदल ली थी। अब वह गरीबों के पास चली गई थी।

सब ने शीला और रीता को अच्छी तरह देखा था। जो सर्वगुण सम्पन्न नारियाँ थीं। उन के नेत्रों में लज्जा का काजल पड़ा था। उन की चाल ढाल हँसनी जैसी थी। उन के मुँह में मोती थे जो हँसने के समय बिखर जाते थे। उन की एक एक बात से सभ्यता फूट पड़ती थी। उन के गुण लोग गाते गाते थकते नहीं थे। वह स्वर्ग से उतरी हुई देव सुन्दरियाँ थीं, जिन का दामन धरती के कीचड़ में भीगा नहीं था। वह क्लबों सोसाइटियों में जाकर भी अकेली ही रहना चाहती थीं। वह सदा सुन्दर स्वप्न देखती थीं। जो बात उन्हें अपने वचपन में खटकती थी, उस कमी को वह दूर करना चाहती थीं, सब के लिये, गरीबों के लिये। गरीबों की अज्ञानता और अमीरों का नकली ठाठ देख कर उन के हृदय में दर्द उठता था। वह यह महसूस करती थीं कि ताकत के नशे में मनुष्य कैसे विवेक को खो वैठता है।

शीला ने विवाह के दिन बहुत निकट आ रहे थे। ऐसी कोई वस्तु न थी जो उसे देने के लिए मँगवाई न गई हो। आज मोती अपने दिल के अरमान निकाल रहा था। वह सब को दिखाना चाहता था कि मोतीलाल वही व्यक्ति है जिसे देखकर लोग नाक मुंह चिढ़ाते थे, और उसे बुरा भला कहने में नहीं हिचकिचाते थे। परन्तु वह जमाना अब बदल गया था, वह युग बीत गया था। आज वह अपनी शान, आन और ठाठ के सामने सब को तुच्छ समझता था। वड़ा हाकिम होने के नाते लोग उसके आगे अपना शशि झुका देते थे और जब उन्हें अवसर मिलता तो बूट पालिश करने से भी न चूकते। यहाँ तक कि कई लोग उसके जूते पर अपना सिर भी रगड़ चुके थे। लोगों की इस हालत पर उसे अपने ऊपर गर्व सा हो जाता था और वह ठहाके की हँसी हँस कर उस व्यक्ति का रहा सहा साहस भी छीन लेता था।

आज न केवल मोतीलाल शीला के विवाह की तैयारियाँ कर रहा था, बल्कि रहमान भी खूब दिलचस्पी ले रहा था। शीला को वह अपनी बहिन समझता था। उसे देख कर वह अपने चालू जीवन को एक दम भूल सा जाता था, और उसके साथ वह बिल्कुल पहली तरह ही बोलता हँसता था। वह प्रायः शीला को प्रतिदिन ही मिलता था। शीला भी रहमान को अपना भाई ही समझती

थी। वह उसे भी कई बातों के बारे में कहकर सतर्क करती थी, जिसे रहमान हँसी में टाल देता था। हसीना और रहमान की बढ़ती हुई मित्रता के बारे में सुन कर शीला को बड़ा दुःख हुआ था। इसके बारे में वह रहमान से साफ कह चुकी थी, परन्तु रहमान ने इधर-उधर की कह कर यह बात छेड़ने से टालना ही ठीक समझा। शीला रहमान का हित चाहती थी, उसे किसी तरह भी वह दुःखी नहीं देखना चाहती थी।

आज रायसाहब के घर खूब चहल पहल थी। नारायण की बारात शहर में ही डा० बदरीनाथ दर के घर जानी थी। घर में शादयाने बज रहे थे तुम्बकनारी ने समा बाँध रखा था आज तो शशि के व्याह की रही सही कसर भी निकल रही थी। बच्चों के शोर ने घर को सर पर उठा रखा था। हर तरफ़ से यही आवाजें आ रहीं थी आज नारायण भईया की शादी है।

बारात की तैयारी हो रही थी। बारात के समय रहमान, मोती, शाबान और दूसरे मंत्री सभी उपस्थित थे। आखिर मोती के साले की शादी भी। शशि और सुष्मा मारे खुशी के पागल हो रही थीं। वह बार-बार बढ़ी माँ से कहतीं, "आज कसर निकाल लो, पोते का व्याह है न। फिर दूसरे पोते की भी बारी है।"

बारात डा० बदरीनाथ दर के दरवाजे पर पहुँच गई। वहाँ भी जमने चरागाँ था। लाल पीले और हरे बर्की कमकमे तमतमा रहे थे। हर तरफ रोशनी ही रोशनी थी। लाऊड स्पीकर की आवाज ने आसमान सर पर उठा

रखा था। आने वाली बारात के स्वागत में शुभ गानों के रिकार्ड लगे हुए थे।

बारात खाना खाने के बाद फेरे आदि हुए और दूसरे दिन नारायण डोली में रीता को लेकर घर आ गया। दहेज मे रीता को बहुत कुछ मिला था। किस चीज की कमी थी रीता के दहेज में। आखिर होती भी क्यों। डा० बदरीनाथ दर की लड़की थी। डा० साहब ने इतनी बड़ी कमाई में से पहली लड़की ब्याही थी।

नारायण को इस दहेज की कोई परवाह न थी। वह तो इसी में मस्त था कि उसे एक चाँद सा टुकड़ा मिल गया था, एक अनमोल हीरा मिल गया था और वह भी लाखों में से एक रीता।

सुहाग रात की तैयारियाँ शुरू हो गई।

बड़ी माँ के घर में आज खूब गहमा-गहम थी। सुष्मा, जवाहर और उस के दोनों बच्चे इस शुभ अवसर पर आकर घर की शोभा बढ़ा रहे थे। दोनों बच्चों अरुण और भरत को देखकर ननिहाल वालों सें प्रसन्नता छा गई थी। दोनों बच्चे सुन्दर तथा प्यारे थे। उनके खेलने के लिये हर तरह के खिलौने मँगवाये गये थे। भरत, अरुण से छोटा था इसलिये खाने पीने और घूमने के अतिरिक्त उसे कोई वस्तु भाती न थी। उनकी बातों से घर के लोगों का मनोरंजन हो रहा था। सब बीते हुए दुःख को भूल से गए थे। जवाहर और सुष्मा देहली से अपनी कार में ठाठ से आए थे। जवाहर की सुन्दरता तथा गुणों को देखकर बड़ी माँ सब से अधिक उसी को चाहती थी और यह कहने में नहीं हिचकिचाती थीं कि—

"असलस त कमीनस चल्पनो खस्लत, कावस क्रेहन्यर चल्पनों ज़ाहं।" (मतलब यह कि असली और नकली की परख सदा उसकी बोल चाल तथा उठने बैठने से होती है।) यदि कौवे को हजार बार भी साबुन से नहलाया जाये तो भी उसका काला रंग जा नहीं सकता है। बड़ी माँ को विश्वास था कि जवाहर बड़े तथा ऊँचे घर से है। इसीलिए वह इतना गुणवान, सभ्य, मधुर भाषी और होनहार है। जवाहर आजकल उन्हीं के घर में रह रहा था।

हसीना कई महीनों के उपरान्त आज अपने घर लौट आई। घर में नौकरों के बगैर और कोई न था। यह बंगला बहुत बड़ा तथा सुन्दर था। इस में सुविधा के अनुसार हर तरह की चीजें थीं। जब से हसीना और रहमान का आपस में परिचय हुआ था, तब से उन दोनों ने छोटे मकान को छोड़कर इस सुन्दर भवन में प्रवेश किया था। हसीना और रहमान की घनिष्ठ मित्रता के कारण इस घर का हुलिया बदल गया था। अब हसीना का पति एक मामूली कर्मचारी न रह कर डाइरेक्टर बन गया था। अब वह न केवल महमूद था बल्कि जनाब महमूदअली बन गया था। उसकी बढ़ती को देखकर किसी को साहस न था कि कुछ कहे। उसे हसीना के हुसन ने महमूद के जीवन में चार चाँद लगा दिये थे। उसकी सुन्दरता के बारे में हर जगह चर्चा होती थी, जिससे रहमान भी अछूता न रह सका। हसीना का अभी कोई बच्चा न हुआ था। ब्याह हुये तीन वर्ष हो चुके थे। वह इसी दौरान में इतनी प्रसिद्ध हो गई कि उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था। उसने एम० ए० पास किया था। शादी से पहले वह एक कालेज में लड़कियों को पढ़ाती थी। परन्तु शादी के होते ही वह सभा सोसाइटियों, क्लबों में इतना जाने लगी कि उसे अपनी नौकरी से हाथ ही धोना पड़ा। मिस्टर महमूद उसके बिना कहीं नहीं जाता था। जब लोग हसीना की बढ़ाई करते तो उसे बेहद खुशी होती थी। अपने स्वार्थ के लिए उसने हसीना को खुले मैदान में उतरने पर उत्साहित किया। उसे कई तरह के

प्रलोभन दिए। पहले पहल हसीना यूँ खुले मैदान में आने से काफी हिचकिचाती थी, पर जब उसे पता चला कि उसकी सुन्दरता के सैंकड़ों पुजारी हैं तो उसका दिल भी ललचा गया। चीफ मिनिस्टर उस पर अपना सर्वस्व लुटा चुका था, इस बात पर हसीना को बहुत गर्व था। इससे बढ़कर उसे और क्या चाहिए था। जिस वस्तु की फरमाइश वह करती थी, वह उसे मिल जाती थी। चाहे उसके लाने में कइयों को कठिनाइयों का सामना ही क्यों न करना पड़े। पहले-पहल मिस्टर महमूद की तरक्की तक ही उसकी माँग सीमित रही, पर जब उस ने देखा कि रहमान साहब उन पर मर-मिट रहा है तो क्यों न वह उसी की प्रिया बन बैठे। महमूद ने हसीना की जान पहचान रहमान से करवाई थी, इसलिये बदले में उसे उच्च पद मिलना स्वाभाविक ही था। अब हसीना महसूस कर रही थी कि महमूद का उन दोनों के बीच में होने का कोई हक नहीं है। वह यह जानती थी कि उसके पति ने अपनी बढ़ती के लिए उसे अच्छी खासा टूल बना दिया था। हसीना अब महमूद से बेहद घृणा करने लगी थी और आजकल उसकी आँखों में केवल रहमान समा गया था, वह उस पर, उसके धन दौलत, उसकी इज्जत तथा ताकत पर दिलो जान से फिदा थी।

जब वह कई महीनों के उपरान्त घर लौट आई तो उसे घर अपना न लगा। उसे लगा कि यह घर कभी उसका न रहा होगा। उसे स्वयं अचम्भा भी हुआ और आश्चर्य भी कि क्या वास्तव में वह इन महीनों में इतनी बदल गई है। आज उसे महमूद से घृणा है, उसकी वस्तुओं से घृणा है, उसके इस घर से घृणा है। आज वह घर उसके लिये बेगाना था, पराया था, जिस घर को सुन्दर बनाने के लिए उसने स्वयं को बेच डाला था, जिस घर के सुन्दर स्वप्नों में वह लीन हो जाती थी। उसे याद आया जब महमूद ने उसे इस घर को सजाने के स्वप्न दिखलाये थे, उसे प्रलोभन दिए थे, उसे आग में कूदने के लिए मजबूर किया था।

डार्लिंग, तुम्हारा इसमें क्या बिगड़ेगा। जब हमारे पास पैसे होंगे तो सब हम से डरेंगे, इज्जत करेंगे। हमारे घर में ऐसी चीजें होंगी, जिनको देख कर लोगों का दिल ललचा जायेगा। यदि तुम रहमान की ओर जरा हँस दो तो डार्लिंग तुम रानी बन जाओगी, तुम्हारी कस्म।"

इस तरह की बातों से हसीना के पाँव डगमगा गये और वह गिरते-

गिरते गहरे काफी गहरे कुंए में गिर गई। वहाँ से स्वयं चाहते हुए भी वह निकल न पाई। जब उसे इस खंदक से बाहर निकलने का कोई चिन्ह नजर नहीं आया तो उसे इस सियाह चाह का अंधेरापन ही बाहर रोशनी से अधिक प्रिय लगने लगा। जब मनुष्य एक बार डूब जाए तो उसके लिये कम गहराई या अधिक गहराई कोई महत्व नहीं रखती है। यही हाल हसीना का भी हो गया। जिस सीढ़ी के सहारे वह किसी हद तक पहुँच पाई थी, उस सीढ़ी की अब उसे कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं हो रही थी, वह अब मंजिल को पहुँच गई थी। अब महमूद उसके लिए एक बड़ा रोड़ा था जिसको अपनी राह से हटाने का उसने पक्का फैसला किया था। उसको देखकर उसके नौकरों ने अदब से सलाम किया। हसीना ने पूछा—

"साहब कहाँ हैं ?"

"जब से आप पहलगाँव चली गईं, तब से साहब शाम को अक्सर देर से ही आते हैं। उनको आप के लौटने की कोई इत्तला नहीं थी, वर्ना वह आप को लाने के लिए कार अवश्य भेज देते।"

"मेरे यहाँ आने का प्रोग्राम अचानक ही बन गया।"

"आप बहुत थक गई होंगी। क्या आप के लिए चाय लाऊँ ?"

"पहले मैं नहाऊँगी, फिर मेरे लिए चाय कमरे में ही ले आना। और हाँ, देखना बाथरूम (Bathroom) में पानी गर्म है या नहीं ?" हसीना ने सीढ़ी पर चढ़ते हुए कहा—

वह अपने कमरे में चली गई और अपने लिए नई साड़ी और बलौज़ (Blouse) उठा लिया और नहाने के लिए चली गई। नहा लेने के बाद वह सजधज कर अपने कमरे में चली गई, नौकर चाय लेकर आ गया। उसे आज चाय में कोई स्वाद नहीं आया। आज कई। महीनों के उपरान्त उसे अकेली चाय पीनी पड़ रही थी। उसका दिल अकेले में ऊब गया। वह अपने मन में पहलगांव के सुन्दर दिनों के बारे में सोचने लगी। कितने प्रिय थे वह दिन। तीन साढ़े तीन महीने यूँ बीते जैसे तीन दिन हों। उसके मन में मधुर दर्द सा उठा जिसे वह अपने मन में ही छुपाना चाहती थी। उसे यह घर काटने को दौड़ रहा था और वह चाहती थी कि रहमान के अवगुण भी उसे गुण ही

प्रतीत होने लगे। उसकी दृष्टि में वह सुन्दर था, बुद्धिमान, था। उसकी एक बात को वह मन में दुहरा रही थी। रहमान ने कहा था—

"हसीना, अब मैं तुम से पलभर के लिए भी अलग नहीं रह सकता। मैं चाहता हूँ कि हमारे बीच में महमूद की दीवार सदा के लिए टूट जाए। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे तलाक का बन्दोबस्त कर दूँगा ताकि हम दोनों की शादी हो जाए। क्यों क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

"मीर साहब, क्या आप मुझे इतना चाहते हैं ?" हसीना ने रहमान के दिल की बात जानने के लिए पूछा

"हसीना, तुम मुझे सिर्फ रहमान कहा करो। तुम्हारे मुंह से मीर साहब सुनना मुझे बहुत खलता है। मैं तुम्हारे प्रेम का भिखारी हूँ हसीना, मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे कदमों में है।" इस बात से हसीना को इतनी प्रसन्नता हुई कि उसे लगा वह धरती पर नहीं आकाश में उड़ रही है। उसे हुकूमत का नशा छा गया। उसे लगा कि वह रहमान के दिल की रानी बन बैठी है। तब उस के मुंह से अनायास निकल पड़ा था—

"रहमान, मैं तुम्हें बेहद चाहती हूं। मेरे दिल में तुम्हारे बिना और कोई नहीं है। मैं तुम्हारी हूँ, सदा तुम्हारी। मैं अब महमूद के पास एक पल भी काटना नहीं चाहती।" यह सुनते ही रहमान मतवालों की तरह झूम उठा। उस ने एक खजाना पा लिया था। एक अनमोल रत्न पा लिया जिसे वह किसी भी सूरत में गंवाना नहीं चाहता था। उस ने हसीना को अपनी बाँहों में कस लिया, उस के गले को चूमते हुये धीरे से बोला—

"मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत है। मेरा गम, मेरी परेशानी, मेरा दुःख और मेरे जीवन का सूनापन सिर्फ तुम्हें देख कर दूर होता है। तुम मेरी हमसफर हो, तुम्हारे बगैर जिन्दगी गुजारनी मेरे लिये बहुत कठिन है। अब मैं समझने लगा हूं कि आदमी के लिये एक अच्छी बीवी का होना कितना जरूरी है।" रहमान की बात को बीच में ही काट कर हसीना बोली—

"तो क्या आप की बीवी अच्छी नहीं है ?"

"नहीं, तुम्हारे सिवा मेरी और कोई बीवी नहीं है। वह कभी मेरे दुःख दर्द में शरीक नहीं हो सकी। वह दुनियाँ के उतार चढ़ाव से बिल्कुल बेखबर

है। उस से बात करते समय कभी मेरा दिल हल्का नहीं हुआ, बल्कि हमेशा दिल का बोझ बढ़ता था। अब मैं उस की परछाई तक से भी दूर भागता हूँ, तुम यकीन मानो। उसे जो कुछ चाहिये, उसे मिल गया है। मगर मुझे जो चाहिये था, अभी तक मिला नहीं था, पर जब मुझे भी वह अनमोल रत्न मिल गया तो मैं उसे खोना नहीं चाहता हूँ, किसी भी सूरत में मैं उसे खोने पर तैयार नहीं।" रहमान की बात विश्वास से भरी थी।

"अगर महमूद तलाक न दे तो ?"

"तो उस का सर धड़ से अलग होगा। आज तक मैंने केवल तुम्हारी खातिर उसे सर पर चढ़ा रखा था। मगर सर से उतारना भी मैं अच्छी तरह जानता हूँ। यदि उसने किसी भी तरह रोड़ा अटकाया तो उसका नतीजा ठीक नहीं होगा। कल हम श्रीनगर चले जायेंगे, वहाँ मैं सब काम स्वयं निपटा लूंगा। और हाँ, तुम दोनों का अब किसी भी तरह का मिलाप नहीं होगा। क्यों मन्जूर है ?"

"मेरा दिल कल भी वहाँ जाने को नहीं चाहता।" हसीना ने उस की गोद में अपना सिर रखते कहा था।

इन्हीं विचारों को दुहराते दुहराते वह अपने कमरे में टहल रही थी। कितने मधुर स्वप्न थे। वह शीघ्र ही चीफ मिनिस्टर की बीवी बनने जा रही थी। न केवल रहमान उसका दास था, बल्कि सारा कश्मीर उस की जेब में होगा। वह जो चाहेगी करेगी। इन सुन्दर विचारों के आते ही उस के हृदय में गुदगुदी होने लगी। वह मन ही मन हँसने लगी, "मैं सचमुच रानी हूँ ! मैं रानी हूँ।" इतने में उसका नौकर उस के कमरे में आ गया, बोला—

"क्या साहब को आप के आने की खबर दें ?" साहब के नाम से हसीना को चिढ़ थी। अब वह उसका कोई न था, उन दोनों का नाता कागज पर लिखी हुई कई लाईनों के अतिरिक्त और कुछ भी न था, और उन लाईनों का मेल भी सदा के लिये मिट रहा था। महमूद घर आये या बाहर रहे उस के लिये यह बात बिल्कुल महत्व नहीं रखती थी। नौकर से बोली—

"नहीं, नहीं, उन्हें बुलाने की कोई जरूरत नहीं। खुद ही आ जायेंगे।"

"कहीं बाद में साहब नाराज न हों ?" नौकर ने अदब से कहा।

"नहीं तुम, फिक्र मत करो। वह नाराज नहीं होंगे।"

नौकर नीचे चला गया। वह उठ खड़ी हुई, अपनी सूरत सामने ड्रेसिंग टेबल के शीशे में देखने लगी। उसे अपना शरीर आज अति सुन्दर लगा। उस की सुन्दरता निखर आई थी। उस का मुंह चमक रहा था। उस के भरे हुये गालों पर लाली छा रही थी। उसे अपने सुडौल शरीर और सुन्दरता पर गर्व सा हुआ। "ओह कितनी सुन्दर हूँ मैं।" उस के मुंह से एक दम निकल गया। आज उस के शरीर को पाने की बाजी लगाई जा रही थी। जो काफी ऊँचा दाम देगा वह उसी की हो जाने के लिये बेताब थी। हसीना को लगा कि वह स्वयं को धोखा दे रही थी। उस ने गौर से सोचा, कि "क्या मैं रहमान से प्रेम करती हूँ या केवल उसकी धन दौलत, उसकी हकूमत से प्रेम करती हूँ ?" इस प्रश्न का उत्तर देना कितना कठिन था। उसने अपने दिल को मजबूत किया, एक हल्की हँसी हँसी और वह अपने आप ही से बड़बड़ाने लगी—"मैं प्रेम या प्यार की बातों में फँसने या उलझने के लिये तैयार नहीं। यह काम बकवास हैं। प्रेम होता क्या है ? अपने दिल को धोखा देने के लिये प्रेम के राग आलापना अनोखा नहीं तो और क्या है। मुझे महमूद से प्यार नहीं, रहमान से प्रेम नहीं। मगर मैं रहमान के पास रहना पसन्द करती हूँ। क्यों न करूँ ? क्या नहीं है उसके पास। ठीक है मैं उसकी दौलत के पीछे भागी जा रही हूँ। तो इस में मेरा क्या दोष है। इस छोटे से जीवन में यदि आदमी जीवन का लुत्फ(आनन्द) न लूटे तो फिर जिन्दगी है किस काम की। अपने मन की खुशी को पाना पाप तो नहीं है। मैं अपनी सुन्दरता का पूरा फायदा उठा लूंगी, चाहे उस में किसी की हानी ही क्यों न हो। चाहे मेरे रास्ते में कितने ही रोड़े क्यों न आयें।" उस के विचारों ने पल्टा खाया। वह जोर की हँसी हँसने लगी, उस के हँसने से कमरे में अट्ठहास हुआ, वह फिर बड़बड़ाने लगी—

"मैं भी कैसी बातें सोच रही हूँ। मेरी राह में रोड़े क्यों आयेंगे। कौन रहमान के साथ गुस्ताखी कर सकता है ? वह हाकिमों का हाकिम है, मालिकों का मालिक है, फिर भला कोई उसके बारे में कुछ कहने की हिम्मत कैसे करेगा। वह मेरे बारे बुरा-भला सुने, यह कभी नहीं हो सकेगा, कभी नहीं। रहा महमूद, उसे मेरा क्या गम, वह अवश्य तल्लाक देने की बात को टाल

देगा क्योंकि उसका बना बनाया काम बिगड़ जायेगा। मगर अब मैं उसके जाल में नहीं आने वाली। उसे भी याद रहेगा कि किस बीबी से पाला पड़ा था।"
उसकी विचार श्रृंखला टूट गई। उसके सामने महमूद खड़ा था, जो कह रहा था—

"हैलो डार्लिंग, कब आई? हमें पता भी नहीं दिया।" महमूद ने उसे प्यार करते हुए कहा। परन्तु हसीना को आज उसका प्रेम करना साँप के काटने की तरह खटका। उसे झटका सा देती हुई, जैसे स्वप्न से जाग गई हो बोली—

"तुम यहाँ कब आए? मैंने तो आहट भी नहीं सुनी।" हसीना स्वयं को संभालने का प्रयत्न सा करने लगी।

"अभी आप के कदमों पर हाजिर हो गया हूँ। सच पूछो तो तुम्हारे बिना जिन्दगी सूनी सी लग रही थी।" यह कहकर महमूद ने जबरदस्ती हसीना को अपनी बाँहों में कस लिया और बोला—

"खुदा की कस्म, न जाने क्या हुस्न पाया है तुमने। हर दिन तुम्हारी सुन्दरता बढ़ रही है। यूं ही रहमान तुम पर मर नहीं रहा है।" वह हसीना को अपने सीने से लगा रहा था। परन्तु हसीना का क्रोध भड़क उठा, उसका शरीर थर-थर काँप रहा था। उसे आज घृणा हो रही थी, वह भी अपने पति से, जिसके साथ उसने जीवन के कुछ सुन्दर वर्ष बिताये थे। उसने अपने शरीर को उससे छुड़ा लिया। उसका मुंह क्रोध से जल रहा था, बोली—

"महमूद, मुझे यह हरकत बिल्कुल पसन्द नहीं। याद रखना फिर कभी हाथ लगाया तो?"

"ओहो, अपने ही पति को यह धमकी दी जा रही है। भला क्यों? आज तुम्हें हो क्या गया है हसीना?"

"देखो महमूद मुझे यह मजाक बिल्कुल पसन्द नहीं।"

"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। मगर मुझे यह बता दो कि आखिर तुम्हें हो क्या गया है। तुम कैसी बातें कर रही हो।" महमूद ने फिर से उसे छेड़ना शुरू किया—

"मैंने कहा न, मुझे मत छुओ, तुम बाज क्यों नहीं आते।"

"तुम भूल रही हो कि तुम मेरी पत्नी हो। तुम्हारा दिमाग कुछ फिर

सा गया है ।"

"मैं तुम्हारी पत्नी थी, अब नहीं हूं ।" हसीना ने क्रोध में दाँत पीसते हुए कहा ।

"अच्छा तो यह बात है । यह क्यों नहीं कहती कि तुम दोनों ने मिलकर फैसला किया है । मगर याद रखो, मैं भी देख लूंगा कि तुम्हें कौन आजाद करेगा । तुम उस मक्कार के चंगुल में फँस गई हो जिसने तुम्हारी जान पहचान उस लफंगे के साथ करवाई, जो तुम्हारा पति है, उसी के पीछे षड़यन्त्र रचे जाने लगे । लानत है तुम पर, ऐसी बीबी पर, जो पराये की मीठी बातों में फँस जाए ।" महमूद भी आपे से बाहर हो रहा था ।

"खबरदार, जो उसके बारे में कुछ कहा । मैं तुम्हारी जबान खींच लूँगी । शर्म नहीं आती तुम्हें ऐसी बातें करते । शर्म के मारे तो तुम्हें कहीं डूब मरना चाहिए, जिसने अपनी पत्नी को अपने लिए अपनी तरक्की के लिए, अपने उच्च पद के लिए एक टूल (साधन) बनाया । तब कहाँ गई थी तुम्हारी इज्जत । तुमने ही मुझे यह सब करने पर मजबूर किया था, केवल अपने लिए अपनी कुर्सी के लिए । तुम्हें मेरे साथ प्रेम नहीं था, मुझ से मुहब्बत नहीं थी, यह सब मैं जान गई । पर अब मुझे असलीयत का पता चला तो तुम जलते क्यों हो ? अब मैं तुम्हारे पास एक क्षण के लिए भी नहीं रह सकती । रहमान मुझे चाहता है, मुझ से प्रेम करता है, दिलोजान से वह मेरा है और मैं उसकी हूँ । अब तुम्हारी दाल नहीं गलेगी, यही दुःख है न तुम्हें । पर अब पछताने से कुछ भी न होगा, जो होना था हो गया ।"

"इतना अहँकार है तुम्हें अपने ऊपर ? तो सुनो, मैं कभी तुमसे प्रेम नहीं करता था, तुम मेरे प्रेम के काबिल थी ही नहीं । तुम्हारे दिल में खून नहीं पानी है पानी । तुम नागिन हो । मैं तुम्हें जीता नहीं छोड़ूंगा, तुम से बदला लूंगा और तुम्हें उस कमबख्त से मिलने न दूंगा ।" महमूद अभी यह कह ही रहा था कि रहमान ने कमरे का द्वार खटाक से खोला । दोनों की बात थम गई । हसीना के मुंह पर फिर से रंग लौट आया । महमूद उसे देखकर एकदम पीला पड़ गया । काटो तो खून नहीं । उसे अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि रहमान वास्तव में वहाँ खड़ा था । रहमन हसीना के पास बैठ गया और महमूद से बोला—

"तुम्हें हसीना ने सब कुछ बता दिया होगा ?"

इस बात से महमूद का शरीर काँपने लगा। जो मनुष्य अभी क्रोध से जल रहा था, वही अब डर के मारे काँप रहा था। उसे दुःख हुआ कि क्यों हसीना के साथ झगड़ा मोल लिया। अब न जाने वह रहमान से क्या कहेगी। एक तो नौकरी जायेगी, बीवी जायेगी, इज्जत जायेगी और न जाने क्या-क्या होगा। रहमान के उत्तर में उसने केवल यह कह दिया—

"जी हाँ।"

रहमान ने अपनी जेब से एक लम्बा चौड़ा कागज निकाला जो हसीना और महमूद की शादी के निकाह थे। दूसरे कागज पर तलाक की कारवाई की गई थी। सब कुछ हो चुका था, केवल महमूद को उस पर अपने हस्ताक्षर करने थे। रहमान महमूद से बोला—

"तुम इस कागज पर दस्तखत कर दो कि तुम्हें तलाक मंजूर है। इसके बदले में तुम्हारी नौकरी रहेगी, तुम्हारी इज्जत, तुम्हारा रोबदाब सब बरकरार रहेगा। कहो तुम्हें शर्त मंजूर है ?" इस बात पर महमूद चुप हो गया।

"कहो, बोलते क्यों नहीं ? अगर तुमने जरा भी आनाकानी की तो तुम से सब कुछ छीन कर जलील किया जायेगा। तुम से तलाक लेना मेरे लिए दस मिनट का काम है। मैं इस कागज पर किसी और के दस्तखत करवा सकता हूँ, समझे।"

रहमान की इस बात से महमूद को भय हुआ। उसने सोचा कि जब रहमान उसके हस्ताक्षर के बिना ही काम चला लेगा तो फिर उसके बस में तो कुछ भी नहीं है। यह सब सोचकर उसने पैन (Pen) उठा लिया और सदा के लिये अपनी बीवी को न चाहते हुए भी तलाक दे दिया। जिस बीवी को घर की शोभा बढ़ाने के लिए वह डोली में लाया था, उसके मधुर स्वप्नों की राख आज जल रही थी, जिसे बुझाने के लिये उसके पास कोई साधन न था। हसीना की आँखें महमूद से टकरा गईं, जिनमें पानी भरा हुआ था। हसीना का हृदय धड़क रहा था, न जाने क्यों उसका चेहरा फीका पड़ गया। जिसे देखकर उसे चिढ़ हुई थी, उसी से बिछड़ने में यह दुःख कैसा ? यह बात उसकी समझ में न आई। आज उसे हर्ष होना चाहिए था, परन्तु लक्षण कुछ उलटे ही थे। आज उसका मन रो रहा था। क्या वास्तव में वह महमूद से नफरत करती थी ?

इस प्रश्न का उत्तर वह न जान पाई। रहमान की ध्वनि उसके कानों में गई, उसके कान चौकने हो गये।

"सब कुछ हो गया, अब तो तुम खुश हो न?" यह कहकर रहमान ने भेद भरी दृष्टि हसीना पर डाली। इस दृष्टि का सामना वह न कर सकी। उसकी पलकें झुक गईं। रहमान को लगा आज लज्जा के मारे हसीना की पलकें झुक गई हैं। उसे इस अदा में वह और भी प्रिय लग रही थी। उसे प्रसन्नता इस बात की थी कि हसीना अब केवल उसकी थी।

रहमान और हसीना उसी समय वहाँ से सीधे एक सुन्दर भवन में चले गये। हसीना ने अब सदा के लिये अपने पुराने घर को त्याग दिया और अपने नए घर को संभालने में व्यस्त हो गई। यह घर पूरा महल था। यहाँ किसी भी वस्तु की कमी न थी। यह एक अंग्रेज का बंगला था, जिसने इसे एक माह पहले मीरसाहब के हाथों आठ लाख रुपयों में बेचा था। यह महल झील डल के किनारे पर था।

उसी दिन रात को एक प्रसिद्ध पीर साहब को वहाँ बुला लिया गया। हसीना और रहमान की शादी हो गई। इस तरह हसीना एक जाल से छूटकर दूसरे जाल में फँस गई। वह इस सुन्दर महल में अपने पुराने जीवन को भूल सी गई। वह अपने नये जीवन को चार चाँद लगाने में जुट गई। उसका पति उसका गुलाम था। उसे प्रसन्नता थी कि उसने रहमान को सुन्दरी से सदा के लिए छीन लिया है, जिस सुन्दरी ने एक दिन उसे बुरा भला कहने में कोई कसर न छोड़ी थी। सुन्दरी अपने जीवन के यह दिन आँसू बहाकर बिता रही थी। इस बात से हसीना मन ही मन खिल रही थी। रहमान हसीना को सदा अपने पास ही रखता था। रहमान उसे अपने काम के बारे में सब बातें बता देता था। उससे प्रतिदिन सलाह मशविरा लेता था। इससे हसीना सरकारी कामों में खूब दिलचस्पी लेने लगी थी, और रहमान को बताए बगैर कई तरीकों से पैसा बटोरने में लग गई थी। उसके जीवन का उद्देश्य केवल पैसा बनाना ही बन गया। वह जैसे बन पाता बना लेती।

रहमान के जीवन का दूसरा पृष्ठ भी उलट गया। वह सदा अपनी ऐश उड़ाने में ही मस्त रहने लगा। उसके दिल से वह वायदे मिट गए, जो कभी उस ने जनता से किए थे। उन प्रणों की छाप भी अब उसके मस्तिष्क से मिट गई

थी । उसकी धुन्धली याद से भी वह चिढ़ता था । वह इस जीवन को सार्थक बनाना चाहता था और सदा यही कहता था कि "क्यों न इस जीवन में मौज उड़ा लें, यह जीवन बार बार नहीं मिलेगा।"

फैलते-फैलते रहमान के ब्याह की बात आग की तरह फैल गई । कोई कहता कि हसीना शीघ्र माँ बनने वाली थी, इसीलिए न चाहते हुए भी रहमान को उससे ब्याह करना पड़ा । कोई कहता कि हसीना और रहमान के अनुचित सम्बन्ध थे, इसीलिए महमूद ने उसे तलाक देकर घर से निकाल दिया था । कोई कहता था कि रहमान हसीना को जबरदस्ती उठाकर ले गया था । कईयों का विचार था कि रहमान और हसीना का ब्याह नहीं हुआ है । खैर यह बातें तो होती रहीं । जितने मुंह थे उतनी ही बातों का होना तो स्वाभाविक ही था । मनुष्य का दिमाग बुरी बातों का चित्रण करने में देर नहीं लगाता है । जहाँ सारा जीवन भलाई करते-करते बीत जाता है, वहाँ क्षण भर बुराइयों का ढेर बन जाता है । कहने का अभिप्राय है कि सच्चाई कोई नहीं जानता था और न जानते हुए भी आदमी के दिमाग में जो कुछ आता है कह देता है । इससे शायद उसकी आत्मा को शान्ति मिलती है । क्योंकि वह झूठ ही आदमी के लिए कभी-कभी परम सत्य बन जाता है ।

रहमान की दूसरी शादी की खबर उसके घर तक भी पहुँच ही गई । लोग आकर खतजी को बधाई देने लगे । पहले-पहल उसे इस बात पर भरोसा न हुआ, पर सच्चाई कब तक छुपी रह सकती थी । उसे भी यह बात माननी ही पड़ी । खतजी सुन्दरी के प्रति रहमान की उदासीनता का कुछ और ही मतलब निकाल रही थी। उसको विश्वास था कि इतने बड़े पद को संभालना आसान बात न थी । वह सदा सुन्दरी को ही दोषी ठहराती थी, परन्तु अब जब रहमान ने दूसरा ब्याह किया तो खतजी के हृदय में भी ठेस पहुँची । उसे सुन्दरी के हाल पर कोई दुःख या पश्चाताप न था, पर उसके बेटे ने उससे यह बात जीवन में पहली बार छुपाई थी, यह उसके लिए असह्य बात थी । उसे पता था कि सुन्दरी के पास सब कुछ है । सुन्दरी के चारों बच्चों का लालन-पालन अच्छी तरह हो गया था । उसके दोनों बड़े बेटे नज्या और अमा (नजीर और अहमद) इंगलैंड और अमरीका में ट्रेनिंग ले रहे थे । सब बच्चों की पढ़ाई रहन-सहन ऊँचे दर्जे का हो पाया था । इसलिए सुन्दरी की चिन्ता को वह कोई

इस प्रश्न का उत्तर वह न जान पाई। रहमान की ध्वनि उसके कानों में गई, उसके कान चौकने हो गये।

"सब कुछ हो गया, अब तो तुम खुश हो न?" यह कहकर रहमान ने भेद भरी दृष्टि हसीना पर डाली। इस दृष्टि का सामना वह न कर सकी। उसकी पलकें झुक गईं। रहमान को लगा आज लज्जा के मारे हसीना की पलकें झुक गई हैं। उसे इस अदा में वह और भी प्रिय लग रही थी। उसे प्रसन्नता इस बात की थी कि हसीना अब केवल उसकी थी।

रहमान और हसीना उसी समय वहाँ से सीधे एक सुन्दर भवन में चले गये। हसीना ने अब सदा के लिये अपने पुराने घर को त्याग दिया और अपने नए घर को संभालने में व्यस्त हो गई। यह घर पूरा महल था। यहाँ किसी भी वस्तु की कमी न थी। यह एक अंग्रेज का बंगला था, जिसने इसे एक माह पहले मीरसाहब के हाथों आठ लाख रुपयों में बेचा था। यह महल झील डल के किनारे पर था।

उसी दिन रात को एक प्रसिद्ध पीर साहब को वहाँ बुला लिया गया। हसीना और रहमान की शादी हो गई। इस तरह हसीना एक जाल से छूटकर दूसरे जाल में फँस गई। वह इस सुन्दर महल में अपने पुराने जीवन को भूल सी गई। वह अपने नये जीवन को चार चाँद लगाने में जुट गई। उसका पति उसका गुलाम था। उसे प्रसन्नता थी कि उसने रहमान को सुन्दरी से सदा के लिए छीन लिया है, जिस सुन्दरी ने एक दिन उसे बुरा भला कहने में कोई कसर न छोड़ी थी। सुन्दरी अपने जीवन के यह दिन आँसू बहाकर बिता रही थी। इस बात से हसीना मन ही मन खिल रही थी। रहमान हसीना को सदा अपने पास ही रखता था। रहमान उसे अपने काम के बारे में सब बातें बता देता था। उससे प्रतिदिन सलाह मशविरा लेता था। इससे हसीना सरकारी कामों में खूब दिलचस्पी लेने लगी थी, और रहमान को बताए बगैर कई तरीकों से पैसा बटोरने में लग गई थी। उसके जीवन का उद्देश्य केवल पैसा बनाना ही बन गया। वह जैसे बन पाता बना लेती।

रहमान के जीवन का दूसरा पृष्ठ भी उलट गया। वह सदा अपनी ऐश उड़ाने में ही मस्त रहने लगा। उसके दिल से वह वायदे मिट गए, जो कभी उस ने जनता से किए थे। उन प्रणों की छाप भी अब उसके मस्तिष्क से मिट गई

थी। उसकी धुन्धली याद से भी वह चिढ़ता था। वह इस जीवन को सार्थक बनाना चाहता था और सदा यही कहता था कि "क्यों न इस जीवन में मौज उड़ा लें, यह जीवन बार बार नहीं मिलेगा।"

फैलते-फैलते रहमान के ब्याह की बात आग की तरह फैल गई। कोई कहता कि हसीना शीघ्र माँ बनने वाली थी, इसीलिए न चाहते हुए भी रहमान को उससे ब्याह करना पड़ा। कोई कहता कि हसीना और रहमान के अनुचित सम्बन्ध थे, इसीलिए महमूद ने उसे तलाक देकर घर से निकाल दिया था। कोई कहता था कि रहमान हसीना को जबरदस्ती उठाकर ले गया था। कईयों का विचार था कि रहमान और हसीना का ब्याह नहीं हुआ है। खैर यह बातें तो होती रहीं। जितने मुंह थे उतनी ही बातों का होना तो स्वाभाविक ही था। मनुष्य का दिमाग बुरी बातों का चित्रण करने में देर नहीं लगाता है। जहाँ सारा जीवन भलाई करते-करते बीत जाता है, वहाँ क्षण भर बुराइयों का ढेर बन जाता है। कहने का अभिप्राय है कि सच्चाई कोई नहीं जानता था और न जानते हुए भी आदमी के दिमाग में जो कुछ आता है कह देता है। इससे शायद उसकी आत्मा को शान्ति मिलती है। क्योंकि वह झूठ ही आदमी के लिए कभी-कभी परम सत्य बन जाता है।

रहमान की दूसरी शादी की खबर उसके घर तक भी पहुँच ही गई। लोग आकर खतजी को बधाई देने लगे। पहले-पहल उसे इस बात पर भरोसा न हुआ, पर सच्चाई कब तक छुपी रह सकती थी। उसे भी यह बात माननी ही पड़ी। खतजी सुन्दरी के प्रति रहमान की उदासीनता का कुछ और ही मतलब निकाल रही थी। उसको विश्वास था कि इतने बड़े पद को संभालना आसान बात न थी। वह सदा सुन्दरी को ही दोषी ठहराती थी, परन्तु अब जब रहमान ने दूसरा ब्याह किया तो खतजी के हृदय में भी ठेस पहुँची। उसे सुन्दरी के हाल पर कोई दुःख या पश्चाताप न था, पर उसके बेटे ने उससे यह बात जीवन में पहली बार छुपाई थी, यह उसके लिए असह्य बात थी। उसे पता था कि सुन्दरी के पास सब कुछ है। सुन्दरी के चारों बच्चों का लालन-पालन अच्छी तरह हो गया था। उसके दोनों बड़े बेटे नज्या और अमा (नजीर और अहमद) इंगलैंड और अमरीका में ट्रेनिंग ले रहे थे। सब बच्चों की पढ़ाई रहन-सहन ऊँचे दर्जे का हो पाया था। इसलिए सुन्दरी की चिन्ता को वह कोई

महत्व नहीं दे रही थी। उसे दुःख था कि क्यों रहमान ने उसे अपने दिल के रहस्य नहीं बताए, जबकि वह अपनी माँ के स्वभाव से पूरी तरह परिचित था। दूसरा विवाह करना पाप नहीं था, जो लोग सात-सात बीवियाँ रखते हैं, उन्हें कोई पूछता नहीं था, फिर भला रहमान ने तो केवल दूसरी शादी ही की थी।

एक दिन रहमान अपनी माँ के पास आ गया। खतजी ने अपने मनकी बात उस पर प्रगट करने की ठान ली, बोली—

"क्या यह सच है कि तुम ने दूसरी शादी की है ?" उसने दृढ़ता से यह पूछा। रहमान इस प्रश्न के लिए तैयार न था। उसे आश्चर्य हुआ कि माँ ने यह पूछा क्यों कर।

"आपको किसने बता दिया है ?"

"ऐसी बातें कब तक छुप सकती हैं। मैंने कईयों को इसके बारे में बोलते हुए सुना था।"

"हाँ अम्मा, यह बात बिल्कुल सही है।" रहमान की दृष्टि पृथ्वी पर गढ़ गई थी। उसे पूरा भरोसा था कि खतजी सुन्दरी को बहुत चाहती हैं इस-लिए वह बुरा भला कहने से नहीं हिचकिचायेगी। वह उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

"दूसरी शादी करना पाप नहीं है बेटा, मगर मुझे अफसोस है कि तुमने इस बात को अपनी माँ से भी क्यों छुपा रखा ? यह कहते हुए खतजी के नेत्र भीग गए।

"नहीं अम्मा, ऐसी कोई बात नहीं थी। मुझे डर था कि आप मुझे इस काम पर आशीर्वाद नहीं देंगी।" यह कहकर रहमान अपनी माँ के चरणों पर गिर गया और बोला—

"अम्मा, मुझे माफ कर दो। मैं हसीना को आप के चरणों में हाजिर करूँगा। वह बहुत अच्छी है, समझदार है, पढ़ी लिखी है अम्मा। खुदा ने उसे मेरे काम में हाथ बटाने के लिए ही भेजा है। वह मेरे कंधे से कंधा मिलाकर मेरा काम करती है। वह मेरे दिल और दिमाग की बातों को जानती है।" रहमान ने एक ही साँस में सब कह डाला।

"क्या मैं जान सकती हूँ कि सुन्दरी से क्या भूल हो गई थी जो तुम ने उसे एकदम त्याग दिया। शादी करना पाप नहीं मगर दोनों को बराबर

देखना, प्यार करना तुम्हारा फरज़ (कर्तव्य) है।"

"यह तो मैं जानता हूँ। मगर सुन्दरी को किस चीज की कमी है ? क्या उसका जीवन ग्रानन्द, ग्राराम में नहीं बीत रहा है। रहा मेरा यहाँ रहना, मैं इतने कामों में उलझा रहता हूँ कि यहाँ ग्राने का ग्रवकाश ही नहीं मिलता है मुझे। ग्रम्मा, तुम सुन्दरी को सीधी न समझो। जब मैं पहलगाँव में था तो उसने मेरा पीछा किया। मेरे पीछे कई C. I. D. रखे हैं उसने, यह मुझे पता चल गया। उसने जाकर हसीना को वेइज्जत किया है। यह सब होते हुए भी मैंने उसे माफ कर दिया। वह ग्रौर क्या चाहती है। उसका ग्रौर मेरा साथ बिल्कुल ठीक नहीं बैठता।" यह कहते-कहते रहमान का मुँह लाल हो गया।

"यह सब मैं जानती हूँ। इस वात के लिए वह स्वयं सब कुछ भुगत रही है। सजा देने वाला एक ग्रल्लाह है, ग्रौर वह सजा उसे मिल रही है। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे बीच में किसी भी प्रकार की ग्रनबन हो। तुम समझदार हो, मुझ से ग्रच्छी भले बुरे की परख है, जैसा ठीक समझो वही करो। मेरा ग्राशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है।"

"कल मैं हसीना को ग्राप के पास लेकर ग्राऊँगा।" यह कह वह उठने लगा।

"नहीं बेटा, यहाँ उसका ग्राना ठीक नहीं होगा। मैं जाकर उसे वहीं देख ग्राऊँगी। यहाँ सबको उसका ग्राना बुरा लगेगा। कहाँ रहती है वह ?"

"ग्रपने दूसरे बँगले में।"

"नये वाले में ?"

"हाँ ?"

"खुदा तुम्हें सदा सुखी रखे।" यह कहते हुए वह ग्रपने बेटे के संग बाहर तक गई।

सुन्दरी माँ बेटे की बातों को चोरी-चोरी सुन रही थी। उसे रहमान पर गुस्सा ग्रौर ग्रपने पर दुःख हो रहा था। उनकी दुवायें ग्राहों में बदल गई। जहां सदा वह ग्रपने पति की भलाई के बारे में प्रार्थना किया करती थी, वहाँ ग्रब वह पति के लिए बुरे दिनों की प्रार्थना करने लगी। वह उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी, जब रहमान से यह पदवी छिन जायेगी। वह चाहती थी

कि रहमान को अहंकाररूपी साँप डस ले और उसे दोबारा उठने न दे। परन्तु मनुष्य की इच्छायें अपने बस में नहीं होतीं। यदि इच्छायें अपने बस में होतीं तो शायद सब लोग वह न होते जो हैं।

सुन्दरी अपने दु:खी जीवन को अपने ही दिल में समेट कर बिताने लगी। पहले-पहल वह सब को अपना दुखड़ा सुना देती थी, पर जब लोगों ने इस बात को भी स्वीकार किया तो उसने मौन रहना ही ठीक समझा। उसे हसीना के प्रति ईर्ष्या हो रही थी। वह मन ही मन जल रही थी। उसका हृदय पति के विरुद्ध जहर उगल रहा था। और इसी जहर से वह अपने बच्चों को सींच रही थी। यही एक साधन था उसके पास, जिसका वार वह अपने पति पर करना चाहती थी। वह अपने बच्चों में पिता के विरुद्ध जहर भर रही थी। कब यह जहर बाहर फूट पड़े इसकी प्रतीक्षा वह बेताबी से करने लगी।

शीला ने बहू बनकर रायसाहब के घर में प्रवेश किया। शीला को देखकर सब दुःख तथा क्लेश मिट से गये थे। शीला न केवल सुन्दर थी, बल्कि सुकुमार, गुणवती, तथा लज्जाशील भी थी। यह गुण उन दिनों जैसे लोप ही हो गये। वह इस घर में सब की प्रिय बन बैठी। सब उसके गुणों की चर्चा करते थकते नहीं, और उसकी सब सासें उसे देखकर निहाल हो जाती थी। शीला यह ख्याल रखती थी कि कोई उसे नीच घर की लड़की न कहे। वह ऐसे काम करती थी जिससे घर में सबको हर्ष होता था।

विष्णु के ब्याह के समय रीता और नारायण दोनों ने इस घर की शोभा बढ़ाई। सब बहिन भाई मिलकर प्रसन्न थे। रायसाहब रीता को भी अपनी बेटी की तरह समझते थे और उसका काफी ध्यान रखने लगे। नारायण को अपने पिता के इस व्यवहार पर बहुत प्रसन्नता हो रही थी, और वह उन्हें बहुत मान करता था। रीता भी इस घर में ऐसे हिलमिल गई कि जैसे वह इस घर में बचपन से रहती हो। उसकी सुशीलता की बढ़ाई सब मन ही मन कर रहे थे। जिस दिन शीला इस घर में बहू बन कर आई, उस दिन घर की सब स्त्रियों ने नए कपड़े तथा नए अटहास (सुहाग का चिन्ह) पहन लिए।

शीला के मायके से इतना दहेज आया था कि रायसाहब के घर के सदस्य भी देखकर दंग रह गए। आज मोती ने उसके ब्याह में दिल खोलकर

पैसा व्यय किया था। क्यों न करते, वह तो धन में लोट रहे थे। उनके सामने लाखों रुपयों का उतना ही महत्व था जितना किसी और को सौ रुपये की कीमत हो। मोती के मित्रों तथा रहमान ने अलग-अलग तोहफे शीला को दिए थे। शीला के ब्याह के शीघ्र उपरान्त रहमान तथा मोती उससे मिलने उसके ससुराल चले गए। उस दिन रायसाहब के घर के बाहर काफी भीड़ थी। उन्होंने सड़कें साफ करवाईं थीं। वह रौनक थी, जो शादी वाले दिन थी। दोनों खूब की खातिर हुई। रहमान ने शीला की सास के हाथ में पाँच हजार रुपये मिलनी के तौर पर दिए और बोला—

"शीला मेरी सगी बहिन के बराबर है, इसलिए उसके भाई की तरफ से छोटी सी भेंट को स्वीकार कीजिए।"

"नहीं बेटा, मैं यह आप से नहीं ले सकती हूँ। आप मेरे बेटे के समान हैं। आपके पिताजी रायसाहब के पिताजी के काफी अच्छे मित्र थे। वह कितने नेक पुरुष थे, यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रधान करे।" रहमान ने देखा कि बड़ी माँ सरासर झूठ बोल रही थी। कहाँ मित्र कहाँ मजदूर, खैर उस सत्य से तो यह झूठ मधुर था। उसने सोचा, कि हो न हो यह हकीकत को भूल गए हों और यह लोग मुझ से सम्बन्ध जोड़ने में अपना मान समझते हों। कुछ देर रुक कर बोला—

"नही माँ जी, आज मैं बहिन के ही कारण यहाँ आया हूं। जब फिर कभी आऊँगा तो बेटे की हैसियत से आऊँगा। आप मुझ पर भरोसा रखिये। इस समय आप को यह छोटी सी भेंट लेनी ही होगी।" रहमान की इस बात पर सब हँस दिये और बड़ी माँ को वह पैसे लेने ही पड़े।

"आप की अम्मां जी की तबीयत कैसी है? मैंने उन्हें वर्षों से नहीं देखा है।"

"वह बिल्कुल ठीक हैं, मगर वह घर से बाहर कम ही निकलती हैं।"

रहमान ने देखा, बड़ी माँ के मुंह पर काफी बुढ़ापा छा गया था। उसे वह दिन याद आया जब बड़ी माँ ने आठ आने उस के हाथ में थमा दिये थे और आज वह उन कई आनों के बदले कई हजार रुपये दे रहा था। बड़ी माँ के मुंह पर झुरियाँ पड़ गई थीं और उसका मुंह पीला हो गया था। वह मन

ही मन सोचने लगा, "कि क्या वास्तव में यह बूढ़ी हो गई है या ग़म ने उसे इस हालत पर पहुँचा दिया है। उस दिन इस का मुंह कितना लाल था। उस के पीछे के यह तकिये कितने गन्दे हैं। क्या तब भी यही तकिये थे या मैं भूल गया हूं। नीचे का कालीन घिस गया है मुझे लगता है कि इन की आर्थिक दशा अब ठीक नहीं रही।" बड़ी माँ के पीछे के तकिये और नीचे का कालीन उसे आज भाया नहीं। उस का ध्यान अपनी माँ की ओर गया, जिस का मुंह लाल सेब की तरह चमक रहा था। उसे याद आया कि दोनों की आयु लगभग एक समान होगी परन्तु एक बूढ़ी हो चली थी और दूसरी के मुंह पर यौवन की सी आभा अभी भी स्पष्ट थी। खतजी के बैठने का कालीन इतना मोटा और सुन्दर था कि उस पर चलते आदमी का पाँव चार पाँच इंच नीचे चला जाता था। खतजी के पीछे बड़े बड़े सुन्दर पुलश के पाँव तकिये थे, पर बड़ी माँ के तकिये जीर्ण हो गये थे। वह मन ही मन सोचने लगा कि—

"क्या यह अन्तर पहले भी था या अब हो गया है। शायद मेरी नजरें बदल गई हैं। जिस वस्तु को देख कर बचपन में मुझे ईर्ष्या या जलन हुई थी, वह चीजें आज मुझे भाती नहीं, एकदम पसन्द नहीं आतीं हैं। लगता है कि यह लोग सफेदपोश हैं। तब इस ने आठ आने मेरी तरफ फेंके थे, और आज इस के सामने पाँच हजार रुपये हैं। न जाने मुझे तब ईर्ष्या क्यों हुई थी। अज सब मेरे इर्दगिर्द हाथ जोड़े खड़े हैं। खैर यह सब जमाने का फेर है।" रहमान को यह सोचते सोचते अपने ऊपर गर्व सा हुआ। उसे आज अजीब प्रकार का सुख मिल रहा था। रायसाहब उस के सामने खड़े बड़े अदब तथा नम्रता से बोल रहे थे। आज बड़ी माँ को गर्व था कि बड़ा वजीर (मुख्य मन्त्री) उनके घर आया है। इससे उन की शान अपनी बिरादरी में खूब बढ़ गई।

रहमान और मोतीलाल दोनों वहाँ से अपने घरों की ओर जाने लगे। दोनों मन ही मन संतुष्ट थे। रहमान को प्रसन्नता थी कि कैसे रायसाहब को नीचा दिखाया और मोती सोच रहा था कि उस की बहिन ऐसे वैसे घर से नहीं बल्कि बड़े हाकिमों के घर से थी। जब दोनों भीड़ में से निकल कर कार में बैठ गये तो रहमान बोला—

"इन्हीं लोगों से तब हम डरते थे। आज मुझे इन पर हँसी भी आई और दया भी, परन्तु तुम ने तो असली रत्न ले लिया है इन से।"

"तुम्हारा मतलब शशि से तो नहीं है?"

"हाँ यार, उसी को देख कर मुझे सुन्दरी से घृणा हुई थी।"

"अब तो तुम मौज में हो क्यों?

"हसीना वाकई लाखों में एक औरत है। उसके हुसन ने मुझे पूरी तरह कैद किया है।"

"शीला और शशि को तुम्हारी दूसरी शादी करना बहुत खल गया है। उनका कहना है कि चार बच्चों का बाप होकर तुम्हारे लिये यह कदम उठाना बिल्कुल ठीक नहीं था। मुशा और नज्या दोनों समझदार हैं, उन को बहुत सदमा पहुँचा होगा।"

"शीला ने मुझ से भी यह बात कही थी। पर हसीना को छोड़ना मेरे बस की बात न थी। उसने मुझे पूरी तरह जकड़ लिया था। अब तो माँ भी बनने वाली हैं।"

"तब तो मुबारिक हो तुम्हें। कब तक होगा उसका बच्चा?"

"अभी दो माह बाकी हैं। वह कह रही थी कि बच्चे के नाम अपनी आधी जायदाद लिखवा दूँ।"

"तुम ने क्या कहा?"

"मैं सोचता हूं कि बाकी बच्चे हल्ला करेंगे। हसीना को मैंने यह बात समझा भी दी, पर वह ठहरी जिद्दी, जो कहती है कर के ही दिखलाती है। कल इस बारे में बहुत नाराज हो गई थी। मुझ से उस का गुस्सा देखा नहीं जाता। अब कोई तरकीब निकालनी पड़ेगी, जिस से आधी जायदाद हसीना की हो और बाकी बचे हल्ला भी न करें।"

"मगर यह तो जुरुम है, और फिर वह बच्चे तुम्हारे नहीं हैं क्या?"

"अरे जुरुम वुरुम मैं नहीं जानता। तो क्या जो अब तक हम लोग करते आये हैं, वह सब ठीक था। यदि इन बातों के झमेले में पड़ गये तो फिर कर ली हकूमत। मुझे अपने पर हैरानी है कि पहले मैं कहता क्या था और

अब करता क्या हूं। मुझे लगता है कि मैं वह नहीं हूँ जो सदा लोगों को सच्चाई की कसम दिला कर उनके दिलों को जीत लेता था। परन्तु कहने और करने में काफी अन्तर है। सच पूछो तो दुनिया में क्या सच है? मैंने अपने जीवन में एक बात सीख ली है, वह यह है कि अपने जीवन को जितना मधुर बना सकते हो उतना बना लो। खूब ऐश उड़ाओ, जिन्दगी का लुत्फ उठाओ। यही सच्चाई है बाकी सब झूठ है। इस छोटी सी जिन्दगी को हसीन बनाने में चाहे हमें चोरी ही क्यों न करनी पड़े, डाका ही क्यों न डालना पड़े। जब तक हसीना जवान है, वह मेरी आत्मा को सुख पहुँचा सके, तब तक मैं उसकी हर हरकत को कबूल(स्वीकार)करूँगा। चाहे उस में मुझे कुछ ही क्यों न करना पड़े।"

"मगर रहमान तुम ने यह शादी करके मुसीबत मोल ली है। शादी के बिना भी तुम हजारों हसीनाओं का लुत्फ उठा सकते थे। तुम्हीं सोचो, अब जो कुछ तुम करने लगोगे उससे हमारी कितनी बदनामी होगी। तुम इस बात को भूल रहे हो कि कुछ ही दिनों बाद इलेक्शन हो रहा है। लोगों के मन में हमारे बारे में कितनी बुरी धारणा होगी। और इस हालत में वह अपना वोट हमें क्योंकर देने लगेंगे। तुम्हें यह हरकत इलेक्शन तक कभी नहीं करनी चाहिये। तुम्हारे अपने ही बच्चे विरुद्ध हो जायेंगे।"

"मोती, जो कुछ हो गया सो हो गया। हसीना के बिना मेरा जीवन फीका है। कितनी बुद्धिमान है वह। हसीना और सुन्दरी का कोई मुकाबला नहीं है। उसके लिये चाहे मुझे जान भी क्यों न देनी पड़े, दे सकता हूँ। रही इलेक्शन की बात, लोगों को तरह तरह के चकमे दे कर, पैसे देकर उनको अपनी तरफ कर लिया जायेगा। तुम बेफिक्र रहो, इलेक्शन हमें जीतना है और हम जीत के रहेंगे।"

"तो क्या तुम अपनी जायदाद की वसीयत लिख रहे हो? यार मुझे लगता है कि तुम जल्दबाजी में हो।"

"हसीना मेरे पीछे पड़ी है। हर रोज इसी बात की चर्चा होती है। उस की आँखों में मैं आँसू देख नहीं सकता। तुम शशि को लेकर कभी आते क्यों नहीं?" रहमान ने बात बदल कर कहा।

"आ जाऊँगा, जब कभी समय मिलेगा।" मोती ने बेदिल्ली से कहा—

उसे दुख हुआ कि रहमान हसीना के चंगुल में बुरी तरह फँस गया हैं। खुदा न खास्ता यही उस की मौत का करण न बन जाये। यह सोचते हुए उसका दिल धड़कने लगा वह रहमान को बहुत चाहता था। दोनों ने जीवन की यात्रा को साथ ही साथ तय किया था, दोनों ने सुख, दुःख की घड़ियाँ साथ-साथ बितायी थीं, मनमानी, मस्ती में भी वह एक दूसरे के शरीक थे। आज मोती को लगा कि रहमान की आत्मा की चोरी हो रही है, वह भी एक वैश्या के हाथों।

दोनों अपने-अपने घरों की ओर चले गये। दोनों कुछ सोच रहे थे, एक की चिन्ता प्रगट थी दूसरे की चिन्ता कहीं गहराई में छुपी पड़ी थी, जिसे अनजान वह स्वयं भी न समझ सका।

"क्यों जी, हमारी बात का जवाब सोचा भी है या नहीं ?" विष्णु ने शीला पर मधुर दृष्टि डालते हुए पूछा—

"किस प्रश्न का उत्तर चाहते हैं आप ?" शीला ने अनजान बनते हुए कहा।

"अच्छा तो भूल गई इतनी जल्दी। चलो मैं याद दिलाता हूँ।" यह कहकर उसने शीला की पलकें चूम ली और बोला—

"अब कुछ याद आया या नहीं ?"

"जी हाँ, सब याद आया। आपकी स्मरण शक्ति बहुत तेज है।" शीला ने हँसते हुए कहा—

"क्यों शीला, तुम्हें यह घर कैसा लगा ? यहां के लोग कैसे लगे ?"

"घर बहुत अच्छा है, लोगों से तो मैं पहले ही परिचित थी।"

"वह तो मैं भी जानता हूं, परन्तु इस रूप में तो उन्हें पहली बार ही देख रही हो।" विष्णु ने उसे प्यार करते हुए पूछा।

"मुझे सब लोग पसन्द आये। पिताजी का नेचर (स्वभाव) इतना अच्छा है कि मैंने उन जैसा दूसरा व्यक्ति पहले कभी नहीं देखा। छोटी अम्मा और बड़ी अम्मा दोनों मुझे बहुत चाहती हैं। बड़ी माँ जितनी कठोर बाहर से

दिखाती हैं उतनी ही अन्दर से नम्र हैं। सुष्मा दीदी तो मेरी अपनी बड़ी बहिन के समान है और हाँ शशि बहुत नटखट है।"

"सब तुम्हारे गुण गाते थकते नहीं हैं। बड़ी माँ तुम्हें बहुत चाहती हैं। कल वह मुझे मेरे अच्छे भाग्य पर बधाई दे रही थीं। परन्तु यह तुमने नहीं बताया कि तुम्हारा जीवन साथी कैसा है?" विष्णु के नेत्रों में चंचलपन था।

"जाइये, मुझे नहीं मालूम।" शीला ने कृत्रिम शरारत से कहा।

"कहो, मैं छोड़ूंगा नहीं।" विष्णु ने उसकी कलाई को जोर से पकड़ कर कहा।

"क्या आप सुने बगैर छोड़ेंगे नहीं?"

"नहीं।"

"तो लीजिए।" यह कहकर शीला ने विष्णु के मुंह को चूम लिया और विष्णु ने उसे अपने गले से लगा लिया। विष्णु ने देखा शीला का मुंह लज्जा के मारे लाल हो गया था, बोला—

"धन्यवाद उत्तर मिल गया।"

कुछ देर दोनों प्यार में डूबे रहे, दोनों एक दूसरे में खो गये। अपने पुराने दिनों के गिले, शिकवे दूर होने लगे, जब काफी समय बीत गया तो शीला उठने लगी, बोली —

"मैं अब जाती हूँ, रीता दीदी अकेली होगी।"

"भाभी हमसे भी प्यारी है तुम्हें, मैं अभी नहीं जाने दूंगा। मेरे पास थोड़ी देर और बैठ जाओ।"

"अब तक मैं किसके पास थी।"

"मेरे ही पास थी पर मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकता। तुम्हें मालुम है, यदि तुम किसी भी कारण मेरी बन पातीं तो मेरी जिन्दगी में भारी खाई होती तुम्हें पाना तो बिल्कुल एक खजाना पाने के बराबर है। मैं स्वयं को भाग्यवान समझता हूँ। हर आदमी को अपना जीवन साथी इच्छानुसार नहीं मिलता है। मैंने जो तुम्हें समझा था, तुम उससे भी बढ़कर हो। केवल मैं तुम्हारे गुण नहीं गाता हूँ बल्कि श्रीनगर के सब लोग तुम्हारे गीत गाते हैं। "अपने प्रति यह बातें सुनकर शीला का मुंह प्रसन्नता से खिल उठा।

समय गुजरता गया, रीता गर्भवती थी, आखिर वह दिन भी आया, जब रीता ने सुन्दर से बालक को जन्म दिया। सारे घर में खुशी मनाई गई। डा० बदरीनाथ और उनकी पत्नी बड़ी माँ को पोते के जन्म पर बधाई देने आए। शिशु के आने के कारण सब प्रसन्न थे। सुष्मा को बधाई का तार पहुँच गया। शशि आज दिन भर से पूरी व्यस्त थी। शीला के ऊपर रीता की देख रेख का बोझ था। जब मुन्ने का जन्म हुआ तो बड़ी माँ फूली न समाई।

बड़ी माँ ने बच्चे का नाम संजोग रखा। इस नाम को सुनकर सब बोले—"बहुत अच्छा नाम है। यह वाकई चुना हुआ नाम है।" इसी खुशी में सब लोट पोट हो रहे थे। सबके मुंह खिल रहे थे। इस अवसर पर मिठाइयाँ बांटी गईं और उनके कई सम्बन्धी इस अवसर पर आ-आ कर बधाई देने लगे। जब सब लोग अपने-अपने घरों की ओर चल दिए तो नारायण ने एकान्त में रीता से कहा—

"क्यों कैसा रहा इसका नाम ? मुझे तो बहुत पसन्द है।"

"यह नाम तो मुझे भी बहुत अच्छा लगा, इस का अर्थ ही खूब है।" रीता ने हँसते हुये कहा।

"मतलब जो भी हो, बेटा पक्का हिन्दुस्तानी बनेगा और अपने बाप के नाम को रोशन करेगा। यही मेरी इच्छा है।"

"बाप के नाम को तो रोशन करेगा ही, मगर माँ के नाम का क्या होगा ?" रीता ने मुंह बनाते हुये कहा।

"माँ और बाप के नाम की तो पूरी खिचड़ी पक गई है। इसलिये माँ को अलग और बाप को अलग निकालना बहुत कठिन होगा बेचारे संजोग के लिये।" नारायण की बात से दोनों हँस दिये। इसके उपरान्त दोनों ने मुन्ने को ध्यान से देखा। उस में माता और पिता दोनों के नक्श (Features) मौजूद थे। यह देख कर दोनों प्रसन्न हुये और उसे प्यार करने लगे।

रहमान की दूसरी शादी से उतना आतंक नहीं फैला, जितना उस की आधी जायदाद हसीना और उस के शिशु के नाम पर करने से हुआ। इस बात से उस के घर में शोक फैल गया। सुन्दरी के जिगर की आग शोले बन कर बाहर निकली जिस से वह सारे घर को और बाहर को जला देना चाहती थी। यह बात लोगों के कानों तक पहुँचते देर न लगी। रहमान के दोनों बड़े लड़के विलायत और अमरीका से यह समाचार मिलते ही लौट आये। उन को अपने पिता के प्रति बेहद घृणा हुई और उन्होंने इस दगाबाज़ी का प्रतिशोध लेने का पक्का फैसला किया। उन की माँ उन के साथ थीं, वह अपनी आग से अपने पति को भस्म करना चाहती थी। रहमान की चाल के पीछे हसीना थी और वही सब के रंग को भंग कर रही थी। रहमान के लड़कों ने बाप के विरुद्ध मुकदमा शुरू किया, परन्तु उस से कुछ भी न बन पाया। सब जज, वकील वगैरा रहमान से बहुत डरते थे, इसलिये न्याय होना बहुत कठिन था। यदि उस के बेटों के पक्ष में फैसला किया जाता तो उस जज को अपनी कुर्सी छोड़नी पड़ती और अपने जीवन से हाथ धोना पड़ता था। यही कारण था कि मुकदमे का फैसला न हो कर तारीखों को बढ़ाया गया और इस तरह एक ही घर से पैसा निकल कर दो नदियों में बहने लगा।

रहमान की इस बात पर उस के मन्त्री और दोस्त सब उस से नाराज हो गये। उन्हें हर समय आने वाले इलेक्शन का भय सता रहा था। उन्हें पूरा

विश्वास था कि लोगों का क्रोध रहमान की इस बात पर बहुत बढ़ गया है और इस समय जायदाद का बटवारा आग पर तेल का काम कर गया। उन्हें विश्वास था कि अब उन के मधुर वाक्य या लाठियों का लोगों पर कोई प्रभाव न पड़ेगा। अब लोगों के नेत्र खुल गये थे, उन्हें असली नकली का ज्ञान हो गया था। वह राजा के राज्य में सन्तुष्ट थे। तब निधर्नता अवश्य थी पर यह धांधली, गुण्डागर्दी और चोरबाजारी न थी। तब भी लोग निर्धन थे और अब भी वह वैसे ही थे। केवल इने-गिने लोगों की बढ़ती हो गई थी, जो लाठियों के कारण दिन बिता रहे थे और जो लोगों के सर कूट रहे थे।

जब घर में ही आग लग जाए तो जहान में फैलते देर नहीं लगती है। आज सारी जनता रहमान और उसके दोस्तों पर नाराज थी। उन के अवगुण जो कि लोगों के दिलों में दबे थे, ऊभर आये। उन्हें आज खुले आम मिनिस्टरों पर थूकने का अवसर मिला। उन का क्रोध आपे से बाहर हो गया। उन के दिल रहमान और उसके साथियों को कुचलने के लिये बेताब हो गये। वह मैदान में आकर साफ कहने लगे कि जो आदमी अपनी पत्नी को छोड़ दे, जो बाप अपने बच्चों का गला काट दे, जो आदमी दूसरे की बीवी को छीन ले वह भला हमारा नेता कैसे हो सकता है। जो आदमी स्वार्थी, बेईमान है, जिस को किसी का डर नहीं, खुदा का खौफ नहीं, वह भला प्रजा का कल्याण कैसे कर सकता है। जो स्त्री की सूरत पर मर मिटा, जिस का विवेक खो गया, वह जनता की रक्षा भला कैसे कर सकता है। जिसके राज्य में मनुष्य इन्सानियत को खो बैठा, जिस के दौर में माँ, बाप, भाई, बहिन, पुत्र, बहु सब एक दूसरे के शत्रु बन बैठे, जिस की हकूमत ने लोगों की ईमानदारी समाप्त कर दी, जिस के दौर में लोगों की आत्माओं की चोरी की जाये, भला उसको कौन चाहेगा।

जिन लोगों ने उसे उठाने में साथ दिया वही लोग आज उसे गिराने पर तुले हुए थे। अब वह इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकते थे। वह इस अंधेरपन को मिटाना चाहते थे। अब फोड़ा बहुत बढ़ गया था। उसे चारों ओर का दबाव (Pressure) था, वह फटने के लिये बेताब था, उस के उपचार के लिये लोग तैयार थे।

रहमान की एक-एक करतूत पर नजर रखी जाने लगी। जिनको उन्होंने

दबा लिया था, वही लोग अपना सर उठा रहे थे। सब लोग उसके विरुद्ध हो गये थे। वह उस सुनहरे तथा उज्ज्वल दिन की प्रतीक्षा करने लगे जब उन की बहु, बेटियाँ बिना रोक टोक के चल फिर सकेंगी, घूसखोरी समाप्त हो जाती, ईमानदारी का बोलबाला होगा, गरीबों के दुखड़े को कोई सुनेगा, सबका मान बचेगा पढ़े लिखों की कदर होगी, गुण्डागर्दी समाप्त होगी, इन्सान की इन्सानियत लौट आयेगी, कब लूटमारी, चोरबाजारी समाप्त होगी। सचाई का प्रचार घर घर में होगा। लोग उन्हीं दिनों को देखने के लिये तरस रहे थे। लोगों को अब गरीबी का भय न रहा, पर गरीब होकर भी वह अपना मान इज्जत रखना चाहते थे।

इलेक्शन के दिन निकट आ रहे थे। इसलिए रहमान और उसके अन्य मन्त्रियों ने मीटिंग्स शुरू कीं। वह सब इस समस्या पर विचार करने लगे। रहमान को पूरा पता था कि उसके बेटे, सम्बन्धी, सुन्दरी, महमूद और कई ऐसे ही लोग उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हैं और उसे परास्त करने पर तुले हैं। वह चाहता था कि इन सबको वह दंड दिलवा दे, परन्तु समस्या यह थी कि दंड कितने व्यक्तियों को दे। और फिर इस नाजुक समय में अपने ही बेटों से इस प्रकार का व्यवहार करना ठीक न था। उसने अपने मन में निश्चय किया कि ज्यों ही वह इलेक्शन जीत जायेगा त्यों ही वह सबको जेल भिजवा देगा। परन्तु इस समय समस्या यह थी कि वोट अपने हक में कैसे हों। वह लोगों को मजबूर करना चाहता था, पर उसको तथा उसके साथियों की समझ में यह बात नहीं आ रही थी, कि वह इस समस्या पर हसीना की राय जानना चाहता था। इस लिए उस दिन की सभा शीघ्र समाप्त कर वह अपनी पत्नी के पास गया और बोला—

"हसीना, तुम कोई ऐसा तरीका सोचो, जिससे अधिक वोट हमारे हक में हों।"

"वाह, कमाल करते हैं आप। वोट आपके हक में न होकर भला उस गधे को लोग क्यों वोट देने लगे। हकूमत आपकी है, क्या आप उस पर दबाव नहीं डाल सकते ?"

"शाबान और नूरा तो उस छोकरे को गायब कर देते, मगर आजकल लोगों का मूड देखकर वह लोग भी घबरा गये हैं। उन सबका कहना है कि मैंने जायदाद का बटवारा करके बहुत बुरा किया। इस पर वह सब मुझ से नाराज हैं।" रहमान ने कुछ सोचते हुए कहा।

"नाराज हैं तो होने दीजिए। जायदाद आपकी थी, उनकी नहीं। आप को जो कुछ अच्छा लगा कर दिया, इसमें उनकी नानी क्यों मरती है। वास्तव में वह सब मुझ से जलते हैं, क्योंकि मैंने आप से ब्याह किया। शाबान ने मुझे कई बार कहला भेजा कि मैं उसके मन की रानी बन जाऊँ। जब मैंने उसकी एक न सुनी तो उसका जलना स्वाभाविक ही है।" हसीना ने रहमान को यह सब झूठ कहा। वह चाहती थी कि रहमान अपने साथियों से रिश्ता तोड़ ले, ताकि उसकी पांचों घी में रहें।

"क्या उन्होंने तुम से शादी के बाद भी इस तरह की गुस्ताखी की है ?" रहमान क्रोध में जल रहा था और हसीना की मक्कारी को सच्चाई समझ कर उससे इसके बारे सब बातें जानना चाहता था।

"जब मैंने उसके दांत खट्टे किए तो फिर वह शादी के उपरान्त इस तरह की गुस्ताखी क्यों कर करता।" हसीना ने दुष्ट हँसी हँसी। रहमान को लगा कि वह बहुत सुन्दर है और यही कारण है कि उसके सब दोस्त उससे जलते हैं। बोला—

"मोती भी मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी ही बातें बता रहा था, क्या कभी उसने भी तुम्हें कुछ कहा है ?" रहमान की इस बात से हसीना के दिल में चोट लगी, उसका अहं ऊभर आया, घायल नागिन की तरह फन फैलाये वह अपने शत्रुओं को डसने के लिए तैयार हो गई। अपने मन की भावनाओं को दबाते हुए बोली—

"क्या समझ रखा है आपने उसको, वह तो एक नम्बर का बदमाश है। वह आपके बारे में मुझे बुरा भला कहता था। मैंने उसको भी खूब लताड़ा और उसकी दाल गलने नहीं दी। उनका विचार है कि मैं बुरी स्त्री हूँ ताकि वह मेरा सर्वस्व लूट लेते। कमीने कहीं के।"

"मुझे यह इलेक्शन जीतने दो, मैं उन सब की खबर लूंगा। उनको मैं रास्ते का भिखारी बना के ही दम लूँगा। जिस थाली में खाया है उसी में छेद करने लगे, कमबख्त कहीं के।"

"मुझे पूरा भरोसा है कि आप सफल होंगे और अपने देश का उद्धार करेंगे।"

रहमान के विरुद्ध एक नवयुवक इलेक्शन के लिए उठ खड़ा हुआ। वह साधारण घर का लड़का था। उसका नाम हनीफ था। पढ़ा लिखा था और यह सब अंधेर गर्दी उससे देखी नहीं जाती थी। उसे रहमान और उसके साथियों के व्यवहार पर दुःख भी हुआ और घृणा भी हुई। वह खुले मैदान में उतर कर उनकी बुराइयों की पोल खोलने लगा। उसे पूरा पता था कि यूँ रहमान की बुराई करना खतरे से खाली नहीं हैं, पर फिर भी वह अपने दिल की तड़प और समय की आवश्यकतानुसार उसके मुकाबले के लिए आग में कूद ही पड़ा। वह ईमानदार घर का लड़का था। उसके पिता किसी दफ्तर में एक अफसर के पद पर थे, जो सदा घूस से अपने को बचाने का प्रयत्न करते थे। हनीफ के इलेक्शन में उठने के कारण उसके पिता को अपनी नौकरी से हाथ धोने पड़े, जिससे हनीफ को और भी रहमान से बदला की चाहत बढ़ गई।

उसने रहमान की जायदाद के बारे में लोगों से कहा, जो कि करोड़ों रुपयों में थी। उसने सब मन्त्रियों के बँगले गिने। एक एक उच्च पदाधिकारी के पास आठ आठ दस दस सुन्दर बंगले थे। उसने लोगों को बता दिया कि किसके पास में कितनी कारें, जीपें, ट्रकें हैं। हसीना के कई सम्बन्धी, रहमान, मोती, मक्खनलाल, वज़ीरसाहब, नूरुद्दीन आदि के निकट सम्बन्धी बड़े बड़े पदों पर थे। यह बात लोगों से छुपी न थी। बड़े बड़े ठेकेदार इन्हीं के सम्बन्धी थे, कई दुकानें इन लोगों की थीं, कई सिनेमाघर इनके थे। और कई कल कारखाने भी उन्हीं के थे। जो लोग तब निर्धन थे, वह अब भी वैसे ही थे यानि

दर्जी दर्जी ही रहा, नाई नाई और मास्टर मास्टर ही रहा। इन लोगों में भी यदि कोई हाकिमों का सम्बन्धी था, तो उसका वास्तव में कायाकल्प हो गया था। यही था इस दौर का चक्कर, जो हनीफ ने लोगों पर व्यक्त कर दिया। उसने लोगों से यह भी कहा कि जो मनुष्य यूँ अपने देश की उन्नति को रोक ले, जो मनुष्य केवल अपनी प्रसन्नता के लिये देश के लाखों रुपये बर्बाद करे, भला वह जनता की भलाई कैसे कर पायेगा। जिसके सब मन्त्री भूखे सियार हैं, चोर और डाकू हैं वह इस देश को कैसे आगे बढ़ायेंगे। यह चोर उन चोर और डाकुओं से गए गुजरें हैं जो रात को डाका डालते हैं। परन्तु यह दिन दहाड़े ही देश को लूट रहे हैं और अपनी तोंद फुला रहे हैं। इनके इर्द-गिर्द सदा मियाँ मिट्ठुओं का ताँता लगा रहता है, जो इनकी मनमानी की दाद देने वाले हैं। उन्होंने स्वयं निर्धनता देखकर निर्धनों से मुंह मोड़ लिया है। क्या यही हमारे नेता कहलाने के योग्य हैं। जो स्वयं अनपढ़ हों, वह पढ़े लिखे का महत्व कैसे जाने, जो बेईमान, अधर्मी हैं वह धर्म का प्रचार कैसे कर सकेंगे, इस हालत में यह हकूमत करने के बिल्कुल योग्य नहीं है। इन्हीं बातों के कारण सब लोग हनीफ़ के साथ थे, अब उनसे अधिक अत्याचार सहा नहीं जाता था।

रहमान के मियाँ मिट्ठुओं का दल उसे कभी निराश नहीं करता था, बल्कि जीतने के सुन्दर स्वप्न दिखा रहे थे। इन्होंने रहमान से कई हजार रुपये लिए और शराब, कबाब तथा होटलों पर व्यय किए। रहमान अपना सारा समय हसीना के पास ही बिताने लगा और इलेक्शन की बातें उसी से करने लगा। हसीना की बातों पर पूरा विश्वास था कि वह इलेक्शन जीत लेगा और सदा के लिए इस पद को संभालने में सफल रहेगा।

हनीफ की पार्टी काफी प्रापेगन्डा कर रही थी। बिना पैसों के उनका काम बड़ी सुगमता तो चल रहा था। घर-घर में उसके वरकर वोट के लिए जा रहे थे। हर जगह हनीफ का ही चर्चा होने लगी। हनीफ के बोलने में सादगी थी, शराफत, नम्रता थी जो लोगों के दिलों में एकदम उतर गई। उस की सब बातें लोगों के हृदय में समा गईं। उन्हें लगा कि अब वास्तव में उनके दिन फिर रहे हैं। कोई उनकी सुनने के लिये तैयार था। हनीफ का मधुर भाषण, नम्रता काम आ गई। उसका घर ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध था, यह

सब बातें लोग जानते थे। इससे उन्हें हनीफ के संग आगे बढ़ने की खूब उमंग बढ़ी।

हनीफ की चर्चा रहमान के कानों में भी पड़ी, उसकी चढ़ाई को सुनकर रहमान की हँसी छूट गई। उसे लगा कि इस छोकरे को गिराना बड़ी बात नहीं है, जिसके अभी दूध वाले दाँत भी नहीं फूटे थे। जब यह खबर आग की लपटों की तरह रहमान पर ही वार करने लगी तो वह भी एक बार घबरा गया, वह जैसे स्वप्न से जाग उठा और हनीफ को परास्त करने के दाव पेच सोचने लगा। रहमान के पास मियाँ मिट्ठुओं का तांता लगातार चलता रहा। उनका विचार था कि संसार की कोई शक्ति रहमान को इस पद से हटा नहीं सकती। रहमान ने अपने कई गुन्डों को मारने के लिए तैयार किया था, पर जब उहोंने सारी जनता को हनीफ के साथ देखा तो उनका होंसला भी टूट गया और वह अपना सा मुँह लेकर रहमान के पास लौट आए। रहमान के कई षडयन्त्र व्यर्थ गए, उसके सब दाव पेच रद्द हो गए। लोग उसकी मक्कारी को जान गए और उन्होंने अपने दिल में हनीफ को वोट देने का निर्णय किया।

परन्तु रहमान हारने वाला व्यक्ति न था। अभी तक उसे यह समस्या इतनी संगीन दिखाई नहीं दे रही थी, पर जब उसके मन्त्रियों ने उसे इस बारे में कहा तो उस की आशंका भी उभर ही आई। इस तरह उसने भी अपनी पार्टी को प्रापेगन्डा के लिये खूब रुपया दिया। उस के साथी इसी समय की ताक में थे और वह भी जी जान से इस काम में हाथ बटाने लग गये। सरकार की इस वर्ष की सारी बजट केवल प्रापेगन्डा के काम आ गई। चारों ओर पोस्टर ही पोस्टर दिखाई देने लगे। हज़ारों लोगों को घूंस देकर इस काम में उत्साहित किया गया। घरों में, गलियों में, कचहरियों में, दुकानों पर, दफतरों में रहमान के इशतिहार जाने लगे। हवाई जहाजों से लोगों के बग़ीचों, छतों पर पोस्टर गिरने लगे। इन इशतिहारों में रहमान और उस के साथियों के गुण गाये गये थे, रहमान के दौर में वादी की कितनी उन्नति हो पाई थी, कितने ही कारख़ाने बनें थे, कितने ही डेयरी फार्म बने थे जिनका दूध केवल मन्त्री महोदय ही पीते थे। कितने ही पोलट्री फार्म बने थे, जहाँ मुर्गे मुर्गियों से अधिक वहाँ के कर्मचारी तथा उन के रहने के मकान बने थे। खैर, सच्ची बातें लोगों से छुपी न थीं, इन इशतिहारों को देख कर उन की हँसी छूटती थी।

शहर तथा गाँवों में खूब चहलपहल थी। स्त्रियाँ, युवक, युवतियाँ, बूढ़े सब वोट देने के लिये तैयार थे। सब यह देखने के लिये उत्सुक थे कि कौन जीत जायेगा और कौन हार जायेगा। यह बातें बच्चों की समझ से बाहर थीं, परन्तु फिर भी वह इस चहल पहल को नारों से बढ़ा रहे थे। जहाँ तहाँ लोग नारे लगाते फिर रहे थे, इस शोर गुल से लोगों की उमँगें और भी उभरती और वह अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को देखने के लिये तरसते। दोनों की पार्टियाँ, तांगों मोटरों, डोंगों, बसों में अपना अपना प्रचार करतीं। एक ओर डर तथा पैसा था, दूसरी ओर खुशहाली तथा इमानदारी थी। देखना यह था कि झूठ की विजय होगी या सत्य की। कई स्थानों पर दोनों पार्टियों की मुठभेड़ हुई, दोनों पार्टियों में पटाई भी हुई, परन्तु इतना होने पर भी दोनों पार्टियाँ डट कर मुकाबला करने पर डटी रहीं। इसी बीच वह दिन भी आ गया जब लोगों को अपना भाग्य परखने का अवसर मिल गया। लाखों हजारों की संख्या में लोग वोट देने के लिये आ गये। गाँवों और कसबों से लोगों का ताँता लगने लगा। सब लोग अपनी इच्छानुसार किसी एक संदूक में वोट डाल रहे थे।

रहमान और उस के सब साथी निश्चिन्त हो गये कि अधिक वोट उन्हीं के होंगे। उन्होंने इस काम के लिये लाखों रुपया व्यय किया था, सो उन की चिन्ता विश्वास में बदल गई। हसीना उस दिन की प्रतीक्षा में थी, जब वह अपने शत्रुओं से बदला लेना चाहती थी। रहमान और उस के सब साथी सुन्दर स्वप्नों में खोने लगे। उन की चिन्ता, घबराहट, भय सब जैसे एक दम घुल गया और वह फिर से अपने मनोरंजन के बारे में सोचने लगे। जब सब को विश्वास हुआ कि रहमान ही जीत जायेगा तो इस अवसर पर या प्रसन्सता के अवसर पर एक बहुत बड़ी पार्टी दी गई। वही शराब, कबाब के दौर शुरू हुए, जो उन के जीवन का एक अंग ही बन गया था। वहाँ खूब गाना बजाना हो रहा था। एक स्त्री सब अफसरों के बीच में नाच रही थी। सब झूम रहे थे, सब के होश उड़ गये थे। रहमान रुपयों के ढेर को उस गाने वाली स्त्री पर फेंक रहा था। सब उस स्त्री को संकेतों से बुला रहे थे, आज भूखे सियार आपे से बाहर थे, उन्हें अपने अस्तित्व का बिल्कुल ध्यान न था। उन्हें अपने घर की चिन्ता न थी, उन्हें लोगों का ध्यान या भय न था। वह स्वयं को भूल कर झूम रहे थे, उन का हृदय, मस्तिष्क, मन, शराब में डूब चुका था और

"यह नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता है, कयामत तक नहीं हो सकता है। मुझ से भी क्या और कोई शक्तिशाली है। लोग उसे वोट नहीं दे सकते हैं, मैंने लोगों को उठाने के लिए क्या नहीं किया। मैंने उन्हें स्वतन्त्रता दिलवाई, उन की गरीबी दूर की। उन्हें अब किसी चीज की कमी नहीं है। उनकी बहु बेटियां अब पढ़ सकती हैं। मैंने कितने ही पुलों, सड़कों, अस्पतालों, स्कूलों तथा कालिजों को बनवाया है। मैंने कई मस्जिदों और मन्दिरों का निर्माण किया है। लोग जिस पैसे के लिये तरसते थे, मैंने उन के घर भर दिए हैं। उन के बच्चे पेट भर खाना खाते हैं, अच्छा कपड़ा पहनते हैं। उन्हें अच्छी मजदूरी मिलती है, हजारों को मैंने नौकरी दिलावाई, मैंने भूख को समाप्त किया फिर भला लोग चाहते क्या हैं। मैं उस गुस्ताख को दंड दिलवा कर ही दम लूँगा उसे कुचल डालूँगा, मेरी कुर्सी पर मेरे बगैर और कोई बैठ नहीं सकता है। मैं उससे बदला लूँगा। उस छोकरे से बदला लूंगा, जिस ने मेरे स्वप्नों को खाक में मिलाया। जिसने मेरे स्वप्नों के मन में आग लगा दी। मैं लोगों से बदला लूंगा, मैं सारे जहान से बदला लूंगा। मैं ..मैं स...ब से बदला लूंगा।" रहमान को स्वयं पता न चला कि वह क्या बोल रहा है। उस के बदन से आग की चिनगारियाँ निकल रही थीं। वह अपनी पराजय को स्वीकार करने के लिए बिल्कुल तैयार न था। वह अपने कमरे के चक्कर काट रहा था। आज उस के मियाँमिट्ठुओं का दल जो सदा उस की हाँ में हाँ मिलाते थे, खामोश थे। उनका हौंसला टूट चुका था, उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा था। वह रहमान के दुःख को दूर करने में एक दम असमर्थ थे। आज रहमान को उन की खामोशी, चुपी खल गई। जो पहले उस के शुभचिन्तक थे, सहायक थे, वह आज सदा के लिए मौन हो गये और उनका यह रुख असह्य था।

रहमान के घनिष्ठ मित्र नूरा, शाबान, मोती, करीम आदि सब आज लापता थे। वह अपनी पराजय पर मन ही मन घुट रहे थे। उन के सिर आज झुक गए थे, उन की आशाओं पर पानी फिर गया था। वह जानते थे कि रहमान की भूलों के ही कारण आज उन की यह दशा हुई थी। वह सब रहमान को इस जीवन में इस भूल पर क्षमा करने के लिये कदापि तैयार न थे।

उस दिन शाम को सारा श्रीनगर चिरागों से जगमगा रहा था। घर घर में दीपमाला हो रही थी। जहाँ, तहाँ गाने बजाने की ध्वनि आ रही थी। घरों, में सड़कों पर, किश्तियों तथा दुकानों पर सुन्दरता झलक रही थी। आज खुशी का दिन था। रास्ता फूलों, साड़ियों और सुन्दर आभूषनों से सजाया गया था। आज हनीफ को लोगों के बीच में चल कर उधर से गुजरना था। वह आज दिन भर भाषण देता रहा, और लोगों के उत्सव में उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न करने लगा। सारा नगर हँस रहा था—

परन्तु रहमान और उस के साथियों के घरों में आज अंधेरा तथा सन्नाटा था। आज उन सब को देख कर यही लगता था जैसे उन के किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु हो गई हो। रहमान बाहर की चहल पहल को आज सह नहीं सका, उसका हृदय रो रहा था। यह सब क्यों हुआ? उस की समझ में यह बात नहीं आ रही थी। उस ने सोचा कि वह हसीना के पास चला जाये, परन्तु न जाने आज उस से उसे घृणा सी क्यों होने लगी। आज वह एकान्त चाहता था, अपनों से अलग, सब से दूर। उस की आँखों से नींद समाप्त हो गई। उसे लगा कि उस का सारा शरीर टूट रहा है। उस का सर दुःख रहा था, जैसे किसी ने उस पर हथौड़े का वार किया हो। वह रात करवटें बदलते ही बीत गई। दूसरे दिन वह बिस्तर से न उठ सका। उस का बदन भारी हो गया था, उसका साँस फूल रहा था, शरीर दुख रहा था। उसके नेत्र जल रहे थे। उसने उठने का प्रयत्न किया, दोबारा उठने की कोशिश की, पर सब निष्फल गया। वह अचेत बिस्तर पर गिर पड़ा।

उसी समय उस के पास कई डाक्टर आ गये। खतजी, सुन्दरी, हसीना, रहमान के सब बेटे तथा अन्य संबन्धी वहाँ आ गये। डाक्टरों ने कहा कि उसे दिल का दौरा (Heart attack) पड़ गया था। डाक्टरों के कहने के अनुसार उसे गहरा सदमा पहुँचा था। उसे कई इन्जैक्शन दिए गये। सब उसके स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करने लगे। खतजी और सुन्दरी फूट-फूट कर रो रही थीं। रहमान की यह दशा देख कर सुन्दरी के हृदय की आग बुझ गई। उसके मन की आग आँसुओं में बह गई। आज उसे स्वयं पर दुःख भी हुआ और क्रोध भी आया कि क्यों उस ने अपने ही पति को अपनी आग में जलाने का प्रण किया।

उस की दृष्टि हसीना पर पड़ी, जो खामोश रहमान की ओर एकटक देख रही थी। सुन्दरी के मन में ईष्या की ज्वाला उभर आई, उसने घृणा से अपने नेत्र दूसरी ओर घुमा लिए। उसका विश्वास सच्चाई में बदल गया कि रहमान को गिराने वाली केवल हसीना ही है।

खतजी अपने बेटे के सिरहाने बैठी उसका सिर धीरे धीरे सहला रही थी। उसने सिर की ओढ़नी उतार ली और खुदा से अपने बेटे की सलामती के लिए दुआ माँगने लगी। यह समाचार घर घर में पहुंच गया। उसके सब मित्र उसके पास आ गये। रहमान का मुंह एकदम पीला पड़ गया था। मोती ने सोचा—

"क्या आदमी एक दिन में इतना बदल सकता है?" उसकी दृष्टि दूर एक बड़े शीशे में गई जिस में उसे अपना मुंह दिखाई दिया। उस का मुंह... मुंह न रह कर सिहाई का एक पुतला रह गया था, जिस में दो आँखें दो तारों की तरह चमक रही थीं।

उस दिन रहमान बेहोशी में ही रहा। शाम को उसने अपनी आँखें खोलीं, धीरे से होंठ फड़फड़ाये।

"अ...म मा.........मु...झे...माफ क...र ...दो।" खतजी यह सब समझ न पाई, उसके नेत्रों से टिप-टिप आँसू गिरने लगे।

"बेटा, तुम जल्दी ठीक हो जाओगे।" उसने रुँधी आवाज से कहा।

"अम्मा जी, इन्हें बोलने न दीजिए। कहीं दूसरा दौरा (Attack) न पड़ जाए?"

खतजी चुप हो गईं। उसके सब बाल सफेद हो गए थे। उसके मुंह की झुरियाँ भी उभर आई थी। वह अपने बेटे की ओर एकटक देख रही थी। वह रह रह कर खुदा से दुआ माँग रही थी। रहमान का मुँह पीला पड़ गया था। उसकी आँखों के नीचे काले दाग पड़ गए थे। खतजी का दिल घबरा गया। उसे रसूल की मृत्यु का समय याद आया। उसे लगा कि उसकी भी कुछ कुछ यही दशा हुई थी। वह यह सोचते ही सिहर उठी, उसका मन शंकित हुआ। वह बिलख बिलख कर रोने लगी। उसके रोने से सब रो पड़े। रोने की आवाज से रहमान जैसे नींद से जाग उठा, उसे अपना शरीर बेहद निर्बल लगने लगा। वह खतजी को कुछ कहना चाह रहा था, परन्तु उसकी आवाज खतजी के कानों

तक पहुँच नहीं पा रही थी। खतजी अपना मुंह उसके मुंह के निकट ले गई। रहमान कह रहा था—

मैंने··· · लो······गों·····की······भ···लाई नहीं की······अम्मां ···वह······मु······झ से···रू···ठ · गये हैं।"

यह कह कर वह चुप हो गया। डाक्टर ने खतजी से कहा कि उसे आराम की बहुत आवश्यकता है। खतजी ने रहमान का हाथ छोड़ दिया जिसे वह अब तक पकड़े बैठी थी। उसे पता न चला कि किस ने उसे अपना सहारा देकर रहमान से दूर किया। उस की हालत पागलों की सी हो रही थी। वह किसी भी सूरत में बेटे की जान को फिर से पाना चाहती थी। उसकी दृष्टि हसीना पर पड़ी, जिस का मुंह उतरा था। खतजी के हृदय का भंडार आज उसे देख कर फूट पड़ा। उसे लगा कि हसीना ने ही उन के सुन्दर सुखी परिवार को उजाड़ दिया है। उनके सुखी परिवार के तिनके बिखेर दिए हैं। आज तक वह केवल रहमान की प्रसन्नता के लिए चुप थी, पर जब उसने रहमान पर ही वार किया तो खतजी सिंहनी की तरह उस पर बरस पड़ी। उसे खरी खोटी सुनाई और उसे इस घर से निकालने के लिए कहा। हसीना आज भीगी बिल्ली की तरह उसके वाग्प्रहारों को सह रही थी और मन में दुःखी खुदा से रहमान के लिए दुआ कर रही थी।

उस दिन उनके घर में सन्नाटा छाया रहा। शहर में यह खबर फैलते देर न लगी। लोगों के मनों में उसके लिए दया का सागर उमड़ आया। जो आज तक उसके शत्रु थे अब उस की खबर लेने के लिए स्वयं उसे देखने गए। रहमान के पास कई नर्सें तया डाक्टर थे, परन्तु खतजी लगातार अपने बेटे के तकिये पर बैठी उसका हाथ सहला रही थी।

रहमान की दशा बिगड़ती जा रही थी। उसे लगातार दिल के इन्जैकशन देते गये। परन्तु उसकी दशा ठीक होने के बदले खराब हो रही थी। उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसने बहुत कमजोरी अनुभव की। वह मन में अपनी माँ का शोकग्रस्त मुंह देख कर दुखित हो रहा था। उसका साहस टूट रहा था। आज वह अपनी माँ को अपने पास ही रखना चाहता था। जब कभी खतजी उठने लगतीं तो वह छोटे बच्चे की तरह उसे जाने नहीं देता था। खतजी की आँखें रो रो कर सूज गई थीं। रहमान ने अपनी माँ का यह हाल देखा तो

उस के दिल पर जैसे किसी ने हथौड़ा मारा हो, उसे दुःख हुआ कि क्यों उसने अपनी माँ के प्रति लापरवाही की। उसे पश्चाताप हो रहा था कि क्यों वह वर्षों से अपनी माँ से दूर रहा, जिस माँ ने उसे स्वर्ग का सुख दिया था, जो सदा उसकी शुभकामनाओं में विलीन रहती थी। जिस ने सुख, दुःख में उसका साथ दिया था। वह मां, लाखों में एक थी, जिसका मन बेटे के प्रति कभी भी मलीन न हुआ था। यह सोचते हुए रहमान के मुंह पर आँसू गिर गए, वह कराह उठा—

"अम्म···माँ मुझे···मा···फ कर···दो। मैं···मैं तु···म्हारा बेटा कहला··ने लायक न···हीं हूँ। मैंने बहुत गु···ना···ह किये हैं। मेरी अम्मां··· तु···म···मु···झे माफ क···रो।"

खतजी, सुन्दरी और अन्य सब दुःख से दुःखी थे। खतजी का दिल फटा जा रहा था। उसने अपने आँसुओं को पोंछने का प्रयत्न सा किया और बोली—

"मेरे बेटे, तुम ने गुनाह नहीं किए हैं। गुनाह तो मैंने किए हैं, जो यह दिन देख रही हूँ। बेटा, तुम ज्यादा बोलो नहीं, ठीक हो जाने पर मैं तुम से सब बातें करुँगी।"

रहमान ने खतजी की बात को अनसुनी कर दिया, या शायद सुना ही नहीं। उसकी दृष्टि सुन्दरी पर पड़ी, जो फूट-फूट कर रो रही थी। उसका मुंह बदल गया था। वह, वह सुन्दरी न रह कर हड्डियों का कंकाल बन चुकी थी, जिसके मुंह पर रहमान ने सदा हँसी देखी थी, जो हृष्ट-पुष्ट तथा गोरी थी। रहमान के अन्तःकरण से एक प्रश्न उठा। वह सुन्दरी कहाँ गई? जिसके प्रेम ने मुझे प्रोतसाहित किया, जिसका प्रेम मेरे लिये बड़ा आसरा सहारा था। वह सुन्दरी कहाँ चली गई है। क्या मनुष्य इतनी जल्दी बदल जाता है? सुन्दरी बूढ़ी हो गई थी। अपनी सास की तरह उसके सब बाल पक गये थे। उसे धुन्धली सी याद आ गई, जब उसने उसे काले बाल तथा हट्टी-कट्टी देखा था। तबसे कई बरस बीत गए थे और उसने सुन्दरी की ओर कभी दोनी आँखें उठाकर भी नहीं देखा था। उसे सुन्दरी में कोई आकर्षण न दीखा, उसे उसमें कोई दिलचस्पी न रही थी। रहमान ने एक लम्बी आह भर ली। उसके नेत्रों में वह दिन नाच उठे, जब सुन्दरी के संग उसने टूटे-फूटे झोंपड़े में जीवन के

कुछ मधुर क्षण बिताए थे। उसे लगा कि यह नया घर, यह चकाचौंध उन दोनों के बीच में पहाड़ बन कर खड़ा हो गया। आज वर्षों के उपरान्त उसका मन सुन्दरी को देख कर तड़प उठा। उसके नेत्रों ने सुन्दरी का धुंधला सा मुंह देखा और वह भी आँसुओं से भरा हुआ। उसके मुंह से एक चीख निकली, वह अस्फुट शब्दों में बोला—

"अम्मा मैं···ने···सुन···दरी को···ब···हु···त दुःख दिया है। न जा···ने मु···झे क···या हो ग···या था। मैं···पा···गल क्यों ब···न बैठा।"

यह कहते-कहते रहमान को लगा कि किसी ने उसके दिल पर तीर मारा। वह चीख उठा। डाक्टर ने उसी समय कोरोमाईसीन का इन्जेक्शन लगाया। उसके सब सम्बन्धी रो रहे थे। रहमान अचेत पड़ा था। उसके मुंह पर आँसुओं की झड़ी लगी थी। सब खामोश थे। उनका घर लोगों से भरा हुआ था। जिस मनुष्य को कुचलने के लिए लोगों ने ठान ली थी उसी मनुष्य के जीवनदान के लिए सब प्रभु से वंदना कर रहे थे। यह सब क्यों हो रहा था ? कोई इस प्रश्न का उत्तर न दे पाया, पर इन्सान होने के नाते सब ने उसके पापों को क्षमा कर दिया था। सब उसे फिर से जीवित देखने के लिए तड़प रहे थे। चाहे आदमी बुरा ही क्यों न हो, मगर जाने के उपरान्त वहाँ से कोई लौट कर नहीं आता है।

वह रात यूं ही बीत गई। सब चुप चाप रहमान की ओर एकटक देख रहे थे। सबके मुंह मलिन तथा शोकग्रस्त थे। खतजी चिन्ता में डूबी हुई थी। उस दिन किसी ने कुछ खाया-पीया नहीं। प्रातः रहमान को होश आया। वह होंठ फड़फड़ाने लगा। खतजी तथा सुन्दरी उसके पास थीं। सुन्दरी पूछ बैठी—

"क्या पानी चाहिये ?"

"नहीं, पा···नी ब···हुत पिया है। खू···ब पिया है ह···मने, और व···ह पी···ना क···भी बन्द न हु···आ। ह···में प···ता था कि य···ही लोग चा···हते हैं।" इतना कहने पर रहमान चुप हो गया। सुन्दरी ने उसके मुंह में पानी के दो चम्मच डाले। बड़ा डाक्टर आया, बोला—

"मीर साहब, कुछ देर चुप रहिये। बोलना आपके लिए बिल्कुल ठीक नहीं है।" पर डाक्टर की बात को अनसुनी करके रहमान ने फिर बोलना शुरू किया—

"हमने लो···गों का धो···खा दि···या। हमने उ···न को लू···ट लि··या, हमने···अप···ने को खत···म कि···या। अम्मा, तु···मने मु···झे सही रास्ता क··यों न···हीं दिखा···या। तु···म कित···नी अच्छी हो मेरी··· माँ, मु···झे स···ही रा··ह नहीं दि···खाई।" खतजी ने उसे बीच में टोका और बोली—

"चुप करो बेटा, खुदा के लिए चुप करो, ज्यादा बोलना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है।"

"स···बने हमें मि···ल कर गि···रा दिया। स·· बने मि···ल कर हमा···रे कि···ये पर पा···नी फे···र दि···या। स···वने मे···रे स्वप्न खा···क में मिला···ये। अम··मा, अम्मा स··व।' यह कहते-कहते वह कराह उठा, उसे हद से अधिक दर्द हो रहा था, पर फिर भी वह बोलना चाहता था।

"ओह···स···ब ने ह···में नी··चे ध···केल दि···या। य···ह सब जान बू···झ क···र नहीं कि···या। मु···झे मे···रे पा···पों को···मा···फ क··र दो। तु···म भी मु···झे मा···फ क··र दो। मैंने तुमसे ब···हुत बु···रा बर्ता···व कि···या है।" रहमान ने सुन्दरी की ओर संकेत करते हुए कहा। सुन्दरी फूट फूट कर रो रही थी। खतजी दुःख से दुखित थी। हसीना दूर खड़ी थी। उसका मुंह काला सियाह हो गया था। न जाने आज रहमान को वह एक दम भूल ही क्यों गई थी। हसीना को दुःख था अपने हाल पर। वह जाये तो कहाँ? उसका हृदय फट रहा था।

रहमान ने डाक्टर का सहारा लेकर करवट बदली, उसने अपने मित्रों की ओर अपने नेत्र घुमा लिए। वह सब शोकग्रस्त थे। रहमान ने शीला और विष्णु को अपने पास देखा। शीला के नेत्र लाल थे, जिससे पता चलता था कि वह बहुत रोई है। रहमान ने संकेत से शीला को अपने पास बुला लिया और बोल—

"मैं उ···स दि न तु···म्हारी···बा···त को बहु···त बु···रा मा···न गया। मुझे क्ष···मा कर दो। ए···क भाई पर एह···सान क···र दो। तु···म दे···वी हो। मे··री प्या···री ब···हि···न हो। कहो कि·· या ना···म··।" इतना कहना ही था कि उसे एक और दिल का दौरा पड़ गया। उसने अपने हाथ पैर छटपटा लिए। उसका साँस फूलने लगा। सब घबराहट में इधर-उधर

देखने लगे। डाक्टर दौड़ता हुआ आया, कोरोमीन का इन्जेक्शन लगाया। पर अब पक्षी पिंजरे से जा चुका था। सब ओर सन्नाटा छा गया। खतजी की आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। सारा कमरा चीत्कार में बदल गया। खतजी ने सारे कपड़े फाड़ डाले, बालों को नोच लिया, पागलों की तरह चिल्लाने लगीं।

"नहीं, तुम नहीं जा सकते। मेरे बेटे, तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते। मेरा यहाँ कौन है। पहले अपनी बूढ़ी माँ को दफ़ना दो, अपनी माँ को कंधा दो, अपनी बूढ़ी मां को ले जाओ। मेरे बेटे, मेरी आँखों के तारे, मेरे कुल के चिराग, उठो, अपनी अम्मा को दिलासा दो। अपनी माँ का हौंसला बढ़ाओ। उठो मेरे लाल, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगी। कभी नहीं, कभी नहीं। मेरे लाडले उठो, उठो, मेरे बेटे उठो।" खतजी बेहोश फर्श पर गिर गई। सुन्दरी का भी यही हाल था। सब सिर पटक रहे थे। सब रो रहे थे। सब के सर झुक गए थे, सब उसकी आत्मा को शान्ति प्रधान कर रहे थे।

जहाँ दो दिन पहले खुशी के चिराग जल रहे थे, वहाँ आज अन्धेरा था, सन्नाटा था। सब के मुंह दुखी, शोकग्रस्त तथा मलिन थे। जहाँ दो दिन पहले एक नेता की सवारी निकाली थी, वहीं से आज दूसरे नेता की अर्थी निकल रही थी। लोगों के सिर नीचे थे, सब उसे इज्जत से देख रहे थे। सब बीच के दौर को भूल गए। खाई भर गई। सबके दिलों में रहमान की मृत्यु का घाव हरा रहा।

रहमान को दफ़नाया गया। वह जिस मिट्टी से उत्पन्न हुआ था, फिर से उसी में मिल गया, उसी में समा गया, सदियों के लिए, हजारों लाखों वर्षों के लिए, सदा के लिए। संसार में रहा क्या? केवल नाम। किसका? माँस के टुकड़े का। यही है संसार की रीति और इसी तरह संसार सागर की लहरें उठती, और बैठती रहेंगी।

—समाप्त—

इस उपन्यास के सभी पात्र तथा घटनाएँ काल्पनिक हैं। इसका व्यक्तिगत रूप से किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

हमारे प्रकाशन

१. मन रो दिया	इन्दु बाली	४.५०
२. कठपुतली	साधना प्रतापा	५-००
३. अलका	मुसाफ़िर लायलपुरी	३-५०
४. शिकारी औरतें	मन्टो	३-५०
५. स्वप्न और जागरण	कमल शुक्ल	४-००
६. दुखियारी	नरेन्द्र शर्मा	२-५०
७. झील और कमल	क्षेमलता वखलू	५-००
८. कश्मीर की धरती	क्षेमलता वखलू	८-००
९. दर्पण बन गया इतिहास	डा० अयूब "प्रेमी"	३-५०
१०. यह आस्था यह अन्धेरा	डा० अयूब "प्रेमी"	२-५०
११. कंटीले तार	इन्द्रा पैशन	७-००

हमारे आगामी प्रकाशन

१. और वह मर गई	सावित्री तलवार
२. अपराधी कौन	के० पी० बहादुर
३. सपनों के राहा	नरेन्द्र शर्मा
४. एक नाव काग़ज़ की	विजय सूरी
५. निराला के काव्य में दार्शनिकता	डा० मुहम्मद अयूब खाँ
६. स्वतन्त्रीयोत्तर हिन्दी महाकाव्य	डा० निज़ामुद्दीन
७. कहानीकार प्रेम चन्द	डा० शकील उर रहमान

अजय पब्लिशर्स
७/६३९३, देवनगर
नई दिल्ली-५